"राख का ढेर"

——एस० के० जुत्शी

एजंता एन्टरप्राइज़िज
कलकत्ता-१

[इस उपन्यास के सब पात्र तथा घटनाएं काल्पनिक हैं]

प्रकाशक :

अजंता एन्टरप्राइज़िज
139 एन० एस० रोड,
पोस्ट बाक्स 712 D,
कलकत्ता-1

वितरण विभाग :
Correspondence & Distribution Centre
पंजाब स्टोर्स (रजिस्टर्ड)
सेकिंड ब्रिज श्रीनगर,
काशमीर

मुद्रक :
मिलाप प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड
8-A बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-110001

आवरण :
श्री एम० एल० दर

लेखक :
एस० के० जुत्शी

उपन्यास :
राख का ढेर

मूल्य : ८/-

"यह पहला उपन्यास, मैं अपनी माँ के चरणों में अर्पित कर रहा हूँ जिसने मुझे हर समय कला के क्षेत्र में लेखन-कला की ओर उत्साहित किया।"

"मैं पब्लिशिंग दल के साथ-साथ श्री डी० के० नेकैब का बहुत आभारी हूं जिसने मुझे आज तक साये की तरह पीछा किया और मुझे यह उपन्यास आपके सामने लाने के लिये बहुत सहायता की।"

..........“यह कौन हमारे खून से हमारे ही साथ होली खेल रहा है ? जब शक्ति का अर्थ मानवता को उखाड़ फेंकना है तो राक्षस को देवता का स्थान क्यों नहीं दे देते। यह आँसू के कतरे बह-बहकर कब तक गीता के अक्षरों को भिगोते रहेंगे ? कौन किसकी धरती छीनना चाहता है ? यह कैसी जीत......और कैसी हार......? किसलिए...—? और किसके लिए——? यह धरती, आ धरती नहीं बल्कि दानव नगरी बन गई है। यहाँ कई मासूम बेसहारा औरतों का कफन बनाया जा रहा है।

न हम गीता को भूल चुके हैं, न हमें हज़रत अयूब की सहनशक्ति पर सन्देह है, न ही हमें ईसा मसीह के चरण छूने से इन्कार है। वह भी——।”

प्रार्थना

मैं अपने साथ-साथ उन असंख्य लोगों की ओर से, आपके कोमल चरणों पर शीश झुका कर प्रार्थना करने की अनुमति चाहता हूँ जो इस दुःख के सागर में मायारूपी तूफान से सहम कर आँसू पी रहे हैं, तिस पर भी तुम्हारे आशा भरे विश्वास की जलती मशाल हाथ में पकड़ कर अपनी नैया को पार लगाने के सपने देख रहे हैं। इनकी झुंझलाई हुई आँखें घनघोर अन्धकार के अतिरिक्त नैया के उलटने का अनुभव कर रही हैं। इन सारी बातों को दृष्टिगोचर करते हुए ऐसा प्रतीत हो रहा है कि समय ने मनुष्य जाति के साथ छल करके उसकी नैया किनारे के बदले भँवर के समीप खींच के लाई है।

प्रभु, हाहाकार की अग्नि में जनता को एक चुभ सी लगी है, क्योंकि मन की सुलगती आग नयनों में दुःखद धुंआ भर कर नीर से लिपट चुकी है। इस बात का हमें पूर्ण रूप से ज्ञान है कि हाहाकार मनुष्य से पहले नियमानुसार बुलाया गया है और मनुष्य जैसे दुर्बल एवं तुच्छ वस्तु को जीवनरूपी संघर्ष पर न्योछावर कर दिया गया है। एक मनुष्य हँसते-हँसते आत्मा द्वारा संसार के दिए हुए घाव भर लेता, यदि तुम्हारे चरणों की छाया पर्दे से बाहर आ जाती। हमने माना कि हम मूर्ख हैं, तो क्या हुआ, क्या हम आपके नहीं ?

आप अपनी निगाहों का कर्म धरती के बदले आकाश के सितारों पर कर लेंगे, तो हमें दुःख क्यों न होगा। उन्हें क्यों चिन्ता होने लगी, वह तो आपके बनाए हुए तारे हैं······उनके पास सोने-चाँदी की चमक है। वह चाहें तो आपको हीरे-मोतियों में तौल भी सकते हैं। हम निर्धन तो बिना चमक के हैं। ऐसा क्यों ? हे पालनहार ! आज तक जो भी समय बीता सो तो आशा की मशाल जलाए हुए आपकी परछाईयाँ ताकते हुए बीत गया। यह हाहाकार भी हम पर सवार है। समय भी हमसे ही रूठा हुआ है। तूफान के लपेट में हमारी ही किश्ती तो है। हम निर्धन हैं, क्या यह भी हमारा ही दोष है। चलो माना कि भक्ति की किरण केवल हम पर फूट रही है, इसी कारण तो आज भी हम गर्व से शीश उठाकर जीवित हैं, पर यह सितारे हम पर हँस-हँस के प्रसन्न हो रहे हैं। यही एक चुभन है, जो हमारे मन में अशान्ति फैला रही है। धनवान तो धन के लोभी पहले से ही थे, किन्तु हम तो आपको अपना अनमोल रत्न समझ बैठे हैं। कहीं यह नैया डूब न जाए, फिर आशा की मशाल न जलेगी।

प्रभु, सितारों की चमक एक सुन्दर चमक होती तो ठीक ही था। परन्तु अब तो इस चमक में इतनी तपन बढ़ गई है कि लाखों निर्दोष जल-जल कर

चुपचाप राख हुए हैं और धुंआ भी न उठा ।

हमारे ईश्वर, हमें माया ने अन्धा बना दिया है । भक्ति क्या है, वह भला हम मूर्ख क्या पहचानें । पर इतना अवश्य है कि मन में आपके चरणों का वास सदा रहे । यही मन की पुकार है ताकि सर्वव्यापक के चरणों तले इस नैया का कल्याण हो ।

परिचय

बचपन से इसी प्रतीक्षा में कई रतियाँ बीतीं कि आप आकर मुझे अपनी गोद में बिठा लोगे और मैं आपको अपने प्यासे नयनों से जी भर के देख लूंगा । पर आप नहीं आए क्योंकि मैं पापी मनुष्य था । इतने में मेरे जीवन से बचपन रूठ के चला गया । यदि अकेले चला जाता तो मुझे रंज न होता । इसने तो अपनी झोली में मेरी मुस्कान ले ली और मुझे यौवन की भारी जंजीरों में जकड़ लिया । मैं देखते ही देखते जीवन के एक भयानक मोड़ पर आ गया, जहाँ चंचल भावनाएँ समय को सहायक बनाकर मेरे लिए नयनों का जाल बिछाए मेरी राह देख रहीं थीं । अब मैं एक नवयुवक के रूप में हूँ । एक अरमान लिए हुए, हाथ में कलम लेकर अपनी कल्पना में तुम्हारी छवि का अनुमान लगा रहा हूँ । क्यों न मैं आप ही को सबसे पहले अपने मन के सुन्दर पालने पर बिठाकर झूला झुलाता रहूँ ।

मेरे ईश्वर ! इस बात से मुझे कदापि इन्कार नहीं कि मुझ में केवल तुम हो । तुम ही मेरी लेखनी हो फिर भी माया के वश में होकर, मैं मूर्ख कह रहा हूँ कि मेरे हाथ कलम पकड़ते हुए काँप रहे हैं और शरीर लरज़ रहा है । ऐसा प्रतीत हो रहा है कि समय ने अपना सारा प्रभाव मेरे इन हाथों पर डाला है ।

इसलिए अब मुझसे दूर न रहना प्रभु ।
मैं कहीं इस 'समय' में खो न जाऊँ ।

अब अपनी कल्पना के संसार में सबसे पहले आपको अपनी लेखनी द्वारा साष्टाँग प्रणाम करता हूँ तथा मन में तुम्हारे इन कोमल चरणों की आरती उतार कर कई चरित्र बनाकर इस प्रथम उपन्यास में प्रस्तुत कर रहा हूँ । मेरा हाथ पकड़ के रखना क्योंकि यह समय मुझसे कुछ माँग रहा है ।

अन्त में यह प्रार्थना है कि मेरे प्रत्येक उपन्यास को यह वरदान देना कि कम से कम मेरे पाठकों के मन में शान्ति का नगर बस जाए तथा उपन्यास पढ़ते-पढ़ते वह आपको इन चरित्रों में अपने समीप पाएं ।

: १ :

नौ माह की कठिन तपस्या का बोझ अपने कन्धे पर लादकर कोई शान्ति-पूर्वक गुमसुम-सा अन्धकार में मीठी नींद सोया हुआ है। इसका बस चलता तो यह तपस्या की गुफा से बाहर आने का नाम तक नहीं लेता परन्तु समय का घोड़ा इस उपासक के कलाकार को सादर प्रणाम करके अपनी पीठ पर उठाकर भगा ले गया क्योंकि उसने तो अपनी पूर्ण कला का प्रयोग करके यह अद्भुत चमत्कार संसार के सामने रखा। समय ने एक ज़ोरदार धक्का मारा और यह नन्हा-मुन्ना सुन्दर खिलौना धरती पर गिर गया। इस खिलौने से पहली बार एक चीख निकली। वह ऐसे रोने लगा मानो किसी ने उसके साथ छल किया हो और इस नन्हे-मुन्ने बालक को मानव का रूप देकर एक अपरिचित नगरी में भेज दिया हो। जब उसकी बन्द पलकें खुलीं तो उनमें से आँसू बहने लगे, शायद इस कारण कि वह अपने आपको अकेला अनुभव करने लगा हो। चारों ओर इस बालक ने अपनी दृष्टि घुमाई। इस संसार का वातावरण देखकर वह गम्भीर हुआ। उसने अपनी मुट्ठियाँ ज़ोर से बन्द कर रखी थीं क्योंकि वह ज्ञान के प्रताप से यह समझ गया था कि किसी ने समय के घोड़े पर भागते हुए उसे जीवन दान के साथ-साथ वरदान के रूप में हाथों में भाग्य की थैली दे दी है, जिसे वह पकड़े हुए था। यह सब पाने के अतिरिक्त उसे धरती से किसी ने धीरे-धीरे थपथपाते हुए गोद में बिठा कर ममता के आँचल से ढक लिया......धरती......माँ......जिसकी गोद में शिशुकाल व्यतीत हुआ......दूसरा रूप......पिता, जिसकी आँखें पत्नी से हटकर पुत्र पर जम गईं। धीरे-धीरे इस बालक ने यह अनुभव किया कि उस कलाकार ने उसकी रक्षा के लिए पहले से ही प्रबन्ध कर रखा है। इस संसार में उसके स्वामी माता-पिता हैं, जिनका नाम ले-ले के उसने हँसना सीखा......। इस संसार की भाषा सीखी......माता-पिता एक माली की तरह इस पौधे को आगे पीछे देखते रहे। दोनों ने अपने पवित्र प्रेम की भेंट इस नन्हे मुन्ने बालक के रूप में दी। माँ की ममता भरी गोद तथा पिता के सीने को अपना पलंग बनाकर यह बालक यौवन को बार-बार बुलाने लगा।

माता-पिता के साए में यह कल का बालक आज का नवयुवक बना और अधेड़ उम्र के माता-पिता अपने आँसू पी-पीकर इसे पढ़ाने-लिखाने में मग्न रहे। जिसमें उन्हें पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त हुई।

इन दोनों की दया से आज राजन एम० बी० बी० एस० के अन्तिम वर्ष की परीक्षा का परिणाम सुनने के लिए कालेज चला गया। उसे इस बात का पूरा ज्ञान था कि वह परीक्षा में सफल होगा किन्तु मन में भय ने अपना वास

कर लिया था। रास्ते में जब भी वह यह विचार मन में लाता कि यदि वह सफल न हुआ तो उसके माता-पिता के दिल पर क्या बीतेगी......। उसकी इकलौती वहन के सपने आँसू में बदल जाएँगे। परन्तु वह अपने पिता की कही हुई बातों को एक दम पकड़कर निराशा को दुतकार कर भगा देता था। "वेटा......तुम्हारे भय में सदा विजय होगी, यह मेरा आशीर्वाद है।"

इधर राजन गाड़ी से उतर कर कालेज की ओर लम्बे-लम्बे डग भरने लगा और उधर घर में प्रत्येक व्यक्ति राजन की परीक्षा का परिणाम सुनने के लिए बेचैन था। सीता के मन में आज भी एक वहम सा उत्पन्न हुआ था। उसे राजन के सफल होने में आज सन्देह था क्योंकि परीक्षा के दिनों वह बुखार से जल रहा था। माता-पिता का दिल रखने के लिए वह परीक्षा भवन में जाता रहा वरना इस वर्ष तो उसे दाल में कुछ काला दिखाई देता था क्योंकि इस पूरे वर्ष में, शरीर अस्वस्थ होने के कारण वह केवल दो-तीन माह कालेज जा सका। इस दशा में भी वह अपने माता-पिता का दिल नहीं तोड़ना चाहता था, उसे इस बात का पूरा ज्ञान था कि उन्होंने कितने दु:ख-दर्द सह-कर उसे इन्टर तक पढ़ाया और शिवप्रसाद एक साधारण दुकानदार होने पर भी घर का सारा बोझ अकेले अपने कन्धों पर लिए हुए था। एक निर्धन पिता की आधी उम्र तो निर्धनता जैसे भयंकर दानव से संघर्ष करते हुए व्यतीत होती है और आधी उम्र वह अपनी झुंझली हुई अखियाँ छतराए हुए बैठता है कि कब उसका बेटा अपने पाँव पर खड़ा होकर अपने साथ-साथ घर की कहानी भी बदल डालेगा। यही सपने देखते-देखते शिवप्रसाद ने अपना यौवन व्यतीत किया। आज बुढ़ापे में भी वह तीन-चार मील पैदल चल कर सुबह से रात के नौ वजे तक दुकान पर बैठा-बैठा मन ही मन, आशा से भरपूर सपनों के महल सजाता और जब नौ बजे जेब में हाथ डालता तो उसे वहाँ कठिनता से पाँच या सात रुपये मिलते थे। वह दुकान बन्द करके अपनी लाठी को धरती पर मार-मार कर धीरे-धीरे अपने झोंपड़े की राह लेता। आज भी वह होंठों पर बनावटी मुस्कान फैला कर घर की ओर चला।

सीता अपने स्वामी को देखकर दौड़ते हुए बाहर की ओर लपकी—आपने कुछ सुना क्या ?

शिवप्रसाद ने अपनी धर्मपत्नी को विश्वास दिलाते हुए कहा—अरे तुम तो ख्वामखाँ व्याकुल हो रही हो, राजन अवश्य सफल होगा।

अपने पति का विश्वासपूर्ण वाक्य सुनकर वह उसके सामने बैठ गई। उसके उदास मुखड़े पर प्रसन्नता की एक लहर दौड़ने लगी। वह मन में परमात्मा से राजन की सफलता के विषय में प्रार्थना करने लगी। उसके मुंह से सहसा

एक बात निकली—राम न करे, यदि राजन इस परीक्षा में असफल रहा तो क्या होगा।

छी ! छी !······तुम्हारे मुंह से इस शुभ दिन पर यह अशुभ शब्द क्यों निकला।

शिवप्रसाद के सिर पर मानों किसी ने एक मन का पत्थर मारा हो। उसका शरीर सिर से पाँव तक कांप उठा। कुछ देर तक कमरे में मौन छा गया।

यदि कोई ऐसी-वैसी बात हो भी तो क्या हुआ। इसमें राजन का कोई दोष नहीं है। वह बेचारा तो इस वर्ष में छ:-सात माह बीमार था। "उसने क्षण भर रुक कर अपनी बात आगे बढ़ाई—"सीता मेरा मन कहता है कि राजन अवश्य शुभ संदेश लेकर ही लौटेगा।

मेरे मन में भी यही बात है, किन्तु न जाने आज क्यों वहम सा उत्पन्न हुआ है।

शिवप्रसाद ने जेब से अधजली बीड़ी निकालते हुए कहा—यह तो तुम्हारा बचपन का स्वभाव है।

सीता की प्यारी मुस्कान बात मे बदल गई—आपने मुझे कितनी बार बचपन में गोद ले लिया है। बचपन में न सही, तुम्हारा यौवन धरती पर कम, मेरी गोद में अधिक पला है। तुम शायद भूल गई हो, पर मैं कैसे भूलूं कि तुभ इतनी छोटी इस घर में आई हो कि पूरे एक माह मैंने तुम्हें साड़ी पहननी सिखाई है।

सीता की झुकी हुई पलकों में वह बारह वर्ष का शिवप्रसाद अपनी नौ वर्ष की सीता के संग खेलते हुए टहलने लगा। सहसा वह गाड़ी का हॉर्न सुन-कर चौंक के खिड़की से झांकने लगी।

राजन हर रोज़ की तरह सिर झुका कर सड़क पर गाड़ी से उतरा।

"राजन आ गया।"—सीता दरवाज़े की ओर लपकी।

शिवप्रसाद मुस्कराते हुए दिल थामे, सिर पकड़कर बैठ गया।

राजन खिलते हुए कमरे में आकर अपने पिता के चरण छूने लगा। शिवप्रसाद ने उसे पैरों से उठाकर सीने से लगाया और दोनों फटी-फटी आंखों से सीता के बहते हुए आँसू देखकर एक ही आवाज में कहने लगे—अरे तुम क्यों रो रही हो।

सीता के आंखों की बहती हुई धारा रुकने का नाम ही नहीं लेती थी। राजन अपनी मां के समीप आया और उसकी पलकों से आंसू पोंछते हुए कहने लगा—तुम्हें क्या हुआ मां, कुछ तो कहो।

बेटा मुझे विश्वास ही नहीं होता है कि तुम डाक्टर बन गए हो। क्या तुम सचमुच सफल हुए।

राजन ने भी भावुक स्वर में कहा—माँ क्या तुम्हें इतनी खुशी हुई कि आँखों से मोती फिसल गए। शिवप्रसाद ने सुख का साँस लेते हुए बीड़ी सुलगाई—बेटा, इन आँसुओं को तुम औरत का साया ही समझो।

राजन ने माँ को पिताजी के पास खींचते हुए कहा—वह कैसे पिताजी?

एक औरत अपने आँसुओं को आभूषण बनाकर हर मोड पर पहन लेती है। प्यार किसी पर आए तो रोती है, अपनी विवशता प्रकट करनी हो तो रोती है यदि उसे दुःख सताए तो रोती है। अब देखो न तुम्हारी माँ को प्रसन्नता हुई तो रोने लगी। हम पुरुषों का क्या…हमें दुःख हो तो पीते हैं। प्रसन्नता हो तो भी वैसे ही…। यदि मैं भी आज रो सकता तो तुम भी मुझे कहते कि पिताजी को मेरी चिन्ता थी।

राजन ने अपने पिता की ओर मुड़ कर देखा—पिताजी, यदि मेरी चिन्ता आपको नहीं होगी तो फिर किसे होगी…। आज मैं जो कुछ भी हूँ, यह सब आपके आशीर्वाद का फल है।—यह कहते-कहते उसने अपना शीश उन चरणों पर रख दिया जिन्हें पकड़ते-पकड़ते राजन ने अपने जीवन के पच्चीस वर्ष बिताए। उसके सिर पर एक नहीं, बल्कि दो हाथ थे। ऐसा लग रहा था जैसे शिव और शक्ति अपने बेटे को जीवन की नैया पार करने के लिए आशीर्वाद दे रहे थे।

इतने में एक कुंवारी लड़की वहाँ दौड़ती हुई चली आई! राजन ने भी देखते ही उसे अपने सीने से लगा लिया।

राजन मुँह बनाकर कहने लगा—अब सामने आकर मेरा प्यार आने लगा। ऐसा होता तो दो दिन मामा के पास नहीं रुकती।

सीता ने बीच में बात काटते हुए कहा—आशा बेटी अपने भाई को बधाई दो।

आशा ने सन्देह पूर्वक अपनी माँ की ओर देखा, शिवप्रसाद ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा—बेटी राजन परीक्षा में सफल हुआ है।

आशा को जैसे विश्वास ही नहीं हुआ और उसने अपने भाई का माथा एक ही बार नहीं बल्कि बार-बार चूम लिया। उसके मन की तमन्ना गले से आगे चल कर मुँह में बन्द रही। वह उदास होकर जीभ हिलाने लगी। आज वह भी प्रत्येक व्यक्ति की तरह अपने मन की प्रसन्नता शब्दों में बदल देती पर वह एक पक्षी के समान बोल बोलती रही। उसकी बधाई के दो शब्द मन से निकल कर नयनों में नीर बनकर बह निकले। प्रेम की मदिरा में डूबी हुई

यह दृष्टि एक भाई को वहन के अनुराग का अनुमान लगाने में सहायक सिद्ध हुई।

राजन ने अपनी वहन आशा का कन्धा थपथपाते हुए कहा—मेरी नादान वहन, तुम इस शुभ दिन पर रो रही हो। पगली भगवान ने तुम्हारी सुन ली। वरना इस वर्ष तो मेरे सफल होने की आशा ही किसे थी।

आशा का रंग-रूप इतना सुन्दर था कि कठोर से कठोर व्यक्ति भी उसके सामने मोम की तरह पिघल जाता। चाँद के समान यह मुखड़ा। आँखें जैसे जलते हुए दो दीप···इसके अतिरिक्त सूर्य देवता जैसी बुद्धि···ऐसा प्रतीत होता था जैसे परमात्मा ने इसे स्वय अपने हाथों कोई पवित्र कार्य करने के लिए इस धरती पर भेजा हो। आशा की सुन्दरता निस्सन्देह प्रशंसा तुल्य थी। पर जव भी कोई उसके साथ बात करके अपनी बात का उत्तर चाहता था तो आशा आ···आ···आ के सिवाय कुछ नहीं कह पाती थी। उसके पास बोलने की शक्ति नहीं थी। वह लाख बार चाहने पर भी अपने घर वालों का दिल नहीं बहला सकती थी, जिन पर उदासी के पर्दे छाए हुए थे। काश उस रात वह भी अपने माता-पिता के पास होती तो वह दुर्घटना आशा को गूंगी नहीं बनाती। आज वह भी हर एक के समान बोल पाती। जब से वह यौवन का श्रृंगार किए हुए जीवन के स्वर्ण काल में चलने लगी है, तव से माता-पिता के तन में एक विचित्र प्रकार की कंपन-सी प्रकट हुई है, शिवप्रसाद तो मन की बात मन में ही दबा लेता है परन्तु सीता तो बहुधा इन्हीं विचारों में डूबी रहती है कि कहीं उसकी आशा पर तानों का पहाड़ न टूट पड़े। उसकी फूल-सी मासूम बच्ची को भाग्य की ठोकर का दुःख सहते-सहते आँसू न बहाने पड़ें। जब से केशवदास ने रिश्ता पक्का करके तोड़ दिया तब से सीता के मन में उसके कहे हुए शब्द नासूर बन कर रह गए। शिवप्रसाद ने अपनी पगड़ी भी उतार कर उस निर्दय के पैरों पर रख दी। आदर-सत्कार देने के बदले केशवदास ने कहा था—मुझे क्षमा कीजिए हमारे घर में पशु-पक्षियों की कमी नहीं है जो कि एक और पशु को घर ले जाकर रस्सी से बाँध लूं। राम !···राम ! सीता को पूर्ण रूप से इस बात का ज्ञान था कि यदि आशा को कोई अपना भी लेगा तो अवश्य अपनी जूती की ठोकर में रखेगा। वह सदा अपने पति से यही कहती थी कि मेरे आभूषण तथा मकान को बेच डालिए क्योंकि हमें दामाद पैसे देकर खरीदना पड़ेगा। परन्तु साथ ही उसे राजन का विचार आता था कि आशा का भाई शायद कुछ कर सके क्योंकि राजन को अपनी वहन के भाग्य पर अटल विश्वास था। तभी तो वह अपनी माँ को ठाठ से कहता था—माँ···तुम इस व्यर्थ के वाद-विवाद से कब मुक्त

हो जाओगी। तुम देखना कि आशा के भाग्य में सूर्य जैसा तेजवान वर होगा।

माँ अपने बेटे को इस संसार की रीति समझाते हुए बोलती थी—बेटा आजकल के रंगरूठ पढ़ी-लिखी लड़कियों में अवगुण निकालते हैं। हमारी आशा तो अनपढ़ है। संसार में हर कमी पूरी हो सकती है, पर उसके लिए धन चाहिए जो हमारे पास है नहीं।

माँ तुम बेकार में चिन्तित होती हो। मैं आशा का रिश्ता उस घर में तय कर लूंगा जहाँ एक मानव को भगवान का रूप मानते होंगे, पैसे की चाबी से चलने वाली मशीन नहीं। जो व्यक्ति मनुष्य से अधिक मूल्यवान धन को समझते हैं, वह हमारे योग्य नहीं हैं। राजन के मन में यह बात बचपन से पहाड़ की तरह अटल थी कि जहाँ दौलत है, वहाँ के मनुष्य मानवता शब्द को पहचानने से इन्कार करते हैं। कभी कभी वह यह बात सोचकर अपने मन को ढाढस देता कि आशा जन्म से गूंगी नहीं है। इसके बोलने की शक्ति लौट सकती है। अब तो वह डाक्टर बन चुका था। मुंह पर तो सबकी बधाई का हँसते-हँसते उत्तर देता रह पर उसके मन में उसकी सफलता पूर्ण रूप से तब निरीक्षण करती जब वह आशा के हाथ पीले करता। उसे अपने हाथों डोली में बिठाकर विदा करता। यह सपने तो वह पाँच वर्षों से देखता आया था किन्तु वास्तविकता केवल यह थी कि घर के हर दुःख पर आज के दिन प्रसन्नता मरहम कर रही थी। सीता के मन के घाव तो नहीं भरे किन्तु फिर भी बेटे की सफलता को अनुभव करके दर्द कम होने लगा था।

जब भी कभी कोई बच्चा किसी भी कार्य में सफल रहता है तो उसके माता-पिता का मन बाग-बाग हो जाता है। गाँव के सभी छोटे-बड़े राजन को बधाई देने के लिए चले आए। आज सीता नई साड़ी पहन कर हर एक की बात का उत्तर एक मस्त मुस्कान से दे रही थी। शिवप्रसाद अपने बेटे के पास बैठ कर उसके मित्रों से हँसी-मज़ाक की बातें सुनता था। सहसा वातावरण में परिवर्तन सा आने लगा जब कि हर कोई शिवप्रसाद के भतीजे की बात सुनने लगा।

राजन······तुम्हारे पिता ने बचपन से अनेक कष्ट उठाये हैं। तू इसकी इतनी सेवा करना कि यह पिछले दिन भूल जाएगा।

राजन ने उसकी बात का स्वागत एक बनावटी मुस्कान से किया—

उसके साथ ही एक पड़ोसी की आवाज़ सुनाई दी—देखा शिवप्रसाद ! राजन अब डाक्टर बन गया। अब तुझे कोई भी चिन्ता नहीं है, तनिक बेटे की भी कमाई का आनन्द लो।

शिवप्रसाद ने उसकी बात अनसुनी करते हुए अपने भतीजे से कहा—द्वारिका बेटा, संसार में दुःख-सुख से ही तो मनुष्य किसी को कुछ देकर बहुत कुछ ले सकता है। कहने को तो केवल ईश्वर ही स्मरण रहता है।

हर प्रकार की बातें इस घर को सुननी पड़ीं। किसी के ताने किसी की बधाई। क्योंकि मनुष्य की दुर्बलता लाख छिपाए भी नहीं छिपती। वह तो कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो कि दूसरों की खुशी को देखकर जला नहीं करते इस गाँव में केवल राजन ही इतना पढ़ा-लिखा था।

सब बातें शिवप्रसाद ने चुपचाप सुन ली पर मंगल चाचा की बात कुछ टेढ़ी थी—शिवप्रसाद ! चलो भगवान ने तुम्हारी सुन ली। तुम्हारे बदले तो हम सबको दुःख होता था जब तुम इतनी वृद्ध अवस्था में भी सवेरे से शाम तक दुकान जाते थे। अब तुम्हें क्या पड़ी है, दुकान जाने की। इतना कष्ट······ राम ! राम ! डाक्टर यदि चाहे तो हजारों रुपया कमा सकता है। अब तुम्हें कोई चिन्ता नहीं।

शिवप्रसाद ने राजन के कन्धे पर हाथ फेरते हुए कहा—अभी तो यह कुछ भी नहीं हुआ। मैं इसे बहुत बड़ा डाक्टर बनाऊँगा। जब तक मैं जीवित हूँ, राजन एक पंछी की तरह स्वतंत्र है। मंगल चाचा ! वह बच्चे बड़े भाग्यशाली होते हैं जिनके सिर पर माता-पिता का साया बहुत देर तक पर रहता है। मेरी ही बात ले लो। यदि मेरे माता-पिता मुझे इस संसार में अनाथ बनाकर नहीं छोड़ते तो तुम लोग भी मुझसे अन्याय करने का साहस नहीं करते।

यह बात बढ़ते-बढ़ते फिर एक झगड़े का रूप धारण करती यदि सीता बीच में आकर बात न काटती।

अतिथि कब के चले गए परन्तु शिवप्रसाद का क्रोध अभी भी शान्त नहीं हुआ। वह बार-बार मंगलू चाचा की बातें दोहराता रहा। राजन यह जानता था कि उसके पिता का क्रोधित होना ठीक नहीं क्योंकि वह हाई-ब्लड-प्रेशर का रोगी था। इसीलिए उसने अपने पिता से हँसते हुए कहा—पिताजी आप व्याकुल क्यों होते हैं। यह तो मंगलू चाचा प्रत्येक व्यक्ति से ऐसे ही बातें करता है और फिर चाचा ही तो है।

बेटा, तू इसकी नजर में क्यों उतर गया। अपने भी तो चार हट्टे-कट्टे बेटे थे इसके। मैं उनका नाम कभी लेता हूँ क्या ?

शिवप्रसाद का क्रोध धीरे-धीरे शान्त हो गया और रात अपनी काली चादर ओढ़े हुए चली आई। रात बीतने के साथ-साथ बात भी बीत गई और सवेरे सीता नींद से जाग कर कुँए पर चली गई। वहाँ पर भिन्न-भिन्न चरित्र की स्त्रियाँ आती थीं। हाथ-मुँह धोने का तो वहाँ बहाना होता था, वह तो

केवल एक-दूसरे को अपनी-अपनी राम कहानी सुनाने में समय नष्ट करती थीं। परन्तु सीता को अपने काम से काम था, न तो उसे अधिक बातें सुनने में कोई आनन्द आता था, न ही वह स्वय किसी की बात ले बैठती थी। प्रत्येक स्त्री उसे मनहूस कहकर पुकारती थी। वह हाथ-मुंह धोकर पानी का बर्तन कन्धे पर रखकर घर की ओर चली आई। पीछे से किसी ने उसे पुकारा—सीता चाची······।

सीता ने झट से अशोक की आवाज़ पहचान ली और रुक गई।

अशोक जीप रोकते हुए कहने लगा—"घर में सब कुशल से हैं न।"

हाँ बेटा ! सब अच्छे हैं, तू कब आया रे !

चाची तुमने ही तो कहा था कि मेरे राजन का परिणाम निकलने वाला है।

सीता के मुँह से सफलता का संदेश सुनकर अशोक बाग़-बाग़ हो गया।

चलो बेटा घर नहीं चलोगे क्या ?

हाँ चाची···मैं भी तुम्हारे साथ ही चलता हूं। घर पहुँचकर सीता रसोई-घर में आई और अशोक भी उसके पीछे हो लिया। इन दोनों ने आपस में जी भर कर बातें कीं। अन्त में सीता ने आशा को बुला कर कहा—जा तू अपने भाई को जगा और उसे कह कि अशोक आया है।

राजन सिर खुजलाते हुए भाग के नीचे आया और अपने मित्र अशोक से लिपट गया।

अशोक तू तो सचमुच ही आ गया। मैं समझ बैठा था कि तुम शहर जाकर हम सबको भूल गए हो।

अरे नादान यह कैसे हो सकता है कि तुम डाक्टर बनो और मैं न आऊँ।

दोनों अलग होते हुए माँ के पास आकर बैठ गए। बातों-बातों में ही सीता ने बड़े चाव से यह बात कह डाली—बेटा तुम दोनो की भगवान ने सुन ली। राजन डॉक्टर बन गया और तुम्हें सेना में जाने का शौक था तू तो सैनिक बन गया।

राजन ने उसे रोकते हुए कहा—अरे माँ अशोक अब कोई साधारण व्यक्ति नहीं है बल्कि सेना में कैप्टिन के पद पर नियुक्त हुआ है।

कुछ देर तक कमरे में मौन रहा। फिर राजन ने बात आरम्भ की—मैं तो यह पूछना भूल ही गया ही गया कि तुमने कितने दिन की छुट्टी ली है।

अशोक ने तनिक ऊँची आवाज में कहा—पूरे दस दिन की माँग ली थीं पर केवल एक सप्ताह की मिली।

"बस······?" राजन को पूरा विश्वास था कि अशोक पूरे एक माह के

लिए आ जाएगा।

"दो वर्ष के पश्चात् घर आए हो, उस पर भी केवल एक सप्ताह की छुट्टी लेकर ?"

अशोक ने हँसते हुए कहा—मेरा बस चलता तो मैं एक के बदले दो माह के लिए घर आता पर क्या करूं नौकरी कोई और फरिश्ता है जिसकी भेंट अभी तुमसे नहीं हुई है।

समय को गनीमत जानकर राजन ने एक पल भी अशोक के बिना नहीं बिताया।

पूरे छः दिन बीत गए और अशोक सबसे अनुमति लेकर शहर की ओर चल दिया। अस्पताल तक तो राजन भी उसके साथ चला आया, वहाँ दोनों एक दूसरे से गले मिलकर अलग हुए। राजन अपने अस्पताल की ओर बढ़ा। वहाँ वह अधिक देर तक नहीं ठहरा क्योंकि उसके ग्रुप का आफिसर नहीं आया था। इसी कारण वह सीधा गाड़ी में बैठकर घर की ओर चल दिया।

घर पहुँचकर उसने माँ से कुछ कहे बिना ही ऊपर वाले कमरे की चाबी आशा से ले ली और ऊपर जाकर कपड़े बदलने लगा। अभी उसने कोट के बटन खोले भी नहीं थे कि माँ की कोमल आवाज़ सुनकर वह पलट कर देखने लगा।

सीता ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—तुम्हें पिताजी का खाना लेकर दुकान पर जाना पड़ेगा।

क्यों, वह आज अपने साथ खाना क्यों नहीं ले गये हैं ?

सीता व्याकुल मुद्रा में कहने लगी—ऐसे ही... राजन ने झट से बात को पकड़ लिया और कहने लगा—क्या आज तुमने फिर पिताजी से झगड़ा किया ? यह कौन-सी नई बात है, इस घर में झगड़े तो होते ही रहेंगे जब तक तुम्हें नौकरी नहीं मिलेगी।

राजन ने प्रश्नसूचक दृष्टि से माँ की ओर देखते हुए कहा—मैं कुछ समझा नहीं।

तुम्हीं कहो बेटा, मैं कब तक दर्शन काका के घर से आटा उधार लाती रहूंगी। बस इतनी सी बात कह दी, उसी पर वह बिगड़ बैठे। तुम तो जानते ही हो उनकी बातें झगड़े से आरम्भ होती हैं।

राजन ने कोमल स्वर में कहा—"इसमें उनका दोष नहीं है माँ। वह भी क्या कर सकते हैं। पास में पैसा होता तो बात कुछ और थी। तुम्हें क्या पता है कि पिताजी कितनी कठिनता से हम तीनों का पेट पालते हैं।" राजन थोड़ी देर तक सिर नीचे करके कुछ सोचने लगा।

बेटा तुम्हें कब नौकरी मिलेगी……। तुम्हें नौकरी मिलती तो सब ठीक हो जाता।

राजन ने सिर उठाते हुए कहा—बस अब तो कुछ ही दिनों की बात है।

सीता ने शान्त भाव में कहा—पहले तो मैं भी पागल हूँ। मुझे उनसे मुंह नहीं लगाना चाहिए था। राजन ने मुस्कराने की चेष्टा करते हुए कहा—परीक्षा भवन से बाहर आने पर मुझे भी प्रश्न का उत्तर याद आता था। तुम पहले पिताजी का दिल दुखाती हो, फिर जाकर कहीं तुम्हें अपनी भूल का अनुभव होता है। राजन बेटा, तू भी मेरे पिता से कम नहीं। बिल्कुल इसी तरह वह मुझे भाषण दिया करता था।

यह तो भैंस के आगे बीन बजाने वाली बात है……खैर चलो तुम खाना तैयार रखो। मैं भी आता हूँ।

सीता ने अपने पति के लिए डिब्बे में खाना रखा और कहने लगी—यह बोतल भी लेते जाओ, इसमें दही है।

राजन बुत की तरह खड़ा उसकी ओर देखता रहा।

क्या देखता है रे? जा उन्हें भूख लगी होगी। राजन ने अपने मन की भावना प्रकट करते हुए कहा—मेरे विचार में तुम रामायण की सीता हो। तुम जैसी औरत शायद ही इस संसार में कोई और होगी। वह बहुत कुछ कहते हुए सड़क पर आ गया। राह में चलते-चलते वह अपने घर की परिस्थितियों पर विचार करने लगा। उसके सामने उसका घर एक खुली पुस्तक के समान पड़ा हुआ था। उसे इस बात का पूर्ण रूप से ज्ञान था कि सीता और उसके पति का झगड़ा कई वर्षों से चलता आया है और इन दोनों में किसी का भी दोष नहीं है। वास्तव में निर्धनता ने दोनों को गोद ले लिया था।

सहसा किसी की आवाज़ सुनकर वह चौंक गया……राजन……वहाँ कहाँ जा रहे हो।

वह पीछे मुड़कर दुकान की ओर चला आया सोचते-सोचते वह अनजाने में अपने कदम दुकान से आगे ले गया था। उसने दुकान पर अपने पिता को न देखते हुए बिरजू से पूछा—बिरजू भैया, मेरे पिताजी कहाँ गए हैं?

"तुम खाना ले आए क्या?"

"हाँ भैया!"

"तो इधर लाओ……मैं खाऊंगा, वह तो घर वापिस चले गए।"

'क्यों?"

उनकी तबीयत थोड़ी खराब थी……सिर में थोड़ा दर्द था।

राजन ने विरजू के हाथ में डिब्बा देते हुए कहा—"तुमने घर में खाना नहीं खाया है क्या ?"

"क्यों नहीं ?"

तभी तो बैल की तरह पेट बाहर निकल आया है। वह विरजू की दुकान पर बैठकर कहने लगा—कहीं पिताजी को आज भी हाई ब्लडप्रेशर तो नहीं हुआ है।

"नहीं......।" विरजू ने रोटी का एक कौर मुंह में डालते हुए कहा—"चिन्ता की कोई बात नहीं है। राजन थोड़ी देर तक विचार करने के पश्चात् इस निर्णय पर पहुँचा कि उसे दुकान बन्द रख कर घर जाना चाहिए। वह चुपचाप वहाँ से उठा और दुकान में ताला लगा कर विरजू से कहने लगा—भैया मैं घर से होकर आता हूं। पता नहीं पिताजी ने दवाई भी खाई होगी या नहीं।

अरे तुम्हारे पिताजी तो सत्य ही कहते थे कि राजन दुकान नहीं चला सकता है।

राजन ने उसकी बात अनसुनी कर दी और घर की ओर राह ली।

घर में आकर राजन ने माँ से मलिन भाव से पूछा—पिताजी आज अस्वस्थ हैं क्या ?

सीता ने अपनी व्याकुलता प्रकट करते हुए कहा—तुम्हारे पिताजी को सिर में बहुत चोट आई है। मुझसे कुछ बोलते ही नहीं है, केवल तुझे ढूंढ़ रहे थे। राजन का चेहरा मुरझा सा गया। वह अपने पिताजी के कमरे में आकर गुमसुम सा बैठ गया—क्या बात है पिताजी......? आपके सिर में इतनी चोट कैसे लगी। विरजू ने मुझसे यह सब क्यों छुपाया ? कुछ नहीं बेटा......चिन्ता की कोई बात नहीं है। मैं दुकान की सीढ़ियों से गिर गया......ज़रा तू मेरी दाईं टाँग तो दबा दे।

राजन चुपचाप सिर झुकाए टाँगें दबाने लगा। उसकी आँखों में आँसू भर आए। उससे रहा न गया—पिताजी, आपने शायद हमें पागल समझ रखा है। हमारी दुकान पर ऐसी कौन सी सीढ़ियां हैं जहाँ से आप गिर गए हों। आप हमसे झूठ बोलते हैं।

मैंने अपने दुकान की सीढ़ियों की बात नहीं कहीं। अरे मैं तो बिरजू की दुकान से गिर पड़ा।

"कैसे ?"

शिवप्रसाद ने तनिक ऊंची आवाज़ में कहा—तुम जाकर दुकान पर बैठो। वहाँ तुम्हारे नाम पर कोई पत्र आया है, वह भी देख लेना।

राजन चुपचाप उठकर चलने लगा।

"और सुनो, मैंने एक ग्राहक का कपड़ा बाँध कर रखा है; उससे बीस रुपये लेकर कपड़ा दे देना। रास्ते में बाईं ओर से चलना। इस समय बहुत भीड़ होती है।"

सीता ने बात काटते हुए कहा—आप इसे बच्चों की तरह सिखाते हैं। क्या इसमें इतनी भी बुद्धि नहीं है।

शिवप्रसाद ने आशा सहारा लेते हुए कहा—यदि राजन सात बच्चों का पिता भी बन जाए, फिर भी मेरी नजर में बच्चा ही है। मुझे भगवान ने धन-सम्पत्ति के बदले में राजन ही तो दिया है। मैं इसे उम्र भर सिखाता रहूँगा।

: २ :

"नमस्ते मास्टर जी!"

"नमस्ते बेटा! आजकल क्या कर रहे हो?"

"जी मैंने एम०बी०बी०एस० पास किया है"—राजन ने अपने अध्यापक के कदम से कदम मिलाते हुए पूछा—आप कहाँ जा रहे हैं?

"बेटा मैं तुम्हारे ही घर आ रहा था। अब तुम्हारे पिताजी का क्या हाल है?"

आपको कैसे मालूम है कि……?

बेटा मैंने ही उन्हें अस्पताल पहुंचाया था—यह कर कर हरीश चाचा ने एक लम्बी आह भरते हुए कहा—यह घाव तो प्रत्येक निर्धन को इस संसार में चुपचाप सहने पड़ते हैं।

मास्टर जी मैं कुछ समझा नहीं।

अरे बेटा तुम्हारे पिताजी लाल कोठी में पैसे माँगने के लिए गए थे। वहाँ, पता नहीं किस बात पर उस दरवान ने तुम्हारे पिताजी के साथ झगड़ा किया। तुम्हारे पिताजी पर हाथ भी उठाया। यदि मैं वहाँ नहीं होता तो राम जाने क्या हो जाता। राजन ने मास्टरजी से विदा ली और स्वयं तेज़-तेज़ कदम उठाकर दाँत पीसते हुए आगे बढ़ा। कुछ सोचकर उसने अपनी दुकान की ओर राह ली। दुकान के पास पहुंचकर वह बिरजू से गम्भीर मुद्रा में पूछने लगा—बिरजू भैया पिताजी को इतनी चोट लगी है और तुमने मुझे बताया तक नहीं। मुझे तुमसे यह आशा नहीं थी।

बिरजू ने नथुने फुलाते हुए कहा—तुम्हारे पिताजी भी एक विचित्र मनुष्य हैं। मुझे यह सब कहने से मना किया और स्वयं तुमसे सब कुछ कह दिया। राजन ने बात बदलते हुए कहा—बिरजू भैया, इस लाल कोठी का मालिक कौन है?

बिरजू ने बड़े ठाठ से कहा—क्या तुमने उसका नाम नहीं सुना है। अरे वह तो इस नगरी के माने हुए रईस हैं।—लाला हुक्मचन्द।

राजन उस लाल कोठी की ऊँचाई को देखते हुए कहने लगा—नाम तो कई बार सुना है परन्तु उन्हें देखा नहीं हैं।

अरे यहाँ का बच्चा-बच्चा उन्हें जानता है।

राजन ने गुस्सा पीते हुए कहा—मैंने भी उनकी गाड़ी देखी है परन्तु उनका सुन्दर मुखड़ा देखने का अवसर कभी भी नहीं मिला है क्योंकि उनकी गाड़ी के शीशे भी विचित्र ढंग के हैं। भीतर कौन बैठा हुआ है, यह तो दिखाई ही नहीं देता है।—बिरजू भैया।

"का है रे……?"

क्या हम इन्सान नहीं हैं? क्या हमारी रगों में खून के बदले पानी भरा है।

बिरजू की खोपड़ी में यह बात बैठी ही नहीं। वह कहने लगा—राजन, तू गुस्सा थूक दे। मुझे डर है कि कहीं वह रपट न लिखवा दे। मैंने तुम्हारे पिताजी से उसी समय कहा था कि "जाओ और जालिमसिंह से माफी माँग लो।" पर वह ठहरे गाँव के सरपंच। मेरा कहा माना होता तो यह सब भुगतना न पड़ता।

: ३ :

राजन पर गुस्से का भूत बुरी तरह सवार था। वह टकटकी लगाकर उस दरबान को देखने लगा। उसकी क्रोध के मारे जलती हुई आँखों से यह प्रकट होता था कि वह लालाजी से आज पैसे लेकर ही रहेगा। फाटक के भीतर आकर वह जालिमसिंह से कुछ कहे बिना ही लान से गुजर कर पौड़ियों पर चढ़ने लगा। जालिमसिंह की आवाज में कठोरता आ गई—अरे बहरे हो क्या……रुक जाओ, तुम्हें कहाँ जाना है?

राजन उसकी बात सुनकर पलटा और जालिमसिंह के सामने खड़ा हो गया—क्या आप मुझसे कुछ कह रहे थे?

जालिमसिंह ने अपनी बन्दूक कन्धे पर रखते हुए कहा—नहीं तो क्या तुम्हारे बाप से कहता था। मैं यहाँ किस लिए खड़ा हूँ।

राजन ने बड़ी नम्रता से कहा—तुम्हें गलतफहमी हो गई है। मैं कोई डाकू नहीं बल्कि एक शरीफ आदमी हूँ। मुझे लालाजी से मिलना है।

तुम जैसे फालतू आदमियों के लिए लालाजी के पास समय नहीं है। जाओ मेरा दिमाग मत खाओ।

राजन ने जम्हाई लेते हुए कहा—मेरी बात तुम्हारी समझ से बाहर है। खैर वापिस आने पर सब समझा दूंगा। यह कह कर वह चुपचाप कोठी की ओर बढ़ा।

जालिमसिंह क्रोध से लाल-पीला होते हुए चिल्लाया--ऐ हरामी के बच्चे, क्या तुम्हें मेरे हाथ से मरना है।

राजन ने पीछे मुड़कर थरथराते हुए कहा—"ना बाबा, ना। मैं स्वयं ही चला जाऊँगा।" सामने आते ही वह उस पर शेर की तरह झपट पड़ा। वह जालिमसिंह को बुरी तरह पीटने लगा--साले मैं देखता था कि तुमने मेरे पिताजी के साथ कैसा वर्ताव किया होगा······। आज मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा।

बन्दूक के साथ-साथ एक दाँत भी नीचे गिर गया। जालिमसिंह केवल चिल्लाता रहा। कई राह चलते मुसाफिर भी वहाँ एकत्र हो गए।

सहसा एक काली गाड़ी फाटक के भीतर आई।

राजन ने ज़ालिमसिंह का गला छोड़ दिया।

एक नवयुवक लगभग सत्ताईस वर्ष का गाड़ी से बाहर आया। प्रत्येक के हाथ उस व्यक्ति के सामने जुड़ गए। सब एक ओर रह गए।

उस व्यक्ति ने बन्दूक उठाकर ज़ालिमसिंह के हाथों में देते हुए कहा—यह क्या हो रहा है?

ज़ालिमसिंह ने अपने आपको सम्भालते हुए कहा—छोटे मालिक यह गुण्डा मुझसे पूँछे बिना ही कोठी में प्रवेश कर रहा था। मैंने इसे रोका पर मेरी एक न सुनने पर यह उल्टा मुझपर ही झपट पड़ा।

राजन ने दाँत पीसते हुए बीच में कहा--श्याम बाबू, अपने इन पालतू कुत्तों की ज़ुबान बंद रखा करो। यह आवश्यकता से अधिक भौंकते हैं।

श्याम बाबू ने तनिक ऊंची आवाज़ में कहा--आपको हमारे आदमी पर हाथ उठाने का साहस कैसे हुआ।

राजन ने एक फीकी मुस्कान का सहारा लेते हुए कहा--साहस कोई रुपयों से भरी तिजोरों की चाबी नहीं है जो सिर्फ धनवान ही के पास होगी। हम निर्धनों को तो सबसे अधिक इज्ज़त प्यारी होती है। कोई इससे खिलवाड़ करना चाहे, यह हमसे सहन नहीं होगा।

श्याम ने राजन की ओर घूरकर देखते हुए कहा--"जो कुछ कहना है, साफ-साफ कहो।" इतने में पुलिस के कुछ कर्मचारी वहाँ आ पहुँचे और श्याम बाबू को प्रणाम करके राजन को घसीट कर उसके पास ले आए।

राजन ने हँसते हुए ज़ालिम सिंह से कहा—भई रिपोर्ट लिखाओ।

ज़ालिमसिंह ने थानेदार के सामने अपनी सफाई पेश की। उसके प्रत्येक शब्द में झूठ था। फिर भी वहाँ पर हर एक ने उसकी हाँ में हाँ मिलाई। श्याम चुपचाप यह सब देखता रहा।

राजन कुछ कदम चलकर जालिमसिंह के पास खड़ा हो गया--

यदि तुमने मेरे पिता के बदले में मुझे पीटा होता तो मैं कुछ न कहता। वह बेचारा लालाजी से पैसे माँगने आया था। उसे क्या पता था कि इस हवेली के नियम कुछ और ही हैं। तुम लोगों के लिए यह शान की बात होगी कि जो इस हवेली में आकर सिर झुका के आप लोगों से बात करे, उसका सिर कुचल डालो। खैर......वह पुलिस कर्मचारियों के साथ थाने की ओर बढ़ा। श्याम ने एक बार जालिमसिंह की ओर घूर कर देखा और उसे हवेली में आने का संकेत किया।

यहाँ से विरजू ने बड़ी कठिनता से पुलिस के थानेदार को राजी करके राजन को छोडने पर विवश किया।

राजन ने बाहर आते ही विरजू के सामने लज्जा से सिर झुकाया......

भैया मैं अति लज्जित हूँ, तुम्हें मेरे कारण इतनी परेशानी उठानी पड़ी। वह कुछ और भी कहता यदि कोई उसे रुकने को न कहता।

विरजू ने श्याम बाबू को देखते ही बड़ी नम्रता से कहा—आपने यहाँ आने का कष्ट क्यों किया? "कोई बात नहीं........."—श्याम ने गाड़ी का दरवाजा खोलते हुए कहा—"चलो भई मुझे भी शिवप्रसाद से मिलना है।

धन्यवाद, मैं स्वयं ही चला जाऊँगा।

विरजू तो गाड़ी में बैठ गया परन्तु राजन पैदल ही दूसरी ओर चल पड़ा। उसके तन-बदन में क्रोध की अग्नि जल रही थी। उसका बस चलता तो वह एक-एक करके उस हवेली के रहने वालों को गोली से उड़ा देता।

घर के द्वार पर पहूँचकर उसके हृदय को एक धक्का सा लगा जब कि उसने वहाँ एक लम्बी गाड़ी देखी। घर के भीतर आकर वह ऊपर वाले कमरे में चला गया।

शिवप्रसाद ने अपने बेटे को देखते ही श्याम बाबू से कहा—यह मेरा बेटा राजन है।

राजन ने जलते हुए हाथ जोड़े और जाकर अपने पिता के पास बैठ गया। श्याम ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा—वैसे मैंने उस दरबान को बहुत डाँटा। आज मेरा जन्म-दिवस था, इसी कारण मेरे पिताजी आप से मिल न सके। वह कुछ देर तक रुक कर धीरे से कहने लगा—पहिले आपने भी बड़ी भूल की जो उसे गालियाँ दे दीं, वह तो उल्टी खोपड़ी का मनुष्य है।

इतने में सीता दूध लेके चली आई और श्याम को तौलिया देते हुए कहने लगी—लो बेटा, दूध पीलो,—श्याम ने बात काटते हुए कहा—जी नहीं, मैं अभी दूध पीके आया हूँ।

राजन के स्वर में कटु व्यंग्य था। उसकी तेज आवाज सुनकर शिवप्रसाद

ने उसकी बात अनसुनी कर दी, पर राजन की कही हुई बात सबको सुनाई दी—सेठ जी ! यह गाय का असली दूध है। मेरी माँ का दिल रखने के लिए ही पी लीजिए, श्याम ने चुपचाप दूध का गिलास हाथ में लेते हुए कहा—आपको उस नीच को गालियाँ देने से क्या लाभ हुआ ?

शिवप्रसाद ने पहले बात बदलने की कोशिश की किन्तु श्याम उसका संकेत न भाँप सका। अन्त में उसे वास्तविकता संक्षेप में कहनी पड़ी। उसने अपनी सच्चाई यूँ आरम्भ की।

"जालिमसिंह ने आपसे झूठ बोला है, मैं जब हवेली के फाटक के पास पहुँचा तो वह दरबान मुझसे कहने लगा—जाओ, जाओ कुछ नहीं है।

अरे भई मैं लालाजी से मिलने आया हूँ। मैं कोई भिखारी नहीं हूँ।

इस बात पर वह खिलखिलाकर हँसने लगा—तू लालाजी से मिलेगा।

इतने में दो चार लम्बी-लम्बी गाड़ियाँ शी करके फाटक के भीतर चली गईं। मैंने बड़ी नम्रता से पूछा—क्या आज इनके यहाँ कोई शुभ दिन है ? ऊपर से गाने की आवाज़ सुनाई दी। मैं चुपचाप वहाँ खड़ा रहा। कुछ क्षणों के उपरान्त ही वह आँखें निकालते हुए कहने लगा—ऐ बुड्ढे ! एक बात पूछूँ, जो तुम्हारे लिए कभी-कभी दुकान पर खाना, लेके आती है वह कौन है ?

वह मेरी बेटी है, तुम्हें इन सब बातों से मतलब ?

शिवप्रसाद की आवाज़ में व्याकुलता का धुंआ उड़ने लगा—"श्याम बाबू यह दुनिया कितनी गिरी हुई है।

उसने मुझसे कहा.........मैं कह नहीं सकता हूँ..........खैर छोड़िए। गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या लाभ ?

राजन क्रोध को पीते हुए कहने लगा—पिताजी उसने क्या कहा ? आपको मेरी सौगन्ध है।

श्याम बाबू उसने मुझे सौ का नोट दिखाकर कहा—क्या सौदा इतने में पट जायेगा ? पागल, अपनी बेटी को मेरे मालिक के नज़र कर दो फिर देखना कि लालाजी अवश्य ही तुम्हें अपनी बगल में बिठाकर सम्मान देंगे।

मुझसे रहा न गया। मैंने उसे दुत्कारा और वह मुझ पर बरस पढ़ा।

श्याम बाबू ने बड़े व्याकुल भाव में कहा—मुझे इस बात का बहुत दुःख है। खैर यह सब वह मुझसे कैसे कहता।

राजन ने बीच में बात काटते हुए कहा—मेरे पिताजी भी मेरी ही तरह थोड़ी देर के लिए इस भ्रम में पड़ गए होंगे कि वह किसी मानव से मिलने जा रहे हैं। शायद वह यही बात अपनी कल्पना में लाते हुए फाटक की ओर बढ़े होंगे कि जब मन्दिर में भगवान से मिलने के लिए किसी दरबान से अनुमति

नहीं लेनी पड़ती तो यहां भी प्राकृतिक नियम का पालन होता होगा। श्याम बाबू इन्हें क्या मालूम था कि वहां गाड़ी चलाने वाले से अधिक गाड़ी का मूल्य है। ज़ालिमसिंह ने वही किया जो उसे वातावरण ने सिखाया है।

श्याम ने अपने मुखड़े की उदासीनता को छिपाते हुए कहा—वह नादान है। मैं उसे नौकरी से निकाल दूंगा।

मैं भी आज अपनी मूर्खता के कारण क्षण भर के लिए यह भूल गया था कि आप में तथा हम में बहुत बड़ा अन्तर है। हम दो समय की रोटी की तमन्ना लेकर आप जैसे धनवानों के घर अपनी इज़्ज़त का कफन मांगने जाते हैं और आप असंख्य वर्षों से हम जैसे निर्धनों की इज़्ज़त को लूटते आये हैं। दूसरी ओर आप जैसे मनुष्य भी हैं जिन्हें सब कुछ सामने होकर भी कुछ खाने की चाहत नहीं।

श्याम बाबू ने कुछ कहना चाहा परंतु राजन ने उसकी बात अनसुनी करते हुए अपनी बात आगे बढ़ाई—सेठ जी, यदि धनवान को भगवान ने इसलिए धन दिया है कि वह इससे किसी मासूम की इज़्ज़त का नीलाम करे, किसी निर्धन को खरीद ले या इन कागज़ के नोटों का सहारा लेकर लाखों निर्दोषों की रोटी छीन ले तो वह गीता में कृष्ण के साथ सुदामा का चरित्र बनाकर संसार के सामने नहीं रखता। यदि दौलत से अधिक मानवता का मूल्य नहीं होता तो सत्यवादी हरिश्चन्द्र सब कुछ त्याग करके वन-वन में नहीं भटकते फिरते।

शिवप्रसाद क्रोधित होकर अपने बेटे से कठोर शब्द कहते हुए श्याम बाबू से क्षमा मांगने लगा।

राजन आज चाहने पर भी अपनी आत्मा की भावना को रोक न सका—पिताजी मैं लाला हुक्मचन्द को अच्छी तरह जानता हूँ। उन्हें नित्य एक नई दुल्हन चाहिए। हमारे कालेज की एक लेडी डाक्टर की इज़्ज़त के खरीदार इनके पिताजी ही तो थे। क्या आपने तीन जुलाई का समाचार पत्र नहीं देखा। कब तक यह धरती के देवता हम निर्धनों की इज़्ज़त से खिलवाड़ करते रहेंगे। कौन इन्हें जीवित रहने पर विवश करता है। इन्हें तो जीवित ही कफन ओढ़ कर अपने आपको किसी मज़ार में दफन करना चाहिए। याद रखो सेठ, वह दिन दूर नहीं जबकि प्रत्येक निर्धन की आह तूफान बनकर अपनी बाँहों में आपको सदा के लिए खामोश करेगी······पहले पिता, फिर उसका बेटा—वह कुछ और भी कहता पर श्याम दौड़ते हुए सीढ़ियों से उतर के भाग गया।

शिवप्रसाद अपना सिर पकड़कर अपने बेटे को दुत्कारने लगा—मैं जानता हूं कि लाला हुक्मचन्द पापी है, किन्तु श्याम बाबू देवता हैं। मुझे वह तुमसे

अधिक प्यारा है। वह जब भी कभी मेरी दुकान पर आता है तो कुछ न कुछ सन्तोष देकर जाता है। मुझे तुम्हारी बातें सुनकर आज अत्यन्त दुःख पहुँचा। क्या तुम्हारी पुस्तक में यही लिखा है कि घर में आए हुए अतिथि को इसी प्रकार अपमानित करना चाहिए। छी ! छी ! तू तो गँवारों से भी गया-गुज़रा निकला। यह तुमने आज श्याम बाबू का नहीं बल्कि मेरा अपमान किया है।

राजन ने लज्जित होकर शीश झुकाया और बड़ी अधीरता से कहने लगा—पिताजी, क्षमा कीजिए, पता नहीं मैंने क्रोध में आकर क्या-क्या कह डाला।

शिवप्रसाद बीड़ी सुलगाते हुए कहने लगा—क्या तुम्हारी डाक्टरी में सब सफल रहे ? यह सब भाग्य का खेल है। हर कोई लालबहादुर शास्त्री क्यों नहीं बन पाया। तकदीर के सामने किसी की तदबीर नहीं चलती, मैं तुम्हारा मुँह भी नहीं देखना चाहता, यदि तू मेरा बेटा है तो जा के श्याम बाबू के चरण छू ले। तुम्हें मैं क्या कहूँ कि श्याम बाबू कितना महान् व्यक्ति है।

राजन ने अपने पिता के सामने हाथ जोड़ते हुए कहा—आप शान्त हो जाइए। मैं आपकी आज्ञा का पालन अवश्य करूँगा।

: ४ :

राजन चुपचाप माँ तथा बहिन से कुछ कहे बिना ही घर छोड़कर उस चौड़े रास्ते पर चलने लगा। राह चलते-चलते उसके मन में अनेक विचार उत्पन्न हुए—वह लाल कोठी के भीतर कैसे जायेगा। जालिमसिंह के साथ वह कैसा व्यवहार करेगा। इसके अतिरिक्त यह बात भी उसके मन को गवारा नहीं हुई कि वह श्याम बाबू के चरण छू ले।

सहसा उसके कदम चलते-चलते रुक गए जबकि उसने एक गाड़ी देखी जिसमें से कोई लड़खड़ाते हुए बाहर आया और हाथ हिलाते हुए लाल कोठी की ओर चलने लगा। देखते ही देखते वह सड़क की नाली में गिर गया।

राजन झट से आगे बढ़ा और उसे उठाते हुए कहने लगा—भई तुम कौन हो ?

शराबी ने खोखली आवाज़ में कहा—मैं आसमान का सितारा हूँ और रास्ता भूलने के कारण टूट कर धरती पर गिर पड़ा।

राजन की दृष्टि उस परिचित चेहरे पर रुक गई उसके मुख से एक वेदना भरी चीख निकली—श्याम बाबू आप !

मैं तो हूं ही लेकिन तुम कौन हो ?

मैं एक इन्सान हूँ, चलिए मैं आपको हवेली तक साथ दूँगा।

सो तो देना ही पड़ेगा। पर भैया‥ ‥तुम कुत्ता बनना, घोड़ा बनना, गधा बनना पर इन्सान नहीं, यह बहुत बुरी चीज़ है।

राजन हवेली की पोड़ियों तक श्याम को ले गया। जब वह आगे चल ही नहीं सका तो खोखली भाषा में कहने लगा--अरे धरती के इन्सान मुझे ऊपर अपनी मंज़िल के साए तक पहुँचा तो दो, फिर चले जाना।

राजन के मन में दया उभर आई और अपने कन्धे का सहारा देकर वह श्याम बाबू को उस कमरे तक ले आया जहाँ से एक लाल बत्ती का प्रकाश थोड़ी दूर तक बाहर आ रहा था।

श्याम बाबू ने किसी को आवाज़ दी और कमरे में किसी ने दौड़ते हुए स्विच दबाया।

छोटे मालिक ! आप आ गए—किसी वृद्ध अवस्था के मनुष्य ने उसे अपनी बाहों में पकड़कर पलंग पर लिटा दिया। उसने अपने छोटे मालिक का जूता उतारते हुए राजन की ओर देखा।

राजन ने अपने आपको संभालते हुए शीघ्र ही उस बुड्ढे नौकर का संदेह दूर करते हुए कहा—मैंने इन्हें बाहर से यहाँ तक आने में सहायता की।

यह बात सुनकर उसने जेब से पाँच का एक नोट निकाला और उदास मुद्रा में कहा—धन्यवाद यह लीजिए।

राजन ने इन्कार करते हुए कहा—बूढ़े चाचा ! मेरी जेब में पैसे हैं। वास्तव में मैं श्याम बाबू से मिलने आया था। परन्तु क्या करूँ‥‥यह तो‥‥ खैर मैं कल आ जाऊँगा।—यह कह कर वह श्याम के चेहरे से नज़रें हटाकर भारी कदम डालते हुए चलने लगा।

श्याम जैसे नींद से जागा—अरे भई‥‥‥कल तुम अवश्य आना।

मन में भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार उत्पन्न होते ही राजन को आज शायद जीवन में पहली बार दुःखी बनाने लगे। वह आज रात के अन्धेरे में इस अद्भुत चरित्र की वास्तविकता का अनुमान लगाते-लगाते अपने घर पहुँचा और वहाँ अपने पिताजी को सारा वृतांत सुनाया।

शिवप्रसाद भी बहुत देर तक इस बात पर पछताया। श्याम शराब पीकर नशे में डूबा था किन्तु राजन के मन में उसकी बुरी दशा ने एक प्रकार की सहानुभूति की नींव डाल दी। वह केवल इस भ्रम में टहलता रहा कि एक मनुष्य के अनेक रूप कैसे हो सकते हैं। एक श्याम बाबू वह था जो काली गाड़ी में बैठकर बड़े ठाठ से उसके घर अपना रौबदार मुखड़ा लेके आया वह भी तो एक रूप था उसका, जिसे देखकर राजन ही नहीं बल्कि सारे गाँव वाले एक ओर हट गए थे। दूसरा रूप‥‥‥वही श्याम बाबू, पर अपने आप

से बेखबर। रात को गाड़ी से निकलकर वह अपने आपको लाल कोठी तक न ले जा सका।

अन्त में भावनाओं की लहरों से छुटकारा पाने के लिए उसने दूसरे दिन अस्पताल से आते ही पिताजी से अनुमति ले ली कि वह श्याम बाबू से क्षमा माँगने के लिए लाल कोठी में जाना चाहता है, पिताजी की इच्छा तो थी ही इसलिए उसने अपने बेटे को वहाँ जाने से नहीं रोका। राजन को स्वयं भी इस बात का ज्ञान नहीं था कि उसके हृदय में श्याम के प्रति यह दया का प्रवेश कहाँ से हुआ। वह उल्टे पाँव अपने घर से चल पड़ा। उसे आज पूरी आशा थी कि वह श्याम बाबू से क्षमा माँग के ही आयेगा ताकि उसके पिता को सन्तोष प्राप्त हो। अभी वह दस गज भी नहीं आगे चला था कि उसके पड़ोसी बनवारी ने उसे आवाज दी।

वह दौड़ते हुए राजन के पास आया और कहने लगा—भैया मेरी माँ की दशा बहुत बिगड़ गई है। मैं डाक्टर को लाने के लिए जाता हूँ, तुम कृपा करके तब तक वहीं ठहरना।

राजन विवश होकर उसके घर चला आया। वहाँ उसके सिवाय बनवारी की पत्नी थी। वह जाके उसकी माँ के समीप बैठ गया और धीरे से पुकारा—दुर्गा माँ! दुर्गा माँ की आँखे ऊपर की ओर टकटकी लगाकर देख रही थीं। उसकी बहू उसे गीता पढ़कर सुना रही थी। अभी उसने तीसरे अध्याय का पहला श्लोक ही पढ़ा था कि सहसा दुर्गा माँ की गर्दन जैसे टूट कर गिर गई।

बहु अकेली क्या करती। उसने तो किसी प्रकार धीरज धर लिया और गंगा जल के एक-दो चमचे उसके मुँह में डाल दिए। वह विलाप करते-करते पड़ोसियों को बुलाने लगी। प्रत्येक व्यक्ति वहाँ क्षणमात्र में आ पहुँचा। इतने में बनवारी डाक्टर लेके आ गया। अपने घर से रोने की आवाज़ सुनते ही वह एक ही स्थान पर जम गया।

डाक्टर वापिस चला गया और वहाँ शव को ले जाने का प्रबन्ध होने लगा। लगभग दो घण्टों के पश्चात अर्थी को मसान घाट ले जाया गया। वहाँ बनवारी ने अपने हाथों अपनी माँ को चिता की गोद में सुला दिया। ऐसा लगता था कि दुर्गा माँ अभी-अभी जाग के फिर सो गई है।

अन्तिम विदाई का समय आया तथा सब लोग प्राकृतिक नियमों के सामने शीश झुका कर मसान घाट से बाहर आये।

शिवप्रसाद अपने बेटे के कन्धे का सहारा लेकर चलते हुए कहने लगा—बेटा.........। बड़ी भाग्यशाली थी यह दुर्गा बहिन जो कि इसका अपने

बेटे के हाथों दाह संस्कार हुआ पता नहीं जब हम दोनों दूर जाएंगे तू नौकरी के चक्कर में हमसे कितना दूर होगा ?

राजन ने बात बदलते हुए कहा—पिताजी क्या आप मुझे क्षमा नहीं करेंगे ?

शिवप्रसाद ने एक लम्बी आह भरते हुए कहा—बेटा मुझे इस बात का ज्ञान नहीं है कि श्याम बाबू के जाने के पश्चात् मेरे मन में अशान्ति ने क्यों वास किया ? क्षमा तो तुम्हें उससे जाके मांगनी ही चाहिए।

राजन जानता कि उसका पिता मीठी-मीठी बातों में नहीं आने वाला है। इसलिए उसने पिताजी से आज्ञा लेते हुए कहा—अच्छा अब मैं श्याम बाबू के घर जाऊँगा।

वह अपने पिता की बात सुने बिना ही उस सन्नाटे में चलते-चलते लाल कोठी की ओर बढ़ा।

लाल कोठी के पास पहुँचकर उसने द्वार बन्द देखा। कोठीं की सब बत्तियाँ लगभग बुझ चुकीं थीं। उसने ऊपर वाली खिड़की की ओर देखा, जहाँ से प्रकाश छन-छन के बाहर निकल रहा था, वह द्वार के बिल्कुल करीब आया। उसने काल-बैल दो तीन बार दबाई।

कुछ क्षणों के उपरान्त द्वार खुल गया और एक मोटा आदमी फटी-फटी आँखें किए उसे देखने लगा। राजन ने खाँसते हुए बात आरम्भ की—नमस्ते ! क्या, श्याम बाबू यहीं हैं।

जी हाँ ! परन्तु आपको क्या चाहिए।

मैं उनसे मिलने आया हूं।

मोटेराम ने आँखें भींचते हुए कहा—बेटा इस समय वह सोने की तैयारी कर रहे होंगे।

आप उनसे कह दीजिए कि गाँव वाले शिव प्रसाद का बेटा आपसे मिलना चाहता है। कल सुबह आप मुझ से मिलने का समय दीजिए ताकि मैं आपसे मिल सकूं।

यह सुनकर मोटेराम सिर हिलाते हुए श्यामबाबू के कमरे में आया और नम्रता पूर्वक कहने लगा—छोटे मालिक ! आप से गाँव वाले शिवप्रसाद का बेटा मिलना चाहता है। इसलिए आपसे कल का कोई भी समय देने के लिए कहा है।

श्याम हर्ष से चौंक पड़ा और तेजी से कहने लगा—उसे शीघ्र ही ऊपर बुलाओ।

रजनी ने अपना सितार एक ओर रख दिया और अपने बड़े भाई से

पूछने लगी--भैया, इतनी रात गए कौन आया है ?

श्याम ने मुस्कराते हुए कहा—कल मैंने तुमसे कहा था न कि मैं गाँव गया था। वहाँ एक व्यक्ति ने मेरा अपमान किया।

हाँ ! हाँ ! वह यहाँ क्यों आया है ?

इतने में राजन हाथ जोड़कर कमरे के भीतर आया और गम्भीर मुद्रा में श्याम के सामने बैठ गया।

आईए राजन साहिब ! हमारे पास बैठिए, इतनी रात गए कैसे आना हुआ। घर में सब कुशल तो हैं न। श्याम बाबू ! मन के न चाहने पर भी यहाँ आना पड़ा। आप इसे विवशता कहिए या इस जगत की रीति। वरना यह कौन नहीं जानता है कि रात के ग्यारह बजे कोई आदमी नींद नहीं गँवाना चाहता।

श्याम ने बात बदलते हुए कहा—आपको इस समय दरबान ने तो नहीं रोका।

नहीं सेठजी, आज एक शरीफ आदमी से भेंट हुई। मुझे आपसे कुछ कहना है, आशा है कि आप मेरी बात सुनेंगे।

राजन का सिर झुक गया और वह अपनी भीगी पलकें लिए हुए कहने लगा--सेठजी ! मैंने कल जो कुछ भी आपसे कहा, मैं उसके लिए बहुत लज्जित हूं। यदि आप चाहते तो आप भी मेरी बातों का उत्तर दे सकते थे परन्तु आपने ऐसा नहीं किया, क्योंकि आप महान हैं। अब आप ही मुझे बताइऐ कि मैं आपसे क्षमा का दान कैसे माँगू।—यह कहते हुए राजन ने उसके चरण छूने के लिए हाथ आगे बढ़ाए किन्तु श्याम ने अपने पाँव पीछे हटा लिए।

वह मुस्कराते हुए कहने लगा--भई तुम्हें अभी तक वह बात याद है। मैं तो वह सब उसी समय भूल गया।

राजन ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा—सेठजी, मुझसे भूल हुई है। शायद धनवान हर बात पल भर में भूलता होगा पर मुझ जैसा निर्धन अपनी भूल को कैसे भूलेगा, क्योंकि प्रायश्चित का ठेका तो हमने ही ले लिया है।

श्याम ने बात को बदलना चाहा पर वह ऐसा न कर सका। अन्त में उसे कुछ वाक्य संक्षेप में कहने पड़े—भई तुमने उस समय भावनाओं का सहारा लेकर वही किया जो तुम्हें करना चाहिए था। तुम निर्दोष हो वास्तव में दोष तो ज़ालिमसिंह का था।······खैर······।

राजत ने सिर धीरे से ऊपर उठाते हुए कहा—आपके चले जाने पर पिताजी ने मुझे बहुत डाँटा। माँ भी मुझसे अप्रसन्न हो गई। जब तक आप

मेरे पिताजी से स्वयं यह नहीं कहेंगे कि आपने मुझे क्षमा किया, वह मेरी बातों पर विश्वास ही नहीं करेंगे।

श्याम ने थोड़ी देर कुछ विचार करके राजन से कहा—उस दिन मैंने कुछ भी नहीं कहा पर आज तुम मेरे घर आए हो, इसीलिए तुम्हें कुछ बातें कहनी आवश्यक समझता हूं, क्या तुम सुनोगे? जी!--क्यों नहीं। आप तो मेरे बड़े भाई समान हैं।

आज कल की दुनिया में आदमी चेहरे से नहीं पहचाना जाता क्योंकि एक मनुष्य के कई रूप होते हैं। दूसरी बात—न कोई अच्छा होता है और न कोई बुरा। परिस्थितियां मनुष्य को भिन्न-भिन्न प्रकार के रूप धारण करने पर विवश करती हैं। तीसरी बात यह है कि दिन के बाद रात अवश्य आती है। दोनों अपने-अपने स्थान पर समय अनुसार चलते जा रहे हैं। धन और शान्ति सदा एक दूसरे से शत्रुता निभाते आए हैं। जिस मनुष्य के पास एक विशाल हृदय हो उसके पास आवश्यकता से अधिक दौलत होनी, या न होनी, एक समान है। सहनशक्ति प्रत्येक व्यक्ति में नहीं होती। अभी तुम छोटे हो तथा यह संसार बहुत बड़ा है। तुम्हें हर मोड़ पर यहां नए राही मिलेंगे। बदलती हुई मंज़िल दिखाई देगी। जिस प्रकार एक पत्थर कई वर्षों से किसी वीराने में पड़ा रहता है। कई राही उस राह से गुजर कर ठोकर खा के आगे चलते हैं, और कई ऐसे भी हैं जो कि एक ही ठोकर में ठंडे पड़ जाते हैं। पत्थर रूपी जीवन आज भी वैसे का वैसा ही है पर उनकी बीती हुई कहानी लौट न सकी जो इसे ठुकराते हुए स्वयं ठोकर का शिकार हुए।

थोड़ी देर तक कमरे में मौन रहा। राजन ने श्याम के मन की पीड़ा को भांपते हुए कहा...यदि मेरे स्थान पर आपका छोटा भाई होता, तो क्या आप उसे क्षमा नहीं करते।

श्याम ने मुस्कराते हुए बात आरम्भ की—मैं तो स्वयं लज्जित हूं कि तुम इतना कष्ट उठाकर इतनी रात गए यहाँ चले आए। खैर तुमने पूरी तरह अपना परिचय नहीं कराया। क्या तुम किसी दल के नेता हो।" जी मेरा नाम राजन है। कुछ ही दिनों पहले मैंने एम० बी० बी० एस० के अन्तिम वर्ष की परीक्षा पास की।

तो क्या तुम अब डाक्टर बन गए हो।

हूँ नहीं, बल्कि बनने का प्रयत्न करुँगा।

डाक्टर राजन! मुझे एक मित्र की आवश्यकता थी, सो तुम्हें हमारी मित्रता स्वीकार करनी पड़ेगी।

राजन ने इस अवसर को हाथ से जाने नहीं दिया। उसने अपने मन की

भावना प्रकट करते हुए कहा––सच पूछिए कल रात जब मैंने आपको देखा, तब से पता नहीं कुछ न कुछ आपके बारे में क्यों सोचने लगता हूँ।

श्याम ने चौंकते हुए पूछा—तो क्या तुम कल भी यहाँ आए थे।

राजन ने होठों पर हल्की मुस्कान लाते हुए कहा—अरे इन्सान, मुझे ऊपर अपनी मंजिल के साऐ तक ले चलो, फिर चले जाना।

श्याम ने झट से कहा––यह तो मेरा डायलाग है। तो क्या तुम्ही मुझे कल रात को सड़क से यहाँ कमरे तक उठा के लाए ?

मैं तो आपसे कल रात को मिलने आया था, परन्तु इस रूप को देखकर कुछ-कुछ परेशान सा हुआ श्याम ने उसकी बात का रुख बदल डाला—राजन, कुछ लोग इस संसार में जीते इस लिए हैं कि वह पी सकें।

सेठजी शराब पीऐ बिना भी तो लोग जीते हैं। क्या जीवन से अधिक नशा शराब में होगा।

नहीं ऐसी बात नहीं है।

तो फिर आप क्यों पीते हैं ?

शायद इस लिए कि रात का प्रभाव मुझ पर अधिक न हो।

राजन ने गम्भीर भाव में कहा––काश आप की हँसी रो-रो के न खिलती तो मैं बिना किसी झिझक के आप की बनाई हुई बातों में आ जाता।

राजन क्या तुम कवि हो ?

सेठजी कवि बनना कोई खेल नहीं हैं।

कुछ देर तक कमरे में मौन छाया रहा। अन्त में घड़ी ने रात के बारह बजाए और राजन का ध्यान घर की ओर गया। वह कहने लगा—मैंने आपके विश्राम का समय नष्ट किया। मुझे भी घर देर हो रही है। अब मुझे चलने की अनुमति दीजिए।

श्याम ने उसकी ओर एक बुझी हुई नज़र डाली—डाक्टर, इस समय घर कहाँ जाओगे आज की रात तुम्हें हमारे साथ बितानी पड़ेगी।

जी······मैं तो······नहीं·····वह आगे भी कुछ कहना चाहता था परन्तु श्याम ने उसकी बात अनसुनी करते हुए कहा—तुम्हारी बातें, पता नहीं क्यों, मुझे पसन्द आईं। काश तुम्हारा साथ मुझे हर रोज़ भाग्य में होता तो मैं यह अकेलापन अनुभव न करता।

राजन ने भी अपने मन की भावना प्रकट करते हुए कहा—सेठ जी, आप तो मेरे बड़े भाई के समान हैं। मैं, नित्य आपके पास आया करूँगा, यदि आप चाहें तो।

मेरी भी बड़ी बिरादरी है परन्तु वह किसी दूसरे संसार की बातें करते हैं। मेरे कान उनकी बातें सुनते-सुनते पक गए हैं। तुम्हारी हर बात आत्मीय है। आज की रात तुम मेरे साथ व्यतीत करो कल सवेरे मैं तुम्हें गाड़ी में बिठाकर ले जाऊँगा।

मुझे कोई आपत्ति नहीं है, किन्तु घर में माता-पिता चिन्तित हो रहे होंगे।

यह बात तुम मुझ पर छोड़ दो। तुम कोई दूध पीते बच्चे तो नहीं हो जो खो जाओगे। शिवप्रसाद जी जानते हैं कि मैं तुम्हें इस समय किसी भी मूल्य पर नहीं जाने दूंगा।

राजन आगे कुछ न बोल सका। वह चुपचाप श्याम के निकट आकर बैठ गया।

श्याम बाबू ने बड़े आदर सत्कार से राजन को अपने पास बिठाकर भोजन कराया। भोजनकाल के उपरान्त इन दोनों ने आपस में खूब बातें कीं। श्याम स्वयं उठकर दूसरे कमरे से पलंग घसीट कर अपने कमरे में लाया। राजन तो मन ही मन लज्जित हुआ कि उसने श्याम बाबू को अपने घर में अपमानित किया और उन्हें रोते-रोते घर से भगाया। तिस पर भी वह सब कुछ भूलकर उसे अपने छोटे भाई की तरह पलंग पर लिटाने लगा।

श्याम ने चादर झाड़ते हुए कहा—चल आ···सो जाएँगे। सफेद बत्ती को बुझाने के पश्चात् एक नीली बत्ती जलाते हुए उसने अपनी बात आरम्भ की—क्यों डाक्टर तुमने कभी किसी लड़की से प्यार किया है? इस बात को सुनकर राजन तनिक मुस्कराया, नहीं भाईजान! मेरी दृष्टि में कोई भी लड़की ऐसी नहीं हैं जो कि मानवता का सौदा अपने प्यार से करती हो। वैसे सुनने आया है कि आजकल की लड़कियाँ कलाकार के पीछे नहीं, बल्कि कला के पीछे मरती हैं। इसमें आपका क्या विचार है?

यह तो है ही परन्तु जिस तरह लड़के कई प्रकार के होते हैं उसी प्रकार लड़कियाँ भी भिन्न-भिन्न विचारधारा की होती हैं। सुनो मैं तुम्हें अपने एक मित्र की कहानी सुनाता हूँ। श्याम ने एक लम्बी आह भरते हुए कहा—मेरा एक मित्र था। उसने एक लड़की को अपना हमसफर बनाना चाहा। वह लड़की भी मेरे मित्र के प्यार में बुरी तरह फँस गई। बड़ी धूमधाम से उन दोनों का विवाह हुआ। अभी विवाह को पूरे सात माह भी नहीं हुए कि वह अपने देवर के साथ अवैध सम्बन्ध की डोर बाँधने में लग गई। मेरे मित्र का सन्देह विश्वास में बदल गया। वह अपनी पत्नी की बेवफाई सह न सका। एक दिन मोहन ने घर से भाग कर नदी के किनारे अपने सारे वस्त्र निकाल कर रखे और साथ में एक पत्र भी रखा था कि वह नदी में डूब रहा है क्योंकि

वह अपनी पत्नी को कुछ न दे सका। पूरे सात माह के पश्चात् उसकी बेवफा पत्नी ने अपने देवर के साथ विवाह किया। मेरा मित्र आज भी जीवित है, पर उसका जीना, न जीना दोनों एक समान हैं, कल का सेठ मोहन चन्द आज का पहाड़ी गांव का मोनी बाबा बनकर दिन व्यतीत कर रहा है। वह भी तो एक चरित्र था, एक लड़की वह भी तो थी।

राजन ने भावुक होकर उसकी बात को काटते हुए कहा--सेठ जी, उसे कौन नादान लड़की कहकर पुकारेगा? वह तो स्त्री जाति के लिए एक कलंक है।

तुमने ठीक कहा, वह स्त्री एक गन्दी मछली की तरह सारे तालाब को गन्दा कर देती है।

राजन ने एक और प्रश्न साधारण भाव से पूछा—सेठ जी आपने अभी तक विवाह क्यों नहीं किया?

"विवाह·········!" वह तनिक मुस्कराया—"केवल समय का खेल है, जिसमें अधिकतर समय की ही जीत होती है और कभी प्यार की भी। मुझे समय के सामने झुक कर बुरी तरह हारना पड़ा।

मैं कुछ समझा नहीं, क्या आपने कभी किसी लड़की से प्यार किया है?

किया था।

फिर।

सेठ जी, यह एक लम्बी कहानी है। सुनकर क्या करोगे? आप की बातों में मुझे अभी तक अनानस के सिवाय कुछ न मिला। मैं इस योग्य नही कि आपकी सहायता कर सकूं। फिर भी आप मुझे अपनी प्रेम कहानी सुना दीजिए।

राजन, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम कोई गैर नहीं बल्कि मेरे पूर्व-जन्म के भाई हो।

सेठ जी आपने मेरे मन की बात कह डाली। ऐसा होता तो तुम मुझे बार-बार सेठ जी कहकर नहीं पुकारते।

राजन ने अपने मन की उत्सुक्ता को प्रकट करते हुए कहा—-भाईजान, टालने से कुछ नहीं होगा, आपको अपने मन की बात सुनानी ही पड़ेगी।

श्याम ने अपनी शिरानी को हटाते हुए एक सुन्दर लड़की की तस्वीर निकाली और उन प्यासी आँखों में झांकते हुए एक लम्बी आह भरी और कहने लगा—यह उन दिनों की बात है, जब मैं कालेज में पढ़ता था कि कामिनी से मैं कालेज के पुस्तकालय में पहली बार मिला। यह मिलन की घड़ी हम दोनों के लिए कुछ संदेश लेकर आ गई और हम दोनों प्रीत की डोर में कस के

बंध गए। यह प्रेम-रस पाँच वर्ष तक जम कर तपती हुई ज्वाला की तरह मचलता रहा। उसका कहना था कि हमारी प्रीत एक दूसरे के विश्वास पर स्थिर है। उसने अपनी प्रीत को सिर्फ उपासना का रूप देना चाहा। उसका वस चलता तो वह चुपचाप उम्र भर इस ज्वाला में जल-जल कर राख हो जाती। वह मुझसे बार-बार यही कहती थी कि हम दोनों के बीच में एक बहुत ऊँची दीवार है जिसे गिराना हम दोनों के वस की बात नहीं है। यदि तुम मेरे प्यार को एक राज़ रखलोगे तो यह संसार हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा, वरना समाज की विषमय दृष्टि हमारे प्रेम के महल को एक न एक दिन अवश्य उजाड़ देगी। परन्तु मैं अधिक देर तक अपने प्यार को राज़ न रख सका। क्योंकि मुझसे कामिनी की दूरी सही नहीं जाती थी। अन्धे पच्चीस ने मुझे अन्धा बना दिया था मेरी नज़र में समाज और संसार दोनों किसी काम के नहीं थे। फिर भी मैंने एक बार अपने पिताजी से कामिनी के विषय में बातचीत छेड़ी। मेरी हर बात को उन्होंने नादानी कह कर पुकारा। उन्हें एक धनवान परिवार की लड़की चाहिए थी। कामिनी एक निर्धन लड़की थी। उसका पिता एक साधारण अध्यापक था। पिताजी का इन्कार पहाड़ की तरह अपनी जगह पर अटल रहा। मैं कामिनी को भूल न सका, क्योंकि मेरे मन में उसके पवित्र प्यार ने एक स्थान बना लिया था और पिताजी के मन में धन का लालच। जब मैं यह सब कामिनी को सुनाने के लिए चला गया तो उसके मुखड़े की चंचलता में मुझे कहीं भी गम्भीर लक्षण नहीं दिखाई दिए। उसने सदा की तरह खिलते हुए कहा––तुम्हें प्यार बहुत मिलेगा पर माता-पिता कहीं नहीं मिलेगें। मैं अपने प्यार को हँसते-हँसते बलिदान के तराज़ू पर चढ़ाऊँगी, किन्तु तुम्हें अपने माता-पिता से नहीं छीन लूंगी। आप शायद भूल रहे हैं कि जब उन्होंने तुम्हें जन्म दिया, तभी तो मैं तुमसे प्यार करके धन्य हो गई।

मैंने कहा—कमू ! तुम अपने प्यार को मज़ाक बना सकती हो, मैं नहीं। मैं सब कुछ त्याग करके तुम्हारे साथ कहीं दूर चला जाऊँगा जहां मुझे इस संसार के लोगों की बातें परेशान नहीं करेंगी।

इस बात को सुन कर वह मेरे बालों को सहलाती हुई बोली—आप अपने पिता की इच्छा अनुसार विवाह कर लीजिए। जब तुम्हारे बच्चे होंगे तो मुझे अपने घर की दासी बना कर बुला लीजिएगा। मैं सारी उम्र तपस्या में बिता कर आँसू पीती रहूँगी।

कई दिन बीत गए। पिताजी अपने संसार की बातें सुनाते-सुनाते मुझे अपना निर्णय बदलने पर विवश करने लगे। मां, पिता जी से झगड़ा करके मैके चली गई।

एक दिन जब कि मैं अपने कमरे में बैठ कर रजनी के साथ इस समस्या पर विचार विमर्श कर रहा था कि हम दोनों के कानों में किसी मासूम की दर्द भरी चीख तीर बनकर चुभने लगी।

मैं बहुत देर तक कानों में अंगुली डाल कर रजनी से यही कहता रहा कि पिताजी आज भी किसी नई चिड़िया को फंसा के लाए होगे। इतने में सुखदेव मेरे कमरे में आ कर कहने लगा—छोटे मालिक गज़ब हो गया। आप कृपा करके किसी प्रकार पिताजी को यह अनर्थ करने से रोक लीजिए नहीं तो एक निर्दोष के दामन पर पाप का दाग लग जाएगा।

मैं दौड़ते हुए पिताजी के कमरे की ओर बढ़ा—द्वार खटखटाने पर जब किसी ने नहीं खोला तो मुझे विवश होकर खिड़की से कूद कर कमरे के भीतर जाना पड़ा, जब मैंने बत्ती जलाई तो मेरे पिताजी सहम कर एक कोने में मुंह छिपाए खड़े रहे। मैंने द्वार खोला और रजनी को देखते ही वह उसके कदमों पर सिसकियाँ लेने लगी। मेरी उजड़ी हुई दुनिया मेरे सामने आकर चिल्लाते हुए बोलने लगी—श्याम तुम मुझे गलत न समझना। तुम्हारे पिता जी ने मुझे छल करके यहाँ बुलाया। मैं तो सज-धजके तुम से मिलने आई थी। यहाँ आ कर मुझे मेरी इज़्ज़त से हाथ धोना पड़ा।

रजनी से रहा न गया। उसने अपनी साड़ी उतार कर कामिनी को दे दी। वह जाते-जाते यह शब्द मेरे लिए छोड़ के चली गई--

"श्याम मैं अब तुम्हारे योग्य न रही। तुम्हारा पिता एक राक्षस है......

मैंने अपनी पिस्तौल से लाला हुक्मचन्द का सीना छलनी किया होता यदि रजनी मेरा हाथ पकड़ कर रोते हुए यह न कहती--"क्या तुम अपनी माँ का सुहाग उजाड़ोगे।"

उस दिन से मैं इस घर में रजनी के बिना किसी और से बात तक नहीं करता हूँ।"

श्याम ने एक लम्बी साँस खींचते हुए कहा—उस रात रजनी मुझ पर बिजली की तरह गरज कर टूट पड़ी।

"कमरे में अन्धेरा करके बैठने से तुम, कामिनी को उसकी खोई हुई इज़्ज़त वापिस नहीं दे सकते। उस बेचारी का इसमें क्या दोष है। पिताजी उसे बहू स्वीकार करें या नहीं, इसका उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा परन्तु यदि तुम उसे अपनी पत्नि नहीं बनाओगे तो तुम्हारा प्यार रुसवा हो जाएगा। पाँच वर्षों से जो यह प्रेम कथा चलती आई है, एक खेल बन कर समाप्त हो जाएगी। यदि तुम सच्चे हृदय से कामिनी को चाहते हो तो इस सारी सम्पत्ति को लात मार कर कामिनी को मन्दिर में सदा के लिए अपना लो। भैया मैं

तुम्हें वचन देती हूं कि मैं भी उम्र भर तुम्हारे साथ रहूंगी। ताकि पिताजी को भी यह बात मन में बैठ जाए कि उन्हों ने बेटे के साथ अन्याय करके हम दोनों को खो लिया।"

हम दोनों सवेरे तक अपनी पीड़ा को कुचलते हुए इस निर्णय पर पहुँचे कि हम दोनों कामिनी के घर चले जाएंगे। जब हम उसके घर पहुँचे तो मैंने रजनी को उसके पास भेजा। कुछ क्षणों के उपरान्त रजनी वापिस आ कर कार में बैठ गई। वह फूट-फूट कर रोते हुए बोली—भैया! जो न होना चाहिए था वही हो गया।

मैं उससे कुछ पूछने वाला ही था कि हम दोनों की दृष्टि एक अर्थी पर जम गई जो कि कामिनी के घर से आ रही थी। अर्थी को उठाने वालों में कामिनी का पिता और उसके दो भाई थे। यह अर्थी कामिनी की ही थी। वह तो ज़हर खा कर मर गई परन्तु मुझे इस संसार में तड़पने के लिए छोड़ दिया। मुझ पर एक बहुत बड़ा पहाड़ टूट पड़ा। मेरी कामिनी ने मुझे जाते-जाते एक उपहार दिया। इतनी सारी बात सुना कर श्याम अलमारी की ओर बढ़ा। वहाँ से शराब की बोतल निकाल कर पानी की तरह, भर-भर के गिलास पीने लगा। वह अपने दुःख को भूल जाने का असफल प्रयत्न करने लगा।

: ५ :

"उन सुनसान राहों पर अन्धकार का बसेरा था। वायु के तीव्र झोकों से वृक्ष के पत्ते हिल-हिल कर गिर रहे थे। समुद्र की लहरें शोर मचाती हुई दुहाई दे रही थीं कि वह तट से लिपटने के लिए बेचैन है। धरती के नर्म सीने पर श्याम अपने तेज़ कदम उठा-उठा कर तूफान की ओर बढ़ता जा रहा था। उसने एक बार रुक कर पीछे की ओर मुड़ कर देखा जहाँ राजन और रजनी एक दूसरे का हाथ पकड़ कर मुस्कराते हुए चले आ रहे थे। वह दोनों शायद श्याम बाबू को वापिस लेने के लिए आए थे। परन्तु इस मोड़ पर आ कर उन दोनों के मन को भी यह यात्रा भाने लगी थी। चलते-चलते श्याम ने अपनी राह बदल डाली। राजन घबरा कर श्याम के पीछे पुकारता हुआ चला आया। लहरों की लपेट से बचकर श्याम एक काले रंग के मगरमच्छ के पास पहुँच गया। उससे बचते हुए वह एक ओर हट गया परन्तु मगरमच्छ रास्ता बदल कर श्याम के समीप आया। जो न होना चाहिए था वही हुआ। मगरमच्छ ने श्याम को निगल डाला।"

इतने भयानक स्वप्न को देखकर राजन चीखता हुआ नींद से जाग पड़ा। आँखें खोलते ही उसने एक सफेद बत्ती जलाई।

श्याम बाबू के पलंग को खाली देखकर वह असमंजस में पड़ गया। अन्त में उसकी दृष्टि कमरे के द्वार पर पड़ी जहाँ श्याम अचेतावस्था में पड़ा हुआ था। राजन ने उसे पुकार के जगाना चाहा किन्तु वह नहीं जागा। कमरे में पानी की एक बूंद भी न होने के कारण वह बाहर निकला। उसने बिना सूझ-बूझ के सामने वाला द्वार खटखटाया। कुछ ही क्षणों में रजनी आंखें मूंदते हुए बाहर आई और राजन की ओर क्रोधित दृष्टि डाली।

राजन ने शीघ्र ही रजनी का सन्देह दूर करते हुए कहा—क्या आपके पास थोड़ा पानी होगा ? श्याम बाबू पता नहीं क्यों मूर्छित हो गए।

रजनी ने राजन की मनोदशा को भाँपते हुए सिर ना में हिलाया और उसके साथ कमरे में चली आई। उसने श्याम के पास आते ही शराब की बोतल पलंग के नीचे छिपाने का असफल प्रयत्न किया। वह अपने भाई के पास बैठ गई और शीश झुका कर सिसकियाँ लेने लगी।

काश मुझे भगवान अपने पास बुला लेता तो मुझे यह सब कुछ न देखना पड़ता।

आप भगवान पर विश्वास रखिए। धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा।

यह सब मेरा दुर्भाग्य है। आप तो यूं ही उलझन में पड़ गए।

जी ऐसी कोई बात नहीं है।—यह कहते हुए राजन ने श्याम बाबू को गोद में उठाकर पलंग पर लिटा दिया।

रजनी ने कामिनी की तस्वीर फर्श से उठाकर शिरानी के नीचे रखनी चाही परन्तु राजन ने उसके हाथ से तस्वीर लेते हुए कहा—कामिनी को भुलाने के लिए आप श्याम बाबू का व्याह शीघ्र कर दीजिए।

रजनी ने सिर हाँ में हिला दिया और उठकर अपने कमरे में चली गई।

राजन पलंग के निकट फर्श पर किसी गहरे विचार में डूब गया।

: ६ :

सवेरे सात बजे रजनी चाय की ट्रे लेकर कमरे के भीतर चली आई। उसने ट्रे मेज़ पर रखते हुए एक दयामय दृष्टि राजन पर डाली जो कि फर्श पर लेटा गहरी निन्द्रा में मग्न था।

वह श्याम को जगाने लगी। क्षण भर में उसकी आँख खुल गई और वह चौंकते हुए राजन की ओर देखने लगा।

रजनी, यह तो पलंग पर सोया हुआ था ?

शायद, तुम्हें पलंग पर सुलाने के बाद खुद रोते-रोते सो गया हो क्योंकि कल सुखदेव की जगह तुमने इसी को अपनी कहानी सुनाई होगी।

हाँ, हाँ पता नहीं मैंने इसे क्या-क्या कहकर दुःखी किया होगा।

अब इन्हें उठकर जगा लीजिए न। चाय ठंडी हो रही है।

श्याम, राजन के बालों को सहलाने लगा।--उठो भई, कब तक यूँ ही पड़े रहोगे। पूरे सात बज चुके हैं।

ठीक है बज चुके होंगे......। श्याम तनिक मुस्कराया—डाक्टर राजन, तुम रोगियों को क्या देखोगे।

अब राजन को होश आया कि वह किसी दूसरे घर में सोया हुआ है। वह झट से उठ कर बोला—नमस्ते भाईजान !

भई तुम पलंग से कैसे गिर गए ?

भाईजान, पलंग हो या पहाड़, मनुष्य तो बड़ी सरलता से गिर सकता है।

श्याम ने बात बदल डाली।—उठ के हाथ-मुंह धो लो, चाय ठंडी हो रही है।

राजन चुपचाप तौलिया लेकर स्नान घर में चला गया। हाथ मुंह धोने के पश्चात् जब वह कमरे में वापिस आया तो कमरे में तीन अन्य व्यक्ति बैठे थे।

आओ राजन, यहाँ मेरे पास बैठो—श्याम ने अपनी माँ की ओर देखकर कहा—"माँ यह मेरा मित्र है।"

राजन ने हाथ जोड़कर श्याम की माँ को प्रणाम किया। सहसा उसकी दृष्टि सामने शीशे पर पड़ी जहाँ डाक्टर वर्मा की परछाई उसे स्पष्ट दिखाई दी। वह अपना मुख छिपाना चाहता था पर ऐसा न हो सका।

डा० वर्मा ने अपने विद्यार्थी का कन्धा थपथपाते हुए कहा—बोलो बेटे, तुम यहाँ कैसे ?

कुछ नहीं सर, ऐसे ही श्याम बाबू को देखने आया था।

डा० वर्मा ने राजन की प्रशंसा करते हुए श्याम से कहा—राजन ही एक ऐसा विद्यार्थी है, जिस पर मुझे गर्व है। यह निस्संदेह एक सफल डाक्टर बन जाएगा।

राजन ने डॉ० वर्मा की बात काटते हुए कहा—सर हमारे ग्रुप की ईटरनलशिप (eternelship) कब से आरम्भ होने वाली है।

तुम जब चाहो, आ सकते हो। वैसे सोमवार से आरम्भ हो रही है।

कुछ क्षणों के उपरान्त डा० वर्मा ने श्याम से उसके स्वास्थ्य के विषय में पूछा।

रजनी बीच में बोल उठी—कभी-कभी चेहरे का रंग काला पड़ जाता है। पीड़ा अधिक कष्ट देती है।

राजन ने डॉ० वर्मा से पूछा—सर इन्हें क्यों पीड़ा होती है, इसका कारण क्या है ?

श्याम ने शोकातुर स्वर में कहा—मेरे पेट में कभी-कभी बहुत दर्द होता है। जब भी मैं सीढ़ियों से उतरूँ या सीढ़ियों पर चढ़ूँ तो मेरा साँस फूल जाता है।

आज भी डा० वर्मा ने एक नई दवाई लिखी और अपनी पुरानी बात दोहराई—श्याम बाबू ! दवाई का प्रभाव तब तक कुछ नहीं होगा जब तक आप पीना न छोड़ें ।

यह कहकर वह चला गया।

श्याम उत्सुकतापूर्वक राजन से पूछने लगा—राजन, क्या इस दवाई से कुछ सुधार होगा ?

डॉ० वर्मा तो सम्पूर्ण चिकित्सालय में प्रसिद्ध हैं। इनका डायग्नोज (Diagnose) कदापि अनुचित नहीं हो सकता परन्तु आपको पीना अवश्य बन्द करना चाहिए।

"यह तो इसे हम भी कहते हैं"—माँ ने श्याम की ओर एक दुःख भरी दृष्टि डालते हुए कहा—"बड़ा लड़का है, इसे उपदेश देने की क्या आवश्यकता है ?"—यह कहकर वह रजनी के संग कमरे से बाहर चली गई।

कमरे में अब राजन के सिवाय और कोई नहीं था। उसने श्याम को बड़े प्यार से कहा—मैं चाहता हूँ कि शराब धीरे-धीरे सदा के लिए छोड़ दीजिए।

श्याम ने उसकी बात को टालते हुए कहा—क्या तुम भी डाक्टर वर्मा की बातों में आ गए। "डा० वर्मा सच कहते हैं कि आपके लिए शराब, विष के समान है।"—राजन ने एक ठंडी आह भरते हुए कहा—"अब मुझे चलने की अनुमति दीजिए।"

श्याम ने अपने मन की भावना प्रकट करते हुये कहा—विश्वास करो राजन, तुम्हारे बिना यह कमरा अब मुझे सूना-सूना सा दिखाई देगा। शायद तुम्हारी बातों में जादू है। चलो मैं तुम्हें घर तक छोड़ के आता हूँ।

आप निश्चिन्त रहिए भाईजान ! मैं नित्य आपके दर्शन करने के लिए यहाँ आया करूँगा।

दोनों कार में बैठकर घर की ओर चल पड़े। श्याम कार चलाता रहा। राजन उसे घर तक विनोदी चुटकुले सुनाता रहा। घर पहुंचकर श्याम कहने लगा—अच्छा राजन, अब मैं चलता हूँ। तुम मेरे पास अवश्य आना।

भाईजान ! क्या आपने मुझे अभी तक क्षमा नहीं किया ? आप चुपचाप

चलकर मेरे पिताजी से कह दीजिए कि आपने मुझे क्षमा कर दिया।

श्याम तथा राजन, दोनों ने घर में प्रवेश किया। कमरे के भीतर आकर देखा कि सीता अपने पति के पांव दबा रही थी। आशा, एक कोने में बैठी अपनी फटी हुई साड़ी सी रही थी। वह अपने भाई को देखते ही खड़ी हो गई, शायद वह उससे लिपट जाती परन्तु श्याम को देखकर सिर नीचे किए हुए अपनी जगह पर आ कर बैठ गई।

सीता ने राजन की ओर देखकर कहा—कल रात, हम देर तक तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे थे। पिताजी ने तो पहले राजन से बात ही नहीं की, किन्तु श्याम को देखकर उसे प्रणाम किया—आइए श्याम बाबू······आइए ! आप सचमुच महान हैं।

राजन भी श्याम के निकट आ कर बैठ गया। भाईजान, देखा पिताजी मुझसे कितने अप्रसन्न हैं। श्याम बाबू, यदि राजन को मेरे होते हुए बुद्धि नहीं आएगी तो मेरी मृत्यु के पश्चात् इसे कौन सिखाएगा। आप तो देवता है, आपने हमें क्षमा करने के योग्य समझा। यदि आपके स्थान पर कोई और होता तो वह इस घर की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता।

श्याम गम्भीर मुद्रा में बोला—भूल प्रत्येक व्यक्ति से होती है। चाहे पिता हो या पुत्र।

कुछ देर तक श्याम उन लोगों से बातें करता रहा और उसके बाद उनसे आज्ञा लेकर वहाँ से चल पड़ा।

: ७ :

पांच माह बीत गए। इन पांच महीनों में श्याम के घर राजन लगभग प्रतिदिन आया करता था। इन दोनों में इतनी मित्रता बढ़ गई कि वह एक दूसरे के बगैर, एक पल भी नहीं बिताते थे। श्याम की माँ तथा बहिन, मन ही मन, राजन को महान व्यक्ति समझने लगे क्योंकि श्याम अब पहले जैसा नहीं रहा। उसने लगभग शराब पीना छोड़ दिया। उसने वह बिरादरी भी छोड़ दी जहाँ हर प्रकार की बुराईयाँ होती थीं। वह अब सूर्य चढ़ने से लेकर अस्त होने तक केवल राजन का ही नाम मन में लेता था।

एक दिन राजन घर में बैठा था कि किसी ने पीछे से आँखें बन्द कर दीं। सामने आशा बैठी खाना खा रही थी।

जी हाँ यह श्याम था।

"ओ हो, आप तो सचमुच ही आ गए। आईए, विराजिए"।

बातें बाद में होंगी, पहले तुम मुझे खाना खिलाओ, मुझे बहुत भूख लगी है।

भाईजान, मजाक छोड़िए, यह भी कोई खाने का समय है क्या ?

श्याम चुपचाप रसोईघर में पहुँचा जहां सीता अपने लिए रोटियाँ थाली में डाल रही थी।

"माँ, मुझे खाना चाहिए, मुझे ज़ोरों से भूख लगी है"। यह कहते हुए उसने सीता के हाथ से थाली ले ली और रोटी खाते-खाते कहने लगा—"अरे राजन ! तू क्या फटी-फटी आँखों से मुझे देख रहा है ?

कुछ नहीं सरकार ! मैं आपको देख रहा हूँ, मैंने आपको कितना गलत समझा था। आप तो सचमुच देवता हैं।

अरे, अपनी बात वहीं पर रोक लो। घर पर यह नहीं कहना कि मैंने यहाँ भी खाना खाया है। मैंने वहाँ खाना खाया है। मैं तो माँ के हाथ का पकाया हुआ खाना प्रसाद समझता हूं।

इतने में सीता रसोईघर से बाहर आई और कहने लगी—बेटा तू हमें बार-बार लज्जित करता है।

राजन ने भी माँ की बात को बढ़ावा देते हुए कहा—माँ, मैं भी यही सोचता हूं कि श्याम भैया सचमुच महान हैं।

अच्छा माँ, तुमने मुझ से यह पूछा ही नहीं कि मैं आज यहाँ इस समय क्यों आया हूं ?

यह कौन सी पूछने वाली बात है, बेटा तो माँ के पास आता ही है। सच मानों तो मुझे तुममें और राजन में कोई भी अन्तर नहीं दिखाई देता।

माँ.........कल मेरी छोटी बहिन का जन्म दिवस है। इसी कारण आप सब को निमंत्रण दिया है। आप सब को कल दावत पर आना ही होगा, परन्तु राजन मेरे साथ इसी समय चलेगा।

बेटा, राजन तो जा सकता है, पर वे तो स्वयं नमक के बिना भोजन करते हैं। आशा तो कहीं जाती ही नहीं है।

राजन ! तुम उठके कपड़े बदल डालो।

क्यों साहब, क्या अभी चलना आवश्क है ?

तो क्या मैं अभी तक कोई राम कहानी सुना रहा था।

राजन कपड़े बदल के आया और श्याम के सामने खड़ा हो कर कहने लगा—चलिए भाईजान ! मैं तैयार हूं।

अच्छा माँ, अब मैं चलता हूं कल वहीं से मैं अस्पताल भी जाऊँगा।

दोनों आकर कार में बैठ गए।

"राजन, पहले रजनी के कालेज चलते हैं। वहां से उसे भी ले आएँगे। फिर आगे देखा जाएगा।" यह कहकर श्याम ने कार कालेज की ओर मोड़

दी। कालेज के समीप आते ही उनकी दृष्टि रजनी पर पड़ी जो कि फाटक पर पहले से ही प्रतीक्षा कर रही थी।

वह दौड़ के आई और कार की पिछली सीट पर बैठ गई।

बोलो राजन अब कहाँ चलोगे ? श्याम ने राजन के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा।

नियमानुसार तो हमें घर चलना चाहिए, आगे आपकी इच्छा।

रजनी बीच में बोल उठी—"भैया ! तुमने तो आज फिल्म दिखाने का वचन दिया था।"

राजन तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है ?

मेरे कहने से क्या होगा, आपने वचन जो दिया है।

श्याम ने गाड़ी 'जनता टाकीज़' की ओर मोड़ दी।

तीनों कार से बाहर निकले और हाल की ओर बढ़े। फिल्म का नाम "गंगा-जमना" था। श्याम टिकट घर से तीन टिकटें लाया और तीनों ने हाल में प्रवेश किया।

हाल में पहले श्याम, फिर रजनी और उसके बाद राजन बैठ गया।

सबकी निगाहें पर्दे की ओर टिक गईं। पूरे तीन घण्टे होने को थे कि अन्तिम दृश्य पर रजनी ही नहीं बल्कि पिछली कतार की सब स्त्रियाँ रोने लगीं। श्याम या राजन उसे कुछ न कह सके क्योंकि वे भी नायक की मृत्यु पर गम्भीर थे।

फिल्म समाप्त होने के पश्चात् तीनों कार में बैठ गए। श्याम ने कार घर की ओर मोड़ दी। घर पर नौकरों के सिवाय और कोई भी नहीं था। लाला जी अपनी धर्मपत्नी के साथ कहीं गए हुए थे।

श्याम ने राजन को अपने कमरे में ले लिया। कहो यार, अस्पताल में रोगी कहाँ पहुँचे ? जी वहाँ पर काम बहुत होता है। सच मानिए तो वहाँ से मुझे घर जाने को जी ही नहीं करता है। अब तो अपने वार्ड के रोगियों से बहुत लगाव हो गया है।

राजन इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति एक रोगी है। कल मैंने फिर शराब पी ली। पता है क्यो ? "कल मेरे पिताजी ने एक जगह पर मेरा रिश्ता तय करने का विचार किया है परन्तु मैं विवाह करने के योग्य नहीं हूँ। मैं किसी लड़की के जीवन को नष्ट नहीं करना चाहता। अब इन्हें कौन समझाएगा। कल लड़की अपने पिता सहित यहाँ आएगी। देखो, किस प्रकार मेरे घर वाले मेरे घावों पर नमक छिड़कते हैं। तुम्हें आज इसलिए बुलाया है क्योंकि तुम ही मेरे सब कुछ हो।

देखिए भाईजान, एक बेटे को माता-पिता कितने प्यारे होते हैं ? उसे उनसे कितना लगाव होता है ? रजनी ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा—बहुत प्यारे होते हैं, परन्तु यह आपने कैसा प्रश्न पूछा ?

श्याम ने बोझिल स्वर में कहा—हाँ होते हैं।"

"हाँ तो जब वे स्वर्ग सिधारते हैं तो बेटा उनके पीछे क्यों नहीं जाता है ? उसे जीवित रहना पड़ता है। आपसे एक लड़की प्रेम करती थी, फिर उसने ज़हर क्यों खाया ?

उसे आप एक सपना समझकर भूल जाइए। क्यों अपनी जवानी के साथ इतनी निर्दयता से खेल रहे हैं।" "कैसे भूल जाऊँ उसे"—श्याम, एक पागल की तरह चित्रों का एलबम अलमारी से निकाल कर दिखाने लगा—"कौन-सा स्थान यहाँ खाली रहा है ? कौन-सा ऐसा सपना बाकी रहा है जो मैंने कामिनी के साथ नहीं देखा। देखो राजन, एक इन्सान की कामनाएं तब पूरी होती हैं जब उसके अरमानों की डोली पर अर्थी का साया पड़ता है, जब उसकी आरज़ू धूल में मिल जाती है। जब उसका हृदय दुःख के सागर में डूबा होता है। कह दो राजन, यदि एक व्यक्ति विवश होकर दुःख तथा अनानस को अपने हृदय में स्थान देता है, उसे साथी समझकर उससे लिपट जाता है, फिर यदि सुख आए भी तो, उससे क्या लाभ। कहाँ रखेगा वह उसे यदि हृदय दुःख से भरा पड़ा होगा।"—श्याम एक मासूम बच्चे की तरह रोने लगा—'राजन इस संसार मे ऐसे बहुत कम हैं जिन्हें जीने का सब सामान पर्याप्त होता है।"

राजन उसके आँसू पोंछ कर स्वयं भी रोने लगा—"यह सब मैं मानता हूँ शराब दुःख को सुख में तो नहीं बदलती। याद रखिए, जहाँ तक मेरे विचारों का सम्बन्ध है शराब, एक इन्सान के दुःख को और संजीदा बनाती है। इससे इन्सान लोगों के सामने एक तमाशा बन जाता है। इन्सान उसे कहते हैं जो सब दुःख चुपचाप सह ले और संसार के सामने प्रसन्नता का एक चित्र बन कर रहे। दुःखों से हँसते-हँसते निपटना चाहिए। शराब या अन्य वस्तुओं का सहारा केवल कायर व्यक्ति लेते हैं। आज आप शराब पीते हैं, कल शराब आपको पी लेगी। बुरी आदतों से इन्सान संसार की घृणा का शिकार तो होता ही है परन्तु समय आने पर वह स्वयं अपनी दृष्टि से भी गिर जाता है।

अच्छा, तुम ही बताओ कि मैं क्या करूँगा। देखो यदि मैं विवाह कर लूँ......। राजन मेरे साथ एक विचित्र चुभन है जो पीड़ा बनकर मेरे हृदय पर छाई हुई है, कैसे टालूँ उसे !

उसे अपने हृदय से निकाल दीजिए।

तुम मुझे इसी तरह समझाते रहो। तुम्हारी बातों में मुझे अपने जीवन

की आशा स्पष्ट दिखाई देती है। तेरी बातों से मेरे दिल का बोझ हल्का हो जाता है। ऐसा न हो कि यह आँसू हृदय के भीतर रह जाएं और एक तूफान बनकर मेरे हृदय को फिर दुःखों में डुबो दे। मैं फिर सपने देखने लगूंगा, फिर पहला जैसा श्याम बनूंगा।

मुझे भी यही आशा है कि आप बदल जाएँगे।

इतने में सुखदेव कमरे के भीतर आ गया—राजन बाबू के घर नहीं जा सका सरकार, बाकी सब जगहों से होकर आया हूँ।

डॉ० वर्मा के पास गए थे क्या ?

जी सरकार !

उनका नाम आपने विशेषतर क्यों लिया ? क्या एक डाक्टर की इतनी कीमत होती है।

प्रत्येक के सामने नहीं राजन, बीमार को डाक्टर की चिन्ता तथा डाक्टर को बीमार से लगन। यह बहुत पुरानी बात है। पहले तुम स्वयं एक डाक्टर हो, तुम्हारी बातें भी बड़ी आनन्ददायक होती हैं। रजनी तुम सितार ले आओ। आज गाना नहीं सुनाओगी क्या ?

भाईजान, यह आपने काम की बात कही।

रजनी बीच में बोल उठी—भैया, इस समय नहीं।

क्यों, इस समय क्या बात है, राजन से शर्माती हो क्या ?

नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।

रजनी उठकर सितार लाने के लिए चली गई।

श्याम ने रजनी के वापिस आते ही कहा—आज कोई ऐसा गीत सुनाना जो कि राजन को प्रशंसा करने पर विवश करे।

राजन ने आश्चर्यजनक भाव में कहा—क्या आप कविता भी लिखती हैं ? बहुत खूब।

अरे, तुमने मेरी बहिन को क्या समझा है ? सुनके देखो तो।

रजनी ने सितार बजाना शुरू किया। दोनों मौन हो गए तथा कुछ क्षणों के उपरान्त गीत आरम्भ हुआ।

अभी रजनी ने गीत की कुछ ही पंक्तियाँ गाई थी कि सुखदेव ने कमरे में आकर कहा—छोटे सरकार, मालकिन ने आपको याद किया है, बड़े मालिक भी वहीं हैं।

श्याम का चेहरा गम्भीर हो गया। साज़ के साथ-साथ आवाज़ भी रुक गई।

रजनी ने सुखदेव की ओर देखते हुए कहा—सुखदेव, पिताजी का मुंह···,

मेरे कहने का मतलव यह है कि मूड़ कैसा है ?

ठीक ही है।

श्याम भैया, जो कुछ भी होगा, तुम चुप करके सुनना, अधिक क्रोध नहीं करना।

देखो राजन भैया, मैं गया और आया। यह कहकर श्याम सुखदेव के साथ चला गया।

कमरे में कुछ पल के लिए मौन छा गया। अन्त में राजन को मौन तोड़ना पड़ा।

आप सचमुच वहुत अच्छा गाती हैं।

क्यों मेरा मज़ाक उड़ाते हो ?

आप बुरा मान गई। लीजिए मैं चुप करके बैठता हूं।

जी मैंने वात करने से कव रोका।

यह कविताएँ आपने स्वयं लिखी होंगी ?

जी आपको इसमें कोई सन्देह है क्या ?

जी नहीं। यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो क्या आप मुझे अपनी लिखी हुई कुछ कविताएँ दिखाएँगी ? मैं उन्हें पढ़ना चाहता हूं।

दे दूंगी, परन्तु आप वापिस कव देंगे ?

मैं उन्हें अति शीघ्र पढ़कर वापिस दे दूँगा। अच्छा अब आप यह वताइए कि आप किस कक्षा में पढ़ती हैं ?

इस वर्ष इन्टर की परीक्षा देनीं है।

आपके विषय क्या हैं ?

जी, आर्टस्—इतिहास, राजनीति, हिन्दी तथा अंग्रेजी।

तो आपको परिश्रम करना चाहिए ताकि अच्छे अंक लेकर परीक्षा में सफल हो जाएंगी। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है।

यह वात सच है, मुझे भी पढ़ने का वहुत शौक है।

यह तो वहुत अच्छा है, आपके कितने भाई-वहिन हैं ?

मेरा कोइ भाई नहीं है। हाँ एक वहिन है। उसकी जिह्वा नहीं है।

क्यों ?

वह बोल ही नहीं सकती है। वास्तव में उसकी जिह्वा एक दुर्घटना में चली गई। खैर छोड़िए इसे। आप हमारे पास कभी आइए न।

अवश्य आऊँगी। सच मानिए तो आपकी बातें सुनकर तो मुझे आपके माता-पिता को देखने का शौक उत्पन्न हुआ है।

आने से पहले यह सुन लीजिए कि वहाँ नीचे बैठना होगा। हमारे पास सोफे या कुर्सियाँ नहीं हैं।

यह भी कोई बात हुई।

एक बात आपसे कहना चाहता हूं। सोचता हूं कहीं आप मुझसे अप्रसन्न हो जाए।

आप कहिए न।

परसों हमारे कालेज में एक फन्कशन होने वाला है। आपका क्या विचार है ? क्या आप हमारे साथ चलेंगी ? श्याम भैया को तो मेरे साथ चलना ही होगा।

तो इसमें अप्रसन्न होने की कौन सी बात है ? आप मुझसे कुछ छिपा रहे हैं ?

खैर यदि कहना ही है तो सुनिए—जब मैं यहाँ आया करूँगा, तो आप तब तक यहीं बैठा करें। बस यही कहना था।

क्यों ?

इसका उत्तर मुझे खुद भी मालूम नहीं है।

वैसे मैं आपके कहे बिना ही यहाँ बैठा करती हूं, क्योंकि मुझे आपकी बातें बहुत पसन्द हैं।

ऐसा क्यों ? मेरी बातों में ऐसा क्या है ?

इसका मुझे स्वयं भी ज्ञान नहीं है।

शायद इसी कारण मैंने आपके भाई को शराब की लत छुड़ाने का वचन दिया है।

यह बात नहीं है। आपको पता नहीं है, मेरे हृदय में एक प्रकार का भय था कि कहीं आप आज न आएं।

मुझे भी यहाँ आने की चिन्ता लगी रहती है, क्योंकि श्याम भैया के बिना एक पल भी नहीं कट सकता है।

एक बात पूछूं आपसे ?

जी बड़े शौक से पूछिए।

"आपका प्रशिक्षण कब समाप्त होने वाला है।"

इसी कारण तो इस सप्ताह फन्कशन हो रहा। प्रशिक्षण तो वैसे इसी माह समाप्त होगा।

फिर नौकरी कब मिलेगी ?

"इसके बारे में मैं अभी कुछ नहीं कह सकता हूँ, वैसे नौकरी हमें प्रशिक्षण समाप्त होने के पश्चात् कुछ दिनों में ही मिल जाती है।"

आपको किसी दूर स्थान पर भेज़ेंगे क्या ?

इसका अभी कुछ भी पता नहीं है।

यदि कोई रिश्वत दे दे तो उसे दूर कैसे भेजेंगे।

यह ठीक है, परन्तु मेरे पास रुपये कहाँ है, जो मैं दे दूं।

यदि आप बुरा न माने तो मेरे पास दो हज़ार रुपये है, आप उन्हें ले लीजिए, जब चाहें दे दीजिएगा। ठीक है न।

इतने सारे उपकार आप मेरे लिये किस खुशी में कर रही हैं ? राजन ने एक सन्देह भरी दृष्टि ड़ालते हुए कहा।

इसका कोई विशेष कारण नहीं है। मेरी विचारधारा यह है कि आपके माता-पिता आपका मुँह सुबह और शाम देख सकेंगे। श्याम भैया को भी आपका साथ रहेगा।

वह तो ठीक ही है।

आप आगे पढ़ने की कोशिश कीजिए, वह अच्छा रहेगा।

मेरा भी ऐसा ही विचार है। बातों-बातों में बात बढ़ती ही जायेगी। श्याम भैया अभी तक क्यों नहीं आए ?

आप निश्चिन्त रहिए, इस कमरे में और कोई भी नहीं आएगा—रजनी ने राजन की मनोदशा को भाँपते हुए कहा।

नहीं मैं इस सोच में पड़ गया कि कहीं कोई उल्टी-सीधी बात न हो। लो श्याम भैया आ गए—

"आपने तो बहुत देर लगा दी।"

बात ही कुछ ऐसी थी, तुम्हें कहने से क्या लाभ रजनी ! मुझे इस समय खाना नहीं खाना है। रजनी चुपचाप पलकें झुकाए हुए कमरे से बाहर चली गई।

राजन ! आज मैं तुमसे क्षमा चाहता हूँ। मुझे आज पीने से रोकना नहीं। मैं वचन देता हूँ कि मैं फिर कभी भी नहीं पीऊँगा। श्याम ने अपनी आँखों से आँसू पोंछते हुए कहा।

मैं भला आपको रोकने वाला कौन हूँ। शौक से पी लीजिए परन्तु फिर कभी भी पीने की प्रतिज्ञा है न ?

परन्तु आज मैं तुम्हारे हाथ से पीऊँगा, तुम मुझे पैग भर-भर के दे दो, मैं खाली करता जाऊँगा।

श्याम ने कमरे का द्वार बन्द करके अलमारी से कीमती शराब की दो बोतलें निकालीं। यह रही शराब और यह रहा सोडा।

भाईजान ! काश आप मुझे अपना साथी मान लेते तो इन वस्तुओं को

ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

क्यों इस अनमोल घड़ी को अकारण ही नष्ट कर रहे हो, अब आरम्भ भी करो न।

राजन पैग भरता गया जब तक एक बोतल खाली हो गई और उसके बाद दूसरी भी। राजन भयभीत हो गया।

आप कितनी शराब पिएँगे, अब आपको आराम करना चाहिए।

अभी क्या हुआ दोस्त! मुझे पीने के बाद जीना सिखाया गया है। परन्तु देखो, तुम कभी भी नहीं पीना।

श्याम फिर अलमारी की ओर बढ़ा और दो बोतलें सामने मेज़ पर लाकर रख दी।

इनकी ओर देखो, जो मैं कहता हूँ, जो मैं करता हूँ, उसे भूल जाओ और अपना काम निरन्तर करते जाओ।

राजन ने पैग बनाते हुए कहा—भाईजान! शराब एक बुरी चीज़ है। इसे अधिक पीने से आपके शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि आप अपने यौवन के साथ इतनी निर्दयता से न खेलें। इस अभागे को अपनी मित्रता के योग्य समझिए। जो बीत गया उसे केवल एक सपना मानिए। मैं आपका साथ जीवन के अन्तिम क्षण तक दूंगा। परन्तु शराब मत पीजिए। यह एक अवगुण है। इससे आपके शरीर की दशा बिगड़ जाएगी।

तुम आज मुझे पीने दो। मैं वचन देता हूँ कि मैं फिर कभी भी नहीं पीऊँगा।

पता नहीं आप इतने बुद्धिमान होकर भी क्यों नादान बनते हैं। आप यह नहीं जानते हैं कि आप रजनी के बड़े भाई हैं। बड़े भाई की प्रत्येक गतिविधि, छोटे का साया बन सकती है।

श्याम ने चौथी बोतल का ढक्कन खोला और उसे बोतल से ही पीने लगा।

यह आप क्या कर रहे हैं, हे भगवान, यह कैसी उलझन है।

राजन ने श्याम के हाथ से बोतल छीन ली। उसका चेहरा पसीने से तर हो गया। वह तीन भाग पानी और एक भाग शराब का पैग बनाने लगा।

चौथी बोतल भी खाली हो गई। अकस्मात उसकी दृष्टि श्याम पर पड़ी जिसकी आँखें लाल हो गई थीं और उन आँखों में से किसी के दिए हुए घाव मोती बनकर चमक रहे थे।

राजन उदास होकर उठा और द्वार खोलकर, कमरे से बाहर चला गया।

श्याम के मुंह से कुछ नहीं बोला गया।

राजन बरामदे पर चल रहा था कि किसी के कदमों की आहट सुनाई दी। राजन ने इस ओर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उसके हृदय में दुःख और वेदना मचल रही थी। अन्त में उसे रुकना ही पड़ा।

जी हाँ यह रजनी थी।

बस इतने शीघ्र भाग गए। मेरा क्या हाल है, मैं तो यह सब हर दिन देखती हूं। क्या इसी लिए उसका साथ देने का वचन दिया था? आपको मैं इस समय नहीं जाने दूंगी। आप मेरे कमरे में चले जाइए। मैं उसे स्वयं देख लूंगी।

राजन चुपचाप रजनी के पीछे हो लिया। दोनों ने श्याम के कमरे में प्रवेश किया। श्याम इस समय आकाश में उड़ रहा था। कभी एक कुर्सी पर, कभी लड़खड़ाते हुए दीवार तक आता था। कभी अपने पिता, दादा तथा पड़दादा की तस्वीरें देखकर एक विषैली हँसी उड़ाता था। कभी रोमियो-जूलियट के बने हुए बुत की ओर देखकर आँसू बहाता था। अन्त में रजनी ने उसे कन्धे का सहारा देकर पलंग पर लिटा दिया।

श्याम अब भी यही कहता था—रजनी! जा के तुम अपने कमरे में सो जाओ। यहाँ बत्ती बुझा दो और मुझे अंधेरे में छोड़ दो।

रजनी फूट-फूट कर रोने लगी—भैया! इस घर का नाश न करो। मत बुझाओ इस घर के दीपक को। होश में आओ, मैं तुम्हारे साथ हूं—तुम्हारी बहिन। मेरे लिए जियो, मैं यह सब कैसे सहूँगी कि एक भाई अपने आपको ऐसे नष्ट करे। मैं एक बहिन हूँ।

रजनी बत्ती बुझा दो। जाओ मुझे तंग न करो। रजनी ने बत्ती बुझा दी और स्वयं जाके कुर्सी पर बैठ गई।

राजन भी सिर नीचे किए हुए श्याम के निकट आकर बैठ गया। श्याम पलंग से उठा और डगमगाते कदम लेते हुए बच्चों की तरह खोखली भाषा में गीत गाने लगा। कुछ देर पश्चात् उसकी जिह्वा से दर्द के मारे विचित्र प्रकार की चीखें निकल आईं। उसके नयनों से आँसू की नदियाँ वह निकलीं। पीड़ा के लक्षण उसके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। वह अपना दाहिना हाथ पेट पर जोर से दबाए हुए और बाएँ हाथ से कुर्सी का सहारा लिए हुए था।

रजनी ने राजन से भर्राई हुई आवाज़ में कहा—आपने इन्हें इतनी शराब क्यों पीने दी? देखिए पीड़ा से इनकी क्या दशा हो रही है।

मैंने इन्हें लाख मना किया परन्तु इन्होंने मेरी एक भी नहीं मानी। आप

घबराइए मत, मैं अभी आया।

आप कहाँ जाएंगे ?

मैं दवाई ले के आता हूं, शायद अभी कोई दुकान खुली होगी।

"आप लिखकर दीजिए, मैं सुखदेव के हाथों मंगवाए देती हूं।" राजन ने मारफिया की एक गोली लाने के लिए कागज पर लिख दिया।

रजनी ने सुखदेव को बुलाकर कहा—तुम जा के यह दवाई बाज़ार से ले आओ, श्याम भैया को बहुत पीड़ा हो रही है और देखो माँ को भी इस बात का आभास नहीं दिलाना नहीं तो वह भी चिन्तित हो जाएगी।

सुखदेव दवाई लेकर चला आया। राजन ने श्याम को दवाई खिलाई। कराहने की आवाज़ धीरे-धीरे क्षीण पड़ती गई और कुछ देर उपरान्त वह शान्त हो गया।

"सुखदेव, माँ क्या कर रही है"?—रजनी ने श्याम के सिर को दबाते हुए कहा। जी वह मालिक के पास बैठी होंगी। छोटे मालिक को आज यह पीड़ा फिर क्यों हुई।

क्या करूं, पिताजी ने आज शायद फिर कुछ कहा होगा। एक बात मेरी समझ में नहीं आती है कि पिताजी को श्याम भैया को ताने देने से क्या मिलता है। माँ भी पति के प्रेम में मस्त रहकर बेटे को भूल ही जाती है। तुम्हें पता नहीं है सुखदेव, मुझे कभी-कभी भयानक सपने दिखाई देते हैं।

परमात्मा की कृपा से सब कुशल होगा। बिटिया, यह तो बताओ कि खाना लाऊँ या अभी नहीं।

मैं तो घर से खा के आया हूँ। मेरे लिए कोई भी कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं। श्याम बाबू को विश्राम करने दो।

"मैं तो खाना लेके आऊँगा, आगे आपकी इच्छा।" हे भगवान् तेरा लाख-लाख शुक्र है कि श्याम भैया को आराम आ गया। मेरे भगवान मुझे साहस दो जिससे कि मैं श्याम भैया का इस शराब से पिण्ड छुड़ा सकूं। हे प्रभु, इनके सब दुःख मुझे दे दो परन्तु इस घर को सुखी रखो। मैं श्याम बाबू को सुखी रखने के लिए अपने आपको बलिदान कर सकता हूँ। यदि मेरे बलिदान की भी कोई आवश्यकता है तो ले लो मुझे, परन्तु श्याम बाबू को संसार के सारे सुख दे दो ताकि इनका बेटा इन्हें एक सच्चा इन्सान बनकर वापिस मिले।

आप यह औरतों जैसी बातें करना पसन्द करते होंगे परन्तु मुझे यह बिल्कुल नहीं......' ओह, मैं तो यह भूल ही गया था कि आप भी मेरी बातें सुन रही हैं। मैंने आपको वचन दिया है कि मैं श्याम बाबू को बदल डालूंगा।

आप खाना खा लीजिए, यह ठंडा हो रहा है।

भूख तो मुझे बहुत लगी है परन्तु आप भी खाइए न।

मैंने कहा न कि मैं घर से खा के आया हूँ। आप शुरू कीजिए।

तो भी आप थोड़ा-सा खा लीजिए। आपको मेरी सौगन्ध पहले लड़कियों का आदर ही कौन करता है।

जी वैसी बात नहीं है। मैं आपका बहुत सम्मान करता हूँ।

राजन को विवश होकर खाना, खाना पड़ा। रात के ग्यारह बज चुके थे। रजनी अपने कमरे में चली गई। राजन भी चुपचाप पलंग पर लेट कर सो गया।

: ८ :

बुधवार का दिन था। सब मेहमान एक-एक करके आ गए। रजनी आज सज-धज कर प्रत्येक अतिथि का स्वागत करने में लगी थी।

श्याम तो अपने कमरे में बैठा हुआ था। उसने राजन से कहा—राजन! तुम यह वार्डरोब खोलो और उसमें से हरे रंग का सूट निकालो।

यह लीजिए।

हाँ, यह तुम पहन लो, यह तुम पर खूब सजेगा और देखो, वह टाई भी बाँध लो।

परन्तु भाईजान, मेरे कपड़े तो अच्छे हैं।

यह तुम्हारा बुरा स्वभाव है। तुम हर बात पर वाद-विवाद करने लगते हो। मुझे यह अच्छा नहीं लगता। राजन ने चुपचाप सूट पहन लिया और टाई भी लगाई, यह बताइए कि आप अपनी दाढ़ी नहीं बनाएंगे क्या ?

मैं तो कपड़े पहन लूंगा। दाढ़ी बनाने में देर लगेगी, पिताजी व्यर्थ में शोर मचाएँगे।

श्याम और राजन दोनों, कदम से कदम मिलाकर नीचे उतरे। अतिथियों से लाल कोठी भरी हुई थी। श्याम ने एक-एक से राजन का परिचय कराया और जब लालाजी के निकट आया तो उसके कदम जम गए फिर वह रजनी की सहेलियों के पास गया जहाँ उसे वह दिन याद आने लगा—

"उस दिन भी महफिल गर्म थी। राजन के बदले कामिनी श्याम के साथ-साथ चलती थी। उस दिन भी कदम लालाजी के पास रुक गए थे—

पिताजी, यह मेरे साथ पढ़ती हैं। इनका नाम कामिनी है।

लालाजी ने श्याम की आँखों में घूर कर देखा। फिर कुछ न कहकर अतिथियों में घुल-मिल गया श्याम फिर माँ की ओर बढ़ा—माँ इन्हें पहचानती हो, यह मेरे साथ ही पढ़ती हैं। इनके पिताजी एक अध्यापक हैं।

"ठीक है बेटा, इन्हें पेट भर के खाना खिलाओ। तुम्हें अपने पिताजी के स्वभाव का तो पता ही है।"

यह बात रजनी की सहेलियों ने भी सुन ली। वह भी कामिनी की ओर विचित्र नज़रों से देखने लगीं।

लालाजी ने श्याम को आवाज़ दी—श्याम इधर आओ। यहाँ हमने अन्य अतिथियों को भी बुलाया है। श्याम ने हँसते हुए उत्तर दिया—"पिताजी, यहाँ नौकर भी तो हैं"—यह कहकर वह कामिनी के पास गया, परन्तु कामिनी की पलकें भीगी हुई थीं। सीमा से अधिक अपमान होने के कारण वह श्याम से बोली—देखिए मेरे सिर में दर्द है, कहीं मैं गिर न जाऊं। मैं घर जाऊँगी, आप साम के सात बजे मुझे मिलिएगा।

यह कहते हुए वह आँखों में आँसू लिए मुस्कराती हुई चली गई। प्रत्येक के हृदय में रौनक थी परन्तु श्याम के हृदय का चिराग बुझ गया। वह ऊपर की ओर भागा।"

आज भी वही दिन था। इन सब बातों पर विचार करते-करते श्याम ने राजन से कहा—देखो मुझे चक्कर सा आ रहा है। तुम मुझे सम्भालो। इतने में लालाजी की आवाज़ गूंज उठी—आओ, आओ रोज़ी ! तुम्हारे पिताजी ठहरे मस्त-मौला। उन्हें कहाँ याद होगा कि आज पार्टी पर जाना है। क्षमा कीजिए, केवल आधे घण्टे की देरी हुई। परन्तु बेटी, यहाँ आकर समय के आधीन रहना पड़ेगा।

यह सुनकर सब हँस पड़े। सबकी आँखें कभी रोज़ी की ओर, कभी सेठ गोविन्ददास को देख रही थीं। लालाजी रोमियो-जूलियट के बुत पर हाथ रखकर बोले—सज्जनो ! आप सबको यह सुनकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि मैंने अपने बेटे का हाथ सेठ गोविन्ददास की इकलौती बेटी के हाथ में देने का निर्णय किया है। इस शुभ अवसर पर मुझे आशा है कि आपको भी उतना ही हर्ष होगा, जितना मुझे है। प्रत्येक व्यक्ति ने ज़ोर-ज़ोर से ताली बजाई। यह शोर श्याम के कानों में तड़प बनकर घुस गया।

श्याम दौड़ कर ऊपर की ओर लपका। उसने अपने कमरे का द्वार भीतर से बन्द कर दिया। आज फिर बोतल की ओर हाथ बढ़ा। पीते-पीते श्याम रुक गया।

श्याम भैया, दरवाज़ा खोलो—यह जानी-पहचानी आवाज़ रजनी की थी।

द्वार खोलकर श्याम फिर अपने स्थान पर बैठ गया। रजनी अकेली नहीं थी। उसके साथ रोज़ी भी थी। रजनी अपने भाई को इस दशा में पाकर

शर्मिन्दा हो गई। नीचे तो उसने अपने भाई की प्रशंसा के फूल बांधे थे जो कुछ ही पल में टूट गए।

आओ बैठो रजनी! आइए आप भी बैठिए। क्या नाम है आपका?

रोज़ी अपने होंट दबाते हुए बोली—जी, रोज़ी।

तो आप ही श्याम के भाग्य में अपना भाग्य टटोलने आई है। यह भी ठीक हुआ।

रजनी ने बात का रुख बदलते हुए कहा—यह सब एक नाटक है। मेरे भैया कलाकारी में भी कमाल करते हैं।

कैसी दुनिया है। कामिनी का स्थान शराब ने ले लिया और शराब का स्थान आप ले लेंगी। यह थोड़ा कठिन है। अब आपको समझाएं भी तो कैसे?

रोज़ी विस्मित सी हो गई। अन्त में तनिक सम्भल कर बोली—आप तो शराब पी के भी होश में हैं। रजनी जी यह तो हम लोगों में साधारण सी बात है। आजकल दुनिया में कम से कम सब पीते हैं। इन्होंने कौन सी चोरी की। साथी हो तो सचमुच आप जैसा, बस जो पिलाता रहे—श्याम ने यह कह कर एक और पैग कण्ठ से उतार दिया।

रजनी ने रोज़ी से कहा—चलो मैं तुम्हें अपना कमरा दिखाऊंगी।

दोनों चल दिए। रजनी के चेहरे पर बनावटी मुस्कान थी परन्तु रोज़ी तो हंसती हुई चल रही थी।

कौन? श्याम गरजा।

मैं हूं सरकार—सुखदेव।

अन्दर आओ, इस समय मेरे पास क्यों आए हो? क्या बात है?

जी मालकिन ने याद किया है।

मेरी तबियत इस समय ठीक नहीं है, उनसे कह दो कि मैं बीमार हूँ।

इतने में राजन ने कमरे में प्रवेश किया। उसके पीछे-पीछे श्याम की माँ भी कमरे के भीतर चली आई।

माँ तुम यहाँ क्यों आई?

शराब की बोतल मेज़ पर खाली पड़ी थी।

तुम यहाँ क्यों आ गए। नीचे प्रत्येक व्यक्ति तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। उठो बेटा, वे तो स्वयं भी तुम्हें कब से ढूंढ़ रहे हैं।

चलो मैं अभी आया। राजन तुम भी जाओ।

हे भगवान, अब मैं क्या करूं। मुंह से शराब की दुर्गंध आ रही है। यदि जिह्वा तेज चलने लगे तो फिर क्या होगा।

अभी श्याम के पग धरती पर टिकने ही पाए थे कि लालाजी की आवाज गूंज उठी—श्याम जल्दी करो। श्याम एक-एक पग उठाता हुआ आगे बढ़ता गया। अब सीढ़ियों से उतरना उसके लिए कठिन था। श्याम के लिए यह एक समस्या बन गई। वह थोड़ी देर तक सीढ़ियों पर रुक गया।

आवाज़ फिर गूंजी !

श्याम सीढ़ियों से उतरने लगा। इस विचित्र परिवर्तन को देखकर सब आश्चर्यचकित हो गए कि सहसा यह सब कैसे हुआ।

श्याम का चेहरा काला पड़ गया था। आंखें लाल थीं। राजन उसका हाथ थाम कर किसी प्रकार उसे सेठ गोविन्ददास के निकट लाया। कान में राजन ने शायद यह भी कहा कि अधिक बातें नहीं करना।

लालाजी ने सेठ गोविन्द दास को सम्बोधित करते हुए कहा—यह मेरा बेटा श्याम है, यह एम०एस०सी तक पढ़ा है और अब अपना व्यापार करता है।

जी मुझे इसमें सन्देह है। यह अपने आपको नहीं सम्भाल सकते व्यापार को क्या सम्भालेंगे।

राजन ने हस्तक्षेप करते हुए कहा—नहीं सेठजी, इनकी तबियत आज ठीक नहीं है।

लालाजी ने श्याम की ओर देखते हुए कहा—बेटा, तुम कोई बातचीत क्यों नहीं करते हो।

श्याम ने अपने पिता की बात मुस्कराहट में बदल दी और रोज़ी की ओर देखने लगा। लो पीछे से सुनते-सुनते मेरे कान पक गए कि श्याम को विश्राम करने दो। जाओ बेटा, जा कर सो जाओ।

श्याम उठकर चलने लगा—लड़खड़ाता हुआ कभी किसी के ऊपर, कभी दीवार के साथ। अन्त में सबको यह पता चल गया कि श्याम ने शराब पी रखी है। लालाजी को बहुत क्रोध आया, वह केवल अपने हाथ मलते रह गए।

श्याम यह कैसे भूल सकता था कि वह उन फरिश्तों के सामने है जिन्हें देखकर बहरूपिया भी लज्जा से सिर झुकाकर भाग जाता है। आज भी वही हवेली की ऊंची दीवारें इस बात की साक्षी हैं कि इन उजले चेहरों के पीछे एक और चेहरा छिपा हुआ है जिसमें न ही इन्साफ है और न ही वफा जैसी कोई चीज। यह वह लोग हैं जो कि जीवन को उसका सही रूप देने के बदले उसे सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए दिन में कई बार स्वार्थ के ज़लज़ले में गुमराह करते हैं। इन ऊंचे महलों का धर्म, मानवता, चरित्र केवल एक बाज़ार है जो कुछ नोटों के दबाव से अपने व्यक्तित्व को भूल जाता है। बिना

किसी सूझ बूझ के, श्याम अपने दिल के दुखड़े सुनाता रहा। "भले ही यह रंग-रलियां तुम लोगों के लिए स्वर्ग समान हों परन्तु मुझे उस श्मशान की मिट्टी के समान, सब कुछ तुम्हारे संसार के यह बनाए हुए नाम लगते हैं जहाँ एक दिन हम सबको जाना है। मैं यदि भूलना भी चाहूँ तो नहीं भूल सकूंगा कि मेरा स्वर्ग सिर्फ उस स्थान पर है जहाँ मेरी महबूबा को जलाया गया है। मेरा जीवन केवल एक तड़पन है जो उसने मुझे सौगात के रूप में दी है। कितनी देर तक यह ज़ुल्म की आँधी अपने साथ हमारे पवित्र प्यार का जनाज़ा उठा कर हम से बदला लेगी। इस प्यार को बदल डालने के सपने देखने के बदले अपनी राहें बदल डालो वरना एक दिन इन परवानों की तड़पन अग्नि बन कर तुम पर टूट पड़ेगी और तुम सब धुंआँ उठे बिना ही राख हो जाओगे।"

राजन ने श्याम को ऊपर चढ़ाकर कुर्सी पर बिठाया। वह भी आज श्याम पर क्रोधित था। उससे रहा न गया। अन्त में उसे अपनी जबान खोलनी ही पड़ी क्योंकि ऊपर आते समय श्याम आगे की ओर देखता रहा परन्तु राजन को पीछे देखकर लज्जित होना पड़ा था। प्रत्येक व्यक्ति श्याम की ओर देख कर हँस रहा था। लालाजी भी क्रोध के मारे लाल-पीले हो रहे थे। श्याम की माँ भी क्रोध से पागल हो गई थी। सारे परिवार में केवल रजनी ही एक ऐसी लड़की थी जिसके हृदय का दुःख आँखों में आँसू बनकर जम गया था।

बहुत प्यार है न कामिनी से! प्यार क्या है, जानते भी हो? श्याम बाबू, यदि तुम्हें कामिनी से प्रेम होता तो शोहरत का शिकार बन कर उसे रुसवा नहीं करते। प्रत्येक के मुंह पर आज कामिनी के लिए बुरे शब्द होंगे। हर कोई यही कहता होगा कि उसी ने श्याम को नष्ट किया। चार चाँद लगाए न उसके नाम को। अपने प्रेम को घर-घर की कहानी बनाया श्याम बाबू! इस शराब से आपके घर की मान मर्यादा कहाँ रही? इस लाल कोठी की खूब इज़्ज़त बढ़ाई। वह प्रेम भी क्या प्रेम जो कि एक बेटे को अपने माता-पिता से जुदा करे। प्रेम कोई उपभोग नहीं, यह एक उपासना है जो जन्म-मरण के चक्कर से रहित है। इसमें सहन शक्ति होनी चाहिए। साधू-संन्यासी हज़ारों वर्षों से तपस्या करते आए हैं, आजकल भी बहुत आदमी परमात्मा को अपने जीवन की मंज़िल मानकर उम्र भर उपासना करते हैं। क्या मरने से पहले उन्हें परमात्मा के दर्शन मिलते हैं? कौम जानता है कि किसने किस रूप में क्या, देखा? वह साधू सन्त कुछ देखते भी हैं या ऐसे ही हृदय में अभिलाषा लिए हुए चले जाते हैं। इस बात का ज्ञान होकर भी कि प्रेम अमर है। हम क्यों पश्चाताप की अग्नि में जलते हैं। कामिनी की आत्मा तो नहीं मरी उस आत्मा को पहचानने की कोशिश करो। पिछली कहानियों को दोहराने से

क्या लाभ ? क्या शराब के नशे में वह तुम्हारे सामने खड़ी होती है। उसकी यादों के सहारे जीना सीखो। जाओ और माँ के ममता भरे हृदय से पूछो कि उस पर क्या बीतती होगी। इस परिवार की प्रत्येक आत्मा आपको धिक्कार रही है। ऐसा कौन सा व्यक्ति यहाँ है जिसे आपसे शिकायत न हो।

क्या मिलता है आपको, अपने साथ-साथ प्रत्येक को दुःख देने में। उठिए और जाकर अपनी माँ के चरण छू लीजिए। इन्सान बनकर जीना सीखिए। आपकी जगह पर यदि मैं होता........। इस बात पर श्याम चिल्लाया—भगवान न करे तुम्हें यह दुःख सहने पड़ें। ऐसा मत कहो, तुम मेरे छोटे भाई हो।

राजन ने फिर कहना शुरू किया—यदि एक निर्धन दुःखी होगा तो वह क्या पीयेगा—जहर ? वह कहाँ से शराब के लिए पैसे लाएगा। आप लोग तो समाज को बनाते हैं। यदि आपके स्थान पर कामिनी होती तो क्या वह भी शराब पीकर दिन काटती ? राजन को चुप होना पड़ा क्योंकि श्याम फूट-फूटकर रो रहा था।

आप अभी निर्णय कर लीजिए, या मेरी मित्रता नहीं, या शराब नहीं। इन दो में से एक को त्यागना होगा। राजन का यह कहना था कि श्याम एक पागल की तरह उठा और अलमारी ऐसे खोली जैसे उसमें श्याम का कोई शत्रु छिपा हुआ था जो उसे इस संसार से अलग रखना चाहता था। उसने शराब से भरी हुई बोतलें एक-एक करके फर्श पर पटक दीं। अलमारी खाली हो गई। किसी में भी श्याम के समीप आने की शक्ति न थी। जिस मित्र को वह कभी गले से लगाया करता था आज उसे सदा के लिए नष्ट कर दिया।

राजन मौन बैठा सब कुछ देख रहा था। श्याम अलमारी को खाली करके राजन के सामने आकर बैठ गया। उसकी आँखों से अश्रु की धारा बह रही थी।

"राजन मैं गलत रास्ते पर था। देखो तुम्हें भी कितना दुःख दिया। आज मैं तुम्हें वचन देता हूं कि मैं कभी भी शराब का नाम नहीं लूंगा। चाहे कुछ भी हो जाए।"—"यह कहकर वह माँ के पास गया—"माँ मुझे क्षमा कर दो। मैं अब कभी भी शराब नहीं पियूंगा। श्याम माँ को साथ लेकर राजन के पास आया—अरे राजन ! तुम रो रहे हो ?

राजत ने मुस्कराते हुए कहा—जब मेरी प्रसन्नता सीमा से अधिक बढ़ जाती है तो आँसू बनकर टपकती है। परमात्मा ने मेरी सुन ली। एक माँ को उसका बेटा मिल गया। यह कितनी प्रसन्नता की बात है कि मुझे एक बड़ा भाई मिल गया। इस घर में प्रकाश की लहर फिर दौड़ आई।

लक्ष्मी (श्याम की माँ)-- बेटा मैं तुम्हारे इस उपकार का बदला कैसे चुकाऊँगी। मैं तुम्हारी बहुत ग्राभारी हूँ।

यह सब तो ग्रापके ही ग्राशीर्वाद का फल है। माँ जी इस संसार में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो कभी भी उल्टे मार्ग पर न गया हो परन्तु हर कोई उचित समय पर बदल जाता है ग्रौर ठोकर खाने पर सही मार्ग ग्रपना लेता है।

लक्ष्मी ने नौकर को बुला कर फर्श पर गिरे हुए कांच के टुकड़े उठवाए।

ग्रच्छा माँ जी! ग्रब चलने की ग्रनुमति दीजिए।

नहीं बेटे, ग्रभी ठहरो। चाय पीकर चले जाना। सहसा लालाजी की ग्रावाज़ सुनाई दी। वह ग्रपने नौकर को बुला रहे थे।

लक्ष्मी के पीछे-पीछे सुखदेव भी कमरे से बाहर चला गया।

ग्ररे ग्राप हाथ मुंह तो धो लीजिए। ग्रापके चेहरे पर तो सारे भारत का नक्शा बन गया है।

ठीक है मैं ग्रभी मुंह धोकर ग्राता हूँ। तुम मेरी प्रतीक्षा यहीं करना। मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।

राजन ने कुर्सी पर बैठकर रजनी की ग्रोर देखकर कहा--यह बताइए कि ग्राप कहाँ थीं ?

मैं पिछले द्वार से यह सारा दृश्य देख रही थी। एक बात मेरी समझ में नहीं ग्राई कि यह सब इतनी शीघ्रता से कैसे हुग्रा। मैं नहीं जानती थी कि ग्राप डाक्टर होने के साथ-साथ एक कलाकार भी हैं। इस दृश्य में ग्रापने बड़ी तेज़ी से ग्रभिनय किया।

राजन ने हँसते हुए कहा—यह सब तो ग्रापके भाई ने किया। ग्राश्चर्य की बात तो यह है कि श्याम भैया ने ग्रलमारी इस तरह से खोली, जैसे कि वह इन बोतलों से मेरा सिरा फोड़ना चाहते थे, परमात्मा का शुक्र है कि ऐसा नहीं हुग्रा वरना इस समय मैं ग्रस्पताल में होता।

रजनी ने तनिक क्रोधित होकर कहा--यह बातें ग्रापको ग्रच्छी लगती हों पर मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं हैं। ग्रच्छा यह बताइए कि ग्रापने ग्रपनी नौकरी के विषय में क्या विचार किया है ?

यहीं सोचता हूँ कि सेना में चला जाऊँ।

क्यों ग्रागे नहीं पढ़ेंगे क्या ? या ग्रब विश्राम करना चाहते हैं ?

जी ऐसी बात नहीं है। वास्तव में पढ़ने की इच्छा किसे नहीं होती है परन्तु ग्रपने घर की स्थिति की ग्रोर भी ध्यान देना पड़ता है। पहिले मुझे नौकरी चाहिए, उसके पश्चात् मैं ग्रपनी उच्च शिक्षा के बारे में विचार

करूँगा।

यह भी ठीक है, परन्तु सेना में नौकरी करना अच्छा नहीं है। आप अपने माता-पिता के इकलौते बेटे हैं। वे आपको देख-देख कर जीते हैं। अब देखिए, हमें आज आपकी कृपा से कितनी खुशी मिल गई। कैसे हम आपके इस उपकार का बदला चुकाएंगे ?

श्याम ने कमरे के भीतर आते हुए कहा—यही तो मैं भी सोचता हूँ। राजन, मैं अगले माह काश्मीर जाना चाहता हूं। तुम मेरे साथ चलोगे। बिना किसी वाद-विवाद के तुम्हें मेरा यह प्रस्ताव स्वीकार करना होगा।

ठीक है, मैं अवश्य चलूंगा। अब आप मेरे साथ चलिए, आपको आज दिखाऊँगा कि मैं बीमारों के साथ कैसे पेश आता हूं।

दोनो आकर कार में बैठ गए। जब कार राजन के पिता की दुकान के पास से गुज़री तो वह बन्द थी। राजन चिन्तित होकर श्याम से कहने लगा—पता नहीं पिताजी ने आज दुकान क्यों नहीं खोली है। आज तो यह बन्द है।

यह भी कोई बात हुई, नहीं आए होंगे।

अस्पताल पहुँचते ही दोनो भीतर चले गए। यह बीमारों का घर है। कहीं-कहीं नर्सें बड़ी दौड़ धूप में, कहीं डाक्टर आपस में बातें करते हुए, कहीं से किसी रोगी की दर्द भरी आवाज़। कोई बीमार आपरेशन के पश्चात् मूर्छित अवस्था में इधर-उधर की बातें करता हुआ पाया गया।

राजन पहले अपने कमरे में और फिर उसके पश्चात् अस्पताल के वार्ड नम्बर पाँच में आया जहाँ उसकी ड्यूटी रात की थी।

पहले पलंग पर एक बच्चा था। उस पलंग के इर्द-गिर्द बहुत भीड़ थी। श्याम का शरीर काँप उठा—इस मासूम के साथ यह डाक्टर लोग क्या कर रहे हैं ?

इस बच्चे की नस शायद हाथ नहीं आती है। इसे खून भरना पड़ेगा।

इस मासूम बच्चे के माता-पिता रो रहे थे। बच्चा भी ज़ोर-ज़ोर से चीख रहा था। अन्त में बहुत परिश्रम के पश्चात् उसकी नस हाथ आ गई। उसे खून भरना आरम्भ कर दिया गया।

कुछ कदम आगे चलकर पाँव फिर एक पलंग के सामने रुक गए जहाँ एक बूढ़ा मूर्छित अवस्था में था। नीचे एक बोतल थी जिसमें एक नली से रक्त की बूंदे गिर रहीं थीं। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता था कि उसके मूत्र (पेशाब) की नली में कोई खराबी थी।

श्याम ने विस्मय से कहा—अरे ! यह क्यों मूर्छित है ?

भाईजान, एक घण्टे पूर्व इसका आपरेशन हुआ है। इसका इस ससार में

कोई भी नहीं है। इसी कारण यह अकेला है। कुछ देर उपरान्त ही इसे चेतना आ जाएगी। वह सामने वाला पलंग देखते हो न ! आइए मेरे साथ।

उस पलंग के निकट पहुँचते ही रोगी उठ बैठा--आइए डाक्टर साहब !

राजन ने आते ही मुन्ने को गोद में उठाया—क्या हाल है मुन्ना ?

यह बीमार, बन्सी लाल का इकलौता बेटा था। हाँ, तो आप सुनाइए, क्या आपने इन्जेक्शन कराया ?

जी हाँ पूरे पाँच बजे।

अब खाँसी का क्या हाल है ?

जी अब खाँसी अधिक तंग तो नहीं करती है परन्तु कल रात छाती के नीचे बाईं ओर अधिक पीड़ा थी। इतने में एक नई नवेली दुल्हन, चाँद सा मुखड़ा लिए हुए, सौन्दर्य की प्रतिमा पलंग की ओर आई। उसके हाथ में कुछ बर्तन थे। यह चाँद सा मुखड़ा, बालों से ढका हुआ था और आँखें अन्दर धंस गई थीं। केश बिखरे हुए थे, उसके हाथों की मेंहदी भी अभी तक नहीं छूटी थी। वह पलंग के निकट आ कर बच्चे को गोद में लेने लगी—नमस्ते डाक्टर साहिब !

नमस्ते भाभी !

जी हाँ यह बन्सी की पत्नी थी। राजन ने उसके नुस्खे को देखा और कहने लगा—मुझे विश्वास है कि आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएँगे। आप बातें कम और विश्राम अधिक कीजिए।

कुछ देर तक राजन बन्सी को चैक करता रहा और उसके पश्चात् वह उठकर चल दिया। जाते वक्त उसकी निगाहें उस दुल्हन की ओर पड़ी जिसकी पलकों में कोई शिकायत थी। शायद यही कि उसका पति कब ठीक हो जाएगा।

राजन सिर नीचा किए हुए चल दिया।

"राजन भैया, यह रोगी कब से यहाँ है"—श्याम ने घबरा कर कहा—"इसे कौन-सा रोग है।"

"इसे यहाँ आए केवल पन्द्रह दिन हुए हैं अभी ब्याह किए हुए एक वर्ष भी नहीं बीता है। यह हमारे गाँव से लगभग छः मील की दूरी पर रहता है। इसे---राजन ने एक लम्बी आह भरते हुए कहा—"इसे कैन्सर है।" श्याम बाबू इस चिकित्सालय की भी एक विचित्र दुनिया है। यहाँ के लोग केवल रात आने की प्रतीक्षा में होते हैं क्योंकि वे सो सकें। इसका कारण यह है कि दिन में अधिक शोर होता है। बन्सी की बीवी केवल तेईस वर्ष की है। बेचारी के साथ भाग्य ने एक विचित्र खेल खेला है। इसे बाग-बगीचों के बदले में दिन

रात यहीं काटने पड़ते हैं। यह भी कैसे दिन देख रही है।

इसके पति को ठीक होने में कितना समय लगेगा ?

यह तो मैं बता नहीं सकता हूं कि यह ठीक भी हो जाएगा या नहीं।

पूरे वार्ड का निरीक्षण करने के पश्चात राजन अपने कमरे में चला आया।

बैठिए भाईजान !

इतने में डा० मोहन ने कमरे में प्रवेश किया।

राजन ! तुम्हें डाक्टर साहिब ने याद किया है।

भाईजान, आप यहीं बैठिए, मैं अभी आया—राजन डा० मोहन के साथ डा० वर्मा के कमरे में आ गया।

नमस्ते सर !

हैलो राजन ! मैं अब चलता हूं। वार्ड में सबकी ओर अच्छी तरह से ध्यान रखना। विशेषकर उस कैन्सर वाले पेशेन्ट की ओर पूरा ध्यान रखना क्योंकि उसका दिल कमज़ोर है।

ठीक है सर।

दरवाज़े पर आते ही डा० मोहन ने कहा—अच्छा राजन ! अब मैं चलता हूं।

राजन अपने कमरे में वापिस आकर श्याम के पास बैठ गया—अच्छा अब आप क्या पिएँगे ?

कुछ नहीं भैया। तुम यह बताओ कि क्या रात भर जागते रहते हो ?

जी मुझे यहां नींद ही नहीं आती है। नहीं तो सोने से यहां कौन मना करता है।

अच्छा, मैं सवेरे फिर आ जाऊँगा। अब मुझे जाने की अनुमति दो।—यह कहकर श्याम चला गया।

राजन ने अपना कोट निकाला और एप्रिन पहन कर वार्ड नम्बर सात में गया।

हैलो डाक्टर महेश ! कहो कैसे हो, क्या आज तुम्हारी भी नाइट ड्यूटी है ?

हां राजन, आओ बैठो।

तुम कुछ परेशान से दिखाई देते हो, क्या बात है ?

यार क्या कहूँ मुझे तो कुछ भी नहीं सूझता है कि क्या किया जाए। मेरे वार्ड में एक रोगी आया है। वह कुछ बोलता ही नहीं है, केवल चुपचाप बैठा है। घर वालों से पूछा तो वे भी कहते हैं कि हमें भी कुछ मालूम नहीं है।

इस रोगी के बेटे की मृत्यु हो गई है तब से यह कुछ भी नहीं बोलता है।

क्यों, डाक्टर सरोजनी को नहीं बोला क्या ?

उन्होंने भी कम से कम आधे घण्टे तक रोगी को चैक किया। अच्छा यह तो बताओ कि आज रात किस बड़े डाक्टर की ड्यूटी है ?

डा० पटेल की।

तो फिर चलो, उनसे बात करेंगे।

वह भी आए थे, उन्होंने दवाई दे दी परन्तु वह बुत बना हुआ बैठा है।

तो तुम क्यों चिन्तित होते हो। जब वे कुछ नहीं कर सके तो तुम क्या करोगे ?

राजन, तुम यह क्या कहते हो। हमने तो डाक्टरी अपनी इच्छा से की है। तुम भी तो एक डाक्टर हो। चलो तुम भी उसे देख लो। तुम भी कालेज के एक माने हुए विद्यार्थी थे।

हाँ मैं उसे देख लूंगा परन्तु पहले मुझे अपने वार्ड में जाने दो मैं तुम्हारे पास अवश्य आऊँगा।

राजन अपने कमरे में जाकर इस रोगी के बारे में गम्भीरता से विचार करने लगा।

"यह रोता भी नहीं है और हँसता भी नहीं है, बल्कि चुप करके बुत बना बैठा है—बेटे का सदमा !"

सहसा कमरे का द्वार खुल गया और राजन के विचारों की शृंखला टूट गई।

राजन ने अपनी दृष्टि द्वार की ओर उठाई, जहाँ से केवल हवा अन्दर आ रही थी।

दूसरी बार............।

क्षमा कीजिए डाक्टर साहिब आज देर हो गई—नर्स अन्दर प्रवेश करते हुए बोली।

आज तुम्हारी ड्यूटी है क्या ?

राजन फिर अपने विचारों में खो गया—"यदि दवा काम नहीं करेगी तो उसका अर्थ यह नहीं हुआ कि रोगी वैसा का वैसा ही रहे।"

"सर, एक रोगी को बहुत बुखार है। वह पीड़ा के मारे चिल्ला रहा है। उसे बहुत ही बेकरारी हो रही है।"—नर्स ने कमरे में आते हुए कहा।

राजन चौंकते हुए बोला—तुम मुझसे कुछ कह रहीं थीं।

"सर ! एक बीमार की दशा अत्यन्त शोचनीय है। उसे 105° बुखार है। वह पीड़ा के मारे चिल्ला रहा है।"

चलो मैं आया।

राजन के वार्ड में प्रवेश करते ही पीड़ायुक्त कराहें बढ़ने लगीं। वार्ड के सब बीमार उसकी ओर फटी-फटी आँखों से देख रहे थे। कोई आँख पर आँख नहीं रख सकता था।

यह बन्सी चिल्ला रहा था। वह कभी अपने हाथ ऊपर उठाता तो कभी करवटें बदलता।

उसे देखते ही राजन घबरा गया।

नर्स इसका तापक्रम देखो।

105.3° है सर!

तुम्हें दर्द कहां हो रहा है?

मेरी छाती के नीचे बाईं ओर बहुत पीड़ा है। मैं मर जाऊँगा डाक्टर साहिब!

बन्सी की बीवी रो रही थी और मुन्ना मां की गोद में बैठा अंगूठा चूस रहा था।

"ओह माई गॉड! नर्स तुम पानी की एक बाल्टी ले आओ, जल्दी करो"—राजन ने बन्सी की बीवी को सांत्वना देते हुए कहा—"घबराने की कोई बात नहीं है, बन्सी अभी ठीक हो जाएगा। आपके पास कोई साफ कपड़े का टुकड़ा तो नहीं होगा?

यह लीजिए—साड़ी देते हुए सलमा बोली—भगवान के लिए कुछ कीजिए डाक्टर साहब!

नर्स तुम मुझे पानी में कपड़ा भिगोकर देती जाओ—राजन एक के बाद एक गीला कपड़ा बन्सी के माथे पर रखने लगा।

आधे घण्टे के पश्चात् राजन कुछ थक-सा गया। नर्स! ज़रा अब तापक्रम देखो।

"सर अब केवल 101° है।" बेकरारी तनिक कम होती गई।

देखो तुम इसे यह दवाई की गोली देना और इसका तापक्रम देखते जाना।

राजन वहां से चल दिया। उसके पश्चात् एक-एक करके वह हर मरीज का हाल पूछने लगा। अन्त में वह कोने के पास एक रोगी के सामने पहुँचा।

क्या बात है?

कुछ भी नहीं?

दर्द कहां है?

खुद देख लो। डाक्टर काहे का है तू?

राजन मुस्कराया क्या नाम है तुम्हारा?

जी मंगलराम !

तो मंगलराम तुम क्या काम करते हो ?

जेल से भाग कर आया हूँ।

क्यों ?

वहाँ प्रतिदिन बीज वाला चावल खा-खाकर तंग आ गया। मन पसन्द भोजन ही नहीं मिलता है, वहाँ।

अच्छा तो तुम जेल से भाग कर आए हो !

नहीं मैं बीमार हूं, मेरे पेट में बहुत दर्द है।

नर्स इसे इन्जेक्शन करना पड़ेगा। तुम मेरे साथ आओ। देखो तुम्हें उसे इन्जेक्शन नहीं करना है केवल सूई उबालनी होगी। उसे कुछ भी नहीं है। नर्स हँसने लगी—ठीक है सर ! अच्छा वह दवाई दीजिए, जो कि दूसरे बीमार को देनी है।

यह लो दवाई। उस कोने वाले बीमार की केस-हिस्ट्री पहले मेरे पास लाना और उसके पश्चात् वह इन्जेक्शन वाली बात करना।

केस-हिस्ट्री देखने के पश्चात् राजन गम्भीर हो गया क्योंकि डाक्टर वर्मा का डायगनोज़ कुछ साफ नहीं था। वह अभी इस बात पर विचार ही कर रहा था कि नर्स ने फिर कमरे में प्रवेश किया।

क्या हुआ ?

नर्स हँसते हुए बोली—"सर ! वह हमसे अधिक चतुर निकला। वह तो भाग गया है। अकेले ही नहीं, बल्कि लाल कम्बल और कपड़े भी साथ ले गया है उसने साथ वाले बीमार से पूछा था कि इन्जेक्शन से दर्द होता है क्या ?

उसने बोला था—हाँ, फिर क्या ?

मैं तो जानता ही था कि यह मुझे तंग करेंगे।

अच्छा, डॉक्टर को अस्पताल मुबारिक रहे, मैं चला अपने ठिकाने पर।

परन्तु डॉ० वर्मा ने तो कुछ और ही कहा था।

सर, एक बात पूछूं ?

आओ बैठो, पूछो, क्या पूछना है ?

आप इस कैन्सर के रोगी की देखरेख स्वयं क्यों करते हैं ? सारे वार्ड में अधिक ध्यान आप उसी की ओर देते हैं।

तुम्हारा नाम क्या है ?

ज़ाहिदा जान, सर !

तो ज़ाहिदा, बात कुछ ऐसी है कि इस बीमार के भाई से मेरी बचपन से मित्रता रही है। वह मेरा बचपन का मित्र है। दूसरी बात यह है कि उसने

एक ऐसी लड़की का हाथ थामा है जो इस समाज के हाथों एक खिलौना बनी हुई थी। बन्सी कितना कीमती है, इस बात का अनुमान अब तुम स्वयं लगा सकती हो।

नर्स एक लम्बी आह भरते हुए बोली—खुदा इसे मेरी उम्र भी दे दे।

यही तो मैं भी कहता हूँ। अच्छा तुम एक काम करोगी ?

क्या ?

मुझे चाय की एक प्याली चाहिए। मेरे सिर में बहुत दर्द है।

अच्छा मैं अभी आई।

राजन ने सिर हाँ में हिला दिया। वह फिर उस बुत के बारे में सोचने लगा। इतने में महेश कमरे में आ गया—डॉक्टर राजन ! क्यों भूल गए क्या ? उसकी माँ और बीबी मेरे कमरे में रो रहे हैं। मुझे क्या है ? मैं यहीं सो जाऊँगा। जाकर स्वयं उन्हे उत्तर दो।

अच्छा बाबा चलो।

राजन और महेश दोनों वार्ड में चले गए।

अरे ! यह तो बिल्कुल बुत के समान है। इसकी आँख की किरकिरी भी नहीं होती है।

मैं क्या कहता था ? अब देखो इसकी दादी क्या कहती है ?

जब तक आपरेशन नहीं होगा, यह ठीक नहीं होगा। मैंने कल रात स्वप्न देखा है। डॉक्टर इसका आपरेशन करो।

परन्तु क्यों ?

बूढ़ी कुछ क्षणों के लिए मौन रही और फिर बोली—तुम मेरे बेटे को मारोगे ?

इसे मेरे कमरे में ले आओ। जल्दी करो। दादी माँ, हम वही क़रेंगे, जो तुम कहती हो।

बीमार को राजन के कमरे में लाया गया।

राजन डॉ० वर्मा के फोन का नम्बर डायल करने लगा। पहले किसी ने फोन नहीं उठाया। फिर—

हैलो, डॉ वर्मा स्पीकिंग।

सर, मैं राजन बोल रहा हूं। वार्ड नम्बर सात में एक बीमार है। वह कुछ बोलता ही नहीं है। बस सिर्फ बुत बना बैठा है।

ओह समझ गया। उसके बारे में कल फिर विचार-विमर्श करेंगे। मैंने उसे देखा है। अब तुम क्या चाहते हो ?

सर, मैं कोशिश करना चाहता हूं। आप डॉ० पटेल से बात कीजिए, तब

तक मैं बीमार को देख लूंगा।

ठीक है, मैं अभी फोन किए देता हूँ। बेटे मुझे तुम पर गर्व है।

सर ! यह लगन तो आप ही की दी हुई है।

राजन वहाँ से चलकर बीमार को देखने गया। बीमार को पूरी तरह से देखने के पश्चात् वह डॉ० पटेल के कमरे में आया जहाँ एक ही नहीं बल्कि चार अन्य डॉक्टर भी थे।

नमस्ते सर ! मैं डॉक्टर राजन हूं।

तो तुम्हीं वार्ड नम्बर सात के बीमार को देखना चाहते हो।

दूसरे डाक्टर ने मुस्कराकर कहा—आप क्या देखेंगे ? डाक्टर पटेल ने राजन को सम्बोधित करके कहा—हमें तो कोई आपत्ति नहीं है। हाँ, यदि हमारे योग्य कोई सेवा होगी तो हम कर सकते हैं।

सर ! मुझे एक इन्सान की लाश चाहिए। केवल दस मिनट के लिए।

लाश !—Dead Body ! यह तुम क्या कह रहे हो ?

सर ! मैं स्वयं यहाँ नहीं आया हूँ। मुझे डाक्टर वर्मा ने भेजा है।

तुम ले जा सकते हो परन्तु उससे क्या परिणाम निकलेगा—चारों की दृष्टि राजन की ओर पड़ी। उनमें से डाक्टर सरोजनी भी थी।

यह प्रयोग जो तुम करने जा रहे हो, क्या तुम्हें विश्वास है कि बीमार बोल सकेगा ?

हाँ डाक्टर, मैं प्रयत्न करूँगा।

ठीक है।—डाक्टर पटेल ने घंटी बजाई। स्टोर-कीपर कमरे में आ गया।

इन्हें एक लाश निकाल कर दो। उसने राजन की ओर देखते हुए कहा—कहाँ ले जानी है ?

बी वार्ड नम्बर पाँच के साथ जो कमरा है, उसी में। परन्तु शीघ्र।

यह कहकर राजन चल दिया। महेश कमरे में बैठा था, अरे तुम इतनी देर तक कहाँ थे ?

तुमने चाय पी ली क्या ?

हाँ, लो तुम भी पियो।

नहीं, अभी नहीं। नर्स यह मेज और कुर्सी यहाँ से हटाओ। महेश तुम बीमार को बाहिर ले जाओ। तुम स्वयं भीतर आ जाना। देखो नर्स, यहाँ एक लाल बत्ती लगा दो। तुम मेरे इशारों पर काम करना। महेश तुम कुछ नहीं बोलना, केवल मेरी उँगलियों के इशारों की ओर ध्यान देना। नर्स, थोड़ा पानी ले आओ और देखो बन्सी की बीवी से बच्चा माँग लो। जब मैं उसे भीतर लाने के लिए कह दूं, तो ले आना। तुम सब समझ गए न

महेश ! इतने में लाश आ गई जो कि बिल्कुल ताजी थी। "इसे कोने में रख कर कपड़े से ढांप दो। नर्स अब बत्ती बुझाओ। जल्दी करो।

डाक्टर महेश ! बीमार को अन्दर ले आओ। तुम्हें सब कुछ याद है न, भूलना नहीं।

बहुत अच्छा।

बीमार कमरे के अन्दर लाया गया, राजन अपनी भुजाएँ हिलाने लगा। महेश एकाएक बीमार के समीप आया।

लाल बत्ती फिर जली।

बीमार का चेहरा प्रकाश में आ गया। उसका सिर घुमाया गया।

राजन ने एक दम लाश के ऊपर ढका हुआ पर्दा उठा दिया।

बीमार ने एक भयानक हरकत की और फिर बुत बन कर बैठ गया।

लाल बत्ती बुझाई गई।

राजन ने लाश की आंखों की पलकें खोलीं।

लाल बत्ती फिर जल गई।

लाश अब अधिक भयानक दिखाई दी। बीमार की हरकतें अब बीच-बीच में होने लगीं।

अन्त में बीमार के साथ-साथ कुर्सी भी हिलने लगी। अब बीमार की गतिविधियाँ निरन्तर बढ़ने लगी।

राजन ने लाश को अपने हाथों में लिए रोगी के निकट लाने की कोशिश की।

अब वह घड़ी आ ही गई जब रोगी ने अपने दोनों हाथों से अपना चेहरा छिपा लिया परन्तु फिर भी उसकी जिह्वा नहीं खुली।

राजन रोगी के निकट आया और उसे जोर से हिलाने लगा परन्तु रोगी के चेहरे से हाथ नहीं हटे।

अन्त में राजन बाहिर आ गया।

महेश ने प्रश्न सूचक दृष्टि से पूछा—अब क्या चाहिए राजन ?

नर्स तुम बच्चे को लाई ?

सर, वह सो गया है।

अब क्या किया जाए ?

रोगी की दादी ने पूछा—क्यों आपरेशन हो गया क्या ?

दादी माँ, अभी हो रहा है।

इतने में डाक्टर पटेल भी वहाँ आ गया—क्यों राजन क्या हुआ ?

सर, यदि मुझे कोई बच्चा न मिल सका तो मेरा काम अधूरा रह

जाएगा ।

डाक्टर सरोजनी ने हस्तक्षेप करते हुए कहा—क्या वह लाश वाली योजना सफल नहीं रही ?

जी, अभी मैं कुछ भी नहीं कह सकता हूँ।

लाश वापिस भेज दी गई ।

अच्छा दादी माँ यह बताओ कि जिस बच्चे की मृत्यु हो गई उसकी आयु लगभग कितनी थी ?

बीमार की पत्नी ने कहा—जी यही कुल आठ वर्ष का था ।

राजन ने महेश से सम्बोधित होकर कहा—तुम आठ-नौ वर्ष का बच्चा, कहीं से ले आओ ।

नर्स बीच में बोल उठी—जी मुझे आज्ञा दीजिए, मैं अपना छोटा भाई ले आती हूँ ।

तो फिर देखती क्या हो । उसे शीघ्र ले आओ, देर हो रही है । डाक्टर पटेल कमरे के भीतर जाने लगा ।

सर ! उसे देख लीजिए परन्तु उसके साथ कोई बात नहीं कीजिएगा ।

ठीक है ।—यह कहकर वह कमरे के भीतर ले गए । वापिस निकलने के पश्चात् उन्होंने राजन के कन्धे पर हाथ रखकर बोला—डाक्टर राजन, गो एहेड (Go ahead) ।

अस्पताल के अन्य डाक्टर भी राजन से यही प्रश्न करने लगे—क्या हाल है अब बीमार का ?

भई अभी में कुछ भी नहीं कह सकता हूं ।

इतने में जाहिदा अपने छोटे भाई को साथ लिए हुए आई जो कि अपनी आँखें मूंद रहा था ।

इसे सब समझा दिया न तुमने ?

जी हाँ ।

देखो बेटे, जब मैं तुम्हारा गला पकड़ूंगा । तुम ज़ोर से चिल्लाना । और जब में अपना कोट उतारूंगा तो तुम ज़ोर-ज़ोर से रोने की आवाज़ें निकालना ।

लाल रंग की बत्ती एक बार फिर जल गई । इस बार रोगी अन्धेरे में और लड़का प्रकाश में आ गया ।

राजन ने अपना चेहरा एक काले कपड़े से ढक लिया, केवल अपनी आँखें खुली रखी ।

बीमार के चेहरे से हाथ उठाया गया ।

महेश ने राजन के संकेत पर रोगी का मुंह लड़के की ओर रखा और लड़के का मुंह राजन की ओर था। राजन अपने हाथ ऐसे चला रहा था मानो लड़के की सीमा से अधिक पिटाई कर रहा हो।

उसके पश्चात् राजन ने अपना कोट निकाला। लड़के की रोने की आवाज़ें ज़ोर-ज़ोर से सुनाई दी। रोगी के होंट हिलने लगे परन्तु बिना आवाज़ के।

राजन अब अपने आप को प्रकाश में लाकर लड़के के पीछे दौड़ने लगा। लड़का एक कोने से दूसरे कोने की ओर दौड़ता रहा।

उसके बाद राजन ने किसी प्रकार लड़के के सिर के बाल पकड़ लिए।

"आज मैं तुम्हें नहीं छोडूंगा। मैं तुम्हें जान से मार डालूंगा—यह कहते हुए राजन ने लड़के का गला दबाने का अभिनय किया।

बचाओ, मुझे बचाओ.........।

आवाज़ पहिले धीरे-धीरे थी और सहसा उसके बाद तीव्र होने लगी।

पापा! मुझे बचाओ, यह मुझे मार रहा है।

सहसा राजन ने लड़के का गला दोनों हाथों से फिर पकड़ लिया।

लड़के का शोर बढ़ता गया और उसके साथ-साथ बीमार के दिल की धड़कन तीव्र होती गई। सिर ऊपर की ओर उठने लगा। उसकी आंखों में क्रोध झलकने लगा। हिचकियां लेने के साथ-साथ वह दांत पीसने लगा।

दूसरे संकेत पर बच्चा तड़प-तड़प कर फर्श पर गिर पड़ा।

बीमार कुर्सी से उठ गया और कातिल के बदले अन्धेरे में हवा से लड़ने लगा।

बत्ती बुझ गई।

तीन कोनों में तीन व्यक्ति थे।

नर्स, महेश और राजन रोगी की ओर देखने लगे। रोशनी बच्चे पर पड़ी।

रोगी खुली आंखें लिए हुए लड़के के पास आया। लड़के के निकट आकर रोगी उसे कलेजे से लगाए हुए रोने लगा। उसकी सिसकियों से कमरा गूंज उठा।

, दस मिनट के पश्चात् बत्ती फिर जलाई गई। रोगी लड़के को अपनी बाहों में लिए हुए रो रहा था और उसके सिर को बार-बार चूम रहा था।

बत्ती फिर बुझ गई।

लड़का उसके हाथ से छीन लिया गया।

अन्धेरे में चीखें फिर गूंज उठीं परन्तु रोगी के शब्दों में विनय भाव थे।

रोगी फिर ज़ोर-ज़ोर से अपना सिर पीटने लगा।

राजन के संकेत पर पेट्रोल और लकड़ी के कुछ टुकड़े लाए गए।

राजन ने एक चिता बनाकर जला दी।

नर्स और महेश रोगी के हाथ ज़ोर से पकड़े हुए थे जो कि रोते-रोते कह रहा था—मैं लुट गया। मेरा सब कुछ नष्ट हो गया। मुझे छोड़ दो। इन्होंने इसे गला दबाकर मार डाला। मुझे छोड़ दो, मैं उसे ढूंढ़ लूंगा। देखो मेरा बेटा जल रहा है। मैं एक बार इसका मुँह चिता में देख लूंगा। भाई साहब मुझे छोड़ दीजिए राजन के अगले संकेत पर उसकी पत्नी उसके सामने आई।

पत्नी के आते ही रोगी को छोड़ दिया गया। वह अपनी बीबी से कहने लगा--देखा हमारे भाग्य में क्या लिखा था। हमारा बेटा, हमें छोड़कर कैसे चला गया। खैर तू मत रो। अब क्या करेंगे ?

बत्ती फिर जलाई गई।

राजन अपना कोट पहनते हुए कहने लगा—डाक्टर महेश, ले जाओ अपने रोगी को और डॉ० पटेल से कह दो कि अब इसे देख लें।

रोगी अब डॉ० महेश के साथ चलने लगा। बाहर डा० पटेल के साथ-साथ चार अन्य डाक्टर भी थे।

रोगी सिर नीचे किए हुए आँखों से आँसू बहा रहा था।

डॉ० पटेल, राजन के पास जाकर उसे बधाई देते हुए कहने लगा—आज तुमने जिस मनोवैज्ञानिक ढंग से इस रोगी को ठीक किया, उससे केवल डा० वर्मा का ही नहीं बल्कि हमारा नाम भी रोशन हुआ। हमें तुम जैसे विद्यार्थियों पर गर्व है।

डॉ० सरोजनी भी मुस्कराते हुए बोली--हम तो तुम्हें आज डाक्टर मान गए।

राजन डॉ० पटेल की ओर देखकर बोलने लगा—सर, यह तो आपका ही बड़प्पन है। यदि आपने लाश नहीं दी होती तो यह बेचारा अभी कष्ट में होता।

नर्स ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा--सर ! मेज़ और कुर्सी लाकर रख दूं ?

हाँ, ले आओ और देखो मुझे चाय की एक प्याली चाहिए अब तुम चाय बनाओ।

सर ! मैंने थर्मस में चाय ला रखी है।

पहले तुम अपने भाई को सुला दो। इस समय इसे घर कहाँ ले जाओगी। मैं तब तक वार्ड का चक्कर काट कर आता हूँ।

राजन ने वार्ड के सब रोगियों को सोया हुआ पाया, केवल बंसी के पलंग से कराहने की आवाज़ें आ रही थीं। शायद उसके सिर में दर्द था और उसकी बीवी उसके सिर पर हाथ रखे हुए थी।

इसके सिर में दर्द है क्या ? राजन ने बन्सी के पलंग के पास आते हुए कहा।

जी अब ज्वर अधिक नहीं रहा परन्तु सिर में अधिक पीड़ा हो रही है।

देखो इन्हें थोड़ी गर्म चाय पिला दो। घबराने की कोई बात नहीं है। सब ठीक हो जाएगा।

डॉक्टर साहब, आप तो यह जानते ही हैं कि मेरा इनके सिवाय इस दुनिया में कोई भी नहीं है। कुछ समझ में नहीं आता है कि यह देखते ही देखते अंधेरा कैसे छा गया।

देखिए भाभी बन्सी के छोटे भाई, अशोक को मैं बचपन से ही जानता हूं। तुम्हें पता नहीं है कि वह मेरा पुराना मित्र है। मुझे तुम अशोक ही समझो। क्या उसका कोई भी पत्र नहीं आया ?

जी अभी नहीं आया। परसों पहली तारीख के दिन ४०० रु० भेजे थे। पत्र तो वह भेजते रहते हैं। परन्तु क्या करूँ। आप पैसों की कोई चिन्ता नहीं कीजिएगा। मेरे पास अभी अपने सारे गहने मौजूद पड़े हैं। इसके अतिरिक्त मकान और जमीन भी है। मैं यह सब बेच डालूंगी परन्तु इन्हें ठीक कर दीजिए।

देखो ऐसी बात मत करो। मैं तुम्हारा भाई हूँ। परमात्मा पर विश्वास रखो। यह अति शीघ्र ठीक हो जाएँगे। तनिक धैर्य से काम लो। अच्छा अब चलता हूं।

"क्यों नर्स नींद आ रही है क्या ?"—राजन ने कमरे के भीतर आते हुए कहा ?

नहीं सर, अब आपके लिए चाय लाऊँ ?

हाँ, अब चाय पिलाओ। वार्ड में सब रोगी सोए हुए हैं। परन्तु बन्सी के सिर में दर्द है।

यह लीजिए चाय और यह रहे बिस्कुट।

तुम्हारी ड्यूटी अभी मेरे साथ कितने दिन है ?

जी तीन दिन और।

तुमने आज इस काम में पूरा सहयोग दिया। सचमुच आज तुमने एक सच्ची नर्स का रोल अदा किया। शाबाश ज़ाहिदा ! तुमसे पहले भी कई नर्स यहाँ आईं परन्तु दो घंटे काम करने के पश्चात सो जाती थीं। कितनी

कामचोर थी वे। तुम्हारा अभी पहला ही दिन हुआ।

डाक्टर साहब मुझे काम करना बहुत पसन्द है। आप देखिए कि मैं अपने कर्तव्य पर कितनी दृढ़ हूं। मुझे नींद आती है, परन्तु मैं सो नहीं सकती।

क्यों?

जब सोने लगती हूं तो भयानक सपने आते हैं। अब तो जागे रहने की आदत ही पड़ गई है।

अरे, यह तो मैंने तुमसे पूछा ही नहीं कि तुम्हारे पिताजी क्या काम करते हैं? तुम कितने भाई बहिन हो?

"पिताजी की मृत्यु मेरे बचपन में ही हो गई। माँ इसी चिकित्सालय में नर्स थी परन्तु अब वह उठ नहीं सकती है। उसके लिए चलना-फिरना कष्टदायक रहता है। मेरी तीन बहिनें और एक भाई है। मैं उनमें सबसे बड़ी हूँ। दो बहिनों का व्याह तो कर दिया है। अब एक है, उसकी भी बात चल रही है। पिताजी का भी थोड़ा बहुत पैसा मौजूद था, नहीं तो मैं अकेले क्या-क्या करती।

तुमने अपने बारे में क्या सोच रखा है? कुआँरी ही रहना है क्या?

"डॉक्टर साहब, मैं तो इस भाई की प्रतीक्षा कर रही हूं। जब यह बड़ा हो जाएगा तो यही मेरा व्याह करेगा"—ज़ाहिदा यह कहते हुए खिलखिलाकर हँसने लगी।

पगली! तुम तो तब तक बूढ़ी हो जाओगी। अब तुम्हारी आयु क्या है?

जी मैं छब्बीस वर्ष की हूं।

तुम केवल एक अच्छी नर्स ही नहीं बल्कि इस संसार में सचमुच एक उदाहरण हो। यह क्या कम है कि तुमने अपनी खुशी को मिटाकर दूसरों की खुशी बनाई। इसके लिए सहनशक्ति तथा साहस होना चाहिए। ज़ाहिदा मुझे तुमसे पूरी सहानुभूति है। मैं तुम्हें अपने हाथों डोली में बिठाकर एक नए जीवन की ओर विदा करूँगा।

ओह, डॉक्टर साहब आपने चाय के सात प्याले पिए!

मैं तो यह भूल ही गया कि चाय समाप्त हो गई होगी। पता नहीं आज मुझे क्या हो गया? इतनी सारी चाय पी ली। वास्तव में तुम्हारी कहानी बहुत दिलचस्प थी। मैं एक डॉक्टर की हैसियत से नहीं बल्कि इन्सानियत के नाते तुम्हें प्रशंसा के योग्य समझता हूं। तुम्हारे लिए चाय ही नहीं रही।

जी मैं तो चाय पीकर आई हूं मुझे इस अस्पताल में दस वर्ष हुए परन्तु आज जैसा न तो इलाज ही देखा और न रोगी ही। आपने तो आज एक चमत्कार कर दिखाया।

अभी तुमने देखा ही क्या है, मुझे आगे एम० एस० करने दो, फिर देखना कि मैं क्या करूँगा। ज़ाहिदा, इन दिनों मैंने यह अनुभव किया कि डॉक्टर के बोलने का ढंग रोगी के लिए कितना आवश्यक है। तुमने तो इस अस्पताल की मुझसे अधिक सेवा की है। तुम भी तो मुझसे अधिक रोगी के निकट रहती हो।

डॉक्टर साहब यह तो आपका बड़प्पन है जो आप यह कहते हैं। पता है, एक नर्स कितनी सुशील क्यों न हो, उसे लोग बुरी अवश्य कहेंगे। राह चलते-चलते गन्दी बातें सुनने की आदि बन गई हूँ। कुछ लोग हमें इन्सान नहीं बाज़ार का खिलौना समझते हैं।

राजन ने ऊँची आवाज़ में कहा—ज़ाहिदा, क्यों मूर्ख बन रही हो। मुझे तो इस काम में कहीं भी कोई अपमानजनक बात दिखाई नहीं देती। कुछ लोग पागल हैं, क्या उनके साथ-साथ तुम भी पागल बनती हो। देखो लोगों के लिए नहीं बल्कि अपने लिए जीना सीखो। तुम बिल्कुल अनपढ़ हो क्या ?

नहीं सर, दसवीं कक्षा तक पढ़ी हूँ।

तुम मेरा कहा मानोगी क्या ?

अवश्य, आप कहिए तो।

तुम आगे पढ़ने की तैयारी करो। एक-एक कक्षा की परीक्षा देती जाओ। यहाँ से अवकाश मिलने के पश्चात् एक-दो घंटे पढ़ाई किया करो।

हाँ सर, यह ठीक है।

यह बताओ कि तुम्हारे भाई का नाम क्या है ?

जी परवेज़।

देखो मैं तनिक विश्राम करूँगा। तुम अब जाकर अपना काम करो।

: ९ :

सवेरे सात बजे राजन नींद से जाग उठा और परवेज़ के पास गया।

उठो परवेज़ बेटे ! उठो बहुत देर हो गई है।

परवेज़ को उठाने के पश्चात् राजन उससे बातें करने लगा। इतने में ज़ाहिदा ने कमरे में प्रवेश किया।

नमस्ते डॉक्टर साहब !

भई हम तुम्हारे भाई के साथ बैठे बातें कर रहे थे। यह भी डॉक्टर बनना चाहता है। लड़का बहुत ही बुद्धिमान दिखाई देता है।

सर ! अब मुझे जाने की अनुमति दीजिए।

हैलो डॉक्टर राजन--डॉक्टर रोशन ने हँसते हुए कहा।

तो तुम आ गए, यह रही तुम्हारी कुर्सी। सम्भालो इसे। हाँ, एक बात याद रखना--यह मेरा मित्र है न बन्सी, उसकी ओर विशेष ध्यान देना।

यह बात सुनते-सुनते तो मेरे कान पक गए।

अच्छा मैं तो जाऊँ।

भई रोकता कौन है?

राजन घर चलने से पूर्व एक बार बन्सी को देख आया, और फिर ज़ाहिदा से बोला—चलो ज़ाहिदा हमारी ड्यूटी शाम तक समाप्त हो गई। अब जाने डॉ रोशन और उसके रोगी।

अस्पताल से बाहर निकलते ही ज़ाहिदा कहने लगी—आपको किस ओर से जाना है?

मैं तो दाएँ ओर से जा रहा हूं।

तो फिर चलिए, मुझे भी वहीं से चलना है।

लगभग पच्चीस गज़ चलने के पश्चात् ज़ाहिदा एक स्थान पर रुककर बोली--अच्छा अब मेरा घर आ गया, आइए अब यहीं चाय पियेंगे।

मैं अवश्य आता परन्तु मेरा मित्र मेरी प्रतीक्षा कर रहा होगा। तुम्हारे पास तो कभी आना ही है।

इस समय केवल पाँच मिनट के लिए आइए न।

ज़ाहिदा! इस स्थान पर पहुँचने तक तुम्हारा मज़ाक किसी ने नहीं उड़ाया और इसके साथ-साथ मैंने किसी के मुंह से तुम्हारे लिए गन्दे शब्द नहीं सुने। तुम जो कहतीं थीं.........

ज़ाहिदा सिर नीचे किए हुए चुप हो गई।

ज़ाहिदा! धूल हवा के झोंके को देखते ही दूर तक उड़ जाती है। शोहरत भी एक प्रकार की धूल ही है और हवा का काम करती है।

क्या आप हम निर्धनों का कहना मानोगे?

परवेज़ ने राजन का हाथ पकड़ते हुए कहा—यदि आप इस समय हमारे साथ नहीं आए तो हमारी मित्रता कट जाएगी।

अच्छा परवेज़! शाम को अस्पताल जाते समय मैं तुम्हारे पास अवश्य आऊँगा।

ज़ाहिदा परवेज़ का हाथ थामें हुए अपने घर की ओर चली गई।

राजन लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ घर की ओर चल पड़ा। वह बहुत शीघ्र घर पहुंचना चाहता था। उसे अपने पिता की चिन्ता लगी हुई थी।

कोई राजन को पीछे से पुकारने लगा। यह श्याम की आवाज़ थी।

"तुमने मेरी प्रतीक्षा क्यों नहीं की। मैं तो तुम्हारे अस्पताल की ओर ही आ रहा था।

पता नहीं भाईजान ! कल से दिल बहुत दुःखी है।

चलो गाड़ी में बैठो।

लाल कोठी के पास श्याम ने कार रोक ली।

चलो पहले हमारे पास चलो।

नहीं भाईजान, इस समय नहीं। मैं अब घर जाना चाहता हूँ। यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो आप भी मेरे साथ चलिए।

जैसी तुम्हारी इच्छा।

श्याम ने कार राजन के घर की ओर मोड़ दी। आज भी शिवप्रसाद की दुकान बन्द थी। राजन को पूरा विश्वास हो गया कि पिताजी की तबियत ठीक नहीं है।

कार घर के पास पहुंचते ही रुक गई। राजन श्याम के साथ अन्दर चला आया।

ऐ माँ, तुम क्या बना रही हो ?

नमस्ते माँ जी ! श्याम ने अन्दर आते हुए कहा।

जीते रहो बेटा !

माँ क्या पका रही हो ?

अभी तो कुछ नहीं। बैठो बेटा, मैं तुम्हारे लिए चाय बनाती हूं।

अच्छा तो यह बताओ कि तुम आज इतनी सुस्त क्यों हो गई हो ?

राजन ने श्याम के निकट ही कुर्सी पर बैठते हुए कहा—माँ, यह बताओ कि पिताजी ने दुकान क्यों नहीं खोली है ?

बेटा, कल से हम बहुत चिन्तित हैं। उनके सिर में दर्द होने के साथ-साथ दांत से भी खून आया। हम बहुत घबरा गए। ले इस कागज़ को पढ़ कर देख, इसमें क्या लिखा है।

राजन ने कागज़ को देखकर चुपचाप उसे जेब में डालना चाहा परन्तु श्याम ने हाथ से छीनते हुए कहा—माँ, इसमें कोई विशेष बात नहीं। सब ठीक हो जाएगा।

परन्तु उन्होंने तो कुछ उल्टी बातें कहीं मैं बहुत घबरा गई।

क्या कहा उन्होंने ? राजन ने गम्भीर मुद्रा में कहा, यही कि यदि हमने दुकान का किराया नहीं चुकाया तो दुकान में सरकार ताला लगा देगी। तेरे पिताजी इसी कारण बहुत चिन्तित हैं।

"कोई बात नहीं माँ, सब ठीक हो जाएका। जब तक मैं जीवित हूं तुम्हें

किसी भी बात की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। उसे पैसे मिल जाएँगे।"—राजन ने अपनी माँ को आश्वासन देते हुए कहा।

श्याम बीच में बोल उठा—क्या मैं तुम्हारा बेटा नहीं हूं ? इस छोटी सी बात पर तुम घबरा गई। तुम कितनी भोली हो, मैं तुम्हें नोटों से तोलूंगा। राजन उसका कितना किराया बाकी है ?

भाईजान उसे केवल चार सौ पच्चीस रुपये देने हैं, दे देंगे। माँ तुम चाय बनाओ तब तक मैं पिताजी से बात करूँगा।

हाँ यह बात ठीक है। तुम पिताजी से बात करो। तब तक मैं माँ के पास बैठा हूं।

राजन अपने पिता के कमरे में प्रविष्ट हुआ। आशा अपने भाई को देख उससे लिपट कर रोने लगी।

अरि पगली ! तू रो क्यों रही है, क्या बात है ? पिताजी आप अकारण चिन्तित क्यों होते हैं ? हम उसे पैसे दे देंगे। आपको कितनी बार मैंने कहा कि चिन्ता करना आपके लिए अच्छा नहीं है।

बेटा मैं अब बूढ़ा हो गया हूं। इस जीवन का क्या भरोसा। यह घर तुम्हारा है, मैं अब जीवन से हार गया हूं। इतनी छोटी सी बात पर आप अपना साहस खो बैठे। यह देखिए आशा कितनी रो रही है। आप अब शीघ्र ठीक हो जाइए। मैं जो कमा रहा हूं।

"यह बात ठीक है"—श्याम ने अन्दर आते हुए कहा—"राजन के अस्पताल में परसों फन्कशन होने वाला है। वहाँ आपको भी चलना होगा।

आइए श्याम बाबू ! बैठिए, मैं आपकी तरह छोटा तो नहीं हूँ।

पिताजी परन्तु आपने तो कहा है कि आप राजन के मित्र भी हैं।

बेटे वह तो है ही परन्तु मेरी आयु का भी तो कुछ ख्याल करो। हमारे दिन बीत गए। अब तुम्हारे घूमने के दिन हैं। मैं तो तुम लोगों को देख-देख कर हँसता रहूंगा।

राजन ने शिवप्रसाद के सिर पर हाथ रखते हुए कहा—आपको इस समय कहाँ पीड़ा हो रही है ?

बेटे मेरे सिर में बहुत दर्द है।

राजन ने उठते हुए आशा से कहा—देखो आशा, मैं पिताजी के लिए दवाई ले कर आता हूं। तुम माँ से कहो कि पिताजी के लिए नमक के बिना सब्जी पकाएं। श्याम भैया ! मैं अभी आया। आप मेरी प्रतीक्षा यहीं कीजिएगा।

चलो इकट्ठे चलते हैं।

दोनों कार में बैठ गए।

राजन कहाँ से चलना है ?

जी, इस मार्ग से चलिए। पिताजी कम्पाउन्डर के बिना किसी से भी अपनी चिकित्सा नहीं कराते हैं। क्या कहूं भाईजान ! पिताजी का ब्लड-प्रेशर बहुत हाई हो गया है।

यह कबसे……?

यही कोई आठ वर्ष हो गए। तब मैं कालेज में नहीं बल्कि स्कूल में पढ़ता था। अब यह परहेज नहीं करते हैं।

नमस्ते पन्नालाल जी !

आओ राजन ! कैसे आना हुआ ?

आप मेरे साथ चलिए। शायद पिताजी का ब्लड-प्रेशर हाई हो गया है। सिर में भी बहुत दर्द है। आप जानते ही हैं कि वे आपके बिना किसी का कहना मानते ही नहीं हैं। आप ब्लड-प्रेशर मशीन भी अपने साथ उठाईए।

'चलो भई चलता हूं।

घर पहुँचने के पश्चात् शिवप्रसाद का ब्लड-प्रेशर देखकर पन्नालाल ने कहा--आपसे मैंने कहा न कि आप नमक बिल्कुल कम खाइए। आप परहेज नहीं करते हैं।

राजन ने पन्नालाल से गम्भीर मुद्रा में कहा—यह तो मैं भी कहता आया हूं कि दवाई से अधिक परहेज लाभदायक रहता है। कितना प्रेशर है इन्हें ?

आज थोड़ा ऊँचा ही है [दो सौ बीस]।

ओह, यह तो बहुत ऊँचा हुआ !

यह गोलियां आप बाजार से मँगवा लेना। यह मेरी दुकान में नहीं हैं। एक गोली सुबह और एक सायंकाल खाना और नमक बिल्कुल बन्द।

राजन घबराने की कोई बात नहीं है, यह शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे। अच्छा नमस्ते।

श्याम ने उठते हुए कहा—चलिए मैं आपको गाड़ी में छोड़ आता हूं।

जी, मुझे अभी दुकान पर नहीं जाना है।

भाईजान आप कहाँ चले ?

भई, मुझे मिल पर जाना है।

शौक से जाइए, परन्तु पहले चाय की एक प्याली पी लीजिए।

श्याम चाय पीकर वहाँ से चल पड़ा और राजन एक किताब के पन्ने उलटने लगा।

बेटा ! तुम्हें पूरी तरह से नौकरी कब मिलेगी ?

आशा भी राजन के समीप आकर बैठ गई। शायद वह भी यही प्रश्न पूछना चाहती थी क्योंकि इस समय वह अपनी पुरानी साड़ी को सूई से पहनने के योग्य बना रही थी। तीन दिन के बाद शायद मेरी नौकरी का आर्डर निकलेगा। परन्तु आपने यह किसलिए पूछा ?

पहले यह तो बताओ कि तुम्हें कहीं दूर तो नहीं भेजेंगे ?

नहीं पिताजी मुझे डा० वर्मा की बात पर पूर्ण विश्वास है केवल वे ही नहीं बल्कि लगभग सब डॉक्टर मुझे चाहते हैं। वे मुझे कहीं दूर नहीं जाने देंगे।

बेटा, यदि तुम्हें कहीं दूर भेजेंगे तो तुम्हें अपनी माँ को भी साथ लेना पड़ेगा।

फिर तो हम सब चलेंगे। मैं आपका मुँह देखे बिना कैसे रह सकूँगा। बेटा, मेरी एक अभिलाषा है। जब मैं ठीक हो जाऊँगा तो मैं तुम्हारे साथ अस्पताल जाऊँगा।

क्यों, वहाँ आप क्या करेंगे ?

मैं यह देखूँगा कि तुम रोगी के साथ कैसे बातें करते हो। यह भी कोई बात हुई। मैं यहाँ एक दुकान खोलूँगा। शाम के समय बीमारों को मुफ्त देखा करूँगा। आप मेरे साथ कुर्सी पर बैठकर देखेंगे अच्छा यह बताइए कि आपकी दाढ़ी बना दूँ।

शिवप्रसाद ने बात बदलते हुए कहा—बेटा दवाई मैं चार बजे खा लूँगा। इस समय सब्ज़ी में थोड़ा नमक डाल देना। नमक के बिना सब्जी खाई ही नहीं जाती है।

फिर वही बात। मैं भी कुछ दिन सब्जी के बिना खाना खा सकता हूँ। आप समझते क्यों नहीं हैं कि इतना प्रेशर होना अच्छा नहीं हुआ।

अच्छा तुम अपनी डाक्टरी मुझ पर मत चलाओ। कभी समझा है कि यह रोग ठीक नहीं होता है। मुझे भगवान पर भरोसा है। मैं नमक खाऊँगा।

"नमस्ते सीता चाची"—किसी ने अन्दर आते हुए कहा—ऐ राजू ! क्या कर रहा है ?

दोनों मित्र आपस में बड़ी ज़ोर से गले मिल गए।

मुझे इस बात का पूरा विश्वास था कि तुम अवश्य आओगे—राजन ने अपने आँसू पोंछते हुए कहा—तुम तो अच्छे हो न, मैं कल शाम की गाड़ी से यहाँ आया हूँ।

अशोक, तेरे बिना यह गाँव सूना-सूना सा दिखाई देता था।

पिताजी की तबियत क्या ठीक नहीं है ?

यार इनके सिर में बहुत दर्द है।

यह बताओ राजन कि बन्सी भैया कब ठीक हो जाएँगे ?

यह तो मैं नहीं कह सकता हूं, हाँ, मैं अपनी ओर से पूरी कोशिश कर रहा हूँ।

यह तो मैं मानता हूं परन्तु एक और समस्या मेरे सिर आ पड़ी। मुझे बड़ी कठिनता से पन्द्रह दिन की छुट्टी मिली है। इसी कारण उनका स्वस्थ होना अत्यन्त आवश्यक है।

शिवप्रसाद ने गम्भीर होकर पूछा—अरे बात क्या है ?

पिताजी, वह अपना बन्सी भैया है न, पता नहीं उसे देखते ही देखते क्या हो गया।

अच्छा राजन आपरेशन की तारीख क्या है ?

आपरेशन हो गया होता परन्तु वह बहुत कमजोर है। वैसे मैंने डा० वर्मा से बात की है, दो तीन दिनों के पश्चात् हो जाएगा। अब एक समस्या है कि ब्लड बैंक में ए-ग्रुप का खून बिल्कुल कम है। उसे आपरेशन के समय कम से कम दो-तीन बोतलें खून की चाहियें।

अशोक ने अपना बाजू बढ़ाते हुए कहा—"मैं यहाँ किस लिए आया हूं। यह तुम मुझ पर छोड़ दो। मेरा भी तो ए-ग्रुप का ही खून है। मैं इसका प्रबन्ध स्वयं कर लूंगा।" अच्छा यह बताओ कि तुम मुझे पत्र क्यों नहीं लिखा करते थे ? राजन ने अशोक के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा।

यदि मैं भी यही प्रश्न तुम से पूछूं तो तुम्हारा उत्तर क्या होगा ?

उत्तर तो स्पष्ट है। मेरे हृदय में तुम्हारे लिए इतना प्रेम है कि पत्र लिखते-लिखते कई दिन बीत जाते हैं। फिर भी पत्र अधूरा ही रहता है। दूसरा कारण यह है कि मुझे अधिक लिखने का अभ्यास नहीं है। मैं तुम्हारे जाने के पश्चात् उस घर में पाँव तक नहीं रखता हूँ क्योंकि मुझे वह घर तुम्हारे बिना सूना-सूना सा दिखाई देता है। मेरे यार इस समय मुझे पिताजी की चिन्ता खाए जाती है। इनका प्रेशर उतरता ही नहीं है।

तुम्हारे होते हुए यह कैसे हो सकता है ?

मैं क्या करूँगा, पिताजी तो मेरा कहा मानते ही नहीं हैं। शिवप्रसाद ने नथुने फुलाते हुए कहा—अशोक बेटे मेरे भाग्य में जितनी देर कष्ट भोगना लिखा है, भोग लूंगा। यह परहेज़ वाली बात मेरे नियम के विरुद्ध है। परहेज़ करना स्वयं को कष्ट देना हुआ, जिसके लिए मैं तैयार नहीं हूं।

इस बात पर सब खिलखिलाकर हँस पड़े।

अच्छा राजन यह बताओ कि तुम्हारी ड्यूटी कितने बजे आरम्भ होती है ?

शाम के सात बजे से ।

तो मैं तुम्हारी प्रतीक्षा चिकित्सालय में करूँगा—यह कहकर अशोक चल पड़ा ।

राजन दिन भर अपने पिता की सेवा में मग्न रहा और चार बजे अपनी रोटी का डिब्बा उठाए हुए चलने को तैयार हो गया ।

अच्छा पिताजी, अब मैं चलता हूँ ।

जाओ बेटा ! परमात्मा तुम्हें सुखी रखे ।

राजन ने अभी दो कदम ही आगे बढ़ाए थे कि पीछे से शिवप्रसाद की आवाज़ सुनाई दी ।

राजन !

सीता ने अपने पति को टोकते हुए कहा—घर से निकलते समय, पीछे से आवाज़ देना अपशगुन होता है । राजन ने अपनी माँ के मुंह पर हाथ रखते हुए कहा--माँ मैं इन व्यर्थ बातों पर विश्वास नहीं करता । कहिए पिताजी आप क्या कह रहे थे ?

बेटा कल सवेरे आते समय अपने साथ धूप का एक पैकेट लेते आना ।

ठीक है पिताजी, मैं कल वापिस आते समय अवश्य लाऊँगा ।

: १० :

राजन लाला हुक्मचन्द की हवेली के निकट आकर उसके भीतर चला आया । ज़ालिमसिंह ने देखते ही राजन को दोनों हाथ जोड़ कर नमस्ते किया ।

अकस्मात राजन के पांव धरती पर जम गए । किसी की मधुर वाणी ने आगे नहीं जाने दिया । राजन एक निराले ढंग से रजनी की ओर देखने लगा तथा गीत समाप्त होने के पश्चात खांसते हुए उसके समीप आकर हाथ से गुलाब का फूल छीन कर कहने लगा--सचमुच आप बहुत अच्छा गाती हैं ।

ओह राजन साहब ! आइए ऊपर चलकर बैठिए । श्याम भैया आते ही होंगे ।

माँ जी अन्दर ही होंगी ।

जी नहीं, यहाँ कोई भी नहीं है । आज मेरी मौसी के बेटे का जन्म दिवस है । इसी कारण सब वहाँ गए हुए हैं ।

आप क्यों नहीं गईं ?

जी मुझे किसी के घर जाना पसन्द नहीं है ।

कोई बात नहीं । इस डिब्बे में मेरे लिए रोटी है । माँ ने बिन्दी और दाल लाई है । लीजिए खा लीजिए ।

रजनी ने तुरन्त डिब्बा छीन लिया और पांच मिनट में उसे खाली कर दिया। तब तक राजन उसकी बनाई हुई कविताएं देखने लगा।

रजनी ने मुस्कराते हुए कहा—"लीजिए संभालिए अपनी अमानत, परन्तु खाली है।"

रजनी अपने स्थान से उठकर नीचे घास पर बैठ गई।

"अरे यह आप क्या कर रही हैं? तो मैं भी वहीं बैठूंगा। आप नीचे और मैं कुर्सी पर, यह कैसे हो सकता है।"

अच्छा साधू महाराज, अब आप ही बताइए कि मैं कहाँ बैठूं?

आप हमारे साथ बेशक न चलें परन्तु हमारे पास तो बैठिए। एक बात पूछूं आपसे?

जी, शौक से पूछिए।

आपको यह रोटी का डिब्बा कहाँ से मिला था?

जी, इसमें मेरे लिए रोटी आई थी। आजकल मेरी नाइट ड्यूटी चल रही है न। आपने सुबह चाय भी नहीं पी होगी।

अरे, यह आपसे किसने कहा? मैंने तो ग्यारह बजे ही रोटी खाई है।

यह आपने मुझसे अभी तक क्यों नहीं कहा, देखिए आपने मेरी रोटी भी खा ली।

आप बुरा मान गए क्या?

जी, बिल्कुल नहीं। यह बताइए क्या आप शाम को अब कुछ नहीं खाएंगी?

क्यों नहीं खाऊंगी, भूखी रही तो रात कैसे कटेगी।

अरे बाप रे, आपका पेट है कि समुद्री जहाज!

इस पर दोनों हँस पड़े।

यदि मैं आपका हाथ देखूं तो आपको कोई एतराज तो नहीं?

जी, नहीं देखिए क्या लिखा है भगवान ने हमारे आने वाले दिनों के लिए।

लिखा तो बहुत कुछ है पर डर लगता है कहीं आप रूठ न जाएं।

मैं आपसे रूठ जाऊं! क्या यह आप दिल की बात बताते हैं?

जी, नहीं मेरा दिमाग ऐसा कहता है।

आप दिमाग को छोड़िए और दिल से पूछिए।

राजन ने रजनी के हाथ को तनिक दबाते हुए कहा—आपके दिल में किसी के लिए प्रेम है जिसे आपने बड़ी कठिनाई से छिपा रखा है। क्या आप किसी से प्यार करती हैं?

नहीं राजन बाबू ! यह उल्टा रोग है। आज तक इससे बहुत परहेज़ करती आई हूँ।

रजनी वह लड़का कितना भाग्यवान होगा जिसे तुम जैसी लड़की का सामीप्य प्राप्त होगा।

क्या यह सब मेरे हाथ पर लिखा है ?

जी नहीं, यह मेरे दिल की आवाज़ है। यदि आपको मेरी बातें पसन्द नहीं तो लीजिए मैं चुप करता हूँ।

"यह मैंने कब कहा कि मुझे आपकी बातें पसन्द नहीं हैं।"

"अच्छा अब मुझे आज्ञा दीजिए। मैं तो भूल ही गया था कि मुझे ज़ाहिदा के घर भी जाना है।"

रजनी ने पहली बार राजन की ओर पलकें उठाकर देखा और तुरन्त ही उन्हें झुका लिया। परन्तु राजन उसकी ओर देखता ही रहा ?

जी, यह ज़ाहिदा कौन है ?

वह मेरी एक शुभ चिन्तक है। मैं उसे बहुत पसन्द करता हूं। वह अति सुन्दर है। आप भी उसे देखते ही पसन्द करेंगी।

तो इसका अर्थ यह हुआ कि आपको सुन्दर लड़कियां पसन्द हैं। देखिए अधिक देर न कीजिए, वह आपकी ही राह देख रही होगी।

"आपका चेहरा क्यों उदास हो गया ?"—राजन उठकर कुछ कदम चलने के पश्चात् फिर मुड़कर वापिस आया और कुर्सी पर बैठ गया।

आप वापिस क्यों आ गए ? जाइए ज़ाहिदा आपकी प्रतीक्षा कर रही होगी।

मैंने अपना निश्चय बदल दिया। मैं अब वहाँ नहीं जाऊँगा।

क्यों ?

क्योंकि वह आपको पसन्द नहीं है। इसी कारण मुझे भी पसन्द नहीं है। अब यह बताइए कि परसों होने वाले फन्कशन के बारे में आपको याद होगा। आप आएँगी न ?

आपको मेरे आने से क्या मिलेगा ?

जी किसी विशेष कारणवश नहीं, यूँ ही कहा था। खैर आपने मुझे अपने प्रश्न का उत्तर ही नहीं दिया।

जी हाँ आ जाऊँगी। और कुछ पूछना है क्या ?

जी हाँ !

तो पूछिए।

रजनी तुम बहुत सुन्दर गाती हो तुम्हारी आवाज बहुत सुरीली है, तुम बहुत ही अच्छी लड़की हो।

इतनी सारी तारीफों के लिए धन्यवाद।

अच्छा अब मैं चलता हूँ। देखिए मुझे मज़ाक करने की आदत है। आप बुरा तो नहीं मान गईं ?

हाँ मान गई।

क्या बुरा माना आपने ?

यही कि आप बहुत सीधे-सादे आदमी हैं।

यह तो आपने ही मुझे सिखाया है। अरे आप मेरे साथ कहाँ चल पड़ीं ?

जी मैं फाटक तक आपके साथ आऊँगी।

आप यह कष्ट क्यों उठा रहीं हैं ?

गुरुदेव आप चलिए तो सही।

रजनी ने राजन का साथ फाटक तक दिया। वह तब तक उसी ओर देखती रही जब तक राजन उसकी दृष्टि से ओझल न हुआ।

राजन चलते-चलते ज़ाहिदा के घर के समीप पहुँचा और दरवाज़ा खोलकर अन्दर जाने के पश्चात् ज़ाहिदा को बुलाने लगा।

ज़ाहिदा ने बाहर आते ही कहा—आइए डॉक्टर साहब !

राजन ज़ाहिदा के पीछे-पीछे कमरे के भीतर आया, जहाँ एक कोने में किसी की आवाज़ आई—आओ बेटा, बैठो।

ज़ाहिदा ने राजन की ओर देखकर कहा—डॉक्टर साहब यह मेरी माँ हैं। इसकी तबियत कुछ दिनों से ठीक नहीं है।

"नमस्ते माता जी"—राजन ने उसके माथे पर हाथ रखते हुए कहा—"क्या बात है ? आपके दर्द कहाँ है ?

बेटा कभी-कभी मेरे दिल की धड़कन तेज़ हो जाती है। यहाँ तक कि मेरा सारा शरीर हिलने लगता है। उस समय मेरा चेहरा पीला पड़ जाता है।

ज़ाहिदा ने हस्तक्षेप करते हुए कहा—इसके साथ-साथ यह अधिक सोचा भी करती है।

माताजी आप अधिक चिन्ता क्यों करतीं हैं ? सब ठीक हो जाएगा।

बेटा, उसके बिना तो दिन ही नहीं कट सकते हैं।

डॉक्टर साहब, मैं तो आपसे यह कहना भूल ही गई कि मेरी माँ दार्शनिक विचारों की हैं।

राजन ने बात काटते हुए कहा—तुम्हारी माँ बहुत अच्छी हैं। मैंने अपना वचन पूरा किया। अच्छा अब मैं चलता हूँ।

ठहरिए, मैं भी तो चल रही हूँ—ज़ाहिदा ने थरमस उठाते हुए कहा।

अच्छा माताजी अब आज्ञा दीजिए।

"जीते रहो बेटा। मुझ बूढ़ी के पास कभी-कभी आते रहना। भूलना नहीं।"

यह आप कैसी बातें करती हैं। बेटा माँ को कैसे भूल सकता है। अब तो मैं यहाँ आता रहूंगा—यह कहकर राजन ज़ाहिदा के साथ चल पड़ा।

वे अभी कुछ कदम ही आगे चले थे कि उन्हें पीछे से कुछ सिपाही आते दिखाई दिए, जिनके पीछे एक बहुत बड़ी भीड़ आ रही थी। राजन और ज़ाहिदा के कदम वहीं रुक गए। इस भीड़ में कुछ व्यक्ति हँस रहे थे और एक-दो व्यक्ति उदासी की प्रतिमा लिए हुए चल रहे थे। इसी भीड़ के बीच में एक युवक तथा युवती सिर झुकाए हुए आ रहे थे।

यह देखकर राजन ज़ाहिदा से कहने लगा—यह क्या बात हो सकती है जाहिदा?

मेरा विचार है कि इस युवक ने इस मासूम युवती को छेड़ा होगा। अब पुलिस ने इसे पकड़ लिया।

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, यह कोई प्रेम का चक्कर होगा। यदि तुम्हारी बात सच है तो हम मर्द जात के लिए नर्क का दण्ड भी कम है। मुझे इन युवकों से बिल्कुल संयोग नहीं है जो ऐसा कार्य करते हैं। इस लड़की को भी तो परमात्मा ने ही बनाया है। यदि मेरा शासन होता तो मैं एक लड़की को छेड़ने का दण्ड सात वर्ष से कम नहीं रखता। यदि मेरा कहना सच है तो इस मार्ग पर चलने से लोगों की उँगलियाँ उठती हैं। ठीक है, प्रेम करके न्यायालय में विवाह कर लो। समाज की कुरीतियों का पतन भी हो जाएगा और ऐसी झलकियाँ भी बहुत कम देखने को मिलेंगी। सच मानो ज़ाहिदा! जब भी मैं किसी युवक को किसी युवती से छेड़खानी करते देखता हूं तो मुझे उस युवक के बदले में लज्जा आती है क्योंकि मैं भी तो उनकी ही जात से सम्बन्धित हूं।

ज़ाहिदा ने गम्भीर होते हुए बात आगे बढ़ाई—डॉक्टर साहब कुछ लोग किसी लड़की से छेड़खानी करना और उसका मखौल उड़ाना प्रेम का साधन मानते हैं।

"यह मैं जानता हूं और देखता भी आया हूं—यदि इसके बदले एक लड़का किसी भी लड़की के सामने बहुत ही साधारण ढंग से अपनी प्रेम गाथा पेश करता तो कितना अच्छा होता। प्रत्येक इन्सान में भावनाएँ होती हैं—चाहे वह लड़का हो या लड़की परन्तु बहुत कुछ सोचना पड़ता है। अब देखो जब उस लड़की के माता पिता को यह पता चलेगा तो उनकी क्या दशा होगी?"

"यही तो मैं भी सोच रही हूँ परन्तु हमारे सोचने से क्या लाभ? काश,

हमारे आजकल के युवकों में इस प्रकार की विचारधारा होती तो कितना अच्छा होता।"

इतने में अस्पताल का फाटक आ गया और दोनों भीतर आ गए।

राजन डॉ वर्मा के कमरे में आ गया।

नमस्ते सर !

हैलो माई ब्वॉय ! बधाई हो।

सर किस बात की ?

कल से तुम्हारी प्रशंसा सारे अस्पताल में चल रही है। तुमने तो कल एक चमत्कार कर दिखाया। मैंने अपने ग्रुप में से तुम्हें होने वाले फन्कशन के लिए चुना है। तुम परसों तैयार होकर आना।

ठीक है सर। एक बात पूछनी है ?

कहो क्या है ?

सर ! यह जो बन्सी है न, वह कैंसर वाला रोगी। उसका आपरेशन पिछले सप्ताह होने वाला था परन्तु अधिक दुर्बलता के कारण नहीं हो सका। वह अब आपरेशन के योग्य हो गया है।

ठीक है, एक-दो दिन तक कर लेंगे—यह कह कर डा० वर्मा चले गए।

राजन, पहले अपने कमरे में आया, जहाँ उसने एप्रिन पहन लिया और वार्ड की ओर चल दिया।

प्रत्येक रोगी को देखने के पश्चात वह बन्सी के पलंग के निकट पहुँचा। अशोक भी वहाँ मौजूद था।

राजन ने अशोक के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—नमस्ते बन्सी भैया ! कहो अशोक क्या बातें हो रही हैं ?

कुछ नहीं यार, वह जो मेरी भाभी है न, उसका हृदय बहुत छोटा है। अब मैं उसे समझा रहा था।

तुम्हारे समझाने की कोई आवश्यकता नहीं, मैं जो यहाँ हूँ।

बन्सी ने मुस्कराते हुए राजन की ओर देखा और कहने लगा—"डाक्टर राजन, मैं अब कुछ दिनों का मेहमान हूं। मैं एक बड़े भाई होने के नाते अशोक को समझा रहा था कि मेरी मृत्यु के पश्चात् अपनी भाभी को नहीं छोड़ना क्योंकि इसका सब कुछ तो यह ही है।"

"बन्सी भैया ! तुमने आज अपना साहस छोड़ दिया है। तनिक बिचार करो कि तुम्हारी इन बातों से हमारी भाभी पर क्या बीतती होगी। तुम्हारे सिवाय उसका इस संसार में कौन है। भगवान क्या अन्धा है। हम सबको अभी तुम्हारी आवश्यकता है। तुमने अभी देखा ही क्या है।" अशोक की आँखें भर आईं—राजन, मैं अपना सब कुछ बेच डालूंगा परन्तु मेरे भाई को अवश्य ठीक करना।

तुम भी पागल हो गए क्या ? पहले आपरेशन तो होने दो। फिर देखना अशोक भैया बिल्कुल ठीक हो जाएगा। भाभी ! तुम भी अपना दिल छोटा न करो। भगवान पर विश्वास रखो। अच्छा अशोक मैं बाकी रोगियों को देख कर आता हूँ।

ठीक है, परन्तु शीघ्र आना।

राजन वार्ड के प्रत्येक रोगी को देखने लगा। एक बच्चे के पास आकर उसकी नाड़ी देखने लगा।

ज़ाहिदा !

क्या बात है सर ?

इस बच्चे का तापक्रम तुमने देखा क्या ?

जी हाँ. कुछ देर पहले 100° था।

दूसरी बार देखने पर थर्मामीटर ने 102° दिखाया।

"देखो ज़ाहिदा ! इसे यह कैप्सूल छः-छः घण्टे के बाद देती जाओ।"—राजन ने बच्चे के पिता की ओर मुड़ कर कहा—जितना भी हो सके, इसे ग्लूकोज़ का पानी पिलाते जाइए।

राजन अपने सारे वार्ड का निरीक्षण करने के पश्चात उस वार्ड की ओर गया जहाँ उसका ठीक किया हुआ रोगी था। वार्ड के समीप पहुँच कर वह पहले डाक्टर के के कमरे में गया जहाँ आज डाक्टर शान्ति की ड्यूटी लगी थी।

हैलो डाक्टर शान्ति !

नमस्ते डाक्टर राजन ! आपको मेरी ओर से बधाई है।

जी मैं यह पूछने आया हूं कि कल आपके वार्ड में बैड नम्बर छः पर एक रोगी था, अब उसका क्या हाल है ? क्या वह अब अच्छी तरह से बोल सकता है ?

जी अब वह बिल्कुल स्वस्थ है।

क्या मैं उसे देख सकता हूं ?

क्यों नहीं. चलिए मैं भी वार्ड में ही चल रही हूँ। वार्ड में आने के पश्चात राजन सीधा छठे पलंग के पास आया।

क्यों भई अब क्या हाल है तुम्हारा ?

रोगी ने हाथ जोड़ कर राजन का अभिवादन किया—यह सब तो आपकी ही दया से हुआ। अब मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूं। मुझे छुट्टी कब मिलेगी ?

यह तो तुम अपनी डाक्टर साहिबा से पूछ लो। डा० शान्ति आप इसकी छुट्टी के बारे में अपने मुख्य से बात कीजिए।

शान्ति ने सिर हाँ में हिलाया।

राजन की ड्यूटी इस वार्ड में तो नहीं थी परन्तु उसे रोगियों से बातचीत

करने का शौक अवश्य था। इसी कारण वह भी शान्ति के साथ प्रत्येक रोगी को देखने लगा।

वार्ड का चक्कर काटने के पश्चात् शान्ति ने उसे अपने कमरे में लाकर बिठाया।

अब बताइए डाक्टर राजन आपके रोगियों का क्या हाल है ?

आधे ठीक हो गए। उनके स्थान पर नए रोगी आ गए कुछ पुराने रोगी अभी मौजूद हैं। हाँ, यह पूछना तो भूल ही गया कि आपका रोगी कहाँ पहुँचा। उसकी चिकित्सा में कोई कमी तो बाकी नहीं रखी न आपने ?

तो वह कब ठीक होने वाला है। वैसे तो मैं अपनी ओर से उसकी चिकित्सा में कोई भी कमी नहीं रखती हूँ।

अच्छा यह बताइए कि आपने अपने व्याह के बारे में क्या सोचा है ?

जी इसी वर्ष होने वाला है। पिताजी के दिल्ली से आने के पश्चात्।

अच्छा अब आज्ञा दीजिए, मैं चलता हूँ।

बैठिए अभी पूरी बातें कहाँ हुई। आपने अपने व्याह के बारे में क्या विचार किया ?

अभी जल्दी भी क्या है। वैसे अभी तक कोई भी मछली जाल में नही फँसी।

राजन साहब ! आप ज़रा जाल तो फेंकिए।

क्या आप मुझे राजेश खन्ना समझती हैं या देव आनन्द, जो लड़कियां मुझे देखकर मरने लगें।

आपमें यह दोनों हैं परन्तु चेहरे से यह मनहूस छाया उतार फेंकिए।

तो क्या मैं आपको मनहूस लगता हूँ ?

गम्भीरता की भी कोई सीमा होती है।

अच्छा मैं कोशिश करूँगा परन्तु आप कोई लड़की मेरे लिए ढूंढ़िए तो..........।

राजन यह कहते हुए वहाँ से चल पड़ा और अपने कमरे में आकर बैठ गया। इतने में ज़ाहिदा भी कमरे में आ गई। "वार्ड के सब रोगियों को तो देख लिया परन्तु बन्सी की दशा निराशाजनक है ! ज़ाहिदा तुम भी खुदा से यह दुआ मांगो कि बन्सी ठीक हो जाए।"

जी, यह तो मेरा कर्त्तव्य ही है। आखिर उसका आपरेशन कोई साधारण सी बात नहीं है। मुझे डाक्टर वर्मा की बातों से डर सा लग रहा है। कैंसर कोई साधारण रोग तो नहीं है। यह बताओ ज़ाहिदा कि तुम्हारे विचार में कैंसर के कितने रोगी इस अस्पताल में आए ?

बहुत आए सर। कुछ दिनों पूर्व ही मेरी ड्यूटी वार्ड नम्बर चार में थी। वहाँ एक ही वार्ड में कैन्सर के दो रोगी थे परन्तु दोनों के आपरेशन असफल रहे और उनकी मृत्यु हो गई।

"उनका आपरेशन किसने किया था।" राजन ने माथे पर हाथ फेरते हुए कहा ?

डाक्टर टी०के० सिन्हा ने।

तुम्हें पता नहीं है ज़ाहिदा ! कि बन्सी का बचाना कितना आवश्यक है। यदि उसे कुछ हो गया तो मुझे भगवान पर विश्वास नहीं रहेगा—यह कहते हुए राजन ने डॉक्टर वर्मा के फोन का नम्बर ड़ायल किया। फोन मिलने पर बातचीत शुरू की।

हैलो सर, मैं राजन बोल रहा हूं।

हैलो डॉक्टर वर्मा स्पीकिंग। क्या बात है ?

सर ! मुझे बन्सी के बारे में डर सा लग रहा है। क्या आपको विश्वास है कि आपरेशन सफल रहेगा ?

यह तो मैं नहीं कह सकता हूं परन्तु तुम उसके बारे में बार-बार क्यों पूछते हो ?

सर, उसकी कहानी ही विचित्र है, उसका ठीक होना अत्यन्त आवश्यक है।

खैर मैं डॉक्टर पटेल से बात करूँगा।

राजन ने टेलिफोन का रिसीवर नीचे रखा और वार्ड में चला गया।

यार तुमने बहुत देर लगा दी, अच्छा अब मैं चलता हूँ—अशोक ने बन्सी के ऊपर की चादर ठीक करते हुए कहा।

क्यों, रात को यहाँ नहीं ठहरोगे क्या ?

में अवश्य ठहरता परन्तु घर पर कोई भी नहीं है। खैर कल सुबह फिर आऊँगा।

अशोक राजन के साथ उसके कमरे में आया। दोनों की आपस में बातें हुईं। अशोक के चेहरे पर उदासी के लक्षण स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। वह चुपचाप अस्पताल से बाहर निकल पड़ा।

इधर राजन ने अपने कमरे की खिड़कियाँ बन्द करते हुए ज़ाहिदा को बुलाया—देखो ज़ाहिदा ! मेरे सिर में बहुत दर्द है। तुम मेरे लिए चाय की एक प्याली बनाओ।

बहुत अच्छा सर।

रात के दो बज चुके थे। सहसा द्वार खटखटाने की आवाज़ आई।

राजन आँखें मूंदते हुए द्वार खोलकर ठिठक गया, क्योंकि उसके सामने

वन्सी की बीवी आँखें नीचे किए हुए खड़ी थी।

क्या बात है ? बन्सी तो ठीक है न ?

जी ठीक हैं, मुझे आपसे कुछ विनती करनी थी।

आओ बैठो, कहो क्या कहना है ?

आपके सामने मेरी कोई भी बात छिपी नहीं है। मेरे पास छः किलो चाँदी और तीस तोले सोने के आभूषण हैं। इसके साथ-साथ मेरे पास सात हज़ार रुपये हैं।

राजन ने मुस्कराते हुए कहा—तो आप बहुत ही धनी हैं।

मैं अपनी सब जायदाद, पैसे इत्यादि उन पर लगाऊँगी परन्तु आपसे हाथ जोड़ती हूँ। यदि उन्हें कुछ हो गया............... । वह ज़ोर-ज़ोर से सिसकियां लेने लगी।

तुम परमात्मा पर भरोसा रखो। क्या तुम मेरी बहिन के समान नहीं हो ? मैं तुम्हारे लिये अपनी जान भी दे सकता हूं। पगली ! दिल छोटा मत करो। मैं तुम्हारा भाई हूं। बन्सी भैया का पहले आपरेशन तो होने दो। बन्सी की पत्नी चुपचाप वार्ड की ओर चली गई।

: ११ :

सवेरे नींद से उठते ही राजन ने बन्सी को एक बार फिर देख लिया। आज वह बहुत कम बोलता था। मुंह का रंग काला पड़ गया था। उसकी आँखों में आँसू की कुछ बूंदें जम गईं थीं।

राजन ने बन्सी को सन्तोष दिलाया और अपने घर की राह ली। घर पहुंचकर वह अधिक चिन्तित हो गया क्योंकि शिवप्रसाद के सिर में असहनीय पीड़ा थी और आँखें लाल हो गई थीं। प्रत्येक व्यक्ति सहज भाव से यह कह सकता था कि उसका प्रेशर बहुत हाई हो गया है। दवाई की गोलियां आठ घण्टे के बदले छः घंटे के पश्चात दी गई।

श्याम भी दिन में दो बार पिताजी का हाल पूछने आया सीता और आशा के दिलों में एक विचित्र प्रकार का भय था।

राजन भी अपने पिता की बीमारी के बारे में हर बड़े डॉक्टर से विचार विमर्श करने लगा। हर कोई दवाई देने से पहले परहेज़ के बारे में पूछता था।

इस बात पर राजन का सिर झुक जाता था क्योंकि शिवप्रसाद के शब्दकोष में परहेज़ नाम का कोई शब्द नहीं था।

: १२ :

फन्कशन का दिन आ ही गया। राजन के दिल में अस्पताल जाने की इच्छा नहीं थी परन्तु जाना आवश्यक था। दिन के ग्यारह बज चुके थे। राजन

ने रोटी खाकर अपने पिता से आज्ञा ली और घर से चल पड़ा।

लाला हुक्मचन्द की कोठी के पास पहुँच कर अन्दर चला गया। श्याम और रजनी कपड़े पहन कर तैयार थे। तीनों कार में बैठकर अस्पताल की ओर चल पड़े।

अस्पताल के समीप एक बहुत बड़ा बाग था। जहाँ कुर्सियाँ लगी हुई थीं और सामने एक बड़ा सा चबूतरा था।

करीब एक बज चुका था। सबसे प्रथम डॉक्टर भटनागर ने एक बहुत बड़ा व्याख्यान दिया। उसके पश्चात् भिन्न-भिन्न प्रकार के नाटक हुए। अब राजन की बारी आई जो कि गाना सुनाने जा रहा था। मंच पर आते ही साज़ बज उठे और राजन की आवाज़ बिजली की तरह कौंध उठी। एक फिल्म का गीत शुरू हुआ। गीत समाप्त होने के पश्चात एक नाटक की तैयारी होने लगी। सहसा राजन की दृष्टि अशोक पर पड़ी जो डॉ० वर्मा से घबराए हुए कुछ कह रहा था।

डॉ० वर्मा भीतर चला आया और उसके पीछे-पीछे तीन अन्य डॉक्टर भी अन्दर चले गए। राजन भी कुछ देर के बाद डॉक्टर वर्मा को देखने गया। बहुत ढूँढ़ने के पश्चात उसने जाहिदा को आते हुए देखा—डॉक्टर वर्मा इस समय कहाँ है ?

जी वे वार्ड में हैं। बन्सी को थोड़ा चक्कर सा आ गया राजन दौड़ कर वार्ड में आ गया जहाँ उसे बन्सी का पलंग दिखाई ही नहीं दिया। केवल एक पलंग के इर्द-गिर्द पाँच-छः डॉक्टर खड़े थे। वार्ड के अन्य रोगी भी वहीं खड़े थे।

राजन के कदम आगे बढ़े और बन्सी के सिर के पास रुक गए।

डॉ० वर्मा ने अपने हाथों से बन्सी के मुंह पर चादर डाल दी और वापिस चले गए। सलमा को इस बात की आशा नहीं थी कि बन्सी ऐसे मौन हो जाएगा। जिस सलमा को वह पल भर के लिए अपनी पलकों से दूर नहीं रखता था वही बन्सी आज सलमा से पूछे बिना ही सदा के लिए सो गया। विधाता के खेल भी निराले होते हैं। यह मौत भी एक शिकारी से कोई कम नहीं। चाहे छोटा हो या बड़ा, बूढ़ा हो या जवान। इसे तो केवल शिकार पकड़ने से मतलब है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि सलमा को जीवन की नैया पार लगानी होगी। परन्तु पति के बिना जीवित रहना एक स्त्री के लिए अत्यन्त कठिन होता है यह ऊपर वाला भी कैसे खेल खेलता है। आज तक कभी भी यह नहीं देखा गया है कि किसी को वह अपने घर से छीनकर वापिस देता हो। क्या सलमा की यह कमी पूरी हो सकेगी ?

यह विचार अशोक को बार-बार रुलाता था। बन्सी को अस्पताल की गाड़ी में घर लाया गया और राजन भी डॉक्टर वर्मा से आज्ञा लेकर घर चला गया।

प्रत्येक व्यक्ति सलमा को सान्त्वना देता रहा। राजन उसके सामने जाकर कुछ कहना चाहता था परन्तु कह न सका।

सायंकाल होते ही बन्सी का दाह संस्कार किया गया। उसके पश्चात राजन अपने घर चला आया। घर में सीता अपने पति का सिर दबा रही थी।

बेटे, इतनी देर तूने कहाँ लगा दी ?

कुछ नहीं माँ अपना जो अशोक है न, उसके भाई की मृत्यु हो गई। इस बात को सुन कर शिवप्रसाद और सीता दोनों अत्यन्त दुःखी हो गए। कुछ देर तक पछताने के पश्चात सीता ने राजन से कहा—बेटा, मौत के हाथ बहुत लम्बे होते हैं। वहाँ तक यह तुच्छ मानव कभी तक नहीं पहुँच सकता है। चलो बेटा भोजन कर लो। भूख बहुत लगी होगी।

नहीं माँ, आज भूख नहीं है।

"बेटा तो भी थोड़ा ही खा लो"—शिवप्रसाद ने धीमी आवाज़ में कहा—"रात को बिना कुछ खाए सोना ठीक नहीं है। तुम शीघ्र भोजन करके आओ। मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं।"

राजन कुछ कहे बिना ही अपनी माँ के पीछे चला गया और थोड़ा खाना खाकर अपने पिताजी के चरणों के सामने बैठ गया।

आपके सिर के दर्द का अब क्या हाल है ?

बेटा दर्द तो वैसे का वैसा ही है। शायद अब जाने की तैयारी करनी है। ऐसा ही कुछ दिखाई देता है।

पिताजी आप इतने महान् होते हुए भी ऐसी व्यर्थ बातें करते हैं। आपने अभी देखा ही क्या है। क्या आपको इस बात का ज्ञान नहीं है कि एक निर्धन के लिए उसके माता-पिता ही सब कुछ होते हैं। आप केवल नमक खाया करें।

यह बात सुनते ही शिवप्रसाद ने करवट बदलते हुए कहा—जाओ विश्राम करो। दिन में काम करते-करते थक गए हो।

राजन अपनी माँ की ओर देखते हुए एक कोने में लेट गया। सुबह नींद से जागते ही राजन हाथ-मुंह धोकर माँ के पास आया।

देखो माँ पिताजी मेरा कहा मानते ही नहीं हैं। तुम ही उन्हें समझाओ। माँ उनका प्रेशर तब तक नहीं उतरेगा जब तक वे नमक खाना न छोड़ दें। तुम्हारी तसल्ली के लिए मैं आज डाक्टर वर्मा को साथ ले कर आऊँगा।

सीता ने अपने हाथ राजन के चेहरे को लगाते हुए कहा—बेटा मैं क्या कर सकती हूं, अब इन्हें कौन समझाए ।

: १३ :

कितना भाग्यवान राजन था कि जिस अस्पताल में वह इतने समय तक रहा उसी में उसकी नौकरी भी तय हो गई ।

राजन अस्पताल में आते ही डाक्टर वर्मा से अपने पिता के बारे में बात करने गया ।

बधाई हो राजन ! तुम्हारी नौकरी यहीं पर तय हो गई । तुम कार्यालय में जाकर अपना नियुक्ति पत्र ले लो ।

सर ! एक ओर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता अनुभव हो रही है परन्तु दूसरी ओर पिताजी की दशा देखकर मेरे हृदय पर दुःखों का एक पहाड़ खड़ा हो गया है। मुझे आप पर भरोसा है । उनके सिर में असहनीय पीड़ा हो रही है । छोटी-छोटी सी बात पर रूठ जाते हैं । मेरी माँ बहुत दुःखी है । उसने भी अपना खाना-पीना छोड़ दिया है । मेरी समझ में नहीं आता कि अब मैं क्या करूँ ।

डॉक्टर वर्मा ने अपने माथे पर हाथ फेरते हुए कहा—"अच्छा मैं यह गोलियाँ लिख कर देता हूं, इसे चार-चार घण्टे के बाद उन्हें दे देना । जहाँ तक मेरी विचारधारा का सम्बन्ध है तुम उन्हें यहीं ले आओ ।"

वह तो मेरे विचार में भी ठीक है परन्तु पिताजी नहीं मानेंगे, तो भी एक बार मैं उनसे पूछ कर देखता हूं ।

घबराने की कोई बात नहीं है । तनिक धैर्य से काम लो । मैं कल फिर आ जाऊँगा ।

कितने बजे सर ?

यही कोई चार-पाँच बजे ।

राजन वहाँ से निकल कर चिकित्सालय के कार्यालय में आया वहाँ उसने क्लर्क से अपना नियुक्ति पत्र लिया और वहाँ से चल पड़ा ।

अभी वह दो कदम भी आगे की ओर नहीं बढ़ा था कि पीछे से किसी लड़की की जानी पहचानी आवाज़ सुनाई दी ।—डॉक्टर साहब !

राजन ने पीछे मुड़कर देखा तो जाहिदा उसकी ओर आ रही थी ।

बधाई हो डॉक्टर साहब, कि आपकी नियुक्ति इसी चिकित्सालय में हुई । खुदा आपको एक सफल चिकित्सक बनाए परन्तु चाय कब पिलाएँगे ?

तेरी ड्यूटी समाप्त हो गई क्या ?

नहीं सर, मेरी ड्यूटी तो शाम से शुरू होने वाली है ।

तो इस समय यहाँ क्या कर रही हो ?

जी मेरी मौसी यहाँ बीमार है। उसी को देखने आई थी। दोनों कदम से कदम मिलाते हुए चलने लगे। कुछ कदम इकट्ठे चलने के पश्चात् ज़ाहिदा बोलने लगी—चलिए अब मैं ही चाय पिलाती हूं।

नहीं ज़ाहिदा, फिर कभी पिएँगे। इस समय मैं बहुत चिन्तित हूँ।

आपको कैसी चिन्ता लगी है ?

मेरे पिताजी बहुत बीमार हैं।

खुदा सब कुछ ठीक करेगा। आपके पिताजी बहुत शीघ्र स्वस्थ हो जाएँगे। मैं भी खुदा से यही दुआ माँगूंगी। उसके पश्चात् दोनों अपने-अपने ठिकाने की ओर चल दिए। ज़ाहिदा अपने घर चली आई और राजन गुमसुम सा लम्बे-लम्बे डग भरने लगा। लाल कोठी के सामने उसके कदम रुक गए। कुछ सोचकर वह भीतर चला आया। सबसे पहले श्याम की माँ को नौकरी के बारे में बताया। वह भी बहुत प्रसन्न हुई और कहने लगी—चल बेटे, ऊपर चल कर बैठ। मैं अभी आई। वहाँ रजनी और उसकी सहेली भी हैं। मैं अभी चाय बनवा कर लाती हूं। श्याम बेटा भी आता ही होगा।

राजन ऊपर आकर दरवाज़ा खटखटाने लगा—कुछ देर पश्चात् दरवाज़ा खुल गया।

नमस्ते राजन बाबू !

नमस्ते ! मेरे भीतर आने से आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी ?

जी, आप आ सकते हैं।

रजनी की सहेली ने उठते हुए कहा—रजनी अब मुझे चलने की अनुमति दो।

अरे थोड़ी देर तो बैठिए न। नहीं तो आपके पीछे रजनी भी चली जाएगी और मैं यहाँ अकेला रहूंगा।

रजनी ने आँखें नचाते हुए कहा—अरे मन्जू क्या तुम इन्हें नहीं जानती हो ? यह डॉक्टर राजन हैं—श्याम भैया के परम मित्र।

मैंने इन्हें यहीं पार्टी पर देखा है। क्या आप एक गीत सुनाने का कष्ट करेंगे ?

जी, आपने मुझे क्या मोहम्मद रफी समझ रखा है ?

आप डाक्टर राजन हैं, यह तो मैं भी जानती हूँ। अब सुनाइए न।

राजन ने रजनी की ओर मुड़ कर कहा—श्याम भैया कब आएँगे ? उनके लिए एक शुभ समाचार लाया था, क्या करूँ जब भी मैं यहाँ आता हूँ तो वे यहाँ होते ही नहीं हैं।

रजनी ने बात काटते हुए कहा—हम भी तो वह शुभ समाचार सुनें, क्या

है ? क्या हम इसे सुनने के योग्य नहीं हैं ?

ऐसी बात नहीं है। मैं आज बहुत प्रसन्न हूँ। मुझे नौकरी का आर्डर मिल गया है। इसी के साथ मेरी नियुक्ति अपने ही चिकित्सालय में हुई है।

यह हुई न काम की बात। हमारी दावत का क्या रहा ?

पिताजी को ठीक होने दो, फिर जब चाहो आ जाना।

मन्जू ने बीच में हस्तक्षेप करते हुए कहा—आपके घर में कोई भी रोग अधिक देर तक नहीं टिकना चाहिए।

यही तो दुःख की बात है कि मेरे पिताजी परहेज़ नहीं करते, वे सदा बच्चों की तरह हठ करते हैं।

रजनी बीच में बोल उठी—काश मैं आपके स्थान पर होती तो आपके पिताजी को अपने इशारों पर चलाती।

परन्तु आप यह भूल रही हैं कि एक धनवान के इशारे एक निर्धन की समझ से बाहर है। इसके आगे कुछ कहिए।

लीजिए नेताजी, मैं चुप हो गई।

राजन ने मन्जू की ओर देखते हुए कहा—आपकी सहेली में एक बुराई है, ये मुझसे बात-बात पर रूठ जाती हैं। शायद मेरे पापों का प्रायश्चित अभी नहीं हुआ है।

देखो मन्जू, मैं रूठती नहीं हूँ परन्तु डॉक्टर साहब प्रत्येक बात में धनवान तथा निर्धन का भेद ले आते हैं।

मन्जू इन दोनों की पहेलियाँ न समझ सकी और चुप होकर कमरे से बाहर निकल गई।

शायद मेरी बातें आपकी सहेली को अच्छी नहीं लगी होंगी।

जी बिल्कुल नहीं, इसे किसी से एक बजे मिलना था। इसी कारण चली गई।

चलो ठीक ही हुआ। इसे यह याद तो रहा कि कोई इसकी प्रतीक्षा कर रहा होगा।

यह भी कोई बात हुई। ऐहसास तो करना ही पड़ता है। आपकी तरह प्रत्येक तो साधू नहीं है।

मैं भी आपसे कई बातें करना चाहता था परन्तु यहां नहीं।

जी बड़े शौक से कीजिए। जब आपको अवकाश मिले तो मुझे बुलाइए। मैं तो आपके चरणों में उपस्थित हो जाऊँगी।

तो फिर परसों सायं पांच बजे आप मुझे अस्पताल में मिलिए। मैं वहाँ आपकी प्रतीक्षा करूंगा। अच्छा अब मुझे देर हो रही है। श्याम भैया से मेरी

नौकरी के बारे में अवश्य कहना। तो आप परसों आ रहीं हैं न ?

जी आ जाऊँगी परन्तु समय पाँच बजे के बदले एक बजे होता तो अच्छा होता।

चलिए एक बजे ही सही। मैं आपकी प्रतीक्षा उस बाग में करूँगा जिसके सामने रेड-क्रास का बोर्ड़ टंगा है।

ठीक है।

परन्तु अपनी इच्छा से आना। इसमें कोई विवशता नहीं है।

राजन साहब ! किसी के पास व्यर्थ बातों के लिए समय नहीं होता है। मैं आपको यहाँ भी टाल सकती थी। यहाँ भी आपके साथ बातें करनी आवश्यक नहीं थी—यह कहते रजनी कमरे से बाहिर निकल गई।

राजन मुस्कराते हुए अपने आप से कहने लगा—चल बेटा, हो गई छुट्टी।

राजन कोठी से बाहिर आकर घर की ओर पाँव बढ़ाने लगा। आश्चर्य की बात तो यह थी कि रजनी रूठकर भी ऊपर से राजन की ओर देख रही थी।

घर पहुंचते ही राजन अपनी माँ के पास रसोई में चला गया।

क्या कर रही हो माँ ?

क्या बेटे, आ गए क्या, उनके बारे में डाक्टर साहिब ने क्या बोला ?

उन्होंने कहा है कि यह गोली चार-चार घण्टे के बाद देना और नमक बिल्कुल बन्द।

इस कागज़ को देखती हो, बताओ तो इसमें क्या लिखा है ?

मैं क्या जांनू क्या लिखा है।

यह मेरी नौकरी का आर्डर है। मुझे नौकरी मिल गई।

'सच' ! और सीता ने राजन को ज़ोर से गले लगाया।

आशा ने अन्दर आते ही पानी का बर्तन सिर से उठा लिया। वह भी यह सुनते ही अपने भाई से लिपट गई। वह भी बहुत कुछ कहना चाहती थी परन्तु कैसे बोलती। आँखों से आंसू की कुछ बूंदें मोती की तरह चमक उठीं। भाई, अपनी बहिन की भावनाओं को खूब समझता था।

आंसू पोंछते हुए राजन आशा से कहने लगा—अब देखना तुम्हारे लिए कितने अच्छे-अच्छे कपड़े लाऊँगा। तुम्हें अपने साथ प्रतिदिन घूमने ले जाया करूँगा। अच्छा अब यह बताओ कि पिताजी क्या कर रहे हैं ?

बेटा, वह प्रसाद राम आया है।

कौन प्रसाद राम माँ ?

अरे वह अपना पड़ोसी, जो कुँए के पास ही रहता है।

अच्छा वह प्रसन्नराम, वह आज कैसे राह भूल गया। "यह प्रसन्नराम सदा प्रसन्न दिखाई देता था। अब राजन ने उसका नाम प्रसन्नराम ही रखा था।"

क्या कहूँ बेटे ! बेचारा बहुत दुःखी है। जमना का ब्याह पिछले वर्ष हुआ था न ?

हाँ, हाँ उसे क्या हुआ ?

उसे पति ने छोड़ दिया है। बेचारी अपने पति के घर मे आकर अपने पिता के पास बैठी है। अब तुम्हारे पिताजी से सलाह ले रहा है कि क्या किया जाए।

ज़रा मैं भी सुनूँ कि बात क्या है—राजन धीरे-धीरे अपने पिता के कमरे में आया।

नमस्ते चाचा, क्या हाल है तुम्हारा ?

ठीक ही चल रहा है बेटा !

चलो प्रसादराम अब राजन से ही पूछते हैं। पढ़ा लिखा है शायद इसका परामर्श हमारे किसी काम आए।

क्या बात है पिताजी !

बेटे, जमना बेटी पर उसके सुसराल वाले बहुत अत्याचार करते है। पति तो ठीक तरह से चलता है। उसके माता-पिता ने जमना को बहुत तंग किया है।

परन्तु किस बात पर ?

इस पर प्रसादराम ने कहना आरम्भ किया—क्या कहूं बेटा, जो जमना की सास है न, उसके पहिले आठ बेटे थे अब पिछले मंगलवार को यह नौवीं बेटी पैदा हुई। वे मेरी बेटी को अब इस बात पर तंग करते हैं कि तुम्हारे माता-पिता बधाई देने आए ही नहीं और उन्होंने यहाँ कुछ भी नहीं भेजा। क्या वह सब मर गए हैं।"—अब जमना ने भी उन से कुछ कहा होगा। उसके सुसर ने उसे घर से निकाल दिया।

यह बात तो प्राचीन काल से चलती ही आई है। अब आपने क्या सोचा है ?

शिवप्रसाद ने अपने बेटे की ओर देखते हुए कहा—बेटा, हम तो लड़की वाले हैं। हमें अपना सिर सदा झुकाना पड़ेगा। मैं तनिक स्वस्थ हो जाऊँ तो हम दोनों जमना बेटी को साथ लेकर उनसे क्षमा माँग लेगे और जो कुछ भी देना होगा, दे देंगे।

[illegible]

जाऊँगा। वह लोग कमीने हैं।

अब जैसे भी हैं, रिश्ता तो हो चुका है। जमना बहन यदि तुम मेरी बहन हो तो याद रखो—जब तक कि तुम्हारा पति तुम्हें लेने नहीं आएगा, तब तक तुम वहाँ जाने का नाम भी नहीं लेना। मैं कल ही वहाँ जाऊँगा। प्रसन्न चाचा यह बताओ कि जमना के पति का क्या नाम है और वह किस मिल में काम करता है।

बेटा वे तीनों, पिता तथा दो बेटे कृष्णा मिल में काम करते हैं। जमना के पति का नाम शंकर है और उसके पिता का नाम बनवारी लाल है।

अब तुम निश्चिन्त रहो। मैं कल सवेरे ही उनसे क्षमा माँग कर आऊँगा।

भगवान तुम्हें चिरन्जीव रखे। मैं कल सवेरे ही तुम्हारे पास आऊंगा। बेटा, अब सीधे ही घर चले जाना, शिव भैया का शरीर ठीक नहीं है।

राजन मुस्कराते हुए वहाँ से चल पड़ा परन्तु उसके हृदय में अनगिनत तरंगें हिलोरें ले रही थीं। वैसे तो वह उम्र में बहुत छोटा था परन्तु हर बात की पूरी जानकारी रखना उसका स्वभाव ही बन गया था। पिताजी के पास पहुँचकर राजन ने अपना नियुक्ति पत्र निकाला और उसे दिखाते हुए कहने लगा—यह लीजिए पिताजी, मुझे नौकरी का आर्डर मिल गया।

शिवप्रसाद को यह सुनकर कितना हर्ष हुआ, इसका अनुमान प्रत्येक व्यक्ति लगा सकता था। एक निर्धन पिता की तपस्या का फल तथा एक माँ की आशा भरी किरण—यह दोनों पूरे हो गए।

बेटा मुझे तो गणेश जी के मन्दिर अवश्य जाना है।

ऐसी कौन सी विवशता है। आप पहले ठीक तो हो जाइए।

नहीं बेटा कल सवेरे ही जाऊगा। मैंने तो वहाँ गणेश जी से प्रण किया था कि जब मेरे राजन को नौकरी मिल जाएगी तो एक किलो दूध और लड्डू लेकर तुम्हारे पास आऊंगा। उसने मेरी सुन ली।

वह तो ठीक है परन्तु मैं आपको इस दशा में नहीं जाने दूंगा। हाँ, एक बात हो सकती है कि मैं जाकर गणेश जी से कुछ दिनों के लिए क्षमा माँग लूंगा। अब आप यह समझिए कि मुझे नौकरी मिल ही गई। इसी कारण आपको मेरी हर बात माननी पड़ेगी। नहीं तो मैं जाकर अस्पताल में ही दिन-रात बिताऊँगा और अपने घर का मुंह तक नहीं देखूंगा। आप अपना निर्णय मुझे कल शाम तक सुनाएंगे।

यह तुम क्या कहते हो। मैं तो तुम्हारी हर बात मानता हूं। यह कहो कि मैं तेरी क्या नहीं सुनता हूं।

बस, फिर नमक बन्द और परहेज़ कल से आरम्भ, केवल एक सप्ताह के

लिए । कहिए आपको मेरा प्रस्ताव स्वीकार है या नहीं ?

बेटा जब तुम्हारी यही इच्छा है तो लो तुम्हारी सौगन्ध, मैं तब तक नमक का मुंह भी नहीं देखूंगा जब तक कि तुम ही मुझे खाने के लिए नहीं कहोगे।

अब कहीं तो नहीं जाओगे न ?

नहीं तो कौन कहाँ जाने वाला था पिताजी, वह तो मैं बस यूं ही कहता था।

परन्तु मैंने तो तुम्हारी सौगन्ध खाई है कि मैं अब नमक नहीं खाऊँगा।

बस केवल आठ दिन के लिए।

अच्छा अब यह बताओ कि जमना के बारे में क्या हल निकाला है तुमने ?

कल शाम तक शायद निकल जाएगा। आप पहले आशीर्वाद तो दीजिए।

बेटा आशीर्वाद बार-बार नहीं बल्कि एक बार दिया जाता है। वह तो मैंने तुम्हें दिया ही है। बेटा मेरी एक अभिलाषा बाकी रह गई।

वह क्या है पिता जी ?

ठीक होने के पश्चात् एक दिन मैं तुम्हारे अस्पताल चलूंगा। वहाँ मैं यह देखना चाहता हूँ कि तुम रोगियों के साथ किस प्रकार बातें करते हो।

तो फिर शीघ्र स्वस्थ होने का प्रयत्न कीजिए।

"यह इन दोनों का पुराना स्वभाव था कि पिता तथा बेटा एक दूसरे को अपने-अपने दिल की बातें सुनाते थे और चारों हँस-हँस कर खिलते रहते थे। सीता भी इससे प्रसन्न दिखाई देती थी और आशा भी चुटकुले सुनने के लिए अधीर होती थी।

: १८ :

सुबह पिताजी को दवाई खिलाने के पश्चात राजन कहीं जाने की तैयारी करने लगा।

बेटे तुम इस समय कहाँ जाने वाले हो ?

पिताजी मुझे अशोक के पास जाना है। वह बेचारा आज कल बहुत दुःखी है।

ठीक है, तो जाओ और उसे मेरी ओर से पूरी तसल्ली देना।

वहाँ से वापिस आते ही राजन ने भोजन किया और लगभग सवा बारह बजे वह अपने घर से चल पड़ा। पहिले वह श्याम के घर गया। उसे वहाँ न पाकर वह अपने चिकित्सालय गया। वहाँ रोगियों को देखने के पश्चात वह कृष्णा मिल की ओर बढ़ गया।

मिल के फाटक पर एक दरवान बन्दूक लिए हुए खड़ा था।

किस से मिलना है ?

जी मैं बनवारी लाल का बेटा हूं। उसके दो बेटे अर्थात मेरे दो भाई भी यहाँ काम करते हैं।

अच्छा तो जा कर मिल आओ।

राजन ने भीतर आते ही एक व्यक्ति से पूछा—

जी मैं बनवारी लाल से मिलना चाहता हूँ।

आप सामने वाले कमरे में चले जाइए। वहाँ पर खिड़की के सामने जो व्यक्ति बैठा है, वही बनवारी लाल है।

राजन सीधा उसी ओर चला गया।

क्या आप ही बनवारी लाल हैं?

हाँ, कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?

जी मुझे आपसे थोड़ा काम है। क्या आप मेरे साथ चल सकते हैं?

चलिए, परन्तु कहाँ?

यदि आप शंकर भैया को भी बुला लेते तो और भी अच्छा होता।

बनवारी ने एक आवाज़ दी और उसके साथ ही एक के बदले दोनों बेटे सामने खड़े हो गए।

आगे-आगे राजन चल रहा था और उसके पीछे-पीछे यह तीनों व्यक्ति।

राजन मैनेजिंग डारेक्टर के कमरे के समीप आकर रुक गया। उसने द्वार पर बैठे हुए चपरासी से आज्ञा ली और अन्दर चला आया।

कमरे के भीतर आकर राजन ठिठक गया। "..........यहाँ मुझे आप राजन न समझिए श्याम बाबू! मैं यहाँ आपसे न्याय माँगने आया हूँ—विवशता के घेरे में बँधी हुई एक बहिन का भाई। मेरे गाँव की एक बहिन है। उसका नाम जमना है। यह जमना के ससुर हैं, यह उनके देवर हैं और वह जो इन दोनों के पीछे छिपना चाहते हैं, जमना के पति शंकर हैं। शंकर की माँ के बेटी हुई है। अब जमना के घर वाले इन्हें बधाई देने नहीं आए तो इन्होंने बहू को घर से मार भगाया। केवल बधाई देने ही आते, यह एक साधारण बात थी। यह आप कैसे कह सकते हैं कि प्रत्येक घर में घी की रोटी पकती है। क्या यह स्वयं लड़की वाला नहीं है। श्याम बाबू! कुछ घर ऐसे हैं जहाँ सायंकाल को दिया जलाने के लिए तेल नहीं है। फिर खाने की तो बात ही नहीं। उनके पास चूल्हा जलाने के लिए लकड़ी नहीं। वह इस वहशी लोगों का सिर बेचकर बेटी का विवाह करेंगे, जो ज़मीन न बेच डाले। क्या यह भी कोई ताना है। यदि बनवारी लाल के यहाँ नवें बच्चे ने जन्म लिया तो बहू के मैके वाले किस कानून की रस्म निभाऐंगे? वैसे एक के पश्चात नहीं, दूसरे के पश्चात् न सही, तीसरे के पश्चात् तो परिवार नियोजन के बारे में सोचना

चाहिए था। कौन सी टीम बनाने का निश्चय किया है? इसके आठ बेटे हैं — प्रत्येक का जन्मदिवस? किस मशीन से एक निर्धन पिता इस शगुन की रस्म पूरी करेगा? अब तो एक और बढ़ गया।

शंकर! क्या तुम्हें बीवी की आवश्यकता नहीं है? मैं तुम्हारे ही उत्तर की प्रतीक्षा में हूँ।

तीनों का सिर नीचा हो गया।

बहू लाने के पश्चात् सास माँ बनती है। भारत का दिवाला नहीं निकलेगा तो और क्या? बेकारी नहीं बढ़ेगी तो और क्या? खैर तुम यह बातें नहीं समझोगे। श्याम बाबू! आप इन्हें ठीक तरह से मेरे विचार समझा दीजिए। रस्म बनाने वाले इन्ही के दादा परदादा होंगे। यह रस्में मिटा भी सकते हैं। "क्यों एक इन्सान में शैतान को जाग्रत करते हो।"

मैं क्या कह सकता हूँ। कल से इन तीनों की छुट्टी, "जब तक इनका जमना के साथ कोई फैसला न हो जाए।" अच्छा नेताजी अब आइए बैठिए और हमारी बधाई स्वीकार कीजिए।

राजन ने अपना भाषण जारी रखते हुए कहा—सोचता हूँ श्याम बाबू, मैं यह आज अपनी निर्धन जनता से क्यों न कहूँ कि बेटी के साथ-साथ, चार गज कफ़न भी रखा करो। क्योंकि बेटी जो ससुराल भेजनी है। क्या हम कभी भी इन्सानियत की ओर नहीं देखेंगे—राजन यह कहते हुए उन तीनों की ओर देखने लगा जो कि अब तक बुत बने हुए बैठे थे।

अब आप इन्हें जाने की आज्ञा दीजिए।

हाँ, तुम जा सकते हो।

तीनों चुपचाप बाहर निकल गए।

"देखो राजन, जो तुमने आज किया वह ठीक ही किया परन्तु इससे समाज की त्रुटियाँ दूर नहीं हो सकती हैं। मेरे विचार में प्रत्येक नवयुबक को अब नींद से जागना चाहिए।"

उन्हें किसी ने भी सोने पर विवश नहीं किया है। वे तो स्वयं सोए हुए हैं।

खैर छोड़ो इसे। अब यह बताओ कि चाय पीयोगे या काफी?

जी केवल एक प्याली लिपटन चाय की।

यह किस खुशी में आज हाँ कर दी?

नौकरी जो मिली है मुझे।

मेरे विचार में तुम नौकरी के साथ-साथ एम० एस० की तैयारी करोगे?

परन्तु इतने पैसे कहाँ से आएंगे?

मैं जो जीवित हूँ। राजन क्या मैं तुम्हारा बड़ा भाई नहीं हूँ ?

वैसी बात नहीं है, परन्तु फिर भी.........।

तुम्हें पता नहीं है, मैं तुम्हें लक्ष्मण समझता हूं। तुम भी लक्ष्मण ।।। आज्ञाकारी रहना।

परन्तु आपने तो कभी ऐसा अवसर ही नहीं दिया।

भई, वह तो समय आने पर ही दूंगा।

कल मैं घर पर ही आया था परन्तु सेठ जी वहाँ थे ही नहीं।

ठीक है परन्तु एक बात पूछूं—

क्या ?

तुमने मुझे वहाँ आने का समय दे रखा था।

नहीं, यह तो मेरी गलती है। अच्छा अब चलने की आज्ञा दीजिए।

कुछ देर के लिए ठहरो। मुझे भी चलना है।

सैक्रेट्री ने कुछ आवश्यक कागज़ों पर हस्ताक्षर कराए और फिर श्याम राजन के साथ चल दिया।

कार लाल कोठी के कम्पाउंड में रुक गई। दोनों ऊपर की ओर चलने लगे।

सुखदेव ने कमरे की खिड़कियाँ खोल दीं तथा श्याम बाबू से कोट लेकर हैन्गर पर रख दिया।

अच्छा अब यह बताओ कि पिताजी कैसे हैं ?

जी अभी बीमार ही हैं। अब डा० वर्मा कल देखने आएँगे।

आजकल मैं उनके बारे में बहुत चिन्तित हूं।

साहस से काम लो डाक्टर राजन ! तुम पहिले एक डाक्टर हो और फिर राजन।

वह तो है ही परन्तु कभी-कभी डर सा लगने लगता है। मैं भी तो एक इन्सान ही हूँ।

रजनी इतने में कालेज से आ टपकी।

नमस्ते डाक्टर साहिब !

नमस्ते जी।

अच्छा राजन, यह बताओ कि तुम्हारा रजनी के बारे में क्या विचार है ? इस वर्ष परीक्षा में सफल होगी कि नहीं।" जी अवश्य हो जाएंगी परन्तु डिवीज़न के बारे में तनिक सन्देह पड़ता है।"

ऐसा क्यों ?

क्योंकि यह पढ़ती कम और घूमती अधिक हैं।

देख भैया, कितना झूठ बोलते हैं। खैर झूठ बोलने में किसी को आनन्द मिले तो हमें क्या, बोलने दो।

चलो ठीक है ! मैं ही झूठ बोलता हूं परन्तु डिवीज़न अवश्य लाना, तब ठीक रहेगा। नहीं तो केवल पास होने से क्या लाभ।

श्याम ने बात काटते हुए कहा—अरे यार, छोड़ो जाने दो। यह बातें तो इसके ही हित में हैं। मैं चाहता हूँ कि किसी प्रकार बी० ए० की परीक्षा समाप्त करले तो इसे किसी के हाथ सौंप दूंगा। क्यों ठीक है न ?

आपका विचार तो बड़ा उत्तम है।

भैया, अभी मुझे और पढ़ना है। पहले डाक्टर राजन की शादी करलो और फिर अपनी कर डालो। मेरे पीछे अभी से क्यों लगे हो।

कुछ देर तक बातें करने के पश्चात् श्याम ने राजन को उसके घर पर छोड़ दिया और स्वयं वापिस चला गया।

भैया, यह क्या है ?

यह मैंने राजन से उसकी डायरी ली है। इसमें उसकी लिखी हुई कुछ कहानियां हैं।"

"इस घर में धन-दौलत तो बहुत थी परन्तु शाम के समय प्रत्येक अपने-अपने कमरे में अकेला पाया जाता था। रजनी अपने सितार के साथ खेलती तथा श्याम अपनी बहिन से कविताएं सुनकर हर शाम को एक विचित्र रंग में रंग लेता।

आज भी इसी तरह श्याम अपनी बहिन के पास बैठे हुए हँसने, खेलने लगा और फिर रजनी ने अपने भाई को मिर्ज़ा गालिब की एक कविता सुनाई। कविता सुनाने के साथ ही उसे नींद आ गई। परन्तु श्याम किसी की यादों में आज सितार बजाने लगा। बजाना तो आता ही नहीं था परन्तु साज़ को यदि छेड़ा जाए तो यह मचल उठता है। जब भी कभी श्याम सितार को बजाने लगता तो पहरों छोड़ने को जी नहीं करता। कुछ देर पश्चात् श्याम ने सितार एक ओर रख दिया तथा रजनी की बड़बड़ाहट सुनकर चौंक गया।

"मैं अवश्य आऊँगी। तुम मेरी प्रतीक्षा करना। तुम्हें क्या कहूं, मेरी भी यही इच्छा है कि मैं तुमसे बातें करती रहूं। तुमसे बहुत कुछ कहूं। तुम मेरे साथ बातें किया करो। तुम्हारी एक-एक बात मुझे अच्छी लगती है। मुझे तुम्हारा सब कुछ पसन्द है।"

श्याम कुछ पागल सा हो गया। कई बार वह रजनी की ओर बढ़ा परन्तु यह सोचकर रुक गया कि कहीं रजनी जाग कर इन्कार न कर दे।

"यह तो तुम्हें कहना चाहिए था। चलो अब मैं ही तुमसे कह रही हूँ। तुम कितने नासमझ हो। मेरे प्यार का अनुमान तो लगाओ। मुझे भय है कि कहीं तुम मुझे छोड़ न दो। मैं हज़ारों सितम सह लूँगी परन्तु तुम मुझे कभी भी नहीं छोड़ना। तुम्हारे बिना अब मेरा जीवित रहना बहुत कठिन है राजन।"

रजनी एक पागल की तरह तकिए को बाँहों में झुलाकर चूमने लगी।

श्याम की आँखों में आँसू स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। उसे हर्ष तो था, परन्तु यह आँसू क्यों थे।

शायद इसलिए कि उसके लिए भी कोई नींद में बड़बड़ाता था। वह कुछ देर तक फिर साज़ के साथ खेलने लगा आखिर कुछ सोचकर अपने कमरे में चला आया।

: १५ :

'सुबह सूर्य की किरणें लाल कोठी पर पड़ते ही रजनी श्याम के कमरे में उसे मुँह दिखाने के लिए आई। नमस्ते भैया, उठिए न, अब बहुत देर हो गई। रजनी तुम्हें पता है, मैं आज रात को सोया ही नहीं ऐसा क्यों?

तुम्हें क्या कहूं? तुम मेरी बात कहाँ समझोगी, खैर आओ थोड़ी देर बैठो।

लीजिए बैठ गई।

तुम मुझसे कितना प्यार करती हो?

यह आप एक बहिन से पूछते हैं। मेरा इस घर में आपके सिवाय किसके साथ लगाव है। यदि आप कहीं एक रात के लिए चले जाते हैं तो मुझे यहाँ एक बुत की तरह रहना पड़ता है। उस दिन मैं यहाँ पागल सी हो जाती हूं।

मुझे तुमसे कुछ कह कर पूछना है।

तो पूछिए न, क्या पूछना है?

इस समय नहीं, तुम कालेज से हो आओ, तब तक मैं भी मिल से वापिस आ जाऊँगा। फिर दोनों बैठकर बात-चीत करेंगे।

जैसी आपकी इच्छा।"

"रजनी कालेज में बैठी थी। जैसे ही हिन्दी की घंटी बजी वह कालेज से बाहिर आ गई और अस्पताल पहुँचकर बाग में बैठ गई।

राजन पौने एक बजे रजनी के सामने आया और चुप-चाप नीचे घास पर बैठ गया।

नमस्ते डाक्टर साहिब!

"नमस्ते"—राजन ने मुस्कराते हुए कहा।

आपने मुझे यहां किस लिए बुलाया ?

आपकी घड़ी शायद गलत है। अभी एक बजने में दस मिनट बाकी हैं।

रजनी उठकर चलने लगी।

"अरे" ! अरे आप कहां जा रही हैं ?

जी, मैं दस मिनट के बाद आऊँगी।

नहीं रजनी मुझे भी साथ ले चलो।

राजन रजनी के आँचल को पकड़े हुए घुटनों के बल चलने लगा।

मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि आप बात-बात पर रूठ जाएँ।

मैं रूठती नहीं हूं। आप ही मुझसे पता नहीं किस बात पर अप्रसन्न हैं।

रजनी चुपचाप चलने लगी। कुछ कदम चलने के पश्चात् राजन ने उसके बालों को खींचते हुए कहा---अब मैं कुछ कहना आरम्भ करूँ भी या नहीं ?

जैसी आपकी इच्छा।

देखो रजनी ! यह तो मैं नहीं कह सकता हूं कि तुम्हारे साथ मेरा किस जन्म का सम्बन्ध है। मेरे हाथ इतने लम्बे नहीं कि आकाश को छू सकूं। मेरा हृदय भीतर से शुद्ध है तभी मैं सब कुछ सामने कह देता हूं—मैं घर में वह कोई भी सांस नहीं लेता हूं, जिसमें तेरा नाम न हो। यह जानकर भी कि इस पागलपन का परिणाम जुदा होने के सिवाय कुछ भी नहीं हो सकता है। मैं तुम्हें बहन कह सकता था परन्तु भगवान ने तुम्हें मेरे घर में आशा के बदले क्यों नहीं भेजा। तुम्हारा प्रेम सागर की भाँति मेरे दिल में मचलने लगता है परन्तु कुछ देर पश्चात् समाज तथा लाल कोठी की कल्पना करते ही मेरा दम घुटने लगता है। मैं कोई देवता नहीं इन्सान ही हूं। मेरे सीने में भी दिल है। रजनी मुझे गलत नहीं समझना। मैं तुम्हारी किसी भी दौलत के पीछे नहीं हूं परन्तु मुझे केवल तुम्हारा हाथ चाहिए। सपने रात में ही सजते हैं। दिन निकलने के बाद सच्चाई का सामना करना पड़ता है। आज जीवन में पहली बार रात के बाद दिन में कुछ घड़ियाँ तुम्हारे साथ भाग्य में थीं। आज मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं। काश रजनी, यह अमीरी-गरीबी की दीवार बीच में नहीं होती तो मैं तुम्हें पाकर अपने आपको भाग्यशाली समझता। क्या तुम भी मुझसे प्यार करती हो ?

रजनी यह सुनकर एक बच्चे की तरह रोने लगी।

अरे, तुम रो रही हो ! मुझे क्षमा करना यदि मुझ से कोई भूल हो गई हो।

नहीं, ऐसी बात नहीं है। यह आपके प्रश्न का उत्तर मेरी आँखें दे रही हैं। राजन साहब ! मुझे आपके दिल से सम्बन्ध है, अमीरी से नहीं। मैं आपकी

सहायता से लाल कोठी को क्या, आसमान को हिला दूँगी। आपने तो जन्म की बात कही न, इसी कारण रो पड़ी। इस जन्म में आज तक हम दूर-दूर क्यों थे। मेरे साथ श्याम भैया हैं, मुझे आशा है कि वह इस बन्धन को अवश्य स्वीकार करेंगे। मेरे घर की बात आप मुझ पर छोड़ दीजिए बाकी मैं सबसे निबट लूँगी परन्तु मैं आपसे तीन बातें माँगती हूँ।

राजन ने झट पूछा—माँगो क्या चाहिए।

पहली बात यह है कि मुझे कभी भी धोखा नहीं देना। दूसरी बात, अब मुझ से दूर नहीं जाना। तीसरी बात यह है कि मेरी वफा पर कभी भी सन्देह न करना।

रजनी, वह सामने तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?

शायद कोई मस्जिद होगी।

भगवान एक ही है। यह एक पवित्र स्थान है, चल वहीं चलते हैं।

मस्जिद के सामने आकर राजन ने रजनी के दोनों हाथ पकड़ कर कहा—रजनी मैं तुम्हें वचन देता हूं कि यदि तुम मुझे भूल भी जाओगी परन्तु मैं तुम्हें मरते दम तक नहीं छोड़ूंगा। मुझे तुम्हारी तीनों बातें स्वीकार हैं। अब प्रसन्न हो न?

आपकी प्रसन्नता में ही मेरी प्रसन्नता है।

दोनों एक दूसरे की भावनाओं को समझ गए। वे नदी के किनारे बैठे हुए तीन घण्टों तक बातें करते रहे। साढ़े चार बजे राजन ने रजनी को अपने सीने से उठा लिया—उठिए हज़ूर!

अभी मेरा जी भरा नहीं है, बैठिए न।

मेरी जान! यदि मैं तुम्हारे समीप उम्र भर ऐसे ही बैठा रहूं तो न मुझे प्यास सताएगी और न भूख। प्यार एक ऐसी उपासना है जिसका कोई अन्त नहीं। मैं भी अभी उठता नहीं परन्तु डॉक्टर वर्मा को घर ले जाना है। इस समय मुझे पिताजी की बहुत चिन्ता है।

तो चलिए, चलते हैं।

दोनों चिकित्सालय तक बातें करते-करते आए।

रजनी, अब तुम घर जाओ और मैं डॉ० वर्मा को लेने के लिए अन्दर जाऊँगा।

अच्छा, मैं जा रही हूं। कल हमारे पास अवश्य आना। राजन डाक्टर वर्मा को साथ लेकर घर पहुंचा। डॉक्टर वर्मा ने ठीक तरह से शिवप्रसाद को देखा। उसने एक-दो दवाइयां लिख कर दीं और बाहर चला आया। राजन भी उसके पीछे-पीछे हो लिया।

तुम्हारे लिए यही अच्छा रहेगा कि तुम पिताजी को अस्पताल ले आओ।

ठीक है सर।

डॉक्टर वर्मा के चले जाने के पश्चात् राजन ने अपने पिता से कहा कि अस्पताल में रहना उनके लिए ठीक रहेगा परन्तु शिवप्रसाद ने साफ इन्कार कर दिया।

सीता ने कमरे में आते ही कहा—बेटा, यह प्रसन्नराम तीन बार आया था। तुम्हें वहीं बुलाया है।

"माँ, मैं बहुत थका हुआ हूँ। खैर वहाँ तो जाना ही पड़ेगा।"

राजन जब प्रसन्नराम के घर पहुँचा तो वहाँ बनवारी लाल अपने बेटों के साथ राजन की प्रतीक्षा कर रहा था।

क्या हाल है प्रसन्न चाचा ?

बेटा सब ठीक है। बनवारी भैया, बहू को लेने आया है। जमना तुम्हारी आज्ञा के बिना जाने से इन्कार कर रही है।

क्या बात है जमना ! ससुराल नहीं जाओगी क्या ?

भैया, जैसे आप कहेंगे, वैसे ही करूंगी।

शंकर बीच में बड़ी अधीरता से बोलने लगा—"यदि फिर कभी भी आपको हमारे बारे में कोई शिकायत आएगी तो जो जी में आए कर दीजिएगा। इस समय मुझे क्षमा कीजिए। आपको पता नहीं है कि इस समय हमारे घर में कितनी परेशानियाँ हैं। मेरी माँ भी ठीक नहीं है। कल से हम लोगों को स्वयं खाना पकाना पड़ा।"

"जमना ससुराल जाएगी परन्तु आपको पहले हमारे गाँव की पंचायत के सामने कुछ बातें माननी पड़ेंगी।"

बनवारी लाल ने हस्तक्षेप करते हुए कहा—"अब आप हमें और शर्मिन्दा न कीजिए। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम से अब कभी भी ऐसा दोष नहीं होगा।"

"मैंने भी तो आपकी ही बात मानकर हाँ कर दी परन्तु पंचायत के सामने भी आपकी यही बात कहनी पड़ेगी।"

अन्त में गाँव की पंचायत बुलाई गई तथा सरपंच, जिसे गाँव वाले सदा परमेश्वर मानते आए हैं, के सामने बनवारी लाल ने क्षमा माँगी और वे बहू को वहाँ से ले गए।

राजन अपने घर आकर पिता के पास बैठ गया और उसके पाँव दबाने लगा।

बेटा, अब उन्होंने क्या निर्णय लिया ?

बनवारी लाल ने सरपंच के सामने कहा कि मैं जमना को बेटी की तरह पालूँगा। अब जमना अपने ससुराल चली गई।"

"ठीक ही हुआ कि जमना ससुराल चली गई परन्तु बेटा, कभी-कभी जमना के पास जाते रहना। या इस संसार में एक लड़की का भाग्य अच्छा होना चाहिए. नहीं तो मौत ही उसकी सबसे उत्तम चिकित्सा है। मैं आशा के बारे में कुछ सोच ही नहीं सकता हूँ। बेटा यह एक बोझ हमारे सिर पर है।"

"आप ऐसे बोलते हैं जैसे कि मेरी बहन तीस वर्ष की है।"

"यह भी एक दुःख मेरे साथ है कि तुम नादान हो। चाहे धनी हो या निर्धन, एक पिता के हृदय में एक ही बात होती है कि वह अपने बच्चे को सुखी देख सके। कितना अच्छा होता यदि सरकार कोई ऐसा नियम निकालती जिसके अन्तर्गत सत्रह वर्ष की लड़की का विवाह हो जाता। यदि सरकार यह कहती कि "यदि किसी घर में लड़की सत्रह वर्ष से ऊपर पाई गई तो उस घर के मालिक को नौकरी से अलग़ किया जाएगा। यदि कोई व्यापार करता होगा तो उसका सारा व्यापार सरकार अपने हाथ में ले लेगी।" बेटे, मैं तो तुम्हारी तरह पढ़ा-लिखा तो नहीं हूँ परन्तु मेरे पास पचास वर्षों का अनुभव है। मेरे कहने का अर्थ यह है कि सरकार पढ़ाई की तरह विवाह भी अपनी देखरेख में ले ले। फिर यह रस्म-रिवाज नहीं रहेंगे।

परन्तु आप यह क्यों नहीं सोचते हैं कि आजकल औरत जात मर्दों से बहुत आगे है।

यह बात सुनते ही शिवप्रसाद बरस पड़ा—क्या आगे है? तुम यह भी नहीं जानते हो कि नारी को पुरुष का प्रेम चाहिए। नारी में बहुत कमज़ोरियाँ हैं। तुम नारी को पुरुष न बनाओ। नारी का जीवन आकाश तथा पृथ्वी के बीच लटका हुआ पाया गया है। कुछ तो बोलो न?"

आपकी बातें मेरी समझ से बाहिर हैं।

समझने का प्रयत्न करो। एक बच्चे को जन्म देते हुए एक स्त्री, माँ का रूप धारण करती है। उस समय वह किस नाजुक दौर से गुज़रती है, कभी देखा है। तुम भी अपने साथ थोड़ा बोझ लेकर चलो फिर देखो क्या होता है। तुम ठीक तरह से चल भी नहीं सकोगे। यह स्त्री तथा माँ, पेट में इतना सारा बोझ लिए हुए, काम भी करती आई है, सितम भी सहती आई है। फरियाद तो की परन्तु सुना किसी ने नहीं! माँ, में ममता है, प्यार है, सहनशक्ति है परन्तु फिर भी अधूरी है, कोमल है। नारी को केवल नारी ही रहने दो। जिस प्रकार इस संसार में कोई भी वस्तु साए के बिना नहीं है उसी प्रकार नारी, पुरुष को अपने साए के समान साथ-साथ रखती है।

भगवान ने प्रत्येक वस्तु, विचार-विमर्श करने के पश्चात् ही बनाई है। कोई किसी से आगे या पीछे नहीं है। अपनी आशा को ही ले लो। इसमें केवल एक जिह्वा की कमी है। कितने स्थानों पर इसके ब्याह की बात चली। क्यों लड़के वालों ने इन्कार किया। किसी भी जगह अधिक समय तक बात नहीं चली, क्या कारण है ?

अब तुम यह कहोगे कि ब्याह करना कोई आवश्यक बात नहीं है। परन्तु यह कहने की बातें होती हैं। यह कलियुग है। इस युग में मुनि ऋषि बनकर रहना असम्भव है। इस संसार में रहना है तो समाज के दायरे से बाहिर नहीं। यदि कोई लड़की अविवाहित रहेगी तो लोग उसे नहीं छोड़ेंगे। उसपर प्रत्येक उँगलियाँ उठाएगा। उसका जीवित रहना एक समस्या बन जाएगी यह बातें तो देखी गई हैं।

चलिए मैंने हार मान ली, अब आप विश्राम कीजिए। जब आप स्वस्थ हो जाएँगे तो तब आप बोलते जाइए और मैं लिखता जाऊँगा। फिर उसकी एक बहुत बड़ी किताब बन जाएगी।

बेटा आज तक बहुत छप गया है। समय की पहचान अधिक आवश्यक है। इसमें क्रान्ति की आवश्यकता है। वह तुम और मैं नहीं ला सकता हूँ। समय उसे स्वयं लाएगा।"

"प्रतिदिन की भाँति आज भी बाप-बेटे बहुत देर तक भिन्न-भिन्न विषयों पर वाद-विवाद करते रहे।

: १६ :

डॉक्टर साहब ! आज मेरा शरीर ठीक नहीं है। कोई दवाई दे दो।

भाईजान, मैं वहीं आने वाला था, चलिए।

दोनों कार में आकर बैठ गए।

श्याम ने मौन तोड़ते हुए कहा—राजन मुझे तुमसे एक आवश्यक बात करनी है।

तो आरम्भ कीजिए, विलम्ब किस बात का ?

मेरे पिताजी एक आवश्यक काम से आसाम जा रहे हैं और रजनी को भी साथ ले जा रहे हैं।

परन्तु क्यों ?—राजन झट से बोला।

अरे तुम तो चौंक से गए।

नहीं तो।

राजन, मैं तुम्हारा मित्र भी हूँ। हूँ न ?

जी इसमें कोई सन्देह नहीं।

तो एक मित्र होने के नाते, मैं तुमसे कुछ मागूंगा। आशा है कि तुम मुझे निराश नहीं करोगे—श्याम ने यह कहते हुए कार रोक दी।

मैं रजनी का हाथ तुम्हारे हाथ में सौंपना चाहता हूं। तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है ?

राजन का सिर नीचे झुक गया।

अरे छोकरियों की तरह शर्माते हो। मुझे उत्तर दो कि तुम मेरे इस प्रस्ताव से सहमत हो या नहीं।

जैसी आपकी इच्छा।

तुम्हें रजनी से कोई भी पृथक नहीं कर सकता है। रजनी कहीं भी नहीं जाएगी। आसाम मुझे जाना है परन्तु वहाँ जाने से पहले मैं तुम्हारे हाथ में रजनी का हाथ, किसी मन्दिर में देना चाहता हूं। बाकी विबाह तुम्हारे एम० एस० करने के पश्चात् होगा। राजन मुझ पर जो सितम हुए, मैंने सह लिए परन्तु रजनी के विरुद्ध कोई भी कदम नहीं उठा सकता। मैं रजमी का बड़ा भाई हूँ।

कार लाल कोठी के पास रुक गई और उसके साथ-साथ उनकी मित्रता सम्बन्ध में बदल गई। दिन बीतते गए। राजन, श्याम का सहारा लेकर रजनी के बिल्कुल निकट आ गया। इधर से शिवप्रसाद का शरीर सूखता गया। ३० जून की शाम को शिवप्रसाद अपने परिवार के साथ खूब खेलता रहा। जहाँ श्याम तथा रजनी भी मौजूद थे। रजनी ने उस दिन शिवप्रसाद के पाँव दबाए और फिर अपने भाई के साथ घर की ओर चली गई।

रास्ते में रजनी श्याम से कहने लगी—भैया, तुम्हें उस दिन कुछ पूछना था।

पूछना तो अवश्य था परन्तु अब इसकी आवश्यकता नहीं समझता हूँ।

इस पर दोनों हँस पड़े।

: १७ :

फर्स्ट जुलाई को राजन ने चिकित्सालय से अपना प्रथम वेतन पाया और वहाँ से चलने के लिए तैयार हो गया। उसकी प्रसन्नता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता था कि हस्ताक्षर करने के पश्चात् कलम मेज पर भूल गया।

"क्यों डॉक्टर साहब आज आप बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं ?" ज़ाहिदा ने मुस्कराते हुए कहा—"शायद प्रथम वेतन मिलने पर.........।"

हाँ ज़ाहिदा, आज मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं। चलो चलना है क्या ?

जी अभी नहीं। चलिए आप का साथ बाहर तक तो दूँ।

यह वताग्रो कि तुम ग्राज प्रसन्न हो न ? तुम्हें भी तो ग्राज वेतन मिता है।

डॉक्टर साहब पचास रुपये दवा का विल, सौ रुपये राशन के लिए। बाकी रुपये कर्ज चुकाने के लिए। शायद ही दस रुपये बच पायेंगे।

राजन का चेहरा गम्भीर हो गया। ज़ाहिदा ! मेरे साथ, मेरी उपाधि है ग्रौर तुम्हारे साथ ग्रनुभव, काम तो दोनों का एक ही है। जव तुम्हारे पैसे खत्म हो जाएँ तो मुझसे माँगने में संकोच न करना। मुझे तुम्हारे साथ पूरी सहानुभूति है। यह तुम नहीं समझोगी।

हाँ ! मैं नादान हू न।

कल मैं तुम्हारे घर ग्रवश्य ग्राऊँगा।

झूठ बोलने का ग्रभ्यास तो ग्रापको था ही नहीं।

नहीं में कल ग्राऊँगा। ग्रच्छा ग्रव मैं चलता हूँ।

राजन ग्राज रजनी से मिलना चाहता था। यह सोचते-सोचते कद ग्रनायास ही लाल कोठी की ग्रोर वढ़ गए। लाल कोठी पहुँचने पर पहले श्याम से मुलाकात हुई जो कि ग्रपने ग्रापसे कोई गीत गुनगुना रहा था।

भाईजान ! मुझे ग्राज वेतन मिल गया।

वड़े हर्ष की वात है। ग्राग्रो वैठो, मेरी चाय का क्या हुग्रा ?

ग्राप ही का तो सब कुछ है।

"मुझे कहने से पूर्व कोई ग्रौर भी इस समाचार को सुनने की प्रतीक्षा में है।"

"परन्तु कौन······?"

डाक्टर राजन, ग्राज ग्राप गलत कमरे में ग्राए हैं। ग्रापकी मंज़िल उस सामने वाले कमरे में है।

परन्तु वहाँ क्या है ?

ग्ररे यार, जाग्रो न रजनी को भी यह शुभ-समाचार तो सुनाग्रो। हाँ ! हाँ जाग्रो न।

राजन दौड़ते हुए रजनी के कमरे में ग्रा गया ग्रौर उसका हाथ पकड़कर श्याम के कमरे में ग्राया। सुनाइए भाईजान, क्या सुनाना है ?

श्याम मुस्कराते हुए कहने लगा—रजनी, तुम्हारे राजन को ग्राज वेतन मिला है।

रजनी ने सिर नीचे झुका लिया।

राजन, ग्रब तुम घर जाग्रो। वहाँ घरवाले तुम्हारी ही राह देख रहे होंगे। उनसे मिलमे के पश्चात मेरे पास फिर ग्राना।

आप तो मुझे घर से निकाल रहे हैं।

लो, तुम बुरा मान गए। अरे मुझे तुमसे बहुत बातें करनी हैं। पहिले घर से होकर आओ।

अच्छा यह भी ठीक है।

राजन यह कह कर वहाँ से चल दिया। राह चलते-चलते उसने गणेश जी की एक तस्वीर खरीदी। क्योंकि उसके पिता गणेश के उपासक थे।

घर पहुँचकर राजन ने रसोई में जाकर अपनी माँ की आँखें पीछे से बन्द कर दी।

अरे कौन ! ओह राजन बेटा !

अच्छा माँ, यह तो बताओ कि तुमने मुझे कैसे पहचान लिया जब कि तुम्हारी आँखें बन्द थी।—राजन की दृष्टि यह कहते हुए उसकी आँखों पर पड़ी जिनमें से आँसुओं की धारा बह रही थी। वह चौंक गया—"माँ, तुम क्यों रो रही हो ?

बेटा, वह कम्पाउंडर आया था। उसने तेरे पिताजी को इन्जैक्शन करते हुए कहा कि वे अधिक बातें न करें। उन्होंने मुझे भी वहाँ जाने से मना कर दिया।

परन्तु इस साधारण सी बात पर तुम रो रही हो। यह देख मैं पिताजी के लिए यह तस्वीर ले आया हूं।

आशा भी राजन के सामने आकर खड़ी हो गई। वह राजन से शायद यह पूछना चाहती थी कि वह उसके लिए क्या लाया है।

बोल तुझे क्या चाहिए ? तेरे लिए मैं अच्छे-अच्छे कपड़े लाऊँगा। पिताजी क्या कर रहे हैं ?

आशा ने सोने का संकेत दिखाया और नीचे बैठ गई।

बेटा अभी तक चिल्ला कर अपना बुरा हाल किया। अच्छा हुआ जो सो गए। थोड़ी देर उन्हें सोने दो।

"क्या मेरी बात सुनने के पश्चात् सो नहीं सकते हैं। कितनी चिन्ता है तुम्हें अपने पति की। मैं उन्हें जगाऊँगा।"

"अच्छा अब जाना ही है तो भी चाय लेकर आओ। दवाई की गोलियाँ तकिए के नीचे हैं। वह भी उन्हें चाय के साथ देना। चलो मैं भी आई।"

"हाँ, हाँ अपने हाथ से चाय पिलाना चाहती हो न ?"

हट, निर्लज्ज कहीं का !

राजन चाय की प्याली लेकर तेज़ी से ऊपर की ओर दोड़ा। उसने अपने दूसरे हाथ में गणेश जी की तस्वीर उठाई।

चाय की प्याली एक ओर रखते हुए राजन कमीज़ के बटन खोलते हुए

आईने में देखने लगा और मुस्कराते हुए कहने लगा—"पिताजी ! मुझे आज वेतन मिल गया है। उसमें से आपके लिए दो चीज़ें ले आया। अब तो मैं डॉक्टर बन गया हूं। अब मुझे सवेरे नहीं जगाना। आप मुझसे रूठ गए हैं क्या ?"

राजन अपने पिता के पाँव दवाने लगा—अच्छा, अब मैं आपको नमक खाने से नहीं रोकूंगा।

शिवप्रसाद के पाँव ठंडे हो गए थे।

सहसा उसकी निगाह पिताजी के चेहरे पर पड़ी जो कि काला पड़ गया था। आँखों में आँसू की कुछ बूंदें पता नहीं कब से जम गई थीं। राजन यह देखकर ठिठक गया।

उसने अपने पिता को पुकारा। कोई उत्तर न मिलने पर उसने तनिक ऊँची आवाज़ में पुकारा। वह उसके चेहरे को अपने दोनों हाथों में लेकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। वह उसे पुकारता रहा परन्तु शिवप्रसाद उसकी पुकार को कहाँ सुनता। वह तो जीवन के उस शिखर पर पहुँच गया था, जहाँ से कोई भी आज तक लौट कर नहीं आया, न किसी ने मुड़कर देखा कि पीछे क्या हो रहा है।

राजन रोते-रोते कहने लगा—यह आपने क्या किया पिताजी ? यह सब क्या हो गया ?

माँ घबराई हुई ऊपर आई।

माँ ! तुमने पिताजी को दो घड़ी सोने को कहा था परन्तु यह तो सदा के लिए सो गए। माँ ! पिताजी हमसे रूठ गए।

सीता अपने राम से बिछुड़ गई। घर में कोहराम मच गया। सबकी आँखें रोते-रोते धँस गई। ऐसा प्रतीत होता था कि वह तीनों बहुत दिनों से बीमार हैं।

: १८ :

आज शिवप्रसाद का दसवाँ दिन था। गाँव वाले एक-एक करके आते और तसल्ली देकर चले जाते थे। माँ को धीरज रखना पड़ा। वह कैसे यह भूल सकती थी कि वह एक पत्नी ही नहीं बल्कि एक माँ का रूप भी है। उसे आँसू आते तो चुपचाप उन्हें पी लेती। वह राजन को तरह-तरह की बातें सुनाती जिससे राजन कुछ पल के लिए अपने इस दुःख को भूल जाता।

दिन के चार बज चुके थे। राजन अपने कमरे में बैठा हुआ कुछ सोच रहा था।

बेटा ! कब तक तुम ऐसे ही बैठे रहोगे ? समझते क्यों नहीं हो कि जो भी

इस संसार में आता है उसे वापिस जाना पड़ता है। कर्त्ता की करनी को कौन टाल सकता है। पगले ! तुम्हारे रोने से जाने वाला थोड़े ही लौट आएगा। मेरी ओर तो देखो, मेरा जीवन-साथी बिछुड़ गया। तुम मुझे समझा लेते बदले में मुझे ही तुम्हें कहना पड़ता है। उठो, हाथ-मुंह धोकर कहीं घूम आओ।

सहसा किसी ने कमरे का द्वार खोला। राजन की दृष्टि श्याम पर पड़ी।

अरे ऐसे बुत बनकर क्या बैठा है ! तुम मां को रोते-रोते मारोगे क्या ? तुम एक कायर हो। माँ को किस बात की चिन्ता है। इसके एक के बदले दो बेटे हैं।

सीता भीगी पलकें लिए नीचे चली आई।

भाईजान, मेरा जीवन अब एक असाधारण मोड़ पर आ गया है। मैं आज जो कुछ भी हूँ, केवल उनकी कृपा से, वे मेरे गुरु थे। मेरी आँखों के चिराग थे। कैसा जानवर है यह मौत भी।

मैं सब कुछ मानता हूं परन्तु तुम्हारे रोने से उनकी आत्मा को दुःख पहुँचता होगा। तुम अब इस घर के मालिक हो। आशा तथा माँ का उत्तर-दायित्व अब तुम पर है। धीरज से काम लो।

हाँ भाईजान, जीना तो पड़ेगा ही।

उठो, तैयार होकर मेरे साथ चलो।

नहीं भाईजान ! इस समय नहीं।

कुछ देर के पश्चात् श्याम उठकर वहाँ से चल दिया।

उसके जाने के बाद राजन की दृष्टि फर्श पर पड़े हुए बटुए पर पड़ी, जिसमें सौ-सौ के आठ नोट थे। राजन ने माँ को बुलाते हुए कहा—माँ, श्याम बाबू का बटुआ यहाँ गिर पड़ा है। मैं उसे यह वापिस देकर आया।

हाँ, हाँ जाओ, दे आओ उसे। बेचारा परेशान हो गया होगा।

राजन कपड़े बदल कर श्याम के घर की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुंचते ही श्याम की माँ से उसका सामना हुआ।

बेटा, तू आज बहुत दुर्बल हो गया है !

शायद अधिक खाने से ऐसा हुआ होगा। श्याम भैया कहाँ है ?

तुम जाकर उसके कमरे में प्रतीक्षा करो। वह आता ही होगा।

राजन ऊपर चढ़कर श्याम के कमरे में चला आया। कुछ देर पश्चात सुखदेव चाय लेकर आया।

रजनी ने अपने कमरे से सुखदेव को आवाज देते हुए कहा—ऐ सुखदेव ! यह चाय किसके लिए ले जा रहे हो ?

जी, यह श्याम बाबू के कमरे में कोई अतिथि आया है।

"यह अतिथि कौन है ?" रजनी ने एक बिस्कुट उठाते हुए कहा।

जी, राजन बाबू आए हैं।

चलो, मैं ही उन्हें चाय देकर आती हूँ।

एक बात पूछूँ बिटिया ?

हाँ पूछो।

आप राजन बाबू से बात करती हैं क्या ?

अरे, मैं भी पागल हूं। जाओ तुम ही उन्हें दे आओ।

सुखदेव चाय लेकर कमरे के भीतर चला आया।

"नमस्ते राजन बाबू ! मुझे क्षमा करना, मैं आपके पास आ न सका। पहले तो यहाँ से निकलने का अवकाश ही नहीं मिलता है और मैं स्वयं भी बहुत चिन्तित हूं।

"कैसी चिन्ता लगी है तुम्हें ?"

अपनी मधु बेटी की शादी है न। क्या करूँ, कुछ समझ में ही नहीं आता कि क्या किया जाए। आपके पिताजी कहा करते थे—"सुखा बेटा ! तुम अपनी बेटी के विवाह की तैयारियाँ करो। मैं तुम्हें कपड़े सस्ते दामों में दूंगा। फिर पैसे जब चाहो दे देना।" कितने महापुरुष थे वे। बुरे आदमी का नाम उसकी मृत्यु के पश्चात् कौन लेता है।

"देखो सुखदेव, इस संसार में कोई भी बुरा नहीं होता। समय तथा वातावरण उसे बुरा बनने पर विवश करते हैं। अच्छा अब ब्याह की तैयारियाँ कहाँ पहुँची ?"

क्या कहुं बाबूजी, परसों लड़का देखना है। इस समय मेरा हाथ तंग है, लड़के ने कहा था कि दफ्तर पैदल जाना पड़ता है। मुझे साईकिल होना चाहिए।

राजन अपने आप से कहने लगा—कब हम लोगों में जाग्रति आएगी। सुखदेव यह कुरीतियाँ हमें एक न एक दिन मिट्टी में मिला देंगी। कहाँ से एक निर्धन पिता अपनी बेटी को पढ़ाएगा। और फिर, उसे ब्याह के समय दहेज़ भी देगा। जितना दोष दहेज़ लेने वाले का है, उतना ही दहेज़ देने वाले का भी है।

आपके विचार महान हैं। काश, इस संसार में हर कोई एक इन्सान का महत्व समझ लेता तो भारत का नक्शा ही बदल जाता। खैर चाय पी लीजिए, यह ठंडी हो जाएगी। हम फिर कभी बातें करेंगे।

सुखदेव के जाने के उपरान्त ही रजनी ने कमरे में प्रवेश किया। वह राजन के घुटनों पर सिर रखकर बोली—उपदेश देना बन्द कीजिए साधू-

महाराज ! चाय ठंडी हो रही है।

अरे रजनी, श्याम भैया मुझसे कह रहे थे कि तुम्हें कालेज में इनाम मिला है। है न ? मुझे यह सुनकर हार्दिक प्रसन्नता हुई।

इनाम तो मिला परन्तु क्या कहुं तुम्हारे पिताज्ञी की मृत्यु के पश्चात, मेरा दिल रोता रहता है। मरते तो सब हैं, परन्तु......।"

"पगली, पिता तो मेरा मर गया, रोता तो मैं हूँ, जिसे रोना चाहिए था, तुम क्यों रोती थी।"

मैं भी तो इसी कारण रोती थी कि श्याम भैया ने मुझे कहा कि आप वहाँ रोते रहते हैं। तब से मेरा जी ही नहीं लगता है।

राजन ने चाय की प्याली मेज़ पर रखते हुए कहा—मुझे केवल इतना दुःख है कि एक निर्धन पिता के दिल में अपनी बहु-बेटी के लिए कितना प्यार होता है। वह तुम न देख सकी। यह तो केवल मेरा दुर्भाग्य है।

आप मुझे अपने घर बुलाइए न। फिर देखना आपकी उदासी मुझे देख कर कैसे भाग जाएगी। मुझे अपने घर बुलाइए न।

तो आ जाओ, रोका किसने है ? जब जी चाहे आ जाना।

रजनी ने झेंपते हुए कहा—"ऐसे ही चली आऊँ क्या ?—इतनी शक्ति आज कल के युवकों में कहाँ है। इन बातों के लिए पत्थर का हृदय होना चाहिए। आजकल के युवक केवल लड़कियों को सताने में प्रथम हैं।

आपको यह पता ही है कि मुझे श्याम बाबू की आज्ञा का पालन करना है ! हाँ एक विचार आया।

क्या ?

यही कि मैं आपसे गले मिलना चाहता हूँ। रजनी इधर आओ न।

रजनी ने अपना सिर झुका लिया। राजन ने इस अवसर को हाथ से जाने नहीं दिया और उसे ज़ोर से अपनी बाँहों में ले लिया। रजनी भी उसके साथ ऐसे चिमट गई जैसे भौंरा फूल के साथ लिपटता है।

दोनों भावनाओं के सागर में डूब गए। यह कमरा इन दो कलियों से सुगन्धित होने लगा। ऐसा प्रतीत होता था कि शाहज़ादा सलीम अपनी अनारकली के साथ खयालों की दुनिया में घूम रहा हो। कुछ समय पश्चात मन्द-मन्द समीर कमरे में आने लगी, दोनों की आँख लग गई और सपनों की दुनिया में शहनाईयाँ बजने लगी।

"यदि इन्हें कोई नहीं जगाएगा तो इनको जागने की भी आवश्यकता नहीं है परन्तु यदि सुखदेव या माँ जी कमरे में आ जाएगी तो मामला गोल हो जाएगा। इन दोनों की इज्ज़त मिट्टी में मिल जाएगी। सच्चे प्रेमियों की

सहायता परमात्मा सदा करता है। मेरी भी प्रभु से यही प्रार्थना है कि राजन का मान तथा रजनी की लाज, दोनों इस घर में रहे।"

दोनों गहरी निन्द्रा में सोए हुए थे। रजनी ने अपना मुंह राजन के चौड़े सीने पर रखा था और राजन का बाँया हाथ रजनी के कन्धे पर था। उन दोनों के होंट एक दूसरे के गाल पर चिपके हुए थे। सहसा एक चिड़िया खिड़की से कमरे के भीतर आई और मेज पर रखे हुए खाली कप पर बैठ गई। वह भी शायद इनको जगाना नहीं चाहती थी। चिड़िया तो भाग गई परन्तु प्याला मेज़ से नीचे गिर पड़ा। उसके टूटने के साथ राजन का सपना भी टूट गया। वह नींद से जाग गया परन्तु रजनी को जगाने का साहस न कर सका। राजन ने उसकी पलकों को चूम लिया परन्तु रजनी तो गहरी निन्द्रा में सोई हुई थी।

राजन ने अन्त में घास के एक तिनके को उठाकर उसके चेहरे पर फेरा।

"मुझे तंग मत करो।"

अरे परमात्मा के लिये अब उठो न।

क्यों ?

यह भी कोई पूछने की बात है। यदि किसी ने देख लिया तो फिर क्या होगा ?

"लीजिए डॉक्टर साहब उठ गई"—रजनी उठकर सामने वाले सोफे पर सो गई।

इतने में श्याम गुनगुनाता हुआ कमरे में चला आया—क्यों सरकार ! क्या कर रहे हो ?

जी सो रहा था। मैं यहाँ एक घण्टे से आपकी प्रतीक्षा कर रहा था।

"क्षमा कीजिए डॉक्टर साहब थोड़ी देर हो गई।"

"अच्छा आप पहले यह तो बताइए कि आप कुछ खो तो नहीं गए हैं।"

कुछ नहीं।

आप अच्छी तरह से याद कीजिए। आपका बटुआ तो नहीं खो गया है।

श्याम ने जेब से बटुआ निकालते हुए कहा—यह रहा मेरा बटुआ।

फिर यह किसका बटुआ है, इसमें आठ सौ रुपये हैं ?

चलो मेरा ही बटुआ होगा। किसी गैर का थोड़े ही है।

अच्छा अब आई बात समझ में। तो यह मुझे यहाँ तक लाने का एक साधन था।

श्याम ने रजनी को जगाते हुए कहा—उठो रजनी ! मेरे लिए चाय ले आओ।

रजनी के बाहर जाते ही श्याम राजन से कहने लगा—"देखो राजन ! मेरे विचार में अब तुम्हारा गाँव में रहना ठीक नहीं। तुम उस मकान को छोड़ दो और अस्पताल के सामने ही जो सफेद बंगला है न ? अरे वह पार्क के सामने वाला बंगला।"

हाँ, हाँ समझ गया, तो फिर उसका क्या करना है ?

वह हमारा बंगला है। उसमें आकर रहो। मुझे भी वहाँ आने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

परन्तु उसका किराया कितना देना होगा।

डॉक्टर साहब, आपसे बहुत कम लेंगे। और कुछ कहना है क्या ?

जैसी आपकी इच्छा।

तो जितना शीघ्र हो सके, सामान बाँध लो। मैं कल कार लेकर आ जाऊँगा। कल ही मैं माँ से भी कहूंगा। इस बटुए को अपने पास रखो। इस समय तुम्हें पैसों की आवश्यकता होगी।

राजन कुछ कहता परन्तु रजनी को कमरे में आते देखकर चुप हो गया।

डॉक्टर साहब, इस बटुए को जेब में रखिए, कहीं गिर न जाए।

भाईजान, अब मुझे चलने की आज्ञा दीजिए। घर पर माँ मेरी राह देख रही होगी।

"ठहरो, सुखदेव कार में घर छोड़ देगा।"—यह कहकर श्याम ने सुखदेव को बुलाकर उसे राजन को घर तक छोड़ने को कहा।

"आइए डॉक्टर साहब ! बैठिए।"

राजन कार में बैठ गया और सुखदेव कार चलाने लगा।

अरे सुखदेव ! यह खिलौने किस के लिए हैं ?

जी मेरे बेटे के लिए।

तुम्हारा बेटा इतना छोटा है क्या ?

जी, यह सबसे छोटा है।

तुम्हारे कितने बच्चे हैं ?

जी चार लड़के तथा तीन लड़कियाँ।

किसी बेटी का विवाह किया है क्या ?

जी अभी नहीं, परन्तु ढूंढ़ता हूँ। इस वर्ष परमात्मा की कृपा से एक बेटी का विवाह अवश्य करूँगा।

तो मुझे, विवाह के अवसर पर अवश्य बुलाना, इसमें जितनी शीघ्रता हो सके, ठीक है, एक बोझ सिर से उतर जाएगा।

क्या बताऊँ सरकार, आप तो स्वयं बुद्धिमान हैं। निर्धन परिवार को

ढूंढने में थोड़ा समय लगता है। वह ठीक है, परन्तु कोशिश इन्सान के हाथ में है। एक बात पूछूं ?

जी पूछिए।

पता नहीं कुछ लोग सब कुछ जानकर भी क्यों अन्जान बनते हैं ?

वह तो मूर्ख है साहब ! उन्हें सुधरना चाहिए।

पता है, इस समय तुम उलझन में क्यों पड़े हो ?

जी नहीं !

क्योंकि जब से तुमने व्याह किया है, तब से तुमने अपना तथा अपनी बीवी का जीना हराम कर दिया है। मुझे तुमसे यह नहीं कहना चाहिए था परन्तु विवश हूं। बच्चे पैदा करना प्रत्येक इन्सान को आसान दिखाई देता है। यह सत्य है परन्तु उन बच्चों को पाल-पोस कर उच्च श्रेणी तक पहुंचाना बहुत कठिन है। यदि तुम्हारे दो-तीन बच्चे होते तो सोचो, तुम उन्हें उच्च शिक्षा दे सकते थे परन्तु तुम्हारे इतने बच्चे हैं। कैसे इस जीवन की नैया, शान्तिपूर्वक पार लगा सकोगे। उन बच्चों को कैसे पढ़ाओगे। जबकि तुम एक साधारण नौकर हो।

सुखदेव ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा—राजन बाबू ! यह सब तो भगवान की देन है। उसने प्रत्येक प्राणि के लिए सोच कर रखा होता है।

राजन ने तनिक ऊँची आवाज़ में कहा—कितनी अनुचित अफवाहें हम भगवान के नाम पर फैला रहे हैं। इस पवित्र शब्द का अनुचित प्रयोग न करो। मेरी बात सुनो !—"मानो तुम एक जंगल में से चल रहे हो। उस जंगल में एक भयानक सांप किसी नन्हें बालक के पीछे दौड़ रहा है। यह बात तो तय है कि सांप बच्चे को डस लेगा। तुमने इस दृश्य को देख लिया। उस समय तुम क्या करोगे ? यह भी तो भगवान की ही इच्छा है।"

सुखदेव ने झट से कहा—साहब, आप मुझे इतना संग दिल समझते हैं। मैं अपनी जान की बाजी लगाकर बच्चे को बचा लूंगा यह सत्य है कि कर्त्ता की करनी को कौन टाल सकता है परन्तु हमारा भी तो कोई कर्त्तव्य है। कोई विपत्ति में होगा, यह मैं कैसे सह सकता हूं।"

यदि किसी इन्सान के दो बच्चे हों, वह उन्हीं को पढ़ा-लिखा कर विद्वान् बनाएगा ताकि वह भारत के काम आ सके। अभी भी भारत में अनाज की कमी है। जो जीवित हैं, उनके लिए पूरा नहीं है और जो पैदा हो जाएंगे उनकी दशा क्या होगी। हमारे भारत में प्रत्येक स्थान पर परिवार नियोजन केन्द्र हैं। हम क्यों न उनका पूरा-पूरा लाभ उठाएं। जिस परिवार में अधिक बच्चे हों, वही बच्चे बड़े होकर गवार, आवारा तथा बदचलन बनते हैं। क्योंकि उन्हें शिक्षा नहीं मिल सकती। कोई

भी माता-पिता अपने बच्चे को अनपढ़ नहीं रखना चाहता परन्तु निर्धनता ही एक इन्सान की ऐसी विवशता है जो उसे कुछ भी करने में असमर्थ बनाती है। जो भी काम हमारे देश में भयानक सांप बनकर रुकावट पैदा करें, हमें एक सच्चे देशभक्त की भांति उसे खत्म करना चाहिए। लोग सरकार के सहयोग से अपने आपको पतन होने से बचा सकते हैं।

सुखदेव ने कार रोकते हुए कहा—"राजन साहब, मेरी झोंपड़ी सामने ही है। मैं ज़रा अपने बेटे को देख कर आता हूं। वह सवेरे बहुत बीमार था।

कोई बात नहीं, जाओ देख कर आओ, चलो मैं भी आता हूं।

मकान के भीतर आते ही राजन ने सुखदेव की पत्नी को नमस्ते किया। उसके बाद वह उसके बेटे को देखने लगा।

देखो सुखदेव ! तुम कल सुबह तक यह दवाई इसे दे दो। कल तुम मेरे पास अस्पताल में आना। मैं वहीं इसके लिए दवाई दूंगा। अब ठीक है न ?

जी बहुत अच्छा !

हां, इसे दवाई खिलाने के बाद ही थोड़ा दूध पीने के लिए देना !

परन्तु राजन साहब ! उस डॉक्टर ने तो इसे डबल रोटी देने को कहा है।

बिल्कुल नहीं देना। इसे बुखार बहुत है।

अच्छा, अब आप चाय पिएंगे या दूध ?

इस समय तो कुछ भी नहीं। फिर कभी।

जब दोनों कार के निकट पहुंचे तो रजनी को देखकर दोनों चकित हो गए।

छोटी मालकिन ! आप यहाँ कैसे आ पहुंची ?

मैं मन्जू के पास गई थी। वहां से उसकी गाड़ी में आ रही थी कि यहाँ अपनी कार देखकर रुक गई। तुम लोग कहाँ गए थे ?

राजन ने अपना मुंह बनाते हुए कहा—छोटी मालकिन ! सुखदेव का बेटा बीमार है। इसी कारण हम उसे देखने गए थे।

ठीक है सुखदेव ! तुम तब तक अपने बेटे के पास रहोगे और मैं राजन को घर छोड़ आती हूं। फिर यहाँ से तुम्हें बुला कर इकट्ठे चलेंगे।

जैसी आपकी इच्छा।

रजनी ने कार चलानी आरम्भ की। पहले धीमी गति से, फिर तेज़, और फिर इतनी तीव्र गति से कि मानो कोई जहाज़ उड़ रहा हो।

राजन का दिल धड़कने लगा। वह घबराते हुए चेहरे के पसीने को पोंछने लगा।

कार चलती गई।

अन्त में राजन पागल की तरह चिल्लाने लगा—रजनी ! तुम्हें क्या हो गया।

रजनी ने हँसते हुए कार की ब्रेक लगा दी और कुछ गज़ चलने के पश्चात् कार धीमी गति से चलने लगी।

"इतनी तीव्र गति से कार चलाने में तुम्हें तनिक भी भय नहीं होता है क्या ? कहीं कुछ हो जाता तो......।"

"आप इतने भयभीत हो गए ? इतनी जान प्यारी है क्या ?"

नहीं, भय किस बात का। मैं तो तुम्हारे लिए चिल्लाया था।

"पसीना तो पोंछ लीजिए। जनाब बहुत घबरा गए हैं—रजनी ने अपना कान राजन की छाती पर रखते हुए कहा—"अरे, आपके दिल की धड़कन इतनी तेज़ हो गई। यह आपको क्या हो गया। बात तो यह है कि आपने कभी भी अपने दिल के तारों को नहीं छेड़ा। अब मैंने सोचा कि मैं ही साज़ छेड़ दूं।

"जनाब, यह केवल दिल की धड़कन है, साज़ नहीं। अरे, आप यहाँ से कहाँ चल दीं ? मेरा घर तो उस ओर है।"

पहले मैं आपको थोड़ी सैर करा लाऊँ, फिर घर ले जाऊँगी। क्या आपको कोई आपत्ति है ?

"जी, बिल्कुल नहीं।"—राजन यह कह कर सामने वाले दर्पण की ओर देखने लगा जहाँ रजनी का गम्भीर चेहरा स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

सहसा रजनी की दृष्टि दर्पण पर पड़ी जहाँ कुछ देर से राजन की मोटी आँखें उसे निहार रही थी।

आप यूं मुझे घूर-घूर कर क्यों देख रहे हैं ? मुझे डर लग रहा है।

राजन की चेतना फिर लौट आई।

जी आप मुझ से कुछ कह रही थीं ?

जी, मैं यह कह रही थी कि आप मुझे घूर-घूर कर क्यों देख रहे हैं ?

जी यह आपकी भूल है। हज़ूर ! मैं तो दर्पण की ओर देख रहा था।

दर्पण में क्या आपको कोई विशेष बात दिखाई दी ?

जी दर्पण में धरती का चांद है। जिसे मैं कह रहा था कि मेरी दृष्टि में सदा रहना। कहीं मुझे धोखा न देना।

तो आपके चांद ने क्या उत्तर दिया ?

कुछ भी नहीं, केवल बात को टाल दिया।

क्या प्रत्येक बात का उत्तर जिह्वा से ही दिया जाता है। मेरे अन्दरूनी जज़बातों को देखने का प्रयास करो ! मैं केवल इस जन्म में ही नहीं, बल्कि

जन्म-जन्म भर तुम्हारे साथ साए की तरह रहूँगी।

थोड़े वायदे हुए, कुछ बातें हुईं। उसके बाद रजनी ने राजन को घर पर छोड़ दिया और स्वयं भीगी पलकें लिए वापिस चली गई।

: १६ :

शुक्रवार के दिन चाय पीने के पश्चात् राजन तथा आशा सामान बांधने लगे। राजन दीवार से अपनी तस्वीर उठाने लगा जो कि उसने कालेज के सहपाठियों के साथ खरीदी थी। फिर उसने मुस्कराते हुए आशा की ओर देखकर दूसरी तस्वीर उठाई। इस तस्वीर को उसने ज़ोर से अपनी बाँहों में भींच लिया। तस्वीर का शीशा टूट कर चूर-चूर हो गया।

राजन की आँखों में आँसू की कुछ बूंदें जम गईं। आज राजन को वह दिन याद आया जब मेले में उसने अपने पिताजी से तस्वीर लिवाने का हठ किया था। उस समय पिताजी ने कहा था—"बेटा, इसमें बहुत पैसे लगते हैं।"

"परन्तु पिताजी मेरे पास अपनी छात्रवृत्ति के दस रुपये मौजूद हैं।'

उस दिन शिवप्रसाद ने उसे बहुत टालना चाहा परन्तु राजन ने एक न मानी। तस्वीर खरीदी गई।

राजन ने आशा को बुलाकर उसे टूटे हुए शीशे के टुकड़ों को उठाने के लिए कहा। तस्वीर एक ओर रख दी गई।

इतने में सीता ने कमरे में प्रवेश किया।

चल बेटा ! पहले भोजन कर लो।

चलो मां, मैं अभी आया।

राजन ने थोड़ा सामान बन्द कर लिया और भोजन करने के लिए नीचे उतरा।

मां, आज तुमने खाना अत्यन्त स्वादिष्ठ बनाया है।

"क्यों न बनाती, इसे तो पता था कि इसका बेटा भूखा होगा।"—श्याम ने कमरे का द्वार खोलते ही कहा।

आओ बेटा ! मैं तो तेरी ही प्रतीक्षा कर रही थी।

नमस्ते श्याम बाबू !

नमस्ते भैया !

श्याम राजन के साथ बैठकर रोटी खाने लगा, मानों कई दिन का भूखा हो।

हमारे यहाँ खाना नौकर ही बनाते हैं और नौकर ही खिलाते हैं परन्तु सच मानों मां तुम्हारे हाथ का बनाया हुआ खाना प्रतिदिन खाने की इच्छा रहती है। भोजन करने के पश्चात श्याम ने सुखदेव को बुलाकर सामान कार में रखवाया।

राजन ने आशा की ओर मुस्कराते हुए कहा—अरे तुम अपने पिन्टू को लाना भूल ही गई। उसे भी लाओ न।

अरे यह पिन्टू कौन है?

भाईजान, यह आशा का साथी है। इसके बिना यह रहती ही नहीं है।

श्याम आगे कुछ न कह सका परन्तु उसे आशा को एक पिंजड़ा लाते देख थोड़ा आश्चर्य हुआ। उस पिंजरे में एक तोता था जो कि आशा की तरह बोली बोलता था।

जाओ आशा, इसे गाड़ी में रख दो।

इतने में माँ अपने पड़ोसियों से विदाई लेकर आई।

आस-पास के बहुत सारे लोग गाड़ी के समीप एकत्र हो गए।

रामचन्द की पत्नी ने सीता को सम्बोधित करके कहा—जुग-जुग जिए तेरा लाल। बेटा हो तो ऐसा। देखो बहन, अपनी बहनों को कभी नहीं भूलना।

दूसरी स्त्री बोली—अरे, अब हमें यह कहाँ याद करेगी।

"ऐसा मत कहो बहन! मैं उन्हें कैसे भूल सकती हूँ—जिनके संग इतने वर्ष बिताए—बचपन भी, जवानी भी। अब तो बुढ़ापा आ गया है। मैं अवश्य तुम्हारे पास आया करूंगी"—सीता ने अपने आँसू पोंछते हुए कहा। गाड़ी चल पड़ी। सीता रोने लगी और राजन की आँखों से अनायास ही आँसू टपक पड़े। पता नहीं वह क्यों रोया। आशा भी चुप-चुप के रोने लगी। श्याम ने कार स्वयं चलाई। कुछ क्षणों के उपरान्त ही घर सीता की दृष्टि से ओझल हो गया। सीता ने अपने घर को, अपने पति को वहीं छोड़ा परन्तु उनकी याद न छोड़ सकी।

कार एक आलीशान बंगले के सामने रुक गई।

सुखदेव ने सामान मकान के भीतर ले लिया।

श्याम ने तीसरे फ्लैट पर पहुँचते हुए कहा—माँ, यह सारा फ्लैट खाली है। तुम्हें जितने भी कमरों की आवश्यकता हो, ले लेना।

"भैया, हमें केवल दो कमरे तथा किचन चाहिए।" राजन ने यह कहते हुए अपनी माँ की ओर देखने लगा उसने भी स्वीकृति में सिर हिला दिया।

श्याम ने कार की चाभी हाथ में घुमाते हुए कहा—अच्छा, अब मैं चलता हूं। तीन घण्टे के पश्चात फिर उपस्थित हो जाऊँगा। मुझे मिल पर एक आवश्यक काम है।

ठीक है भाईजान!

श्याम वहाँ से चला गया परन्तु राजन बैठे-बैठे इस बात पर विचार करने

लगा कि प्रत्येक धनी ज़ुल्म के दायरे में नहीं रेंगता है।

सीता राजन के समीप आकर बोली—"बेटा! बाज़ार से कुछ सामान लाना है।

आओ बैठो माँ! बोलो क्या लाना है?

सीता ने एक ही सांस में सब कुछ कह डाला।

राजन, आशा के साथ बाजार से सामान खरीदने के लिए चल पड़ा।

घर का सारा सामान खरीदने के पश्चात् राजन आशा को कपड़े की दुकान पर ले गया।

भई! कोई अच्छा सा कपड़ा दिखाओ।

दुकानदार ने टोपी सीधी रखते हुए कहा—आपको क्या बनवाना है?

"जी फ्राक तथा सलवार"। आशा तुम रंग पसन्द करो न।

आशा ने तीन रंग के कपड़े पसन्द किए।

तीन सूट काट लिए गए और उसके साथ-साथ तीन साड़ियाँ भी।

चलो आशा, अब चलते हैं परन्तु आशा ने रोकते हुए एक कपड़े की ओर संकेत किया। राजन समझ गया कि आशा उसे बुशर्ट के लिए कपड़ा खरीदने को कहती है। बुशर्ट का कपड़ा खरीदने के पश्चात् राजन ने 150 रु० की सुनहरे रंग का बार्डर किए हुए, लाल रंग की एक साड़ी खरीद ली।

यह रंग माँ को पसन्द है। क्यों आशा है न?

आशा ने सिर हाँ में हिलाया।

घर पहुँचते ही राजन ने माँ को सब सामान दिखाया।

"अरि माँ, तू ऐसे क्या देख रही है?"

बेटा क्या कहूं? कुछ विश्वास ही नहीं आता है कि कल का राजू, आज घर सम्भाल रहा है।

अच्छा माँ, सब सामान आया न?

हाँ बेटा!

तो अब आँखें बन्द करो। फिर मैं तुम्हें एक चीज़ दिखाऊँगा।

दिखाओ न।

पहले आँखें तो बन्द करो न।

अरे, यह हठ करना तो तुम्हारे बचपन का स्वभाव है। लो कर ली आँखें बन्द। अब दिखाओ।

राजन ने अपनी माँ के हाथों में लाल रंग की साड़ी रख दी।

अब खोलो आँखें।

माँ ने आँखें खोलीं तो वह ठिठक कर रह गई, मानो उसे किसी बिच्छू ने

काटा हो। वह रोते-रोते राजन से बोली—यह तुम क्या लाये बेटे ?

"माँ, रो क्यों रही हो ? क्या यह रंग तुम्हें पसन्द नहीं। तुम्हें तो पहले यह रंग बहुत पसंद था। अब भगवान के लिए चुप करो न। मैं उसे यह साड़ी वापिस दे दूंगा।"

"बेटा, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। मुझे यह लाल रंग तुम्हारे पिताजी के जीवित होने तक बहुत पसंद था। अब इसे वापिस क्यों करोगे ? यह मेरी बहू पर खूब सजेगी।"

राजन की आँखें भर आईं। वह अपने आँसू छिपाने के लिए समाचार पत्र पढ़ने लगा इतने में निचले फ्लैट से एक सज्जन, जिनका नाम कान्तिलाल था, राजन के पास आए। जान-पहचान करने के पश्चात् कान्तिलाल बोले—क्या आपने कल का समाचार पत्र पढ़ा ?

"जी नहीं"—राजन ने एक सन्देहभरी दृष्टि कान्तिलाल की ओर डालते हुए कहा—उसमें क्या कोई विशेष समाचार छपा है ?

जी कहते हैं कि पाकिस्तान ने काश्मीर में अपनी सेना चोरी-छिपे भेजी है।

वह तो उनकी कायरता है। इसमें डरने की कौन सी बात है। वीर तो मैदान में आकर लड़ते हैं और कायर व्यक्ति चूहों की तरह छिप-छिप कर अपनी मौत की तलाश में चले आते हैं। घबराने की कोई बात नहीं है, भारतवासी झुकना नहीं, झुकाना जानते हैं। पहले युद्ध करना भी किसी देश के हित में नहीं है। यदि दोनों देश आपस में समझौता कर लेते तो इस संसार की कोई भी शक्ति उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

कान्तिलाल ने अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए कहा—युद्ध में दोनों ओर से तबाही हो जाती है, अब इन्हें कौन समझाए।

वे दोनों आपस में देर तक बातें करते रहे। उसके बाद राजन अपनी कुछ किताबों का अध्ययन करने लगा। परन्तु श्याम उसे इन किताबों की ओर कहाँ देखने देता। वह पीछे से आ टपका।

दो घण्टे तक बातें करने के पश्चात् भी राजन को उसके साथ चलना पड़ा।

लाल कोठी के भीतर आते ही रजनी के साज ने दोनों को रुकने पर विवश किया।

चलो राजन, पहले रजनी से टैक्स लेते हैं।

कैसा टैक्स ?

अरे तुम सदा बुद्धू ही रहोगे। चलो कोई गीत सुनेंगे।

चलिए।

श्याम ने रजनी के कमरे में आते ही कहा—रजनी ! तुम हमें एक गीत सुनाओ। ज़रा हम भी देखें कि राजन की प्रशंसा कहाँ तक सच है।

देखिए भाईजान, गीत सुनने की चाह आपको है। मुझे क्यों बीच में ले रहे हैं। वैसे रजनी की आवाज़ सुरीली है।

कुछ क्षणों के उपरान्त ही गीत आरम्भ हुआ—

"टहनी से गिरी कली हूँ, आई तेरी बाहों में ।
गिर कर बिखर जाऊँगी, तेरे जीवन की राहों में ।।
अब कैसे भूल जाऊँ, चाहे लाख अब चाहूं मैं ।
जब दिल से मिला है दिल, सूरत तेरी निगाहों में ।।
टहनी से गिरी.........
तुम आ गए जीवन में, गूंजी सदा तन मन में ।
ढूंढूं पिया तुझे हर पल सासों में.........

गाना समाप्त होने के पश्चात् श्याम ने ताली बजाते हुए राजन से कहा—राजन, तुम सचमुच भाग्यवान हो जो तुम्हें रजनी जैसी प्रेमिका मिली। रजनी, यद्यपि मेरी छोटी बहन है, परन्तु कई बातों में यह मुझसे अधिक अनुभवी है।

राजन के चले जाने के पश्चात् श्याम ने रजनी से एक प्रश्न पूछा—रजनी, तुम्हें राजन में कौन सी बुराई दिखाई देती है ?

रजनी सिर नीचे किए हुए बोली—"मैं क्या जानूं ?"

एक बुराई है मैं कह दूं।

क्या ?

रजनी की आँखें श्याम से टकराईं।

"अरे वह सुन्दर है, परन्तु प्यार के मैदान में बिल्कुल कोरा है। देखो न, वह तुम्हें प्यार से बुलाता ही नहीं हैं और कभी भी तुम्हारे साथ दिल खोलकर बातें नही करता है। आजकल के नवयुवक प्यार में कर्तव्य, बलिदान, सहनशक्ति तथा तपस्या को छोड़कर पहले रोमांस का पाठ पढ़ाना आरम्भ करते हैं परन्तु राजन के विचार अभी मेरी समझ में नहीं आए हैं। खैर तुम घबराओ मत। मैं तो इस मैदान का पुराना खिलाड़ी हूं। धीरे-धीरे इसे सब सिखाऊँगा। मुझे तो अभी यह केवल एक सपना दिखाई देता है परन्तु तुम फिक्र न करो। मैं इस सपने को वास्तविकता में बदल दूंगा। मेरे जीते जी तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ेगा। श्याम यह कहते हुए रोने लगा—"रजनी ! मेरी दुनिया तो उजड़ गई। मैं अब तुम दोनों को देख-देख कर दिन बिताऊँगा।

भैया एक बात पूछूं ?

हाँ, हाँ पूछो।

क्या आप मेरे इस निर्णय से अप्रसन्न तो नहीं हैं ?

मैं क्यों अप्रसन्न होता ? तुम मूर्ख हो। प्यार करना पाप नहीं है। यदि कोई लड़का या लड़की प्यार करते हैं तो इसमें उनका कोई दोष नहीं हैं। दोष उनका है जो इस पवित्र प्यार को अपवित्र बनाते हैं। जिसके उत्तरदायी, इस समाज के ठेकेदार हैं जो प्रत्येक प्रेमी को समय-समय पर चुभते हैं। मुझे ही देखो, मैं जीता हूं परन्तु एक चुभन मेरे साथ है और यह उम्र भर मेरे साथ रहेगी। यदि पिताजी ने तेरे विरुद्ध कोई बात उठाई तो मैं उनके साथ लड़ूंगा। तुम्हारा ब्याह राजन के साथ ही होगा। जब तक मैं जीवित हूँ, तुम्हें कोई भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।

रजनी ने अपना फूल सा चेहरा आँचल में छिपा लिया।

"इधर से राजन सोमवार के दिन अस्पताल गया और अपने वार्ड में रोगियों को देखने लगा। पीछे से डॉक्टर महेश ने कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—छुट्टी खा-खा के मोटा हो गया है। यह बताओ कि तुमने नोटिस-बोर्ड पढ़ा ?

नहीं। क्या बात है।

आज दो बजे मीटिंग है। तुम भी अवश्य आना।

: २० :

दो बज गए और राजन भी मीटिंग में सम्मिलित हुआ। डॉक्टर पटेल ने कहना आरम्भ किया—'यह बात आप लोगों के सामने छुपी नहीं है कि पाकिस्तान कुछ दिनों से भारत पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा है। हमें अपने देश के लिए जो भी बलिदान देना पड़ेगा, उसमें हम पीछे नहीं रहेंगे। कल हमें डाइरेक्टर हैल्थ सर्विसिज से एक पत्र मिला है। उन्हें फौजी जवानों की सेवा के लिये कई डॉक्टरों की आवश्यकता है। अब मैं आपसे कहता हूं कि जिसे देश की सेवा के लिये अपने आप को पेश करना हो, वह आफिस में जा कर फार्म भर लें।"

डॉक्टर वर्मा ने राजन को बुलाकर कहा—डॉक्टर राजन, तुम भी मेरे साथ चलोगे ?

सर, आपके कहने से पहले ही मैंने इस बात पर विचार कर लिया। यदि आप मुझे उन जवानों की सेवा के योग्य समझेंगे तो मैं इसे अपना सौभाग्य समझूंगा।

देखो राजन, एक बार फिर सोच लो। यदि तुम्हें किसी से परामर्श लेना हो तो ले लो। तुम कल भी फार्म भर सकते हो।

"सर मुझे किसी से भी परामर्श नहीं लेना है। आप मेरा नाम, सबसे पहले लिख दीजिए"

यह कहकर राजन अस्पताल से घर की ओर चला। राह चलते-चलते ज़ाहिदा का घर आ गया। राजन शायद ज़ाहिदा को भी इस बात की सूचना देना चाहता था।

"क्यों भई ज़ाहिदा अन्दर ही है न ? राजन ने ज़ाहिदा के छोटे भाई से पूछा।

हाँ साहब, चलिए। वह अपने कमरे में ही है।

कमरे में आते ही राजन उदास सा हो गया क्योंकि ज़ाहिदा पलंग पर बीमार पड़ी थी।

"क्या बात है ज़ाहिदा ? क्या बीमार पड़ना चाहती थीं ?

सर, बिल्कुल नहीं परन्तु यह ज्वर छोड़ता ही नहीं है। आज बीमार पड़े हुए चार दिन हो गए।

राजन ने उसकी दवाई की गोलियों को देखते हुए कहा—इस दवाई से काम नहीं चलेगा।

ज़ाहिदा को कुछ देर तक देखने के पश्चात् राजन ने टैरामाइसीन एस० एफ० (Terramycin S.F.) कैपसूल बाज़ार से मँगवाये।

देखो इन कैपसूलों को चार-चार घण्टों के पश्चात् खाना। फिर तुम शीघ्र ही ठीक हो जाओगी। इसके साथ केवल ठंडा पानी पीना। ज़ाहिदा, मैं तुम्हें एक समाचार सुनाता हूं—"डाइरेक्टर हैल्थ सर्विसिज की आज्ञा अनुसार सेना के चिकित्सालय के लिए कुछ डॉक्टर चुने गए हैं। मैं भी उनमें से एक हूँ। परसों छः बजे मैं छम्ब-जोरियां की सीमा पर जा रहा हूँ। युद्ध आरम्भ होने का अन्देशा है।

केवल डॉक्टरों की ही आवश्यकता है क्या ?

नहीं तुम भी अपना नाम लिखा सकती हो।

तो आप मेरा नाम भी लिखवाइएगा। मैं भी वहां जाना चाहती हूं।

परन्तु पहले स्वस्थ तो हो जाओ न।

जी मैं किसी भी दशा में सेना की सेवा करने के लिए तैयार हूँ।

राजन दो घण्टों तक वहां बैठा रहा और फिर ज़ाहिदा की मां से आज्ञा लेकर चल पड़ा।

राजन आज अत्यन्त प्रसन्न दिखाई दे रहा था। घर की ओर चलते-चलते उसे याद आया कि श्याम बाबू से भी मिलना है क्योंकि उसके साथ उसने ताश खेलने की भी प्रतिज्ञा की थी।

श्याम के घर पहुँचते ही उसने लक्ष्मी को नमस्ते किया और श्याम के कमरे में चला आया।

नमस्ते भाईजान !

नमस्ते। तुम यहीं बैठो, मैं सुखदेव से चाय लाने के लिए कहता हूँ।

भाईजान ताश नहीं खेलना है क्या ?

मुझे सब याद है।

श्याम ने रजनी को बुलाया। सुखदेव भी चाय लेकर आ गया। चारों बैठकर ताश खेलने लगे।

श्याम ने उठकर रेडियो का स्विच दबाया। चारों की निगाहें ताश पर जमीं थीं।

सहसा रेडियो पर समाचार आरम्भ हुए—"पाकिस्तान ने कल रात छम्ब जोरियाँ के इलाके में हमारे जवानों पर अचानक आक्रमण कर दिया। वह अपने नापाक कदम हमारी धरती पर रखना चाहते थे परन्तु वे असफल रहे। हमारे जवानों ने बड़ी वीरता से शत्रु का सामना किया। अनुमान लगाया जाता है कि शत्रु को भारी हानि हुई। हमारे चार जवान रणभूमि में काम आए और बारह घायल हो गए।"

राजन ने मौन तोड़ते हुए कहा—भाईजान, सरकार को फौजी जवानों की सेवा में कुछ डॉक्टरों की आवश्यकता है। मैंने भी उसमें अपना नाम लिखवाया है। हमें कुछ दिनों के लिए अस्पताल से बाहर जाना पड़ेगा।

श्याम ने ताश का पत्ता फेंकते हुए कहा—"कब जा रहे हो ?"

जी परसों सवेरे।

कम से कम मुझसे पूछ लिया होता।

भाईजान, यह भी तो आपके लिए अच्छा है कि आपका छोटा भाई देश के लिए कुछ कर सके।

वह तो ठीक है, परन्तु······—। खैर, तुम स्वयं बुद्धिमान हो। तुम लोग कहाँ जा रहे हो ?

जी छम्ब-जोरियां की सीमा पर हमारा कैम्प लगेगा।

कुछ देर तक ताश खेलने के पश्चात् श्याम ने राजन से कहा—"चलो यार आज शिव प्रसाद मन्दिर चलते हैं।

श्याम ने रजनी को भी अपने साथ ले लिया।

शिव मन्दिर के निकट ही कार रुक गई। श्याम ने राजन का हाथ पकड़ते हुए कहा—आगे कोई निर्णय लेना होगा तो उसे मुझे पूछे बिना नहीं लेना।

भाईजान, इस समय भूल हो गई परन्तु मैं भी विवश था। यह कैसे हो सकता था कि भारत के जवान ज़ख्मी हो जाएँ और मैं घर पर बैठा रहूँ।

मन्दिर में पूजा करने के पश्चात् श्याम ने राजन के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—यह मन्दिर मुझे बहुत प्यारा है। पता है क्यों?

क्यों ?

यही वह स्थान है जहाँ मैंने अपनी कामिनी से वायदे किए थे। देखो राजन, मैं आज भगवान के सामने रजनी का हाथ तुम्हारे हाथ में देता हूँ। मेरी प्रभु से यही विनती है कि यह रिश्ता उम्र भर रहे।

राजन ने पहली बार भगवान के सामने रजनी का हाथ पकड़ लिया।

मुझे वचन दो राजन कि तुम रजनी को कभी धोखा नहीं दोगे।

राजन ने रजनी के हाथ को पकड़ते हुए कहा––"हम मरेंगे इकट्ठे, जियेंगे इकट्ठे। भाईजान आप जैसा देवता मेरा भाई है और रजनी जैसी जीवन साथी। मुझे इस दुनिया में और क्या चाहिए ?"

वहाँ से चलकर श्याम ने राजन को उसके घर पर छोड़ दिया।

: २१ :

संसार भर में यह चर्चा होने लगी कि पाकिस्तान ने किस प्रकार दूसरों की सहायता के सहारे भारत पर आक्रमण किया और उसके असफल होने की तस्वीर भी किसी से छुपी नहीं थी।

भारत शान्ति अवश्य चाहता था परन्तु उस शान्ति की ओर यदि कोई आँख उठाकर देखेगा, यह भारत के लिए असहनीय है। प्रत्येक भारतवासी अपने देश पर मर मिटने के लिए तैयार हो गया। दुनिया के कोने-कोने से साइन्सदान कुछ देखने के लिए आए। हाँ, यह चमत्कार तो था ही कि हमारे साइन्सदान श्री बाबा ने एक ऐसा गोला तैयार किया जिससे अमरीका का माना हुआ पैटन टैंक नष्ट हो गया।

भारत एक रात में ही लाहौर के बहुत अन्दर बढ़ गया। दोनों देशों के जवान लड़ते रहे।

"दोनों ओर से लाशों के ढेर जमा हो गए, कुछ दफ़न किए गए और कई जलाए गए। मानवता हर तरफ से रुसवा हुई। एक भयंकर ललकार ने उसे बीच भँवर में गुमसुम रहने पर विवश कर दिया। पशु-पक्षी अपने छोटे नन्हें-मुन्ने बच्चों को आँसू पी-पीकर आश्वासन देने लगे। यह देख-देखकर प्रत्येक व्यक्ति की आँखें धुंधली हो गईं। लहलहाते खेतों की हरी भरी फ़सल एकाएक इन ग़मों की मायूस उमंगों से लिपट गई। क्या यह सच है·········कि इन्सान

शैतान के बदले अपने ही इन्सान से लड़ रहा है। यह खून खराबा किसलिए.........? यह कौन हमारे खून से हमारे ही साथ होली खेल रहा है? हमसे ही हमको क्यों छीना जाता है? यह लोग क्यों गुमराह हुए हैं? हम क्यों मानवता की हस्ती को मिटाने पर तुले हुए हैं?

किस मज़हब का मशवरा जंग है? किस देवता की प्यास खून से बुझानी है? नन्हें-नन्हें हाथों को किसने हथियारों की भेंट चढ़ा दिया? यदि मौत के घनघोर साए मनुष्य के आगे पीछे हर पल मँडराते रहते हैं तो फिर वह सब कुछ भूलकर भी अपने आप से ही टक्कर क्यों ले रहा है? यह धरती, आज धरती नहीं बल्कि दानव नगरी बन गई है। यहाँ कई मायूस बेसहारा औरतों का कफन बनाया जा रहा है। जब शक्ति का अर्थ मानवता को उखाड़ फेंकना है तो राक्षस को देवता का स्थान क्यों नहीं देते हैं? मौत की भयानक धूप में सिकुड़ते हुए यह खोए चेहरे आशा की वर्षा का इन्तज़ार क्यों कर रहे हैं? जब कि उन्हें इस बात का पूरा ज्ञान है कि श्रीकृष्ण का चक्रव्यूह आज उनके हाथ लगा है जो लाशों को अपना बल दिखाकर चाँद की ओर बढ़ चुके हैं। कलाकार की कला में यह फीका रंग कहाँ से आ टपका? यह आँसू के कतरे बह-बहकर कब तक गीता के अक्षरों को भिगोते रहेंगे?

कब तक एक नई नवेली दुल्हन मन्दिर की सीढ़ियो पर सिर झुकाकर अपने पति के लिए लम्बी उम्र माँगती रहेगी? कितनी भोली है वह! क्या उसको इस बात का तनिक भी ज्ञान नहीं कि हमने ही उसकी बाहों से वह सुख छीन लिया है जिसकी झूठी आशा को वह आज भी विश्वास बना कर पूज रही है। क्या कोई भी हम में ऐसा नहीं जो उसके प्रश्नों का उत्तर दे सके?

कितनी देर तक एक बहिन, हाथों में राखी लिए अपने भाई का कोने में इन्तज़ार करेगी? सच पूछो तो किसी भी कलाकार की कला का जादू उस माँ के कलेजे पर नहीं चल सकता जो अपने बेटे के शोक में पागल भी हो गई, फिर भी आशा नहीं छूटी। वह किस लिए बार-बार अपने इकलौते बेटे को पुकारती है। अब भला हम उसे किस तरह कहें कि तुम्हारे आँसू बिन बुलाए मेहमान की तरह व्यर्थ हैं। वह नादान तो हर राहगीर को डाकिया समझ कर रोक कर पूछती है—"क्या मेरे बेटे का कोई पत्र आया है?"

"माताजी, मैं डाकिया नहीं हूं।"

"वृद्ध अवस्था की सूखी हुई टहनी पर सब्ज पत्ते लगाने से कोई लाभ नहीं......।"

लाख यत्न करो, बूढ़ी माँ अब तुम्हारा बेटा लौट कर नहीं आ सकता...।

लव सी लो, तुम्हें पूछने वाले बहुत मिलेंगे पर तुम्हारी माँग अब पूरी नहीं हो सकती।"

यह हवा भी अब तंग आ चुकी है। कभी मिग, कभी नैट और कभी हन्टर इसके सीने को छलनी करके कभी इस पार, कभी उस पार जाते हैं। बदले में यह हमें जीवनदान देता है। धरती काँप उठती है, शायद इसी कारण कभी-कभी गंगा क्रोधित होती है और अपनी बाहों में लाखों निर्दोषों को उजाड़ के फेंकती है.........। इतने बड़े टैंक, इतने बड़े तोपखाने किसलिए हमने इसके कोमल वदन पर इकट्ठे कर रखे हैं ? इतना सारा बारूद इकट्ठा करना, किस धर्म का नियम है ? हमारा कौन सा उपकार इस धरती माँ पर है ? हम क्यों अपनी माँ के सीने को टुकड़े करना चाहते हैं ? इस सजाए हुए चमन को वीरानों में बदलने वाले, ज़रा यह तो बताएँ कि इतना सारा अनाज होकर भी लोग भूखे क्यों मरते हैं ? क्यों न हम पैदा होने के बाद मरना सीख लें ?

यह जीव-जन्तु क्यों नहीं आपस में लड़ते हैं ? कितने प्यार से वह अपना जीवन बिताते हैं। फिर हम में यह हैवानियत क्यों ? सितारों की दुनिया में जंग का नामोनिशान क्यों नहीं ? सूर्य भगवान रौशनी देते हैं, चाँद सितारे आपस में बाँट लेते हैं। ऐसा न हो कि, यह आसमान के फरिशते हम धरती वालों से ही युद्ध की शिक्षा पाकर हम पर वार करना आरम्भ कर दें। क्या पता है कि सूर्य देवता हम पर कब तक कृपालू रहेंगे ?

समुद्र की शान्त लहरों में भी तो अशान्ति फैल सकती है। एक लहर में सारा संसार समा सकता है। मौत अपना जाल बिछाए हुए चारों ओर हमको भयभीत कर रही है।

हज़ारों खून करके कोई नाम बनाना चाहता है। क्यों न एक को मिटाकर लाखों निर्दोषों को इस निर्दयी मौत से बचा लिया जाए ? कोई पागल है क्यों न हम अपनी राह बदल दें ? उस पुल पर चलने से क्या फायदा जिसके नीचे खून का दरिया बह रहा हो ? उस ऊँचाई से क्या हासिल जो कई निर्दोषों की लाशों पर बनी हो ? वह शासक किस काम का जिसके सपने आते ही जनता काँप उठे ?

न हम गीता को भूल चुके हैं, न हमें हज़रत अयूब की सहनशक्ति पर सन्देह है, न ही हमें ईसा मसीह के चरण छूने से इन्कार है। वह भी तो विश्व-शान्ति के लिए ही आए थे। उनके समय का जंग और हमारे समय का जंग......सागर के दो तट हैं, जो कभी भी नहीं मिल पाएँगे। वह तो वही थे, जो राक्षसों को मार कर विश्व-शान्ति की डोर अपने हाथों में पकड़े हुए हँसते-हँसते चले गए। वह तो शान्ति के लिए लड़ रहे थे और हम वर्तमान-

काल में विश्व-शान्ति को अशान्ति में बदलते हैं। सच्चाई के लिए लड़ना उनका ही उपदेश था। पर इस संसार से सच्चाई कब की भाग चुकी है। फिर हम किस बात पर लड़ते हैं ?

कौन किसकी धरती छीनना चाहता है, यह कैसी जीत……और कैसी हार……, किसलिए……और किसके लिए……? बाहर जंग क्यों, जबकि हर व्यक्ति के भीतर अभी शत्रु मौजूद हैं। हम अपने आपसे क्यों नहीं लड़ते हैं ? काश हम उस शत्रु से लड़ते, जो इस बरबादी की जड़ है। बाहर जाना चाहते हो तो पहले अन्दर का रास्ता साफ करो। ऐसा न हो कि, न हम अन्दर जा सकें और न ही बाहर का कुछ सोच सकें।

शक्ति का सही उपयोग केवल रक्षा है। हमने इसकी राह, क्यों बदलकर अत्याचार की ओर खींच ली ?

काश ! जनता में जाग्रति आ जाती तो उनको भेड़ बन कर नहीं रहना पड़ता। वह भी इस जीवन के कुछ पल शान्तिपूर्वक व्यतीत करते।

: २२ :

"राजन ने अपनी माँ से झूठ बोलते हुए कहा—देखो माँ, मैं कुछ दिनों के लिए किसी आवश्यक काम से बाहर जा रहा हूं।"

लौटकर कब आओगे ?

बस माँ, मैं दस-पन्द्रह दिन में वापिस आ जाऊँगा।

माँ तथा बहिन दोनों उदास हो गईं परन्तु सीता तो सीता थी।

आखिर वह घड़ी आ ही गई जब राजन माँ तथा बहिन को फ्लैट में छोड़कर अस्पताल की ओर बढ़ा।

अस्पताल में रजनी और श्याम राजन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

अरे भई, इतनी देर लगा दी ?

भाईजान, यह तो आप जानते ही हैं कि मुझे माँ को मनाने में कितना विलम्ब हुआ होगा। मैं तो अब आपके भरोसे पर घर छोड़कर जा रहा हूँ।

तुम घर की चिन्ता छोड़ दो। वहाँ मेरी माँ है, बहिन है। तुम अपना ख्याल रखना।

डॉक्टर वर्मा ने पीछे से श्याम का कन्धा दबाते हुए कहा—श्याम बाबू, कहिए आप कैसे हैं ? अब शरीर ठीक तो है न ?

जी बिल्कुल ठीक है। आप भी जा रहे हैं क्या ?

"जी इस सारे यूनिट का इन्चार्ज तो मैं ही हूं।"

पूरे आठ बजे राजन ने श्याम को गले लगाया।

भाईजान रजनी क्यों नहीं बोलती है ?

देखो रजनी ! राजन को विदा होते समय परेशान न करो। कुछ ही दिनों की तो बात है।

रजनी आँसू बहाते हुए, झूठी मुस्कान लिए राजन के पास गई।

कुछ बात करो न रजनी !

मुझे इस बात का भय है यदि कुछ.........

कुछ नहीं होगा। तुम अपने प्यार पर विश्वास रखो। मैं बहुत जल्दी लौट आऊँगा।

"रजनी सिर नीचे किए हुए बुत बनकर खड़ी रही।"

सच मानिए तो राजन का दिल भी आज रो रहा था। श्याम तथा रजनी तब तक वहीं खड़े रहे जब तक कि तीन गाड़ियाँ उनकी दृष्टि से ओझल हो गईं।

रजनी उसी जगह रहना चाहती थी परन्तु श्याम की आवाज़ सुनते ही चौंक पड़ी।

हाँ, हाँ भैया चलो।

मैं जानता हूँ कि तुम्हारा दिल आज दुःख से भरा है परन्तु तुम बुद्धू हो। राजन कुछ दिनों के लिए ही तो गया है।

रजनी ने बात को हँसी में बदलते हुए कहा—भैया, मैं कहाँ उदास हूं? मैं तो कुछ और ही सोच रही थी।

क्या सोच रही थी? कुछ मैं भी सुनूँ।

"यही कि युद्ध में यदि राजन को कुछ हो गया तो.........।"

पगली राजन तो डॉक्टर है। उसे मैदान में थोड़े ही लड़ना है?

भैया क्यों मुझे बुद्धू बना रहे हो? समय आने पर डॉक्टर को भी लड़ना पड़ता है और फिर राजन तो एन० सी० सी० का कमाण्डर भी रहा है।

रजनी उस दिन कालेज भी नहीं गई। वह कुछ देर तक इन्हीं विचारों में पड़ी रही और फिर धीरे-धीरे घर के वातावरण में डूब गई। वह प्रतिदिन कालेज से आते समय सीता के पास जाकर पहरों बातें करती थी।

श्याम भी इन दिनों कुछ उदास सा दिखाई देने लगा। वह भी नित्य सीता के पास जाता था।

एक दिन श्याम मिल से घर लौट आया और अपने कमरे में जाकर पलंग पर लेट गया।

सहसा लक्ष्मी की आवाज़ सुनाई दी जो कि श्याम को बुला रही थी।

श्याम आँखें मूंदते हुए लक्ष्मी के पीछे चलने लगा। फिर दोनों कुर्सी पर बैठ गए।

बेटा श्याम ! तुम्हें कल या परसों आसाम जाना पड़ेगा। वहां सेठ गोविन्द-दास ने हमारे लिए ज़मीन देख ली है जहां हमें अपना सिनेमा हाल बनाना है और वहां जाकर तुम्हें चाय के बाग भी खरीदने हैं। मुन्शी जी पर कितना छोड़ देंगे। हमने गोविन्ददास से बात कर ली है। तुम्हारी राय क्या है ? तुम वहां कल जाओगे या परसों ?

जैसी आपकी इच्छा। मां, जब तुम कहोगी, चला जाऊँगा।

तो तुम कल ही चले जाओ। चार-पांच दिन के पश्चात् काम करके वापिस चले आओ।

मां, जैसी तुम्हारी इच्छा। मुझे तुमसे एक बात कहनी है।

कहो बेटा, क्या कहना है ?

कुछ नहीं मां, आसाम से वापिस आकर मैं उसके बारे में तुम से बात करूँगा—यह कहकर श्याम अपने कमरे में चला आया।

रजनी वहां पलंग पर लेटी थी। श्याम कमरे में आकर उसके सिर को दबाने लगा।

रजनी ने पलकें खोलते हुए कहा—क्या बात है भैया, मां क्या कह रही थी ?

कुछ भी नहीं, कल मुझे आसाम जाना है।

क्या कल ही जाना है ?

बिल्कुल।

भैया, मुझे तुम्हारे वहां जाने में कुछ दाल में काला दिखाई देता है।

क्या मतलब ?

तुम्हें सेठ गोविन्ददास के यहां जाना है न ?

हां, उन्हीं की कोठी में तो ठहरना है।

चलो तुम्हारा भी दिल बहल जाएगा।

वह कैसे ?

रोज़ी बहुत अच्छी लड़की है। वह तुम्हारे योग्य है। हां, हां भाभी हो तो रोज़ी जैसी।

श्याम ने गरजते हुए कहा—"मुझे ब्याह नहीं करना है। पिताजी, मेरी शराफत का गलत फायदा उठाते हैं।

मुझ पर क्यों बरस पड़े। उम्र भर कुंवारे रहो, ब्रह्मचारी हनुमान जी !

: २३ :

मां की आज्ञा अनुसार श्याम आसाम जाने के लिए तैयार हो गया। उसे दिन के दो बजे के जहाज़ से उड़ान भरनी थी।

लक्ष्मी ने बेटे को अपने सीने से लगाया और वह घर से चल पड़ा।

डेढ़ बजे श्याम हवाई अड्डे के पास पहुंचा। उसने पीछे मुड़कर देखा तो एक कुल्फी वाला उसे कुल्फी बेचते हुए दिखाई दिया। उसने मलाई-कुल्फी वाले को बुलाया और उससे कुल्फी के दो प्लेट माँगे। कुल्फी खाते-खाते श्याम अपनी बहिन से पूछने लगा—अब सिर में तो दर्द नहीं है।

रजनी ने अपनी प्लेट शीघ्र ही समाप्त की और फिर श्याम की प्लेट में से खाने लगी।

अरे, यह क्या कर रही हो। अपनी प्लेट तो खाली कर दी। अब मेरी प्लेट में से खा रही हो। जितनी बड़ी हो जाएगी, उतनी शरारते भी बढ़ती जाऐंगी।

श्याम ने दो रुपये का नोट कुल्फी वाले के हाथ में थमा दिया और फिर हवाई जहाज़ की ओर बढ़ गया।

अच्छा रजनी ! मैं अब जा रहा हूँ।

"भैया मैं यहाँ क्या करूँगी। मुझे तुम्हारा प्यार आएगा।"

"बस, मैं तीन-चार दिन के बाद आ जाऊँगा।"—यह कह कर श्याम हवाई जहाज के भीतर जा कर बैठ गया। उसने चेन हुक में बन्द कर ली और समाचार पत्र के पृष्ठ उलटने लगा।

जहाज़ धरती से ऊपर उठने लगा और उड़ते-उड़ते अपनी मंज़िल की ओर बढ़ने लगा।

आज भी रजनी राजन के घर गई। वहाँ सीता तथा आशा से घण्टों बातें करने के पश्चात अपने घर वापिस चली गई।

सुबह लालाजी अपने पूजा के कमरे में लक्ष्मी की पूजा कर रहे थे कि घर की लक्ष्मी ने कमरे में प्रवेश किया। यह दूध अभी तक आपने नहीं पिया है?

आओ लक्ष्मी बैठो, अभी दूध पी लूंगा।

आप क्या सोच रहे हैं ?

सोचता तो बहुत कुछ हूं।

ऐसी कौन सी बात है, जो मुझसे छिपाई जा रही है।

लो रूठ गई, ऐसी कौन सी बात है, जो मैंने आज तक तुमसे छिपाई है ? सोचता हूँ कि श्याम अब सत्ताईसवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। उसका विवाह इस वर्ष अवश्य होना चाहिए। तुम्हारा क्या विचार है ?

आप जो कुछ सोचते हैं, सो तो ठीक है परन्तु श्याम के द्वारा इस बात को स्वीकार करना चाहिए न ?

यह बात तुम मुझ पर छोड़ दो। श्याम को मुन्शी जी सब समझा लेंगे।

सेठ गोविन्ददास को भी इस बात का पूरा ज्ञान है। वहाँ रोज़ी के साथ श्याम घुल-मिल जाएगा।

यह बात तो मैं श्याम के साथ कर चुकी हूँ परन्तु वह साफ इन्कार कर चुका है।

लालाजी ऊँची आवाज़ में बोले—आज तक किसी ने मेरे सामने सिर उठाने का साहस नहीं किया है। मैं सेठ को भरी सभा में वचन दे चुका हूं। उसके ब्याह के पश्चात हम रजनी का भी विवाह कर देंगे। फिर हम दोनों मुक्त हैं। लक्ष्मी चुपचाप सिर नीचे किए हुए खड़ी रही।

लालाजी फिर बड़बड़ाए—मैं अभी मुन्शी जी से फोन पर बात करूँगा। वही उसे सब समझा देंगे। यदि इस घर में उसे रहना है तो यह रिश्ता उसे स्वीकार करना होगा वरना उसके लिए इस घर में कोई भी स्थान नहीं होगा। मैं यह समझ लूंगा कि मेरा बेटा मर गया है।

लालाजी ने यह कहते हुए दूसरे कमरे में जाकर फोन का नम्बर मिलाया।

नमस्ते मालिक !

क्या हाल है मुन्शी जी ! कहो अच्छे हो न ?

जी बिल्कुल ठीक हूं, यहाँ हमने कमसे कम सब चाय के बाग खरीद लिए।

"वह ठीक है। श्याम को तुमने सब कुछ कहा होगा।"

हाँ मालिक, मैंने उसे सब कहा परन्तु वह मेरी बात का उत्तर ही नहीं देते हैं।

"उसे तुम फिर समझाओ।"

ठीक है मालिक सब समझा लूंगा।

अरे मुन्शी मियाँ, क्या समझाने जा रहे हो हमें ?

छोटे सरकार ! मालिक का फोन आया है।

उनसे कह दो कि वह इस समय यहाँ नहीं है।

मुन्शी जी ने लाला हुक्मचन्द को बात काटते हुए कहा—"मालिक, वह रोज़ी से मिलने के लिए राज़ी नहीं होगा।"—यह कहकर उसने फोन नीचे रख दिया। दो दिन के बाद श्याम ने वापिस घर जाने के लिए टिकट बुक करवाई।

मंगलवार के दिन श्याम ने सवेरे ही अपना सामान बँधवाया और फिर सेठ गोविन्द दास से मिलने गया।

दोपहर के बारह बजे, पता नहीं उसने क्या सोच कर रजनी को फोन पर बुलाया।

रजनी, तुम माँ को क्यों नहीं समझाती हो ? वह किसी लड़की का जीवन

क्यों नष्ट करना चाहती हैं ? क्या उन्हें याद नहीं कि उनकी बहू कामिनी थी और वह मर गई है।

भैया, मैं सब कुछ जानती हूँ परन्तु परिस्थितियों की ओर देखकर तुमसे विनती करती हूं कि जैसा पिताजी कहते हैं, वैसा ही करो। तुम्हारे जाने के पश्चात् इस घर में क्या नहीं हुआ ? पिताजी, माँ से बोलते तक नहीं हैं। चारों पहर घर में झगड़ा सुन-सुन कर कान पक गए हैं।

रजनी, यह तुम ठीक तरह से जानती हो कि मेरे सुख भरे जीवन में किसने दुःख भरी साँस भर दी है ? यदि मैं आज पिताजी की बात स्वीकार कर लूंगा तो तुम्हें भी उनके किसी भी गलत निर्णय के सामने सिर झुकाना पड़ेगा।

"भैया, तुम अभी मेरी बात छोड़ दो। यदि तुम गोविन्द सेठ का रिश्ता स्वीकार नहीं कर लोगे तो पता नहीं पिताजी क्या कर डालेंगे ? भैया मैं हाथ जोड़ती हूँ। पिताजी के क्रोध की अग्नि को हवा न दो।" श्याम ने अपनी बहिन को आश्वासन देते हुए कहा—"तुम चिन्ता न करो। मैं रोज़ी से शादी कर लूंगा। रजनी, तुम हवाई अड्डे पर मेरी प्रतीक्षा करना।'

यह भी कोई कहने वाली बात है ? मैं वहाँ अवश्य आऊँगी। मुझे तुमसे बहुत प्यार है।

श्याम ने एक लम्बी आह भरते हुए फोन नीचे रख दिया। उसे यह पता ही नहीं था कि रोज़ी कब से उसकी बातें द्वार पर खड़ी-खड़ी सुन रही थी।

नमस्ते।

आपसे मैंने कहा था कि जाते समय मिलूंगा।

"मैं समझी शायद आप भूल गए होंगे।" कुछ देर तक कमरे में मौन रहा और फिर रोज़ी ने मौन तोड़ते हुए पूछा—आप इतने दिन यहाँ रहे परन्तु मेरे साथ एक बात भी नहीं हुई। मुझमें क्या कमी है ? आप कहिए। मैं अपने आप को ठीक राह पर लाने का पूरा प्रयत्न करूँगी।

किसने कहा कि आपमें कोई कमी है ? मैं तो कुछ और ही सोचता हूं कि कहीं मेरे अभागेपन का साया आपके जीवन पर न पड़े।

मैंने रजनी से सब कुछ सुन लिया है। यदि मैं कामिनी के आदर्शों पर चलूंगी तो भी क्या आप मुझे अपने दिल में जगह नहीं देंगे ?

श्याम चौंक गया। उसने अपनी दृष्टि रोज़ी की ओर उठाई और फिर नीचे गिरा दी।

"मेरा दिल अब पत्थर से भी कठोर बन गया है। मैं अब भी यह नहीं समझ सकता हूं कि आपके साथ क्या-क्या बातें करूँ ?"—यह कहते हुए श्याम की आँखों में आँसू आ गए—"रोज़ी ! तुम बहुत अच्छी लड़की हो। इतना

सुनकर भी तुम मुझसे अप्रसन्न नहीं हो ?

यह सच है कि मेरी बातचीत आपके साथ बहुत कम हुई परन्तु मुझे इस बात का ज्ञान है कि जो व्यक्ति जीवन में कभी भी चोट खाता है, उसके पश्चात् वह सम्भल कर कदम उठाने लगता है। आप अपनी राह से हट जाइए। आप सब कुछ भूलकर एक नया जीवन आरम्भ कीजिए। चलिए मैं आपके साथ ब्याह करने के लिए इन्कार कर लूंगी परन्तु आप अपना ब्याह अवश्य कीजिगा। मैं सोचती थी कि एक घायल व्यक्ति दूसरे घायल व्यक्ति का सम्मान अवश्य करेगा परन्तु.........

चलते-चलते रोज़ी ने केवल इतना कहा—"मैं आपको पूजती थी क्योंकि आपको अपना देवता माना था।" श्याम ने उसे रोकना चाहा। परन्तु रोज़ी दौड़ते हुए कार में बैठकर निगाहों से ओझल हो गई।

मुन्शी जी शायद नीचे से ऊपर इस कारण आए कि रोज़ी क्यों रूठ कर चली गई। परन्तु श्याम की आँखों में आँसू पाकर कुछ भी नहीं कह सके।

"छोटे सरकार, चलिए कपड़े बदल कर तैयार हो जाइए श्याम ने घड़ी की ओर देखते हुए कहा—हाँ, हाँ चलिए। आप अटैची को कार में रख दीजिए। मैं अभी आया।

श्याम मुन्शी जी के साथ कार में बैठ गया। कार में चलते-चलते श्याम ने मुन्शी जी से कहा—"पहले हम सेठ गोविन्ददास के बंगले पर चलेंगे।"

मुन्शी जी यह बात सुनकर अति प्रसन्न हुए। उन्होंने कार सेठ के बंगले की ओर मोड़ दी।

सेठ गोविन्ददास अपनी पत्नी के साथ बातें करने में मग्न थे। श्याम को अपने समीप पाकर दोनों चकित हो गए।

आओ, आओ श्याम बेटा! बैठो!

जी, मैं आज वापिस जा रहा हूं। सोचा आपसे मिल कर जाऊँ।

बेटा, मैंने तो कहा था कि कुछ दिन और ठहरो। मुझे तुमसे बहुत बातें करनी थीं। इन दिनों तुम अपने काम में लगे रहे।

अच्छा, मैं आपको वचन देता हूँ कि दो माह के पश्चात् यहाँ फिर आऊँगा। उस समय आप जितने दिन ठहरने को कहेंगे, मैं ठहरूंगा।

सेठ गोविन्ददास ने रोजी को बुलाते हुए कहा—रोजी, देखो श्याम बेटा आया है।

रोजी दौड़ते हुए अपने पिताजी के पास आई।

"क्या है पिताजी?" रोजी ने श्याम की ओर देखते हुए कहा। और फिर चुपचाप अपनी मां के पास बैठ गई।

बेटी ! श्याम बेटा आज घर जा रहा है।

मुन्शी जी बीच में बोल उठे—रोज़ी बेटी, तुम भी हमारे साथ हवाई अड्डे पर चलो।

हाँ, हाँ बेटी श्याम बाबू को हवाई अड्डे पर छोड़ आओ।

श्याम तथा रोज़ी कार की पिछली सीट पर बैठ गए और मुन्शी जी आगे।

श्याम ने रोज़ी के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—गुस्ताखी माफ, आप मुझे इन्सान ही समझिए। मैंने आपके साथ जो व्यवहार किया उसके लिए मैं क्षमा चाहता हूं। यदि मुझे आपका प्यार मिलेगा तो मैं सारी दुनिया भूल जाऊँगा। मैंने अब शराब पीना छोड़ दिया। उस दिन आप रूठ गई थी न ?

यह बड़ी खुशी की बात है।

आपको मुझसे कुछ भी नहीं कहना है क्या ?

मैं क्या कहूँ, मैंने तो आपसे सब कुछ कह दिया है।

"मैं आपके बिना किसी से अपना ब्याह नहीं करूँगा।"

धन्यवाद ! आज आप मेरे बारे में भी सोचने लगे।

"आप अब बीती हुई बातों को भूल जाइए न।"—श्याम यह कहते हुए बच्चों की तरह झूठ ही रोने लगा।

अच्छा सेठ जी, लीजिए भूल गई। अब यह बताइए कि वापिस तशरीफ कब लाएंगे ?

दो माह के पश्चात्।

रोज़ी के सिर पर मानों किसी ने पहाड़ गिरा दिया हो ! "दो महीनें आप······!"

तो आप मुझसे दूर नहीं रहना चाहती हैं क्या ?

"जी ऐसी बात नहीं है परन्तु, खैर······।"

जब भी आप मुझसे मिलना चाहेंगीं तो मैं आ जाऊँगा। यह ठीक है न ?

रोजी ने सिर हाँ में हिलाया।

"आप मेरे कमरे का टेलीफोन नम्बर नोट कीजिए। क्या आप एक काम करेंगीं ?"

जी कहिए।

आप मुझ से नित्य फोन पर मिला कीजिए। मैं आपसे पहरों बातें करूँगा—कुछ कहूंगा, कुछ सुनूँगा और कुछ देखूँगा।

जैसी आपकी इच्छा। यह कहने, सुनने को बात तो ठीक है पर आप क्या देखेगे ?

तुम्हारी तस्वीर सामने होगी। उसे देख-देख कर तुम्हारे साथ बातें

करूँगा। बात ही बात में तुमसे तुम्हीं को माँग कर चूम लूँगा। आप क्या सोच रही हैं?

कुछ-कुछ समझ रही हूँ।

क्या समझ रही हैं?

"यही कि आप बहुत अच्छे हैं और आप मनहूस नहीं हैं।"

तो क्या आप मुझे मनहूस समझ रही थीं?

इतने में हवाई अड्डा आ गया और श्याम कार से उतरा, रोज़ी भी श्याम के हाथ में हाथ रखकर चलने लगी।

"दिल की बातें दिल में ही रह गई।"

फोन पर सब कह दीजिएगा।

अरे पगली! सब कुछ फोन पर कैसे कह सकूंगा। तुम्हारे सामने बातें करनी हैं। तुमसे हिसाब लेना है।

मुन्शी जी ने श्याम को बुलाते हुए कहा—छोटे मालिक! समय हो गया।

अच्छा अब मैं जा रहा हूँ। कल मुझे फोन पर अवश्य मिलना—पूरे चार बजे।

श्याम की आँखें खुश्क थीं परन्तु रोज़ी की आँखों से आँसू बह रहे थे।

देखो रोज़ी! अब मैं जा रहा हूं। मुझे हंसते-हंसते विदा करो न।

जब तक श्याम हवाई जहाज़ में बैठा, तब तक रोज़ी उस जहाज की ओर देखती रही। फिर श्याम की दी हुई अंगूठी पहन कर मुन्शी जी के पास आकर कार में बैठ गई।

कार हवाई अड्डे से चल पड़ी।

: २४ :

आकाश पर एक के बदले दो जहाज़ दिखाई दिए। दूसरा जहाज़ शायद किसी दूसरे अड्डे से आया था। कभी एक जहाज़ आगे जाता तो कभी दूसरा। बादलों ने आसमान को चारों ओर से घेर लिया था। दोनों जहाज़ धुंध में दिखाई ही नहीं देते थे। उन दोनों को भी रास्ता दिखाई ही नहीं देता था। धूल से भरी हवा और धुंध ने जहाजों की उड़ान एक समस्या बना दी।

पायलेट स्विच पर स्विच दबाता गया, फिर कुछ सोचकर वह आसाम की ओर वापिस उड़ने लगा। उस जहाज़ में बैठे यात्री बहुत खुश हुए। क्योंकि प्रत्येक को अपनी जान प्यारी होती है। दूसरे जहाज की उड़ान मुश्किल हुई। यह जहाज़ तूफान के घेरे में आने लगा। पायलेट का मुंह पसीने से भरा था। जहाज कभी ऊपर और कभी नीचे जाता था। अन्त में जो न होना चाहिए था वही हुआ।

एक जहाज बच कर वापिस आ गया और दूसरा मुसीबत में फंसने लगा। मौत अपना जाल बिछाए चट्टान के रूप में खड़ी थी। जहाज़ चट्टान से टकरा गया और पेट्रोल की टंकी में आग लग गई, कोई भी बच न पाया।

उस समय उन यात्रियों ने क्या किया होगा, यह मेरे सोचने के दायरे से बाहर है।

एक जहाज़ बच गया। वह लोग तो भाग्यवान थे, जो बच गए। कितने घर उजड़ गए परन्तु कर्त्ता की करनी को कौन टाल सकता है।

सारे भारत में यह समाचार आग की तरह फैल गया और पूरे चार बजे उन यात्रियों के नाम बताए गए जो कि जहाज़ में मर गए।

: २५ :

कृष्णा मिल के सब कर्मचारी, मज़दूर से लेकर बड़े अफसर तक लाला हुकमचन्द की लाल कोठी पर आ गए। आज दरबान किसी को फाटक के भीतर आने से नहीं रोकता था। श्याम की मृत्यु पर प्रत्येक को गहरा सदमा पहुंचा।

लाल कोठी, आज एक मातम सराय बन गई थी। लाला जी ने तो आवेश में कहा था परन्तु उसे क्या पता था कि वह कामिनी के लिए सारे संसार को हंसते-हंसते ठुकरा सकता है। रजनी जिस सहारे को लेकर अपनी मंज़िल की ओर बढ़ना चाहती थी, वही सहारा उससे छूट गया। उसे इस घर से घृणा होने लगी और साथ-साथ दिल में भय सा पैदा होने लगा। यह बात सच है कि जीवन, नदी की बहती हुई धारा के समान चलता है। जो इस संसार से चला गया, वह कभी भी लौट कर वापिस नहीं आता। जीवित रहने वाले को जीवन बिताना ही पड़ता है।

गोविन्ददास जी ने हुकमचन्द से फोन पर बात करते हुए कहा—"लालाजी, मुझे आज जहाज का टिकट ही नहीं मिल सका। कल सुबह अवश्य आ जाऊंगा।

"मुझे तो इस बात का दुःख है कि मैं तुम्हारी प्रतिज्ञा का पालन न कर सका। मेरा बेटा, मुझे धोखा दे कर चला गया"—लालाजी, यह कहते हुए रोने लगे—"सेठ जी, यदि श्याम की लाश ही मिलती तो अन्तिम बार उसे देख लेता।

"लाला जी ! आप धीरज से काम लीजिए। दिल छोटा करने से क्या लाभ। मेरी भी परमात्मा से यही प्रार्थना है कि श्याम की आत्मा को शान्ति मिले।"

लालाजी ने फोन नीचे रखा और सिर के बालों को खींचते हुए कहने लगे--"हे भगवान ! एक बेटा दिया था, उसे भी वापिस ले लिया। जब तुम्हें वापिस ही लेना था तो दिया ही क्यों ?

: २६ :

युद्ध बढ़ता जा रहा था। दोनों ओर से आक्रमण हो रहे थे। सीमा के आस-पास की बस्ती में धड़ाम-धड़ाम की आवाजों से लोगों के कान पक गए थे। इसके साथ-साथ हवाई आक्रमण भी हो रहे थे। नित्य घायल व्यक्तियों की संख्या बढ़ती जा रही थी।

रात के लगभग दो बजे राजन रोगियों को अच्छी तरह से देखकर डॉक्टर वर्मा के कमरे में आया वहाँ उसके बदले तीन पलंग देखे जिन पर तीन फौजी सिपाही घायल अवस्था में सोए हुए थे। वहाँ से वापिस आकर राजन कुछ सोचकर मेजर गोयल के टेन्ट की ओर बढ़ा। मेजर साहब टेन्ट में सोए नहीं थे, बल्कि कहीं जाने की तैयारी कर रहे थे।

सर ! आप कहाँ जा रहे हैं ? आपके शरीर का अब क्या हाल है ?

आओ मेरे बच्चे ! मैं अब पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ। मैं अभी तुम्हारे पास आ रहा था।

"सूचना मिली है कि हमारे जवानों ने सवा एक बजे वह चौकी वापिस ले ली है, जो कि शत्रु ने कल हमसे छीन ली थी। हमारे छत्तीस जवान घायल हो गए हैं। वह रेड-क्रास की गाड़ी में आते ही होंगे। शत्रु के छः जवान गिरफ्तार किए गए हैं। वह भी घायल अवस्था में हैं। अब मैं यह सोचता हूँ कि यह अस्पताल पूरा भरा पड़ा है। इन आने वाले घायल जवानों को कहाँ रखेंगे ? मेरी समझ में कुछ नहीं आता है कि क्या किया जाए ?

सर, चिन्ता करने की कोई बात नहीं। चलिए डॉक्टर वर्मा से इस बारे में सलाह लेंगे।

दोनों डॉक्टर वर्मा को ढूंढ़ते एक साइड रूम में आ पहुँचे जहाँ वह सूबेदार सुधीरसेन की कमर पर मरहम-पट्टी लगा रहे थे।

राजन डॉक्टर वर्मा के पास आकर कहने लगा—सर ! आपको मेजर गोयल मिलना चाहते हैं।

मरहम पट्टी लगाने के पश्चात् डॉक्टर वर्मा कमरे से बाहर आए।

हैलो मेजर ! कहिए क्या बात है ?

मेजर गोयल ने उसे सारी बात सुना दी। डॉक्टर वर्मा ने इस समस्या पर गम्भीरता पूर्वक विचार करते हुए राजन से कहा—अब तुम्हारा विचार क्या है ?

सर, मेरे विचार में हम नीचे बाग में पलंग बिछा देंगे।

"हाँ, यह बात ठीक है। मेजर साहब, राजन प्रत्येक समस्या का समाधान सहज भाव से निकाल सकता है। आप इसमें तथा मुझमें कोई भी अन्तर न समझिए। यह सब बातें आप इसी से पूछा कीजिए"

"वर्मा साहब ! वह तो हम जानते ही हैं कि राजन ने जिस लगन से यहाँ काम किया, वह अवश्य सराहनीय है। हमें ऐसे युवक पर गर्व है।"

"सर, यह तो मेरा कर्त्तव्य ही है। आप स्टोर से टेन्ट मँगवाईए।"

बाग में टेन्ट लगाने का काम आरम्भ हो गया। इधर से घायल सैनिक भी आ पहुँचे। उनमें से कुछ सैनिक बरामदे पर और कुछ राजन के कमरे में लिटाए गए।

राजन फिर अपने काम में लग गया।

डॉक्टर वर्मा जब डॉक्टर सरोजनी के साथ चलने लगा तो राजन ने उन्हें रोकते हुए कहा—"सर ! इस जवान की टाँग में शायद दो गोलियाँ मौजूद हैं।"

डॉक्टर सरोजनी बीच में बोल उठी—"जी मैंने तो इसे देखा है।"

डॉक्टर वर्मा ने घायल जवान की ओर देखते हुए कहा—"तुमने यह बात कैसे कही ?"

सर, जब मैं इसके घाव पर हाथ रखता हूँ तो उसे दबाने पर कोई कठोर वस्तु अनुभव होती है। फिर रोगी भी तो चिल्लाता है।

यदि गोलियाँ इसकी टाँग में मौजूद हैं तो इसे आपरेशन थियेटर में लेकर निकाल दो।

राजन ने घायल सैनिक को आपरेशन थियेटर में ले लिया और एक नर्स को, कुसुम जिसका नाम था, पानी लाने के लिए कहा। उसे पानी लाने में थोड़ी देर हो गई।

इतनी देर कहाँ लगा दी ?

सर, एक और गाड़ी घायल सैनिकों को लेकर आ गई है, कहते हैं कि अभी-अभी हवाई हमला हुआ है, जिससे बहुत सारे जवान घायल हो गए हैं।

कोई बात नहीं। युद्ध में तो ऐसा होता ही रहता है।

घायल व्यक्ति एक असहाय भेड़ की तरह देख रहा था। राजन ने उसकी पट्टी खोल दी। उसने घाव को पहले स्प्रिट से साफ किया। फिर उसने धीरे-धीरे फोरसैप से दो के बदले तीन गोलियाँ बाहर निकालीं। वह पीड़ा के मारे मूर्छित हो गया। उसके चेहरे पर पसीने की कुछ बूंदें और आँखों में आँसू स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। तनिक होश में आने के पश्चात् राजन ने उसके कन्धे पर हाथ

रखते हुए कहा—तो आपका क्या नाम है ?

जी, अब्दुल रशीद।

रशीद साहब, अब आपकी तबियत कैसी है ?

जनाब दर्द अब बहुत कम हो गया।

"कुसुम, इसे ले जाओ और देखो यह गोलियां डॉक्टर वर्मा को दिखाना"—राजन ने आपरेशन थियेटर से निकलते हुए कहा।

दिन रात काम करते-करते राजन सूख कर काँटा हो गया था। वह केवल खांसता रहता था और अब बीच-बीच में मुंह से खून भी आने लगा था।

सवेरे लगभग आठ बजे राजन वार्ड में डॉक्टर वर्मा के साथ आया।

एक-एक जवान को देखने के पश्चात् वे एक कोने पर पहुँचे जहाँ अब्दुल रशीद का पलंग था। डॉक्टर वर्मा उसकी नाड़ी देखने लगा—राजन, इसे किसी प्रकार ए-ग्रुप का खून पहुंचना चाहिए केवल ग्ल्यूकोज भरने से कोई लाभ नहीं होगा। यह बहुत कमज़ोर होता जा रहा है।

डॉक्टर वर्मा वहाँ से चलकर मेजर गोयल से बात करने लगे और राजन जा कर अब्दुल रशीद के पास बैठ गया।

डॉक्टर साहब ! खून बहुत निकला है। इस युद्ध में दूसरी बार घायल हुआ हूं। क्या आपके यहाँ भी ए-ग्रुप का खून कठिनाई से मिलता है ?

मैं समझा नहीं कि आप कहाँ रहते हैं ?

क्या आपको यह पता नहीं कि हम लड़ते-लड़ते गिरफ्तार किए गए हैं ? मैं आगे बढ़ता गया, गोलियाँ चलती रहीं। मैंने अपना स्टेनगन छिपाकर रखा और स्वयं लाश की तरह लेट गया परन्तु आपके जवानों ने छोड़ा नहीं और मुझे गिरफ्तार कर लिया गया। इसी प्रकार हम छः जवान गिरफ्तार किए गए क्योंकि हम बहुत ज़ख्मी हो गए थे।

जो भी हो, तुम एक इन्सान हो। उसके साथ-साथ हमारे मेहमान भी।

जी, आपने अपना नाम ही नहीं बताया।

मेरा नाम राजन है।

तो क्या आप मेरा एक छोटा सा काम करेंगे ?

"कहो बहादुर जवान, मैं तुम्हारे किस काम आ सकूंगा ?"

"मेरी मृत्यु तो अवश्य होगी परन्तु मैं अपने घर एक सन्देश भेजना चाहता हूँ।"

"तुम नहीं मरोगे। मैं तुम्हारे लिए खून का प्रबन्ध करूंगा। खुदा एक है रशीद साहब ! दिल एक है। मनुष्य जिस देश का हो, मनुष्य ही तो है। तुम क्यों रो रहे हो क्या तुम्हें यहाँ कोई तकलीफ है ?

"डाक्टर साहब ! यदि कोई तकलीफ होती तो शायद रोता नहीं। रोता तो इस कारण हूं कि तुम हमारे भाई हो, फिर यह शत्रुता कैसी ? खैर......।"

कौन कहता है कि तुम हमारे शत्रु हो। तुम मेरे भाई हो। वीर कभी भी रोते नहीं हैं। अब हँसो ! हँसो न ! नहीं तो मैं यहाँ फिर कभी नहीं आऊँगा।

नहीं डॉक्टर, ऐसा मत कहिए। लीजिए, मैं हंस दिया।

देखो, मैं तुम्हें अपना खून दूंगा। मेरा भी ए-ग्रुप का ही खून है।

"नहीं डॉक्टर साहब !......" यह कहते हुए अब्दुल रशीद रोने लगा।

राजन ने एक बोतल खून की निकाली और घायल सैनिक को खून भर दिया गया। उसकी दशा धीरे-धीरे सुधरने लगी।

सायंकाल के समय राजन रशीद के पास आया। रशीद ने उसे जोर से अपनी बाँहों में भींच लिया। दूसरे दिन भी राजन अब्दुल रशीद के पास आकर पहरों बातें करने लगा। धीरे-धीरे उनकी मित्रता बढ़ती गई।

डॉक्टर वर्मा ने राजन को अपने टेन्ट में बुलाकर कहा—तुम पहले अपनी दाढ़ी बनाओ। उसके बाद जाकर सो जाओ।

क्यों सर !

तुम पहले अपना शरीर ठीक रखो। बार-बार मुँह से खून आना मुझे भयानक दिखाई पड़ता है। यदि मेरी बात मानो तो तुम वापिस घर चले जाओ और अस्पताल में अपना काम आरम्भ करो।

सर, आप मेरी चिकित्सा यहीं कीजिए। मैं यहाँ से कैसे जा सकूंगा, क्या मुझे मेरी आत्मा नहीं कोसेगी ? युद्ध समाप्त होने के पश्चात हम सब इकट्ठे चलेंगे।

जैसी तुम्हारी इच्छा। तो भी तुम सुबह और शाम को यह इन्जेक्शन लिया करो। मेरे टेन्ट में कल सुबह आना। मैं तुम्हें स्वयं देखा करूंगा।

"अच्छा सर, अब मैं चलता हूं।" राजन तो सोना चाहता था परन्तु पता नहीं कौन सी बात उसकी नींद चुरा रही थी। अपने टेन्ट में पहुँचने के पश्चात राजन ने अपनी तस्वीर को देखा, फिर अपनी माँ की तस्वीर देखी जिसमें आशा भी थी। राजन की आँखों से अनायास ही आँसू टपक पड़े।

सहसा किसी के कदमों की आहट सुनाई दी। राजन ने अपना एलबम पलंग के नीचे छिपा लिया। कुसुम तथा जाहिदा राजन के पास आ रही थीं। नमस्ते डॉक्टर साहब !

नमस्ते—आओ जाहिदा ! कैसी हो ? कल से तुम्हें देखा ही नहीं।

यही तो मैं भी आपसे पूछने वाली थी। आपने अपनी सूरत आईने में

देखी है, देखिए कितने सूख गए हैं।

मैं तुम्हारी बात से सहमत हूं। भई आजकल अधिक काम होने के कारण विश्राम करने का अवकाश ही नहीं मिलता है। किस बात पर मुझे हर्ष होगा। क्या यही देखकर कि एक-एक सैनिक घायल होता जा रहा है। जाहिदा ! तुम नहीं समझोगी कि एक सैनिक का महत्त्व क्या है।

तो आप अपना शरीर बिगाड़ने पर क्यों तुले हैं ?

वह कैसे ?

यदि अपना कोई सैनिक होता तो दूसरी बात होती एक युद्धबंदी के लिए आपने अपना खून दिया। अब्दुल रशीद हमारा शत्रु है।

यह कोई रणभूमि नहीं है, बल्कि एक चिकित्सालय है। वह भी तो एक इन्सान है। प्रत्येक सैनिक युद्ध में अपने कर्त्तव्य का पालन तो करता ही है। इस बंदी की रगों में भी तो खून मौजूद है।

ज़ाहिदा आगे कुछ न कह सकी।

छोड़ो इन बातों को। यह बताओ कि इस समय कैसे आना हुआ ?

"मैं तो सोने लगी थी कि कुसुम ने आकर जगाया। आप ज़रा इसे देख लीजिए।"

क्या बात है कुसुम ! ज़रा इधर आओ।

जी मुझे कभी-कभी चक्कर आते हैं। नेत्रों का प्रकाश क्षीण पड़ जाता है और फिर नीचे गिर जाती हूँ।

राजन ने कुसुम को ठीक तरह से देख कर कहा--आप अपना युरीनटैस्ट करवाइए। तब तक यह गोलियाँ दिन में तीन बार खा लीजिए।

धन्यवाद डॉक्टर साहब ! आपको इस समय व्यर्थ में परेशान किया।

सहसा राजन खाँसने लगा और मुंह से खून आने लगा।

ज़ाहिदा ने राजन का सिर पकड़ लिया। थोड़ी देर पश्चात उसे खाँसी से राहत हुई।

ज़ाहिदा, ! उस सामने वाली एटैंची में से दवाई लाकर दे दो।

दवाई खाने के पश्चात् राजन पलंग पर लेट गया।

"अल्लाह आपकी खैर करे। ऐ परवरदिगारे आलम ! डॉक्टर साहब को ठीक कर दो और बदले में मेरी जान ले लो"--ज़ाहिदा ने अपने हाथ ऊपर उठाते हुए कहा।

नहीं ज़ाहिदा ! ऐसा न कहो मैं ठीक हूं। पगली, यह भी कोई रोने की बात है। जाओ, जाकर सो जाओ। मुझे भी नींद आ रही है। ज़ाहिदा तथा कुसुम टैन्ट से बाहर चलीं गईं।

: २७ :

सुबह राजन शायद नींद से जागता ही नहीं, यदि मेजर गोयल उसके टेन्ट में आकर न जगाते ।

हाथ-मुंह धोने के पश्चात् वह सीधा वार्ड में बीमारों को देखने गया ।

वार्ड नम्बर एक में बीस घायल सैनिक थे जिनमें पन्द्रह सैनिक स्वस्थ हो गए थे और पांच सैनिक अभी घायल अवस्था में ही थे ।

राजन भी आज प्रसन्न था क्योंकि उसके वार्ड में अब केवल पांच बीमार थे ।

डॉक्टर वर्मा ने राजन को बुलाकर उसे इन्जेक्शन किया ।

सर, आज दाढ़ी अवश्य बनाऊंगा ।

तुम वार्ड नम्बर दो में चले जाओ, वहाँ डॉक्टर सरोजनी तथा डॉक्टर धर्मवीर है ।

सर, दो डॉक्टरों के होते हुए वहाँ मेरी क्या आवश्यकता है ? मैं कल वाले बीमारों को टेन्ट से यहाँ ले आऊंगा ?

मैं यह काम स्वयं करूंगा । तुम वहाँ चले जाओ । दो डॉक्टरों के होते हुए भी वहाँ काम नहीं चल सकता है ।

सर, जैसी आपकी इच्छा ।

वार्ड नम्बर दो में पहुचते ही राजन चकित सा हो गया । वहाँ से केवल कराहने की आवाज़ें आ रहीं थीं । दर्द भरी चीखें जवानों के मुँह से निकलकर आकाश से जा टकराती थीं । डॉक्टर सरोजनी, नर्स की सहायता से एक घायल सैनिक को पकड़े हुए थी जो बार-बार यही शब्द दोहरा रहा था—"मारो, मुझे मारो । मेरी ज़िह्वा काटो । मेरी गर्दन को सिर से अलग कर दो, तब भी मैं अपना राज नहीं खोलूंगा ।"

फिर उसकी आवाज़ क्षीण पड़ती गई—"जाओ, अपना समय नष्ट न करो । कीमत देने वालो, मेरी ज़िह्वा खोलने की कीमत मेरी मौत है ।"

घायल सैनिक के कन्धे से खून बह रहा था । उसका हाथ भी घायल हो गया था । उसके मुंह से एक भयंकर हँसी छूट पड़ी और फिर वह मूर्छित हो गया ।

राजन भी वहाँ आ पहुंचा । जवान को देखते ही उसने उसे गले लगा लिया और फूट-फूट कर रोने लगा ।

डॉक्टर धर्मवीर इस पर चकित हो गया । उसने राजन से रोने का कारण पूछा ।

राजन ने उसका घाव स्प्रिट से धोते हुए कहा—यह जवान मेरा मित्र है ।

हाँ मेरे बचपन का मित्र—कैप्टन अशोक।

अशोक के घावों की ः रहम पट्टी की गई। राजन वहाँ से चलकर बाकी बीमारों की सेवा में लग गया। एक घण्टे के पश्चात् राजन फिर अशोक के पास आया। उस समय ज़ाहिदा उसे पानी पिला रही थी। दो मित्र एक बार फिर गले मिल गए।

तुम्हें अधिक चोट नहीं आई है। इसी कारण शीघ्र ही ठीक हो जाओगे। अब यह बताओ कि चूहे की तरह रणभूमि से भाग क्यों आए ? अरे वीर कैप्टन ! केवल स्वयं गोलियाँ ही खाई या कुछ और भी किया ?

छोड़ो इन बातों को। यह बताओ कि माँ तथा आशा ठीक तरह से है न ?

सब ठीक हैं। तुम बात को टालने का प्रयत्न न करो।

अच्छा भई सुनो—"मैं लड़ते-लड़ते, अपने दो जवानों के साथ गिरफ्तार हो गया। लाख कोशिश करने के पश्चात् भी हम शत्रु से बच न सके। अकस्मात् हवाई आक्रमण हुआ परन्तु शत्रु ने टैन्कों से गोले बरसा कर यह आक्रमण विफल कर दिया।

वह एक छोटा सा टेन्ट था। शत्रु ने हमें वहीं ले लिया।

पहले हवालदार रामसिंह को दूसरे टेन्ट में लिया गया।

कोई शेर की तरह गरजा—भारतीय जवान ! मेरे प्रश्नों का उत्तर दो।

दूसरा बोला—यह बताओ कि तुम्हारे जवान कहाँ-कहाँ से फैले हुए हैं और कौन सा ब्रिगेड़ लड़ रहा है ?

रामसिंह ने जब उनके प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया तो उसे बुरी तरह से मारा गया। जब वह कुछ नहीं बोला तो सिपाही रघुनाथ की बारी आई। शत्रु ने उसकी भी मार-मार कर बुरी दशा बनाई परन्तु उसने भी अपनी जिह्वा नहीं खोली। उसे एक काली कोठरी में बन्द किया गया।

फिर मुझे मेजर खुर्शीद के सामने लाया गया। मैंने मेजर को आते ही सलामी दी।

"बैठ जाओ"—कोई पीछे से गरजा—"हमें जो बातें तुम्हारे जवानों से चाहिए थीं, वह हमने उनसे सुन लीं। तुमसे हमें कुछ बातें पूछनी हैं, उनका उत्तर सही-सही दो।

मैं कुर्सी पर बैठ गया।

यह चोरी-छिपे आक्रमण कहाँ से होते हैं ? इस ओर से कौन सा ब्रिगेड लड़ रहा है ? हमारे आपके पास कितने जवान बन्दी हैं ?

मैंने अपना मुंह बनाते हुए कहा—"यह राज तो अफसर लोग जानते हैं। हमारा काम तो मैदान में मरना और मारना है।

मेरी दशा भी बुरी बनाई गई। मुझे बहुत मारा गया। मेरे सामने एक बम के आकार की गोल वस्तु रखी गई। उसके एक ओर रस्सी बांधी गई और रस्सी का दूसरा सिरा छत पर टंगे हुए कांटे से बांध लिया गया। मेरे समीप एक बहुत बड़ा पत्थर रखा गया। मैं तो पहले-पहल यह देखकर डर गया। मैंने सोचा यदि यह बम फट गया तो फिर.........।

देखो यदि तुम हमें राज़ नहीं बताओगे तो इस बम को तुम्हारे सामने गिरा दिया जायेगा और तुम तड़प-तड़प कर मर जाओगे।

मुझसे वे परस्पर प्रश्न पूछते रहे परन्तु मेरी ज़िह्वा फिर भी नहीं खुली।

बम पत्थर के थोड़ा ऊपर तक आता था।

शीघ्र बताओ नहीं तो.........

पीछे से एक आवाज़ आई—सर, यह बम नहीं, लोहे का गोला है। घबराने की कोई बात नहीं है, इसकी रस्सी छोटी है। हमने अपनी ज़िह्वा नहीं खोली है।"

पीछे से उसे किसी ने लात मार दी और आवाज़ आनी बन्द हो गई।

लोहे का गोला मेरे सिर से कभी-कभी टकराता था। इसी कारण मेरे सिर में घाव लगे हैं।

मुझे भी एक टेन्ट में रखा गया। कुछ देर पश्चात् शराब की बोतलें खोली गई। मुझे भी शराब पिलाई गई। वह सब नशे में चूर थे। हम सबों मे खूब मांस खाया। शराब पीने के पश्चात् कमरे में बिजली सी चमकी। मैंने उनके एक जवान से पूछा—भाई, यह बिजली क्यों चमकती है?

यह तुम्हारी नज़रों का धोखा है। अधिक पी है न तुमने? बोल मैं तेरा क्या लगता हूं?

मैंने ऊँची आवाज़ में कहा—साला।

सब ज़ोर से हँसने लगे। एक जवान बीच में बोल उठा—चलो अब सोएंगे।

मैंने भी सिर हाँ में हिला दिया।

सब सो गए। मैंने अपना वायरलैस सीमा के ट्रान्समीटर से मिलाया।

हैलो, अशोक स्पीकिंग—एलफा फाइव टू टी वन।

हैलो, ब्रिगेडियर गड़ियाल स्पीकिंग।

सर, आक्रमण तो हो रहे हैं परन्तु जंगल के बाएं ओर। आप कृपा करके दाएं ओर से जवानों को भेज दीजिए। मैंने सब बातें टेप करके रखी हैं।

ठीक है। मुझे सब पता है। हवालदार रामसिंह अपनी चौकी पर पहुंच गया है। देखो यदि तुम्हें अपनी जान बचाने के लिए कुछ भी कहना पड़े कह दो परन्तु किसी प्रकार केवल पन्द्रह मिनट निकालो।

सर, मेरी जिह्वा बन्द है। आप बिल्कुल निश्चिन्त रहिए।

बात खत्म हो गई और अशोक ने वायरलैस को जमीन में छिपा लिया।

मेजर खुर्शीद ने अन्दर आते हुए कहा—क्यों सो गए क्या ?

जी नींद ही नहीं आती है।

इन तस्वीरों को पहचानते हो। यह सब तुम्हारी तस्वीरें हैं। कभी हमारे जवानों को चूमते हुए, कभी उनके साथ खाते हुए। यदि यह तस्वीरें तुम्हारे आफीसरों के पास भेज दी जाए तो तुम जानते ही हो कि वे तुम्हारे साथ शत्रुओं सा बर्ताव करेंगे। हो सकता है कि वे तुम्हें गोली से उड़ा दें।

तुम इस बात पर सोच लो। मैं तुम्हें कुछ समय और देता हूँ।

बाहर से आवाज़ आई—एलफा टी ज़ीरो। मैंने घड़ी की ओर देखा। यह आवाज़ अब बार-बार गूंजने लगी।

"मैंने मेजर को सलामी देने के पश्चात् उसके साथ कुछ बातें कीं।"

"मेरा काम हो गया मेजर खुर्शीद। हैण्ड्स अप।"—मैंने अपने जूते से पिस्तौल निकाल कर कहा—"मुझे बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि तुम्हारे सब आदमी गिरफ्तार हो गए हैं। यह चौकी हमारे जवानों ने घेर ली है।"

मैंने गोली चलाई। उसका बायोनैट मेरी कमर में आ गया। मेजर बौखलाए हुए बाहर की ओर लपका। उसके जवानों के बदले हमारे जवान आ गए, जिनका नेतृत्व रामसिंह कर रहा था। मेजर भी गिरफ्तार हो गया और मैं अपनी सेना में मिल गया।"

इतने में रेडियो ने श्री लाल बहादुर शास्त्री का वह सन्देश सुनाया जो कि उन्होंने अपने देश वासियों के नाम भेजा था।

"हम रहें या न रहें, देश रहना चाहिए। देश की संस्कृति रहनी चाहिए। यह तिरंगा रहना चाहिए। हम शान्ति अवश्य चाहते हैं परन्तु जो कोई भी शक्ति हमारी शान्ति को अशान्ति में बदलने की कोशिश करेगी तो हम किसी भी कीमत पर उसका सामना करेंगे। हम ईंट का जवाब पत्थर से देंगे। हथियार का उत्तर हथियार से मिलेगा।"

अशोक ने ज़ोर से ताली बजाई परन्तु राजन को उदास पाकर चुप हो गया।

अरे इसमें उदास होने की कौन सी बात है ?

"कितना अच्छा होता यदि हम बारूद के बदले में प्यार बाँट लेते। हम यदि देवता नहीं बन सकते हैं तो भी कम से कम इन्सान बनकर तो रह सकते हैं।

यह सब बातें मेरी समझ से बाहर हैं। मैं युद्ध को शान्ति की जड़ मानता हूं।

"यार, यह कहने की बातें होती हैं। समय आने पर सब समझ जाओगे।"

कुछ दिनों के पश्चात युद्ध बन्द हो गया, उसके पश्चात सब डॉक्टरों ने अपना सामान बाँध रखा।

डॉक्टर वर्मा ने एक सम्मेलन में कहा—अब युद्ध बन्द हो गया है, वार्ड के कम से कम सब बीमार ठीक हो गए हैं। इसलिए हम परसों सोमवार को घर वापिस चलेंगे।

: २८ :

सोमवार के दिन राजन पहले अब्दुल रशीद के पास आया।

नमस्ते डॉक्टर साहब !

नमस्ते भैया ! कहो अब तुम्हारी तबियत कैसी है ?

जी अब ठीक हूं ?

आज मैं वापिस जा रहा हूं। यह लो मेरी तस्वीर। तुमने मांगी थी न ?

हाँ, हाँ लाओ दोस्त। आप लोग आज ही क्यों जा रहे हैं ?

मेरा जी चाहता है कि तुम्हें भी साथ ले लूं।

डॉक्टर साहब ! मैं तो एक युद्ध बंदी हूँ। नहीं तो आपके साथ जरूर आता। आपकी माँ को देखता मुझे अपनी माँ की सूरत याद ही नहीं है। मेरे दोस्त, मैंने जीवन में पहली बार किसी को दोस्त कहा है। अभी तो सारी बातें हुई ही नहीं। मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना था परन्तु अब कैसे कहूँगा। तुम तो आज जा रहे हो।

"उससे क्या हुआ। मैं तुम्हारे पास अवश्य आऊंगा। फिर तुम्हें अपने घर ले जाऊँगा। तुम रोते हो पगले।

नहीं यार मैं कहाँ रो रहा हूं। मुझे पता नहीं क्या हो जाता है। मैं तुम्हारी बातें टेप करके रखता। मैं तुम्हारी इस तस्वीर का एक बहुत बड़ा चित्र बनाऊंगा। मैं स्वयं एक चित्रकार हूँ। पता नहीं मेरी आंखों से क्यों आँसू आ रहे हैं।

चाहे इन्सान किसी भी देश का क्यों न हो आखिर वह इन्सान ही तो है। मैं तुम्हारी भावनाओं को समझता हूं। विश्वास करो, मैं तुम्हें सप्ताह में दो बार पत्र लिखा करूँगा।

राजन ने अब्दुल रशीद को ज़ोर से गले लगाया। गाड़ी पर चढ़ने के पश्चात् राजन की आँखों से अनायास ही आँसू टपकने लगे।

डॉक्टर वर्मा भी आकर अगली सीट पर बैठ गए।

गाड़ी चलने वाली ही थी कि अब्दुल रशीद हाँफता हुआ गाड़ी के पास आया।

डॉक्टर ! यह मेरी निशानी है—मेरी अंगूठी ! दोनों मित्र फिर गले मिल गए।

खुदा हाफिज़ डॉक्टर ! पत्र लिखते रहना। अशोक भी वहाँ खड़ा चकित हो गया क्योंकि अब्दुल रशीद बच्चों की तरह रो रहा था। पीछे से एक जवान आया—"चलो भई, गाड़ी तो चली गई।" अब्दुल रशीद अपने पलंग पर बैठ कर राजन की तस्वीर देखने लगा।

: २६ :

"माई, दाता के नाम पर कुछ दे दो—चावल की एक मुट्ठी या आटा परन्तु राम के नाम पर कुछ दे दो। तुम्हारा भला होगा। तुम्हारे बच्चों की उम्र लम्बी होगी।"

सीता ने आटे की एक कटोरी पर दस पैसे का सिक्का रख दिया—

"लो बाबा।"

परन्तु पीछे से किसी ने उसकी आँखें बन्द कर दी। सीता काँप उठी। वह बहुत चिल्लाना चाहती थी परन्तु मुंह पर भी भिखारी का हाथ था। कटोरी नीचे गिर पड़ी। इतने में आशा भी वहाँ आ गई।

आशा अपने भाई को देखते ही उससे लिपट गई।

बेटा, कितना सूख गया है तू !

माँ, तुम्हारे बिना कैसे मोटा हो जाता !

रजनी तथा श्याम भैया अच्छे हैं न ?

हाँ बेटा, सब ठीक हैं। पहले अन्दर तो आओ न।

राजन ने अपनी माँ से बातें तो कीं परन्तु उसका दिल कहीं और था। उस रात राजन ने बहुत देर तक आशा से बातें की।

सुबह राजन को फिर ज़ोर की खाँसी आई और उसके साथ थोड़ा-थोड़ा खून भी आया।

आशा घबरा गई परन्तु कुछ न कह सकी। उसे चुप कराने के लिए राजन ने मुस्कराते हुए कहा—मेरा गला खराब हो गया है।

करीब दस बजे रजनी आ गई परन्तु राजन उस समय फिर सोया हुआ था। वह सीधी रसोईघर में सीता के पास गई—माँ सब्ज़ी क्या बन रही है आज ?

आओ बेटी, कल क्यों नहीं आईं ? अब मुझे तुम्हारी चिन्ता रहती है न।

क्या बताऊँ माँ, आजकल मैं बहुत चिन्तित हूं।

क्यों बेटी ?

पिताजी मेरे रिश्ते की बातचीत एक जगह कर रहे हैं। मुझे वह घर पसन्द नहीं है माँ ! अब तुम ही बताओ कि क्या किया जाए ?

"बेटी, यह बातें तुम राजन से पूछो, वह कोई न कोई हल अवश्य निकालेगा। कल ही वह यहाँ आया है।"

सच कहती हो माँ। क्या राजन बाबू आ गए ?

बेटी, वह बहुत सूख गया है।

रजनी कमरे में दौड़कर आ गई।

सीता ने राजन को जगाते हुए कहा—"उठ बेटा, यह देख तो कौन आया है ?"

राजन ने करवट बदलते हुए कहा--मेरी अच्छी माँ, जाओ तुम भी जाकर सो जाओ !

आशा ने झट राजन के ऊपर से चादर उठा ली और बोतल से पानी फेंकने लगी।

अब राजन को उठना पड़ा। वह उठते ही आशा की ओर देखकर बोला—"अरे क्या हुआ तुम्हें.........?"

आगे वह कुछ न बोल सका क्योंकि रजनी की आवाज़ सुनाई दी।

नमस्ते डॉक्टर साहब !

क्या हाल है रजनी ? माँ जी अच्छी हैं न ?

जी सब अच्छे हैं।

मेरे श्याम भैया अच्छे हैं न ? मुझे उनसे मिलने जाना है। उन्हें अभी-अभी सपने में देख रहा था।

रजनी की आँखें भर आईं। तीनों की निगाहें राजन पर जम गईं और राजन की पलकें नीचे की ओर झुकी थीं।

रजनी अपने आँसू रोकना चाहती थी परन्तु रोक न सकी।

राजन एक घण्टे तक बातें करता रहा। उसके बाद वह कपड़े बदल कर तैयार हो गया।

बेटा, रजनी तो यहाँ है, तुम कहाँ जाओगे ?

माँ तुम अपनी बेटी से बातें करती रहो। मैं अपने भाई से मिलकर आऊँगा। मुझे श्याम भैया का बहुत प्यार आया है। वे इस समय मिल पर ही होंगे न ?

रजनी ने उसकी बात का कोई भी उत्तर नहीं दिया। केवल आँसू की बूंदें नीचे गिराने लगी।

क्या मुझसे कोई भूल हो गई है ? तुम मेरी वातों का उत्तर क्यों नहीं देती हो ?

जी वैसी बात नहीं है। श्याम भैया आसाम गए हुए हैं।

तुमने यह मुझे पहले क्यों नहीं वताया। खैर जाते समय उनका फोन नम्बर देते जाना। मैं उनसे फोन पर बात करूँगा। वैसे वह आसाम से कब आने वाले हैं ?

रजनी इससे अधिक न सुन सकी। वह दौड़ते हुए कमरे से बाहर आ गई।

राजन कुछ परेशान सा हो गया और वह भी रजनी के पीछे दौड़ा। आखिर रजनी रुक गई।

बात क्या है रजनी ! तुम क्यों रो रही हो ?

अब आपसे क्या कहूँ चलिए कार में बैठिए।

राजन चुपचाप कार में बैठ गया। अगली सीट पर रजनी के साथ उसकी सहेली बैठी थी।

रजनी कार चलाती हुई पागलों की तरह एक फीकी हँसी हँसने लगी।

"देखो मन्जू ! राजन बाबू अपने मित्र श्याम को ढूंढ़ रहे हैं। अब राजन बाबू को कौन वताएगा कि.........।" यह कहती हुई रजनी चुप हो गई।

राजन चिल्लाया—रजनी ! तुम पागल हो गई हो क्या। आगे चट्टान है। मरना चाहती हो क्या ?

रजनी ने कार रोक दी और राजन को अपने साथ एक बड़े फाटक के भीतर ले गई जहाँ केवल पत्थरों के बने हुए स्टैच्यू थे और एक इन्सान फटे हुए कपड़े पहने हुए, इन पत्थरों में इन्सान का एहसास अपने हथौड़े से भर रहा था—एक संगतराश।

क्या स्टैच्यू तैयार हो गया ?

"जी बिल्कुल तैयार है आप किसी मज़दूर को बुलाकर ले जाइए। देखिए वह रहा आपका स्टैच्यू।"

रजनी रोते-रोते श्याम के स्टैच्यू से सिर बार-बार टकराने लगी।

देखिए राजन बाबू ! यह श्याम भैया हैं। हाँ, हाँ यही आपका मित्र और मेरा सहारा है।

अब राजन की समझ में बात आ गई। वह फूट-फूटकर रोने लगा। उसे खाँसते-खाँसते चक्कर सा आ गया। उसका मुंह खून से भर आया जो कि स्टैच्यू के हाथों पर पड़ा।

रजनी स्टैच्यू घर ले गई और राजन घर जाकर बिस्तरे से चिपक गया।

: ३० :

एक सप्ताह तक राजन पागलों की तरह बात-बात पर चिल्लाने लगता आखिर मरने वाले की याद धीरे-धीरे कम होती गई।

एक दिन राजन पलंग पर बैठा था और रजनी दवाई लेकर आई।

आज आपकी तबीयत कैसी है ?

अब खाँसी अधिक नहीं आती है। आओ बैठो ! रजनी, राजन के पास बैठ गई।

देखिए आप मेरे पिताजी से मेरे बारे में बात कर लीजिए।

हाँ, हाँ कर लूँगा परन्तु तुम इतनी शीघ्रता क्यों कर रही हो ?

"आप, यह नहीं जानते हैं कि इस समय हमारे घर में क्या हो रहा है। मैं अब वहाँ अकेली रह गई हूं। पिताजी ने मेरे ब्याह की बातचीत कई घरों में उठाई है।"

तुम मुझे ठीक हो जाने दो। फिर मैं तुम्हारे पिता क्या दादा से भी बात कर लूँगा। तब तक तुम जाकर अपनी माँ से बात कर लो। वह अपने पति को समझा लेगी।

हाँ मैं उससे सब कुछ कह दूँगी परन्तु आप अपना शरीर ठीक रखिए।

रजनी कालेज से साढ़े चार बजे अपने घर पहुंची तो उसका सामना माँ से हुआ।

क्यों बेटी आ गई ?

हाँ, माँ। मैं बहुत थक गई हूं।

जाओ बेटी स्नान करके आओ, फिर हम चाय पिएँगे। स्नानादि से निवृत्त होकर रजनी अपनी माँ के सामने चाय पीने के लिए बैठ गई।

लक्ष्मी ने एक लिफाफे से तीन तस्वीरें निकालीं—"यह देखो बेटी, इनमें से तुम्हें कौन सी तस्वीर पसन्द है ?"

"मुझे इनमें से पसन्द करके क्या करना है।"

बेटी बात यह है कि तुम्हारे पिताजी ने इन तीन तस्वीरों में से तुम्हारे लिए यह तस्वीर चुनी है। यह सेठ धर्मदास का बेटा चरणदास है। यह इंग्लैंड से पढ़कर आया है। यह लोग बहुत धनवान हैं।

कितनी बार मैं तुमसे कह चुकी हूँ कि मुझे ब्याह नहीं करना है।

"तनिक विचार करो बेटी। तुम्हारे पिताजी एक-एक घर से रिश्ता ढूँढ कर लाते हैं और तुम इन्कार करती जाती हो। परन्तु अब सेठ चरणदास से तुम्हारा रिश्ता तय किया जाएगा। आखिर तुम कोई कारण भी बोलो न ? क्या यह लड़का तुम्हें पसन्द नहीं है ?"

"माँ, मैंने अपने लिए लड़का पसन्द कर लिया है। मैं श्याम के मित्र राजन से अपना ब्याह करूँगी। वह मुझे चाहता है और मैं भी......।"

लक्ष्मी के मुँह पर मानों किसी ने तमाचा मारा हो। वह चिल्लाते हुए बोली—क्या तुम्हें अपनी माँ के सामने ऐसी बातें करने में शर्म नहीं आती है? मैं एक माँ हूं, तुम्हारी सब नादानी छिपा लूंगी परन्तु अपने पिताजी के सामने ऐसी बात कभी भी नहीं करना।

रजनी के नेत्रों में एक विचित्र प्रकार की बिजली चमक उठी। वह माँ से थोड़ा दूर होते हुए बोली—"क्या राजन इन्सान नहीं है! तुम उसे नहीं जानती हो। वह भी एक बहुत अच्छा डॉक्टर है। माँ, मुझे यदि ब्याह करना भी है तो डॉक्टर राजन से ही, समझी। यह मेरा पहला और आखिरी फैसला है।"

तुम पागल हो गई हो। अच्छे बुरे को नहीं समझती हो।

माँ, भगवान ने प्रत्येक मनुष्य को सोचने की शक्ति दी है। मैं भी तो बाईस वर्ष की हो गई हूँ। मैं अपने आपको जान बूझकर बरबाद कैसे करूँगी। मैं राजन से प्यार करती हूँ।

"प्यार! छी! छी! छी! बे शर्म कहीं की। हमारा धर्म कुछ और ही कहता है। जो लड़कियाँ अपने माता-पिता की सहमति के बिना कोई कदम नहीं उठाती हैं, वही अच्छी लड़कियाँ कहलाती हैं।"

"माँ प्यार करना कोई पाप नहीं है। हमारे अवतार श्री कृष्ण जी ने भी तो प्यार किया था। सीता ने भी तो अपना वर स्वयं चुना था। हमारी सभ्यता भी यही कहती आई है। हमारे पुराण भी प्यार को मानते हैं।"

"तुम क्यों भूलती हो कि वे परमात्मा के अवतार थे।"

"फिर उन्हें इन्सान का रूप धारण करके प्यार का बीज बोने की क्या आवश्यकता थी? क्या यह सब खेल इन अवतारों ने हमारे साथ एक मजाक के रूप में किया था? माँ भक्ति सबसे बड़ी उपासना है परन्तु प्यार बिना भक्ति भी अधूरी है। आत्मा से आत्मा का मिलन ही परमात्मा हुआ।"

मुझे ज्ञान मत सिखाओ। तुम मुझसे पैदा हुई हो। मैं तुम्हारी माँ हूं।

यही तो दुःख की बात है। यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होती तो मैं कभी भी ऐसी बातें नहीं करती, जिनसे मुझे स्वयं लज्जित होना पड़ता। माँ, यह प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है कि वह अपने बच्चों के साथ ठीक व्यवहार करें, वरना उन्हें अपने आप को माँ या बाप कहलाने का कोई हक नहीं है। मेरे हृदय में इस समय तुम लोगों के लिए घृणा के काँटे भरे हुए है। अपनी नादानी को छिपाकर दूसरों को नादान बनाने से आपको क्या मिलता है?

"बकवास बन्द करो। मेरी निगाहों से दूर हो जाओ। यह तुम नहीं तुममें राजन बोल रहा है।"

माँ, यह सच है कि उनमें और मुझमें कोई अन्तर नहीं है। मैं आज चुप नहीं रहूँगी। तुम दोनों ने मिलकर श्याम की हरी भरी दुनिया को नष्ट कर दिया। इस दुनिया में शान्ति से काम नहीं चलता है।"

चुप करो रजनी! ऐसा न हो कि मेरा हाथ तुम पर उठ जाए। क्या जमाना आया है बेटी माँ को सिखाती है? वह भी समय था जब कैकयी के कहने पर रामचन्द्र चौदह वर्ष के लिए बनवास चले गए। वह इन्कार भी कर सकते थे परन्तु उन्होंने अपनी सौतेली माँ का दिल रखने के लिए ऐसा नहीं किया। तुम्हारी तो मैं अपनी माँ हूं। इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। इस समय तो कलियुग है।

"माँ, जब तुम्हें यह सब बातें याद हैं तो यह बात भी याद होगी कि जब राक्षसों ने गणेश जी की कोठरी में आग लगा दी तो पार्वती शंकर को मनाने लगी। जीत पार्वती की हुई। शंकर जी को अपनी समाधि तोड़नी पड़ी और उन्होंने अपनी जटा से गंगा बहा दी। गणेश जी बच गए। आजकल के माता-पिता, सुख के लिए अपनी झूठी शान रखने के लिए अपने बच्चों के अरमान कुचलकर उन्हें दुःखी जीवन सौंपते हैं। अपने ही श्याम को ले लो। तुमने पार्वती का अभिनय खूब किया कि बेटे को फोन पर धमकी दी उससे अपने दिए हुए दूध का मूल्य माँगा। उसके अरमान भरे चमन को कब्रिस्तान बनाया। माँ, तुमने ही उसे मरने के लिए आसाम भेजा। तुम्हारे पति ठहरे शंकर भगवान, जिन्होंने श्याम की कामिनी को चिता दे दी। दशरथ ने राम को बनवास ही भेजा था, सीता यादों को कुचलने के लिए नहीं।"—रजनी, यह कहते हुए फूट-फूट कर रोने लगी—"माँ मुझे भी किसी तरह मार डालो। यह मैं पहले ही जानती थी कि इस हवेली में प्यार करना पाप है। यहाँ के इन्सान तानाशाह बन गए हैं। यहाँ कोई भी अपनी इच्छा से दिन नहीं काट सकता है।"

"बेटी, मैं तुम्हारी शत्रु नहीं हूँ। मैं भी एक नारी हूँ। विवाह के पश्चात तुम सब भूल जाओगी। देखना, उस समय मेरी बातें याद आयेंगी। इस घर को उजाड़ने की कोशिश न करो।"

"मेरा दिल उजड़ गया है। मेरा राजन इस समय बीमार है। तुम्हें अपने घर की चिन्ता पड़ी है। माँ घर उजड़ने के बाद फिर सँवर जाते हैं परन्तु दिल एक बार टूटने पर कभी भी जुड़ नहीं सकता। माँ, मैंने जिसे दिल दिया है, उसी को अपनी जान भी दूंगी। सुख दौलत से नहीं मिलता है, यह मन की

शान्ति में होता है। मेरे मन की शान्ति राजन है। मेरी बातें तुम क्या समझोगी? मेरी बातें वह दिल समझेंगे जो इस बेदर्द समाज के पंजों में फँसकर तड़पते हैं। काश तुमने भी प्यार किया होता तो.........

मैं तुम्हारी सब बातें मानती हूँ परन्तु बेटी, मैं भी विवश हूं।

सारी रात रजनी रोती रही। उसके दिल में एक ही विचार अँगड़ाई ले रहा था—"क्या वह राजन को इस दशा में धोखा देगी? क्या वह उसे भूल सकती है?"

सुबह उठते ही उसने मुंह हाथ धोए बिना हाथ में किताबें उठाईं और घर से बाहर चली आई।

राजन के पास पहुँचकर वह कुछ न बोल सकी क्योंकि वह गहरी नींद में सोया हुआ था।

रजनी धीरे धीरे उसके पाँव दबाने लगी। कुछ देर पश्चात् राजन आँखें मूंदता हुआ देखने लगा—"ऐ! पांव मत छुओ। मेरे सिर पाप चढ़ाओगी क्या?

डॉक्टर साहब! मैं इन चरणों पर मरना चाहती हूं, आपकी आज्ञा है क्या?

"अरे ऐसा न कहो, इधर आओ"—यह कहकर राजन ने उसे अपनी बाहों में भर लिया।"

"छोड़िए न, माँ जी आ जाएगीं तो क्या होगा?"

राजन ने तो भी रजनी का हाथ पकड़कर उसे चूम लिया।

रजनी, तुम कालेज जाने का नाम ही नहीं लेती हो। दस तो बज गए। उठो, कालेज चली जाओ।

मैं तब तक कालेज नहीं जाऊँगी जब तक आप ठीक न हो जाएं।

देखो रजनी, यह मुझे पसन्द नहीं है। तुम घर वालों को धोखा देकर यहाँ बैठती हो।

घर में घर वाले सताते हैं और यहाँ आप ज्ञान सिखाने लगे।

लो बिगड़ गईं, अच्छा बाबा, आओ मेरी बाहों में आकर सो जाओ।

कल शाम को माँ से झगड़ा हुआ, खैर लीजिए यह दवाई पी लीजिए।

यह बहुत कड़वी है। थोड़ी देर बाद पी लूंगा।

दवाई समय पर पी जाती है, लीजिए मैंने भी थोड़ी पी ली—रजनी ने थोड़ी दवाई पीते हुए कहा।

राजन चुपचाप दवाई पीकर नीचे लेट गया और चादर के छांटे से छेद में से रजनी को निहारने लगा और फिर उसे नींद आ गई।

चार बजे तक रजनी वहीं बैठी रही और उसके बाद वह सीता से आज्ञा लेकर घर चली गई।

: ३१ :

पूरे एक सप्ताह पश्चात्, एक दिन रात के नौ बजे रजनी अपने कमरे में बैठी एक उपन्यास पढ़ रही थी। सहसा बिजली बंद हो गई और चारों ओर घोर अंधेरा छा गया। इस अन्धेरे में एक जीप राजन के घर के सामने रुकी। वहाँ कोई दीया लिए ऊपर की ओर जा रहा था। अशोक ने पीछे से आवाज़ दी और फिर प्रकाश के पीछे-पीछे चलने लगा। वायु के एक तीव्र झोके ने दीए को बुझा दिया।

अरे भई, कुछ जलाओ न। अच्छा ठहरो मैं ही जलाता हूं।

अशोक ने लाइटर जलाया। वहाँ आशा सिर झुकाए खड़ी थी।

चल आशा, मैं भी एक ओर से बाल्टीन को पकड़ता हूं। मैंने तो तुम्हें राजन समझा था। वैसे हम तीनों बचपन में इकट्ठे खेला करते थे।

......आशा केवल मुस्करा दी। अशोक माँ से मिलकर राजन के पास आया। उसके साथ वह बहुत देर तक बातें करता रहा।

"आकाश पर बादलों का नामोनिशान नहीं था। सितारे चाँद को देख-देखकर मुस्करा रहे थे। बूढ़े आदमी अपने बच्चों को देखकर फूले नहीं समाते थे। उनमें से कई अपने बहू-बेटे को हँसते देख जलते थे। कई युवक अपने बुढ़ापे के सहारे के लिए एक बच्चे की तलाश में थे।

इन बातों पर विचार करके अशोक ने राजन से कहा—यार, अपना ब्याह तो कर डालो, क्योंकि ब्याह करने की भी यही आयु होती है। अब देखो रजनी यहाँ आती रहती है। यदि लाला हुक्मचन्द को इस बात का तनिक भी सन्देह हुआ तो फिर क्या होगा ?

तुम्हें किसने कहा कि रजनी यहाँ आती है ?

अशोक ने राजन के कन्धे से दो बड़े-बड़े बाल उठाए। "यह आपके ही बाल हैं क्या ?"—मैं स्वयं जाकर लाला हुक्मचन्द से तुम्हारे बारे में बात कर लूंगा, या किसी और को वहाँ भेजने का निश्चय किया है ?

"मेरा तुम्हारे बिना है ही कौन। बात तो तुम्हें ही करनी है परन्तु पहले मैं आशा की शादी करना चाहता हूँ। मेरे शरीर का अब कोई भरोसा नहीं रहा।"

हाँ राजन, मैं भी तुमसे आशा के बारे में बात करना चाहता था। मुझे भी तुमसे कुछ कहना है। पहले तुम अपनी सुनाओ।

...............। मेरी निगाह में आशा के लिए एक लड़का है। यदि

लड़का तुम्हें पसन्द है तो मुझे कोई भी आपत्ति नहीं।

दोस्त तेरे बिना अब मेरा शुभचिन्तक कौन रहा, परन्तु उससे कोई भी बात नहीं छिपाना।

उसे इस बात का पूरा ज्ञान है कि आशा की जिह्वा नहीं है। वह बोल नहीं सकती है। फिर आशा कोई पैदाइशी गूंगी तो नहीं है। भूचाल की घटना से उनकी जिह्वा बन्द हो गई है। यह तो ठीक भी हो सकती है। मेरे पास उस लड़के की तस्वीर भी है।

तो इधर दिखाओ। मैं भी उसे देखना चाहता हूं।

देखने से पूर्व एक बार फिर सोच लो कि इसे देखकर तुम कहीं मुझसे अप्रसन्न न हो जाओ।

अरे तुम सदा बुद्धू के बुद्धू ही रहोगे। भला मैं तुमसे अप्रसन्न क्यों हो जाऊँ।

अशोक ने अपनी जेब से तस्वीर निकालकर राजन के हाथ में दे दी।

तस्वीर देखते ही राजन चकित सा हो गया और फटी-फटी आँखों से कभी तस्वीर को और कभी अशोक को देखने लगा।

अशोक की पलकें नीचे झुकी थीं।

"हाँ राजन, मैं आशा से व्याह कर लूंगा। तुमने मुझ पर बहुत उपकार किए हैं अब यह एक और उपकार मुझ पर कर दो। इसे कहीं प्रेम का चक्कर नहीं समझना। यह बात अवश्य है कि मुझे आशा पसन्द है। मैं आशा की जिह्वा ठीक करवाने का पूरा प्रयास करूंगा।'

राजन को इस बात का विश्वास ही नहीं होता था। उसके नयनों से हर्ष के आँसू मोती बनकर ढलक पड़े उसने अशोक को ज़ोर से गले लगाया।

मैं आशा का हाथ तुम्हारे हाथ में दूंगा परन्तु दहेज कितना दूं, क्या दूं—यह मैं इस समय नहीं कह सकता हूं।

अशोक चिल्ला उठा—"राजन ! व्याह को सौदा बाजी मत समझो। यह एक बन्धन है, कोई व्यापार नहीं। जो व्यक्ति दहेज माँगते हैं, वे इन्सान का महत्व नहीं जानते हैं। कुएँ के मेंढक सागर की गहराई तक नहीं पहुँच सकते हैं। दोस्त ! यह तो तुम्हारी ही दी हुई बातें हैं।"

अशोक उस रात राजन के पास ही सो गया और सुबह होते ही वह वापिस घर की ओर चल पड़ा।

राजन ने एक सप्ताह में सब सामान इकट्ठा किया। सुखदेव ने इस काम में उसे पूरा सहयोग दिया। रजनी भी ऐसे काम करने लगी जैसे उसकी सगी बहन का व्याह होने वाला हो।

आशा की बारात आने में केवल चार दिन रह गए। घर में आशा तथा

सीता रजनी से बातें कर रहे थे। राजन भी अस्पताल से वापिस आ गया।

माँ ने दूध की प्याली राजन को देते हुए कहा—बेटा, एक बात पूछनी थी।

कहो माँ, क्या कहना है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि अशोक बहुत अच्छा लड़का है परन्तु फिर भी हमें उसकी जन्म कुण्डली आशा की जन्म कुण्डली के साथ मिलानी चाहिए। क्या पता अशोक के ग्रह आशा के ग्रहों के साथ मिलते भी हैं कि नहीं।

माँ! जो ग्रह आदमी के मस्तिष्क पर सवार हुए थे, वह सब अपोलो ग्यारह को देखकर भाग गए हैं।

खैर जो तुम्हारे मन में आए करो। मुझे दस रुपये का नोट चाहिए, थोड़ा सामान बाज़ार से लाना था।

यह लो माँ दस रुपये। तुम मेरी थोड़ी सी बात पर रूठ गई। चलो जन्म कुण्डली भी मिलाएंगे। अच्छा अब यह बताओ कि तुम्हें बाज़ार से क्या लाना है?

यदि तुम्हारे लाने की वस्तु होती तो मैंने कब का कहा होता।

अब आई बात समझ में। माँ तुम नम्बर बताओ, मैं स्वयं ले आऊँगा।

हट निर्लज्ज कहीं का।

राजन चुप होकर कपड़े बदलने लगा। कपड़े बदल कर वह रजनी के पास आकर बैठ गया।

"आपने मुझसे कल का हिसाब ही नहीं लिया। आपके दिए हुए दो हजार रुपयों में से केवल पचास रुपये मेरे पास रह गए।"

हाँ तो दे दो हिसाब। आज बालों में कंघी क्यों नहीं की है? आँखें क्यों सूजी हुई हैं? मेरी नींद क्यों चुराई है?

रजनी ने बात काटते हुए कहा—"आप ठीक होकर मुझे अपना लीजिए। फिर देखिए मैं कितनी मोटी हो जाऊँगी। मैं आपके बिना तंग आ गई हूं।"

सहसा राजन को खाँसी आ गई। वह अपने आपको रोकना चाहता था। परन्तु रोक न सका। उसके मुँह से खून आकर रजनी के सिर पर गिर पड़ा।

रजनी रोते-रोते आशा को बुलाने लगी परन्तु राजन की कठोर आवाज ने रोक दिया—"रजनी, यह खून शीघ्र धो डालो। आशा को बुलाने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्हें इसके बारे में कुछ भी नहीं कहना। इसी कारण मैं चाहता हूँ कि आशा का विवाह शीघ्र हो जाएं।"

"ऐसा न कहिए, आप बहुत जल्द ठीक हो जाएंगे।"

"किसलिए ठीक हो जाऊंगा"—क्या तुम्हें गैर के पहलू में देखने के लिए······? क्या लड़का पसन्द आया, उसे तुम्हारे पिताजी ने कितने में खरीदा?

रजनी चौंक गई।

आपको यह सब किसने बताया ?

"मुझे सुखदेव ने सब कुछ कहा। यहाँ अब किसलिए आती हो ? इस जिन्दा लाश को अब और न सताओ कहीं ऐसा न हो कि मेरा प्यार ज्वाला बन कर तुम्हें भस्म कर दे। तुम्हें अब यहाँ आने की कोई भी आवश्यकता नहीं है।"

रजनी की आँखें क्रोध से लाल हो गई—"सुखदेव ने क्या यह नहीं कहा कि मैंने चार दिन से कुछ भी नहीं खाया है। घर में माँ हर पल ताने देती रहती है। तुम्हें इसलिए नहीं कहा, क्योंकि तुम बीमार हो। राजन, तुम्हारे बिना मेरे जीवन में मौत के सिवाय और कोई नहीं आएगा"—यह कहते हुए रजनी वहाँ से चल पड़ी। घर पहुँचते ही रजनी का सामना आज भी लक्ष्मी से ही हुआ।

माँ, पिताजी से सब कह दिया न ?

तुम पागल हो गई हो। मुझसे यह सब कहा नहीं जाएगा। तुम स्वयं उन्हें जाकर कह दो।

रजनी का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। वह दौड़ते हुए लालाजी के कमरे में आ गई।

पिताजी मुझे आपसे कुछ कहना है।

कहो क्या बात है ?

आज तक मैंने आपके सामने सिर उठाने का साहस नहीं किया परन्तु आज विवश हूँ।

लाला जी ने समाचार पत्र एक ओर रखते हुए कहा—बोलो बेटी, क्या बात है ?

मुझे उस लड़के से ब्याह नहीं करना है जिसे आपने पसन्द किया है।

यह क्या पागलपन है। उसी दिन क्यों नहीं कहा, मैं रिश्ता काट देता परन्तु अब तो मैं जिह्वा दे चुका हूँ। क्या कमी है उस लड़के में ? वह एक इज्जतदार आदमी है। उनका घर बहुत अच्छा है। अपने बराबर के आदमी हैं। मुझे लड़का बहुत पसन्द आया।"

"परन्तु ब्याह मेरा होने वाला है, आपका नहीं, मुझे उसके साथ ब्याह नहीं करना है।"

बेटी तुम कहना क्या चाहती हो ?

रजनी ने आह भरते हुए कहा—आप राजन को जानते हैं न, जो श्याम भैया का मित्र था ?

हाँ जानता हूँ। वह शिवप्रसाद का बेटा, उसने तुम्हें क्या किया ?

मेरा ब्याह राजन से ही होगा।

लाला जी दाँत-पीसते हुए गरजे—"रजनी, क्या तुम एक साधारण दुकानदार के बेटे की बात कर रही हो"—फिर कुछ समझ कर कहने लगे—"रजनी, तुम्हारा व्याह अब मानों हो चुका है। तुमने यह सब कहने का साहस कैसे किया। इस समय क्षमा करता हूँ परन्तु फिर कभी उस चमचे का नाम जिह्वा पर आया तो मैं तुम्हारी गर्दन तोड़ दूँगा। मेरी शराफत का बुरा लाभ न उठाओ।"

"पिताजी, जो मुझे कहना था, वह आपने कह दिया।"

लालाजी की आवाज़ आकाश से टकराई। वह इतनी ज़ोर से चिल्लाए कि हवेली में सब भयभीत हो गए—"मैं तुम्हारा पिता हूं। तुम पागल हो गई हो। मेरे साथ आज यह व्यवहार कर रही हो कल अपने पति की क्या इज़्ज़त करोगी।

क्षमा कीजिए, मैं इस हवेली के सिद्धान्त नहीं अपना सकती। इज़्ज़त दिल में किसी के लिए होती है। मैं झूठी इज्ज़त दिखा नहीं सकती। चिल्लाने से कोई लाभ नहीं। आप पिस्तौल निकाल कर मुझे गोली से उड़ा दीजिए, यदि आप में मेरी बात सुनने का साहस नही है। उस लड़के में राजन से अधिक कौन सा गुण है ?

"हां, यह बात पूछो। तुम नासमझ हो। तुम किसी की मीठी बातों में आ गई हो। उस लड़के के पास दौलत है, समाज में इज़्ज़त है।"

दौलत का मन की शान्ति से कोई सम्बन्ध नहीं। बाकी रही बात इज़्ज़त की, उस इज़्ज़त से क्या लाभ जिसे अपनी ही आत्मा ललकार रही हो। आपकी झूठी शान तो रह गई परन्तु मैं अपने भाई से बिछड़ गई।

लालाजी फिर चिल्लाने लगे—हम नाम पैदा करने के लिए इस संसार में आए हैं। हम लोग इज़्ज़त के पीछे मरते हैं। तुम अपनी समझ से काम लो। आखिर इज्ज़त भी तो कोई चीज़ है।

"इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति अच्छे काम करने के लिए आया है। झूठा नाम पैदा करने से क्या लाभ। आप एक इन्सान को खरीद रहे हैं। आखिर आप यह क्यों नहीं सोचते हैं कि हमारी प्रत्येक भूल से निर्धन व्यक्तियों पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है। यह सौदाबाज़ी का सिलसिला कब तक चलता रहेगा। इज्ज़त क्या चीज है—आपके विचारों के अनुसार एक इन्सान की दूसरे इंसान से नफरत। एक निर्धन मज़दूर को नोटों का कफन पहना कर कब्रिस्तान में दफन करना। यदि इज्ज़त यही है तो धिक्कार है उन लोगों पर जो इज्जत

के पीछे मरते हैं। ऊँच-नीच का भेद तो हमने पैदा किया है। पिताजी दिल की दीवार, दौलत के उस पर्दे से कई गुणा मज़बूत है जो किसी भी समय हवा के एक झोंके से गिर जाता है।"

"तुम सीमा से अधिक बढ़ रही हो। श्याम भी मेरे सामने इतना नहीं बोलता था। क्या मैंने ही एक निर्धन तथा धनवान में भेद निकाला है। यह भेद तो सदियों से चलता आया है।"

"पिताजी ! भगवान ने इन्सान बनाया सूर्य भगवान सारे जगत पर अपना प्रकाश डालता है। वह एक निर्धन तथा एक धनवान में भेद क्यों नहीं निकालता है। आप सदा दौलत को ही अधिक महत्त्व देते हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर धन ही नहीं है। वह दिन गए, जब एक इन्सान समाज के ठेकेदारों के सामने अपनी बहू बेटी को, कागज़ के कुछ नोटों के लिए लाता था। हम उन्हें यह एहसास दिलाते हैं कि तुम लोग हमसे अलग हो क्योंकि तुम्हारे पास कागज के नोट नहीं हैं। तुम हमारे बराबर नहीं हो क्यों तुम्हारे साथ दरिद्रता एक कलंक है। पहले एक इन्सान को खरीद कर गुलाम बनाया जाता था। समय बदल गया, वही इन्सान अब नौकर बन गया। अब वह समय आएगा जब न कोई नौकर होगा और न कोई मालिक। इन्सान की खरीद-फरोख्त अब नहीं होगी। वास्तविक धनवानता मनुष्य के चरित्र पर निर्भर है। पुराण भी तो यही कहते हैं। कृष्ण एक राजा था और सुदामा एक कंगाल। फिर भी कृष्ण ने उसके दुःख सुनकर दूर किए। यह बातें तो हमें सिखाने के लिए ही हुई हैं।"

"न हम कोई कृष्ण हैं और न किसी सुदामा का साथ हमारे भाग्य में है। मेरी निगाहों से दूर हो जाओ। यदि तुम राजन से ब्याह करना चाहती हो तो कान खोलकर सुन लो—तुम्हारी माँ और तुम्हारे लिए इस घर में कोई जगह नहीं है। तुम दोनों घर छोड़ कर चली जाओ।"

रजनी वहाँ से चलकर अपने कमरे में पलंग पर लेटी रही।

रात के एक बजे सहसा किसी ने खिड़की का शीशा तोड़ डाला। पहले तो रजनी भयभीत हो गई परन्तु फिर टार्च के प्रकाश के सहारे नीचे चली आई जहाँ राजन एक वृक्ष का सहारा लिए उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

रजनी सिर नीचे किए हुए राजन के समीप खड़ी हो गई।

"क्या तुम अभी भी मुझसे रूठी हुई हो ? मुझे क्षमा कर दो"—राजन ने उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा।

आपसे क्यों रूठ जाऊं ? आपकी बातों से हमारे प्यार की जंजीर अधिक पुष्ट हो गई। जाइए अब आप सो जाइए।

क्या करूँ नींद ही नहीं आती है ?

ऐसा क्यों ?

क्या यह भी कहना पड़ेगा ?

राजन ने वृक्ष से अपना हाथ हटाकर रजनी के कन्धे पर रख दिया—आओ, मेरी बाहों में आ जाओ। राजन उससे लिपट गया और रजनी उसकी बाँहों में समा गई।

: ३२ :

सुबह राजन ने एक सप्ताह की छुट्टी ले ली और माँ के साथ कुछ नातेदारों के यहाँ गया। वहाँ से आते ही वे कुछ सामान घर ले आए।

अब बताओ माँ कि तुम्हें और क्या लाना है ?

कुछ नहीं बेटा, अब मुझे एक ही चिन्ता है।

वह क्या माँ ?

बेटा, तुम जल्दी से मेरी बहू ले आओ। आशा के जाने के पश्चात् यहाँ घर का काम कौन करेगा ?

माँ पहले आशा का ब्याह तो होने दो, फिर मेरे लिए लड़की ढूंढ़ लेना।

क्या आपकी बातें पूरी हो गईं या मैं बाहर ही रहूं ?—रजनी दरवाजे पर खड़ी-खड़ी बोली।

आओ बेटी, मैं राजन से कहती थी कि तुम मेरी बहू ले आओ, मैं अब बूढी हो गई हूँ।

हाँ, यह बात ठीक है। राजन साहब ! आप अपनी श्रीमती जी कब लाएंगे ? उस दिन हमें भी बुलाना—माँ जी सच कहती हैं आप शीघ्र अपना ब्याह कर डालिए वरना कुँवारे रह जाएंगे।

तो तुम ही मेरे लिए कोई लड़की पसन्द कर लो।

"आप अपना शरीर ठीक रखिए। मैं अपने कालिज की एक से एक बढ़कर सुन्दर लड़कियाँ दिखाऊँगी।"

बेटी, अब तुम ही इसे समझाओ न।

"हाँ माँ ! मैं इन्हें सब कुछ ठीक तरह से समझा लूंगी।"

माँ के जाने के पश्चात् राजन कहने लगा—हाँ, तो क्या समझाने जा रहीं थीं आप ?

अभी नहीं विवाह होने के पश्चात्। अच्छा अब मजाक छोड़िए और यह बताइए कि अब खून तो नहीं आता है ?

छोड़ो, यह तो मामूली बात है।

राजन ! तुम्हारा स्वस्थ होना अत्यन्त आवश्यक है। कल मेरा पिताजी से

झगड़ा हो गया।

तुम अभी किसी के साथ झगड़ा न करो, केवल तमाशा देखती रहो।

रजनी कुछ बोलने ही वाली थी कि किसी अपरिचित ने कमरे में प्रवेश किया।

राजन ने उसे हाथ जोड़ कर नमस्ते की। यह अपरिचित चेस्ट स्पेशलिस्ट (Chest Specialist) डॉक्टर धवन था।

सर, आप यहाँ कैसे आए?

मुझे कैप्टन अशोक ने आपको देखने के लिए भेजा है। आप लेट जाइए।

डॉक्टर धवन ने राजन को ठीक तरह से देखा। उसने रजनी के हाथ में नुस्खा देते हुए कहा—आप इनकी श्रीमती हैं न? मुझे आपसे कुछ कहना है।

रजनी डॉक्टर धवन के पीछे-पीछे आई।

"आपके लिए यही अच्छा रहेगा कि आप इन्हें अस्पताल में रखिए। ऐसा न हो कि बाद में पछताना पड़े।" यह कहकर डॉक्टर धवन वहाँ से चल पड़ा।

रजनी दौड़ती हुई कमरे के भीतर आई और राजन के सिर पर हाथ रखते हुए बोली—"डॉक्टर साहब कहते थे कि आप बहुत शीघ्र ठीक हो जाएंगे।"

"क्यों मुझे उल्लू बना रही हो? यह तो वे यहाँ भी कह सकते थे। तुम्हें मेरी कसम है, सच-सच बताओ कि डॉक्टर ने क्या कहा?

डॉक्टर कहता था कि यहाँ अधिक शोर होने के कारण आपको आराम नहीं मिलता होगा। इसलिए कुछ दिनों के लिए अस्पताल में रहना पड़ेगा।

"अब तुम्हारी क्या सलाह है?" यह कहते हुए राजन की दृष्टि नुस्खे पर पड़ी। उसका चेहरा उतर गया।

मेरे विचार में डॉक्टर साहब ठीक कहते हैं। वहाँ जाना ही आपके लिए उचित होगा।

मैं अस्पताल अवश्य जाऊँगा परन्तु आशा के विवाह होने के पश्चात्।

रजनी सायं के छः बजे तक राजन के साथ बातें करती रही और फिर अपने घर की ओर चल पड़ी।

फाटक के भीतर आते ही उसने किसी को बाग में बैठे हुए पाया।

"माफ कीजिए, मैं लालाजी से मिलना चाहता हूँ।"

आइए, मैं आपको उनके कमरे तक ले चलती हूं।

वह अपरिचित रजनी के पीछे-पीछे चलने लगा।

क्या आप उनकी बेटी, रजनी हैं ?

जी हाँ, परन्तु आप मेरा नाम कैसे जानते हैं ?

यही तो एक अच्छी बात बड़े आदमियों में है कि वे हर एक की जिह्वा पर होते हैं।

रजनी ने उस अपरिचित की ओर घूरते हुए देखा—यह पिताजी का कमरा है।

धन्यवाद, अशोक ने लालाजी के सामने बैठतेहुए कहा—क्या आप ही लाला हुक्मचन्द हैं ?

"जी हाँ, कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?"

इससे पहले कि मैं आपसे कुछ कहूं, आप मेरे बारे में अवश्य जानना चाहेंगे। मेरा नाम अशोक है। मैं भारतीय सेना में कैप्टन के पद पर नियुक्त हूं। मैंने सुना है कि आप अपनी बेटी के लिए कोई अच्छा सा वर ढूंढ़ रहे हैं। मैं अपने मित्र के लिए रजनी का हाथ माँगना चाहता हूं।

आप कहना क्या चाहते हैं ?

"मैं डॉक्टर राजन के लिए आपसे बात करने आया हूं।

आपको यह मालूम होना चाहिए कि रजनी का रिश्ता एक मिल मालिक के बेटे के साथ तय हुआ है।"

"आप कृपा करके मेरी विनती सुन लीजिए। राजन रजनी को चाहता है और रजनी भी......।"

'रिश्ता सदा बराबर वालों से किया जाता है। राजन के बराबर वेतन तो मेरी मिल में एक क्लर्क पाता है।"

'यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है। रजनी केवल राजन की है। चुपचाप यह रिश्ता स्वीकार कीजिए।"

लालाजी ने रजनी को बुलाकर कहा—क्या तुम राजन से प्रेम करती हो ?

रजनी सिर नीचे करके बैठ गई।

लालाजी ! आपको तो सेना में भर्ती होना चाहिए। आर्डर्स देने में तो आप बिल्कुल सेना के जनरल लगते हैं।

"तुम यहाँ से निकल जाओ !"—लालाजी ने अपने नौकर को बुलाया—"इस गुण्डे को धक्के देकर बाहर निकाल दो।"

चिल्लाईए मत लालाजी ! मुझे आपके इन्कार करने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। सरकार ने तो न्यायालय बनाए हैं। हाँ इतना दुःख अवश्य होगा कि बेटा खोने के साथ-साथ आप बेटी से भी हाथ धो बैठेंगे।

मैं भी देखूँगा कि कौन शैतान का बेटा सेहरा बाँधकर इस हवेली में

ग्राएगा ?

"मैं ग्रापको सोचने के लिए एक सप्ताह देता हूं। ऐसा न हो कि ग्रापको पछताना पड़े।"—"रजनी बहिन ! मैं तुम्हारा भाई हूं। मैं श्याम भैया का कर्तव्य निभाऊँगा।"

ग्रशोक ने सुखदेव को धक्का देते हुए कहा— धो लो पाँव इन शैतानों के। तुम जैसे लोगों ने इन शैतानों को धरती का भगवान बनाया है। तुम भी अपने मालिक को समझाग्रो कि यह ग्रालीशान बँगला भी एक निर्धन के हाथों बना है, जिसे स्वयं धूप से बचाने के लिए एक मामूली झोंपड़ी तक नहीं। लालाजी तुम सचमुच यमराज हो।

: ३३ :

राजन बड़ी ग्रधीरता से बारात की प्रतीक्षा कर रहा था। ग्राखिर दूल्हे की कार, फूलों से सजी हुई ग्रा पहुँची।

बारात का स्वागत बड़ी धूमधाम से किया गया। पंडित जी ने कुछ देर पश्चात् मंत्र पढ-पढकर ग्रग्नि-कुण्ड में घी ड़ालना ग्रारम्भ किया। तीन घण्टों में दो पुस्तकें पढ़ ली गईं। उसके पश्चात् वर-वधू ने एक दूसरे के हाथ पकड़ लिए। सात फेरे हो गए। राजन ने कन्यादान किया ग्रौर फिर थककर ग्रपने कमरे में पलंग पर लेट गया।

करीब पाँच बजे ग्राशा ने कमरे में प्रवेश किया। उसकी चूड़ियों की खनक से राजन की ग्राँखें खुल गईं।

ग्राशा ग्रपने भाई के चरणों के पास खड़ी थी। वह बहुत कुछ कहती परन्तु.......... ।

"मत रो ग्राशा। भगवान के लिए रोना बन्द करो।"

ग्राशा ने ग्रपने भाई के चेहरे को गौर से देखा।

राजन से रहा न गया। उसने ग्रपनी बहिन को जोर से ग्रपनी बाँहों में भींच लिया।

"देखो बहिन ! मैं तुम्हें ग्रपनी शुभ कामनाग्रों के सिवाय कुछ नहीं दे सकता हूँ। मुझे तुमसे कुछ कहना है, सुनो—विवाह के पश्चात् पति परमेश्वर होता हैं। ससुराल में हर छोटे-बड़े का ग्रादर करना। ग्रपने पति की तन-मन से सेवा करना। यदि वे कभी बुरा भी कहें तो उनका बुरा नहीं मानना। जाग्रो सदा सुखी रहो।"

राजन कमरे से बाहर ग्राकर ग्रशोक के सामने गया—"ग्रशोक, मैं तुम्हें ग्रपने हृदय का टुकड़ा सौंप रहा हूँ। ग्राशा मेरे दिल का चिराग है। दोस्त ! ग्राशा को सदा सुखी रखना।"

दोनों दोस्त आपस में गले मिल गए।

मोटर में पीछे अशोक तथा आशा बैठ गए।

सीता हाथ जोड़कर कार के सामने आई—"अशोक बेटा ! मेरी बेटी से यदि कोई भूल हो जाए तो उसे प्यार से सिखाना।"

"यह लो आशा, तुम्हारी अमानत"—रजनी ने पिन्टू को पिंजरे के समेत अशोक के हाथ में देते हुए कहा—"आपने हमसे एक के बदले, दो चीजें लीं आशा तथा उसका पिन्टू।"

अशोक इस बात पर मुस्कुराया और कार अपनी मंजिल की ओर बढ़ गई। राजन बहुत देर तक उस कार के धुंए को देखता रहा, फिर लौटकर अपने कमरे में आ गया जहाँ सुखदेव भी मौजूद था।

"भैया ! मैं सोचता हूं कि तुम्हें किस मुंह से धन्यवाद दूं ?

"राजन बाबू ! यह तो हमारा कर्तव्य था। खैर अब आज्ञा दीजिए, कल फिर आऊँगा।"

रजनी ने भी राजन के सामने आकर कहा—"अच्छा अब आप आराम कीजिए। मैं भी चलती हूं।"—उसने घड़ी की ओर देखकर एक शीशी से दवाई निकाली—"यह लीजिए, यह दवाई खाईए।"

दवाई खाने के पश्चात् राजन ने रजनी से पूछा—"अच्छा यह बताओ कि लड़का तुम्हें पसन्द आया न ?"

"सच पूछिए तो अशोक देवता समान है। आपका पूरा ड़िटो है।"

अब तुमने अपने बारे में क्या विचार किया है ?

"मैं तो दुल्हन कब की बन चुकी हूं। आप मेरे हृदय में समा चुके हैं। जब वर ले आएंगे, आ जाऊंगी।"

सब मेहमान सो गए। सीता भी अपने बेटे के पलंग पर आकर सो गई।

राजन बहुत देर तक अपनी माँ के पाँव दबाता रहा फिर बेटा अपनी माँ को बाहों में घेर कर सो गया।

सूर्य देवता भी बहुत देर के निकल आए परन्तु राजन ने माँ को बाँहों से अलग नहीं होने दिया।

बेटा, तुम सो जाओ परन्तु मुझे तो उठने दो न। घर में अभी मेहमान भी हैं।

माँ, थोड़ी देर और सो जाओ।

बेटा ! इस समय मुझे जाने दो। घर का काम समाप्त करके फिर तुम्हारे पास आ जाऊँगी।

सीता ने राजन को सुला दिया और स्वयं अथितियों का प्रवन्ध करने चली गई।

: ३४ :

उठो यार ग्यारह बज गए।

"कोई बात नहीं बजने दो"--राजन कुछ सोचकर चौंक गया।

"अशोक साहब ! आप कब आए ? आइए यहाँ बैठिए।"

मुझे यहाँ आए हुए आधा घण्टा हो गया। मैं तो अभी तक माँ के साथ बातें कर रहा था।

आशा कैसी है ?

बिल्कुल ठीक है। उसे केवल तुम्हारी चिन्ता लगी हुई है। मैं उसे भी ले आता परन्तु घर में उसे देखने के लिए बहुत लोग आते हैं। इसी कारण भाभी ने शाम को ले जाने के लिए कहा।

जैसी आपकी इच्छा।

अरे यार यह आप–आप कहाँ से बीच में ले आए ?

यह आप नहीं समझेंगे।

"नमस्ते अशोक बाबू !"—रजनी ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा।

आओ रजनी ! कहो लालाजी कैसे हैं ?

जी ठीक ही तो हैं।

यह बताईए कि आप इनके लालाजी को कब से जानते हैं ?

रजनी ने बात काटते हुए कहा--मेरे पिताजी को कौन नहीं जानता है।

हाँ राजन, यह तो मैं भूल ही गया था। "मैं चाहता हूं कि तुम कुछ दिनों के लिए अस्पताल में रहो।"

जैसी आपकी इच्छा।

तो मैं शाम के पूरे सात बजे जीप लेकर यहाँ आ जाऊँगा। तुम चलने के लिए तैयार रहना। मेरा विचार यह है कि जब तक तुम अस्पताल में रहोगे, तब तक माँ मेरे पास रहेगी।

माँ तो अपने घर में रहेगी, वह घर भी तो आपका ही है।

अरे, वहाँ अकेले रहकर क्या करेगी ? तुम मुझे हर बात पर डाँटते हो। यह तुम्हारे बचपन का स्वभाव है। रजनी बहन ! आप ही राजन को समझाइए न।

अच्छा जैसा आप कहते हैं, वैसा ही होगा।

हाँ, यह हुई न बात।

सहसा लालाजी की आवाज कमरे में गूंज उठी। उसने एक दृष्टि रजनी पर और दूसरी राजन पर डालते हुए कहा—"क्या तुम यहीं कालेज जाती हो ? चलो घर चलो।"

अशोक ने उसके सामने खड़ा होते हुए कहा—"लालाजी ! धीरे-धीरे बात

कीजिए। रजनी अभी आ जाएगी, चिल्लाईए मत। बैठना है तो कुर्सी पर बैठ जाइए।"

"ज़ालिमसिंह ! इनसे कहो कि दो घण्टे में यह तीनों कमरे खाली कर दें, वरना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।"

"एक घण्टे के बाद यह कमरे खाली होंगे। ज़ालिमसिंह ! अपने इस ज़ालिम मालिक से कह दो कि अब यहाँ से चले जाएं। रजनी बहन ! तुम भी जाओ। घर में चुप करके बैठना। बाकी मैं तुमसे मिलता रहूँगा। जब तक तुम्हारा यह भाई जीवित है, तुम्हें कोई भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।"

रजनी ने बाहर जाने से पहले, टूटे हुए दिल से एक निगाह राजन की ओर डाली और फिर रोते-रोते वहाँ से चल पड़ी।

: ३५ :

शाम के सात बजे अशोक अपनी आशा के साथ जीप में बैठकर राजन के पास आ गया।

राजन ने आशा को गले लगाया। सीता भी अपनी बेटी से लिपट गई।

"माँ, मैं कुछ दिनों के लिए यहाँ नहीं आऊँगा।"

आप चुप रहिए अशोक साहब ! मैं माँ को समझा रहा हूँ—"देखो माँ, अस्पताल में मुझे दो चार दिन के लिए थोड़ा काम है। तुम इन दिनों अशोक भैया के पास रहोगी।

परन्तु क्यों ? मैं अपने घर में ही ठीक हूँ।

अरे माँ ! राजन के साथ इतने वर्षों रहीं। क्या मेरे भाग्य में कुछ दिनों के लिए भी माँ का सुख नहीं लिखा है ?

कौन माँ आज तक बेटी के घर जाकर दामाद की कमाई का खाती है।

अरे माँ ! तुम्हें किसने मेरी कमाई का खाने को कहा ? तुम्हारा बेटा डॉक्टर है, तुम स्वयं भी खाओ और हमें भी खिलाओ।

यह बात सुनते ही आशा माँ के पास आकर उसका कन्धा दबाते हुए कुछ कहने की चेष्टा करने लगी...।

देखो तुम्हारी बेटी भी तुम्हें यही कहती है।

"अरे ! आपने इतनी शीघ्र इसकी बोली समझ ली ?"

राजन ने मुस्कराते हुए कहा।

जी बिल्कुल समझ ली। अब जल्दी करो न।

राजन ने कपड़े बदले और अपनी माँ के सामने आया।

माँ, क्या मैं जाऊँ ?

बेटा तुम नहीं आओगे, परन्तु मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगी।

हाँ, हाँ तुम्हें वहाँ आने से किसने रोका। अच्छा अब जाऊँ?

जाओ बेटा!

परन्तु एक बार फिर गले मिल लो न।

माँ अपने बेटे से गले मिल गई। राजन चलकर जीप में बैठ गया। अशोक जीप चलाने लगा और आशा भी उसके साथ ही बैठ गई।

वार्ड नम्बर तीन के साथ कमरा नम्बर चौदह में राजन बैठ गया।

अच्छा अब यह बताओ कि क्या हम दोनों रात को यहीं ठहरेंगे?

नहीं, आप यहाँ क्या करेंगे। देखो आशा, तुम अब घर कहाँ जाओगी। आज तुम दोनों माँ के पास ही रहो। यह रहे बीस रुपये। तुम यहीं से सब्जी खरीद कर घर ले जाना।

ऐसा ही करेंगे परन्तु मैं सोचता हूं कि तुम यहाँ अकेले कैसे रहोगे?

अरे अशोक साहब! मैंने घर से अधिक समय यहीं बिताया है। यह अस्पताल तो मेरा घर है।

बस करो, यह ज्ञान अब बहुत सुन लिया।

अच्छा, अब आप उठिए नहीं तो फिर देर हो जाएगी।

अरे अभी उठकर क्या करना है? अभी तो बहुत बातें करनी हैं।

अशोक राजन के साथ रात के दस बजे तक बातें करता रहा और फिर उससे आज्ञा लेकर दोनों चल दिए।

सात बजे से साढ़े दस बजे तक अस्पताल के सभी डॉक्टर राजन से मिलने आए। डॉक्टर वर्मा आज अस्पताल नहीं आए थे। डॉक्टर धवन भी राजन को देखने आए। उसकी भी केस-हिस्टरी बनाई गई।

रात के बारह बज चुके थे। राजन फोटो के एलबम को देखने लगा। माँ की तस्वीर को देखकर उसकी आँखों में आँसू भर आए। एलबम बन्द कर के वह अपनी केस हिस्टरी देखने लगा। वह सोना तो चाहता था परन्तु नींद उसकी आँखों से कोसों दूर थी।

नमस्ते डॉक्टर साहब!

आओ, आओ जाहिदा जान! कहो कैसी हो?

अच्छी हूं सर!

"अरे मैं तो इस समय एक रोगी हूँ। अब मुझे 'सर' नहीं कहा करो। इससे मुझे वह दिन याद आते हैं। खैर......।"

कुछ दिनों की ही तो बात है। मैं खुदा से यही मांगती हूँ कि आप अति शीघ्र ठीक हो जाएं।

जाहिदा ! तुमने मेरा बहुत साथ दिया है। इधर आओ तुमसे कुछ कहना है।

कहिए सर !

देखो ज़ाहिदा ! मैं एक टी० बी० पेशेन्ट हूं। पता नहीं कि अब मैं कितने दिनों का मेहमान हूं।

"ऐसा न कहिए सर ! आप बहुत जल्दी ठीक हो जाएँगे।"

वह तो मैं भी चाहता हूँ। क्योंकि जो कुछ भी मैंने आज तक सीखा है, प्रधान रूप से, मैंने जो तुमसे पाया है, उसका मैं पूरा-पूरा उपयोग करना चाहता हूँ। ज़ाहिदा, जो हो रहा है उसकी ओर देखो। जो होना चाहिए, वह हमारे बस की बात नहीं है। उसके पीछे मत जाओ। मेरी बात सुनो—मैं चाहता हूं कि तुम अपना जीवन बदल कर ब्याह कर डालो। इस छोटे से जीवन को क्यों दुःखी बनाती हो ?

"यह आपको मेरे ब्याह की क्या समस्या पड़ गई ? मेरे ब्याह करने की उम्र तो अब चली गई। अब तो मुझे परवेज़ के बारे में सोचना है।"

"देखो जाहिदा, यदि तुम अपना ब्याह नहीं करोगी तो लोग तुम पर हर समय उँगलियाँ उठाएंगे। तुम्हारे सामने इस अन्धे समाज के प्रश्नों का कोई भी उत्तर नहीं होगा और उनके प्रश्न सुनते-सुनते तुम स्वयं एक प्रश्न बन जाओगी। उस समय तुम्हें यह अभागा राजन याद आएगा। ज़ाहिदा, क्या इतने बड़े संसार में कोई ऐसा इन्सान नहीं होगा जिसे तुम जैसी देवी की प्रतीक्षा हो।"

सर, आजकल मेरी ड्यूटी डॉक्टर नज़ीर अहमद के साथ है। वह मुझसे यह कहते रहते हैं—ज़ाहिदा ! यदि तुम मुझे एक बार अपना लोगी तो मैं अपने आप को भाग्यवान समझूँगा।" सर, वह मुझसे ब्याह करना चाहते हैं। मैंने उनकी बात का अभी कोई उत्तर नहीं दिया है।

मैं डॉक्टर नज़ीर को जानता हूं। वह बहुत अच्छा आदमी है। तुम उसके साथ अपना ब्याह कर लो।

परन्तु, आप यह जानते ही हैं कि वह एक डॉक्टर हैं। उनके घर वालों ने उनके लिए कैसी लड़की ढूंढने की सोची होगी ? उनके भी बहुत अरमान होंगे।

"ज़ाहिदा, मैं यह सब जानता हूं। मैं स्वयं डॉक्टर नज़ीर के पास जाता परन्तु तुम जानती हो कि मैं उसके घर तक नहीं चल सकता हूँ। तुम उसे, मुझसे मिलने के लिए कह देना।"

सहसा किसी की चीखें दोनों के कानों में गूँज उठी—"मैं मर जाऊँगा। यह

दर्द मेरी जान ले लेगा। ओह भगवान, मुझे इस पीड़ा से मुक्त कर दो।"

ज़ाहिदा घबराई हुई कमरे से बाहर निकल गई।

राजन ने अपने आप को बहुत रोकना चाहा परन्तु रोक न सका। उसके कदम भी वार्ड की ओर बढ़ गए।

बीमार के पास पहुँचते ही उसने देखा कि वह दोनों हाथों से अपने पेट को ज़ोर से दबाए हुए था। वहाँ केवल एक नर्स तथा ज़ाहिदा थी।

राजन ने नर्स से पूछा—कौन डॉक्टर इस वार्ड का इन्चार्ज है?

सर, डॉक्टर रीता।

ओह, डॉक्टर वर्मा की बेटी। जाओ, उन्हें बुलाकर लाओ और कहो कि बीमार दर्द के मारे चिल्ला रहा है।

सर, वह तो सो गई हैं।

राजन ने बीमार को देखकर उसे इन्जेक्शन दे दिया। कुछ देर पश्चात् बीमार शान्त हो गया।

चलिए, अब आप आराम कीजिए।

एक मिनट ठहरो ज़ाहिदा! अब आया हूं तो इन बीमारों को भी देखता जाऊँ।

कई बीमारों के सिर पर हाथ रख कर और कई बीमारों को तसल्ली देकर वह डॉक्टर-इन्चार्ज के कमरे में आया जहाँ कि डॉक्टर रीता मज़े की नींद सो रही थी।

.........जाओ मैं तुमसे नहीं बोलूंगी। मुझे तंग क्यों करते हो? जाओ पिताजी से बात कर लो। देखो न मैं कितना तड़पती हूं?"—रीता ने नींद में करवट बदलकर पलंग से अपना सीना दबाया और तकिया हाथ से मसलने लगी।

ज़ाहिदा यह सब देखकर सिर नीचे किए हुए बोलने लगी—सर, चलिए।

हाँ! हाँ! यह स्वयं एक रोगी है, बाकी रोगियों को क्या देखेगी, चलो ज़ाहिदा, यह दृश्य देखना पाप है।

राजन अपने कमरे में आकर पलंग पर लेट गया। क्या सोच रही हो ज़ाहिदा!

कुछ नहीं सर! आप स्वयं एक रोगी हैं, फिर भी अन्य रोगियों की चिन्ता ले रहे हैं। कुछ दिन काम को छोड़कर अपनी ओर देखिए। आप बराबर चालीस वर्ष के लगते हैं। डॉक्टर साहब! रोगी आते भी रहेंगे और जाते भी परन्तु आप जैसा डॉक्टर मैंने इस अस्पताल में केवल एक देखा है। उसका नाम डॉक्टर सत्यजीत अग्रवाल था।

वह सर्जन थे क्या ?

जी हाँ। उनकी पत्नी की मृत्यु का समाचार उन्हें तब मिला जब वह ग्रापरेशन थिय्रेटर में एक रोगी का ग्रापरेशन कर रहे थे। यह शोक समाचार मिलने पर भी वह ग्रापरेशन थियेटर से न हिले। वह ग्रापरेशन सफल रहा। उस दिन तीन बड़े ग्रापरेशन करने के पश्चात् जब डॉक्टर सत्यजीत घर पहुँचे तो उस समय उसकी पत्नी को शमशान ले जाने की तैयारी कर रहे थे।

वह इस समय कहाँ हैं ? मैं उनसे मिलना चाहता हूं।

सर, वह ग्रब इस दुनियाँ में नहीं हैं। उनका हार्टफेल हो गया। जब उन्होंने ग्रपना त्याग-पत्र दिया तो उसे किसी ने नहीं माना। डाइरेक्टर हैल्थ उस दिन डॉक्टर सत्यजीत के घर स्वयं गए।

परन्तु उन्होंने ग्रपना त्यागपत्र क्यों दिया ?

सर, उसके बारे में किसी को ज्ञान नहीं है कि उन्होंने ऐसा क्यों किया।

ग्रच्छा ज़ाहिदा ! ग्रब तुम जाग्रो। मुझे नींद ग्राने लगी। ग्रब मैं सो जाऊँगा।

ठीक है सर ! मैं तो जाऊँगी परन्तु सारी की सारी नहीं। मेरा ध्यान यहीं रहेगा।

गुड नाईट।

: ३६ :

राजन पलंग से उठकर खिड़की के करीब ग्राया। उसने हाथ में ग्राईना उठाकर ग्रपने केश सम्भालने चाहे। सहसा उसकी दृष्टि ग्रपने सूजे हुए गालों पर पड़ी जहाँ पसीना मोती की तरह चमक रहा था। कई बार उसने पसीना पोंछ डाला। कुछ क्षणों के उपरान्त वह ऊपर से नीचे तक पसीना ही पसीना हो गया। उसकी ग्राँखों से ग्राँसू फिसलकर गिर पड़े। वह उन ग्रन्धेरों में किसी को ढूंढ़ रहा था। ग्रपने शरीर की गम्भीर दशा देखकर वह भेड़ की तरह ग्राँखें निकाले पलंग से चिपका रहा। इतने में वह ग्रपना गला दबाने लगा परन्तु खाँसी का ज़ोर इतना था कि खून मुँह से बाहर निकल ग्राया।

ग्राज जीवन में पहली बार उसने न चाहते हुए भी कह डाला—"ग्ररे मौत के मसीहे।" क्यों बार-बार मेरे द्वार पर ग्राकर दस्तक दे रहा है ? मुझे ग्रपना कोई दुःख नहीं परन्तु सीता माँ के लिए मुझे कुछ देर जीने दो। पति की जुदाई तो उसने मुझे देख-देखकर सह ली। मेरी जुदाई, शायद नहीं सह सकेगी। मैं तो ग्रभी जवान हूँ। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा। प्रभु, जब मुझे बचना नहीं है तो मुझे मार क्यों नहीं डालते हो। मुझसे ग्रब यह दुःख दर्द सहा नहीं जाता। मैं हाथ जोड़ता हूं कि मुझे इस संसार से मुक्त कर डालो।"

यह कहते हुए वह चादर में मुंह छिपाकर सारी रात दर्द भरे घाव सहता रहा।

: ३७ :

लगभग सवेरा होने को था। सूर्य पहाड़ों के पीछे से आते हुए बीच आकाश में उज्ज्वल होने लगा। राजन ने एक लम्बा सांस खींचते हुए करवट बदल दी। इतने में नर्स ने दरवाज़ा खोलकर राजन को प्रणाम किया।

नमस्ते ज़ाहिदा जान!

"यह क्या······खून!" वह घबरा गई।

हाँ ज़ाहिदा! मौत ने कल रात से अपनी लगाम और ज़ोर से कस ली है।

नहीं ऐसा नहीं हो सकता है सर।

पगली, यह क्या मेरे बस की बात है। खैर छोड़ो होनी तो होकर रहेगी तुमने डॉक्टर नज़ीर को मेरा सन्देश सुनाया ?

जी हाँ, वह भी अभी आते ही होंगे।

सहसा डॉक्टर वर्मा कमरे में आ गए।

नमस्ते डॉक्टर साहब!

जुग-जुग जियो बेटा!

राजन डॉक्टर वर्मा की दुआ सुनकर मलिन भाव में कहने लगा—"सर! झूठी आस रखने से क्या लाभ।"

डॉक्टर राजन! धीरज रखो। परमात्मा की कृपा से तुम शीघ्र ही ठीक हो जाओगे।

सर, यह तो हम दोनों ने मिलकर बन्सी की बीवी से भी कहा था। काश मैं सिर्फ रोगी होता, डॉक्टर नहीं, तो आपकी बात को थोड़ी देर के लिए मन में जगह देता······। काश आपने हम सबसे यह न कहा होता कि टी०बी० का अन्तिम स्टेज तब प्रतीत होता है जबकि रोगी के मुंह से बार-बार खून आने लगे और उसका बदन रात के समय पसीने से लथपथ हो जाए।

डॉक्टर वर्मा आगे कुछ न कह सके। जाते समय उसने सिर हाँ में हिला दिया जब कि राजन ने डॉक्टर नज़ीर से मिलने की इच्छा प्रकट की।

कुछ ही देर में डॉक्टर नज़ीर कमरे में चला आया।

हैलो राजन!

हैलो नज़ीर!

अब क्या हाल है तुम्हारा ?

हाल तो ठीक है। मुझे तुमसे आज कुछ आवश्यक बातें करनी हैं।

कहो यार ! देर किस बात की ।

मैंने ज़ाहिदा से सुना कि तुम इसके साथ ब्याह करना चाहते हो । इस बात का निर्णय करने से पूर्व तुम्हारे लिए कुछ बातें जानना अत्यन्त आवश्यक हैं—"ज़ाहिदा एक ऐसी लड़की है, जिसने आज तक केवल दुःख ही दुःख देखे हैं । अपने पिता का उत्तरदायित्व यही आज तक पूरा करती आई है । इसकी माँ एक रोगी है और एक छोटा भाई है जो कि अभी पढ़ता ही है । आज तक ज़ाहिदा को अपने जीवन के बारे में विचार करने का कोई अवसर नहीं प्राप्त हुआ । क्योंकि परिस्थितियाँ ही कुछ ऐसी रहीं । ज़ाहिदा के चरित्र पर मुझे ही नहीं बल्कि सारे अस्पताल को गर्व है । केवल यही एक बहुमूल्य गहना ज़ाहिदा के पास है जिसे तुम ले सकते हो ।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि ज़ाहिदा स्वयं कमाती है परन्तु फिर भी तुम्हें इसकी माँ तथा छोटे भाई की देखभाल करनी होगी ।

वह तो मेरा कर्तव्य है, और फिर ज़ाहिदा के लिए मुझे कुछ भी करना पड़े मैं आह तक नहीं भरूँगा, क्योंकि मुझे ज़ाहिदा अपने प्राणों से अधिक प्यारी है । यह बात दूसरी है कि मैंने आज तक अपनी जिह्वा नहीं खोली है ।

"तुमने मेरा सब कुछ सुन लिया परन्तु यह क्यों नहीं पूछा कि मुझे यह सब कहने का क्या अधिकार है ?

मैं यह व्यर्थ बातें पूछने की आवश्यकता नहीं समझता हूं । मैं तुम्हें अच्छी तरह से जानता हूँ ।

"देखो दोस्त, मैं ज़ाहिदा का भाई हूं । इसका माता-पिता भी और एक शुभचिन्तक भी । ज़ाहिदा मुझे अपनी आत्मा से अधिक प्यारी है, क्योंकि मैंने इससे बहुत कुछ सीखा है । बाकी यह बात मेरी समझ से बाहर है कि समाज के नेता ज़ाहिदा और मेरे प्यार को किस रंग में रंग लेगें ।"

"मुझे उस समाज से कोई सम्बन्ध नहीं जिसमें ज़ाहिदा के लिए कोई स्थान नहीं है ।"

तुम जानते ही हो नज़ीर ! कि मेरे जीवन का कोई भी भरोसा नहीं है । यह मेरी अभिलाषा है कि अपने इस हृदय के टुकड़े को जीते-जी तुम्हें सौंप दूं । ज़ाहिदा का ब्याह होने के पश्चात् मेरे सिर से एक बहुत बड़ा उत्तरदायित्व उतर जाएगा । निकाह यदि इसी सप्ताह में हो जाए तो ठीक था ।

"मैं आज ही जाकर अब्बाजान से निकाह की तारीख तय कर लूंगा"—यह कहकर डॉक्टर नज़ीर वहाँ से चला गया ।

ज़ाहिदा अपनी पलकें नीचे किए हुए एक मॉडल की तरह फर्श पर जम गई थी ।

क्यों ज़ाहिदा कैसी रही बातचीत ?

ज़ाहिदा अपनी भीगी पलकें उठाकर कहने लगी—"सर, क्या आप सचमुच मुझसे इतना प्यार करते हैं, जितना कि आपने नज़ीर से कहा।"

पगली, यह भी कोई कहने की बात है।

आपने मुझसे यह पहले क्यों नहीं कहा ?

तो तुम क्या करतीं ?

"कुछ नहीं सर.........।"

उस सामने वाली एटैची से पैन तथा चैकबुक लाओ !

राजन ने ज़ाहिदा को दो हज़ार रुपये का चैक काट कर दे दिया।

जाओ और अपने ब्याह की तैयारियां करो, बाकी बाद में देखा जाएगा।

ज़ाहिदा ने चैक लेने से इन्कार करते हुए कहा—जी मेरे पास जी० पी० फण्ड के तीन हज़ार रुपये मौजूद हैं। आप यह रुपये रख लीजिए।

मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूं ज़ाहिदा। यदि मैं इस समय स्वस्थ होता तो पता नहीं तुम्हारे ब्याह पर तुम्हें क्या देता ? यह मेरा दुर्भाग्य है कि मेरे जीते जी तुम्हें अपना ब्याह स्वयं करना पड़ेगा।

डॉक्टर साहब ! मेरी समझ में एक बात नहीं आती है कि मैं आपको किस नाम से पुकारूं ? काश, आप मुझे पहले मिल गए होते तो मेरे जीवन का रुख ही बदल गया होता।

: ३४ :

इधर लाल कोठी में रजनी ने महाभारत उठाया। वह न कुछ खाती थी और न कुछ पीती थी, केवल सुबह से शाम तक अपने कमरे में रोती थी। रजनी को अपने कमरे से बाहर आने की आज्ञा नहीं थी। लालाजी आजकल उसे बहुत प्यार करते थे।

एक दिन रजनी गुमसुम सी अपने भाई के स्टेच्यू को देख रही थी कि लालाजी कमरे में आ गए।

बेटी ! तुमने मेरी बात मान ली। मैं तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूं यह लो हीरे का हार, इसे पहन के देख लो।

पिताजी मुझे आपकी प्रत्येक शर्त स्वीकार है परन्तु मेरी भी एक शर्त है।

बोलो बेटी क्या बात है ?

मुझे एक बार राजन से मिलने दीजिए। मैं आपको वचन देती हूं कि मैं उम्र भर उसका नाम भी नहीं लूंगी।

"तुमने फिर उस कमीने का नाम लिया। उन लोगों ने मेरा अपमान किया है। बेटी यह बात अनुचित है।" यह कहकर लालाजी कमरे से बाहर

निकल गए। लालाजी के जाने के पश्चात् ही सुखदेव तथा लक्ष्मी कमरे में आए।

बेटी, यह कपड़ों के कुछ नमूने हैं, जो रंग तुम्हें पसन्द हैं उन्हें अलग रख दो। साड़ियाँ मंगानी हैं न ?

"माँ कफन तो मरने के पश्चात् भी खरीदा जा सकता है।"

"ऐसा नहीं बोलते बेटी। चल मैं ही तुम्हारे लिए रंग पसन्द करूँगी। चलो सुखदेव !" यह कहते हुए लक्ष्मी कमरे से बाहर आ गई।

"रजनी ! यह राजन ने पत्र दिया है। मैं आज ही अस्पताल गया था। वह वार्ड नम्बर तीन के साथ कमरा नम्बर चौदह में है।

सुखदेव यह कहते हुए कमरे से बाहर आ गया।

रजनी की अधीरता बढ़ती गई। उसने तुरन्त पत्र खोला और पढ़ने लगी !

मेरी प्यारी रजनी !

मुझे यहाँ पूरे पाँच दिन हो गए। तुमने अपना मुंह भी नहीं दिखाया। मेरी जान ! मौत मेरे करीब आ रही है। मैं उसे टाल रहा हूं शायद इस बात की देरी है कि अपने प्यार को इन प्यासे नयनों से अन्तिम बार देख सकूं ताकि मौत के पश्चात् भी इस अभागे की आत्मा तड़पती न रह जाए और तुम्हारी मीठी नींद को डराकर तुमसे भगा न ले। मैं टी०बी० का एक रोगी हूं। मेरे सीने में असहनीय पीड़ा है, परन्तु आह नहीं भरता हूँ क्योंकि तुम्हारी याद मेरे साथ है। आज सुबह मेरे मुँह से इतना खून आया कि तुम्हारी तस्वीर इस खून से खूनी हो गई, फिर भी मैं उसे सीने से लगाए हुए हूं। मुझे इस बात का दुःख है कि मैं तुम्हारा साथ न दे सका। यदि जन्म होते हैं तो मेरी भी परमात्मा से यही प्रार्थना है कि रजनी, यदि इस जन्म में मुझसे बिछड़ गई तो कम से कम अगले जन्म में मेरी बनकर रहे। क्योंकि अगले जन्म में मुझे टी० बी० का रोग तो नहीं होगा। मैं जानता हूं कि तुम्हारे दिल को गहरा सदमा पहुँचा होगा। परन्तु रजनी, मुझे मौत ने खरीद लिया है। जब तक तुम्हारी प्रतीक्षा कर सकूंगा, निगाहें दरवाज़े पर लगी रहेंगी। तुम आकर मुझसे लिपट जाना। यहाँ जो भी होगा, उसकी चिन्ता न करना क्योंकि तुम जीवन सम्भालो और मैं इस संसार से चला जाऊँगा। मुझे स्वयं पता नहीं है कि मैंने इस छोटे से पत्र में क्या लिखा।

हर पल तुम्हारी प्रतीक्षा में·········।

केवल तुम्हारा
राजन

रजनी रोते-रोते हाथ में पत्र लिए हुए द्वार की ओर बढ़ी परन्तु बाहर से ताला लगा था। शायद लालाजी अपनी पत्नी के साथ कपड़े खरीदने गए थे।

: ३९ :

आज भी अशोक सुबह राजन के पास आया।

"तुम्हारे हिलने की कोई आवश्यकता नहीं है, मैं वहीं आ जाऊँगा। अब सिर में दर्द तो नहीं है न?

अशोक ने राजन के सामने कुर्सी ले ली और उस पर बैठ गया।

माँ अच्छी है न?

बिल्कुल अच्छी हैं। यहाँ आने को हठ करती थीं परन्तु मैंने आने नहीं दिया। जब मैं निकला तो बोलीं—"यह गाजर का हलुआ मेरे बेटे को देना और उससे कहना है कि आज मेरा एकादशी का व्रत है। तब तक मैं कुछ भी नहीं खाऊँगी जब तक वह मुझे एक बार अपना मुंह नहीं दिखाएगा।"—अब मैं क्या करूँ राजन?

राजन ने गाजर का हलुआ हाथ में ले लिया और आशा से रोते-रोते कहने लगा—"हाँ, हाँ मुझे गाजर का हलुआ बहुत पसन्द था न?"

ज़ाहिदा इतने में दवाई लेकर आ गई—सर, यह लीजिए दवाई।

राजन ने ज़ाहिदा का हाथ पकड़ लिया और हँसते हुए कहने लगा—"तुम्हारे हाथों में यह मेंहदी कितनी अच्छी सजती है?"—यह कहते हुए वह डॉक्टर नज़ीर की ओर देखकर कहने लगा—अब हमें दावत पर कब बुलाओगे?

अरे यार, जब तुम्हारा जी चाहे आ जाना परन्तु पहले ठीक तो हो जाओ।

राजन ने गाजर का हलुआ बाँटने के पश्चात् डिब्बा अशोक के हाथ में दे दिया।

"क्या रजनी अभी भी नहीं आई? कितनी देर लगा दी उसने?"

पाँच मिनट होते ही सुखदेव फूलों का एक गुलदस्ता लेकर राजन के पास आया।

अब राजन में बोलने का साहस भी नहीं रहा था परन्तु उसकी आँखें द्वार की ओर टिकी हुई थीं।

सुखदेव को देखकर राजन ने अशोक को आँखों के निकट आने का संकेत किया।

अशोक ने उसकी बात को समझकर सुखदेव से पूछा—क्यों, रजनी आज भी नहीं आई?

सुखदेव ने अशोक के हाथ में फूलों का गुलदस्ता देते हुए कहा—"वह कल आ जाएगी। आज लालाजी घर पर थे।"

राजन ने अपना हाथ बढ़ाते हुए अशोक से कुछ माँगा। अशोक ने गुलाब के तीन फूल राजन के हाथ में रख दिए।

राजन ने बाएँ हाथ से अशोक को एक पत्र दिया और उसका माथा चूमकर एक हसरत भरी दृष्टि प्रत्येक पर डाली। अन्तिम दृष्टि ज़ाहिदा की आँखों पर टिक गई जहाँ आँसू की कुछ बूंदे मोती की तरह चमक रही थीं।

राजन ने उन फूलों को ज़ोर से अपने हाथों में भींच लिया।

अशोक दौड़ते हुए डॉक्टर के पास गया और आशा की आवाज़ में तेज़ी आने लगी।

"आ.........आ.........आ.........भा.........भैया।"

एक भयंकर चीख आशा के मुंह से निकली—"मेरे भैया! देखो अब मैं बोल सकती हूं.........।"

नहीं.........नहीं; तुम्हें मुझसे बहुत बातें करनी हैं......... ।"—यह कहते हुए आशा बेहोश हो गई।

अस्पताल के छोटे-बड़े सभी डॉक्टर पलंग के इर्द गिर्द ईकट्ठे हो गए।

अशोक ने राजन को घबराते हुए पुकारा.........और वह पुकारता ही रहा.........परन्तु राजन कहाँ बोलता? उसका बोलने वाला तो सदा के लिए उड़ गया था।

अशोक ने रोते-रोते डॉक्टर वर्मा के हाथ में राजन का लिखा हुआ पत्र दे दिया।

"मेरी मृत्यु के पश्चात् मेरे इन्शोरेन्स के पच्चीस हज़ार में से दस हज़ार मेरी माँ को दे देना। दस हज़ार इस अस्पताल को और पाँच हजार ज़ाहिदा के भाई परवेज़ को दे देना। मेरी लाश को यहाँ से अतिशीघ्र उठा देना क्योंकि लाश देखकर बाकी रोगी घबरा जाते हैं। मैं इसमें अपना सौभाग्य समझूंगा यदि मेरी लाश आपके किसी काम आ सके!

आपका
राजन!

: ४० :

अशोक ने टैक्सी मंगवाई और राजन की लाश घर ले गया।

घर पर सीता अपने पड़ोसी के साथ बातें कर रही थी—मेरा बेटा अवश्य आएगा। वह मुझे भूखा नहीं रहने देता है। वह देखो टैक्सी आ गई। शायद मेरा बेटा आ गया।

यह कहते हुए सीता टैक्सी की ग्रोर दौड़ती हुई ग्राई। उसने बेटे को तो देखा परन्तु मरा हुग्रा। लाश को देखने पर ऐसा प्रतीत होता था कि राजन मरा नहीं बल्कि किसी विचार में मग्न, कुछ समझने का प्रयास कर रहा था।

ग्रशोक राजन की खुली हुई पलकों को बन्द रखता था परन्तु वे फिर खुल जाती थीं।

सुखदेव ने राजन के मुंह पर चादर डाल दी, परन्तु सीता ने ग्रपने कांपते हुए हाथों से चादर उठाकर ग्रपने बेटे से लिपट गई। ग्रशोक भी उसे कुछ न कह सका। ग्राखिर सीता राजन की माँ ही तो थी। एक माँ का ग्रन्तिम सहारा भी समय ने उससे छीन लिया।

ग्राशा रोते-रोते विलाप कर रही थी—"भैया, तुम्हें तो मेरी बातें सुनने का बहुत शौक था। उठो न, मुझे तुमसे बहुत बातें करनी हैं।"

परन्तु एक शव कैसे बोल सकता है? प्रत्येक यही चाहता था कि जितना शीघ्र हो सके लाश को उठाया जाए क्योंकि.........

ग्रशोक ने लाश को स्नान के लिए ग्रपने कन्धों के सहारे बैठाकर रखा। सीता को वहाँ ग्राने से रोका गया परन्तु वह भी रोते-रोते राजन के पास ग्राई ग्रौर ब्लाउज़ खोलकर कहने लगी—"लो, यह दूध भी नहीं पियोगे क्या?"

सीता के सीने से छर्र्र करके दूध निकल ग्राया। ग्राधा राजन के मुंह में गया ग्रौर ग्राधा पानी की बाल्टी में गया जिससे राजन को स्नान कराया जा रहा था।

राजन की एक मुट्ठी बहुत प्रयत्न करने पर भी नहीं खुल सकी, जिसमें रजनी की सौगात बन्द थी।

"राजन, एक बार मुझे माँ कह कर पुकारो। बेटा, ग्रपनी इस ग्रभागी माँ से एक बार खेलो न।"

कफन ग्रोढ़ाने के पश्चात् ग्रर्थी को कन्धा देकर श्मशान की ग्रोर ले गए।

: ४१ :

ग्रस्पताल से वापिस निकलने के पश्चात् रजनी ने फिर एक टैक्सी पकड़ ली।

कहाँ चलना है बहन जी?

भैया मुझे शिव मन्दिर के पास छोड़ दो। ग्ररे, यह सीट गीली क्यों है?

क्या बोलूं, कोई बेचारा ग्रस्पताल में मर गया था, उसी के मुंह से खून बह रहा था। वही मैंने धो लिया है।

कहाँ छोड़ा उसे?

जी धर्मपुर।

जल्दी करो ड्राइवर !

कुछ दूरी तक चलने के पश्चात् टैक्सी रुक गई।

क्या बात हुई ?

जी पिछले टायर में पंक्चर हो गया। अब उसे बदलना पड़ेगा।

आधे घण्टे के पश्चात् रजनी टैक्सी से राजन के घर पहुंची।

एक-एक पग आगे बढ़ने पर रोने की आवाजें तेज होती गईं।

आशा तथा सीता विलाप करते हुए अपने राजन को बुला रही थीं। रजनी आशा के पास जाकर बैठ गई। वह उसे बोलते हुए देखकर बहुत चकित हो गई।

"रजनी बहिन ! हम लुट गए, राजन हमको छोड़ कर चला गया।"

रजनी किसी से कुछ कहे बिना दौड़ती हुई बाहर आई। उसने अपने चारों ओर एक बार देखा फिर......।"

भाई साहब ! एक मिनट—यह श्मशान किस मार्ग से पड़ता है ?

आप उस सामने वाले बाग से चली जाईए। वहाँ एक मन्दिर आएगा—शिव मन्दिर। वहीं पर श्मशान है।

रजनी दौड़ती हुई उस बाग में चली गई। आगे उसे शिव मन्दिर दिखाई दिया। मन्दिर श्मशान के बीच में था। वहाँ शंकर के मंदिर के इर्द-गिर्द बड़ के वृक्ष थे।

वहाँ उसे कोई भी नहीं दिखाई दिया। रजनी की अधीरता बढ़ती गई। उसके कदम लड़खड़ा रहे थे। आँखों से आँसू जल के समान बह रहे थे। रजनी एक चिता के सामने आ गई; फिर वह दूसरी चिता की ओर बढ़ गई। उसकी उत्सुकता हर पल बढ़ती गई।

अब उसके सामने यह प्रश्न था कि राजन की चिता कौन सी है। यह एक विचित्र उलझन उसके मस्तिष्क में उठ गई। सहसा वह किसी को देखकर छिपने का असफल प्रयत्न करने लगी।

"आप क्यों डर गई, मैं भी तो एक इन्सान ही हूँ किसे ढूंढ़ रही हैं आप ?"

जी कुछ नहीं।

जाहिदा रोते-रोते रजनी के पास आई—तुम ही लाला हुक्मचन्द की बेटी हो न ?

जी हाँ।

वह पहली चिता राजन की है। राजन ने बहुत देर तक तुम्हारी प्रतीक्षा की। तुमने एक गहरी भूल की। उसे अन्तिम समय पर अपना मुंह दिखाया होता। तुम्हारे भेजे हुए फूल उसने अपनी मुट्ठी में भींच लिए। वह मुट्ठी फिर

बन्द ही रही। उसे कोई भी नहीं खोल सका।" जाहिदा आगे कुछ कहने वाली ही थी कि पीछे से किसी ने उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए धीरे से कहा—चलो जाहिदा, कितनी देर तक यहाँ ऐसे ही खड़ी रहोगी ?

जाहिदा का हाथ डॉक्टर नज़ीर ने पकड़ लिया और फिर दोनों श्मशान से बाहर आ गए।

उनके चले जाने के पश्चात् रजनी दौड़ती हुई चिता के पास आई और वहाँ पागल की तरह खड़ी होकर राजन से बातें करने लगी।

"क्या तुम मेरी प्रतीक्षा नहीं कर सकते थे। तुमने मुझे किसलिए यहाँ अकेले छोड़ दिया ?" रजनी के मुंह से रोते-रोते यह आवाज़ निकली—"राजन ! अपनी रजनी से लिपट जाओ न। देखो मेरी खुली हुई लटें तुम्हें पसन्द थीं न ?"

आखिर जो न होना चाहिए था, वही हुआ। रजनी को चक्कर-सा आ गया। वह मूर्छित होकर चिता पर गिर गई। वायु के एक तीव्र झोंके से शोले आकाश को छूने लगे। इसके साथ-साथ भूचाल आ गया। वृक्ष की जड़ें हिलने लगीं और बड़ की एक टहनी चिता पर गिर पड़ी जिसने रजनी का शरीर ढक लिया।

रजनी तो चिता पर गिर कर जल गई परन्तु लालाजी का दिया हुआ तोहफा—हीरे का हार नहीं जला। वह हार अंधेरे में भी चमक रहा था।

चण्डाल रात को सोने से पूर्व प्रतिदिन की तरह आज भी श्मशान का चक्कर काटने आया। राजन की चिता के पास पहुंच कर वह ठिठक गया। एक हाथ तथा आधा बाज़ू जला ही न था। लड़की का हाथ स्पष्ट दिखाई दे रहा था। चण्डाल ने पुलिस में रिपोर्ट लिखवा दी। पुलिस ने हीरे का हार और रजनी की एक बाज़ू अपने कब्ज़े में ले ली।

: ४२ :

दूसरे दिन लालाजी सुखदेव को साथ लेकर श्मशान से अपनी बेटी की राख उठाने गए। चाण्डाल ने रोकना चाहा क्योंकि इसमें राजन की भी राख थी परन्तु सुखदेव को देखकर चुप रह गया।

लाला का चेहरा काला पड़ गया था। जीवन में पहली बार वह पश्चाताप की अग्नि में जल रहा था।

तांबे का बर्तन सामने लाया गया। सुखदेव अभी राख उठाने वाला ही था कि पीछे से किसी की गरजदार आवाज़ ने उन्हें पीछे हटने पर विवश किया।

अशोक की आँखों में क्रोध तथा आँसू थे।

"लाला हुक्मचन्द अपने अपवित्र हाथ इस राख को मत लगाओ। इसमें राजन की भी राख है। आपकी बेटी इस चिता पर गिर कर मर गई है। तुम यदि बेटी की राख उठाना चाहते हो तो अलग करो उसकी हड्डियों को।"

सुखदेव बीच में बोल पड़ा—अशोक बाबू ! आप शान्त हो जाइए। अब तो यह 'राख का ढेर' बन चुका है। मनुष्य गलतियों का पुतला है। यह सब तो परमात्मा की इच्छा थी।

"सुखदेव मैं यह जानता हूँ कि अब तो न राजन रहा और न रजनी। उनके बदले में हमारे सामने यह "राख का ढेर" है। तो इन्सान और इन्सान में लाला हुक्मचन्द जैसे ज़ालिम भेद क्यों दिखाना चाहते हैं। मेरी बातों का उत्तर दो—क्या लालाजी का मिल या उसकी सम्पत्ति रजनी और राजन को वापिस ला सकती है।

"नहीं अशोक बाबू, यह कैसे हो सकता है। यदि मरा हुआ इन्सान वापिस आता तो हम विज्ञान को भगवान मानते। मर कर जीना और जी कर मरना तो राज़दान का राज़ है।"

लालाजी ने अपनी पगड़ी अशोक के सामने फैला दी और बर्तन के बदले अपने दोनों हाथों मे राख अपनी पगड़ी में समेटने लगा। राख का ढेर उठाया गया और लालाजी ने पगड़ी अशोक के हाथ सौंप दी। पुलिस इन्सपैक्टर ने हार तथा अंगूठी लालाजी को देनी चाही, परन्तु उसने लेने से इन्कार कर दिया क्योंकि वह सीता की बहु और बेटे की निशानी थी।

सीता ने पकड़ने से इन्कार नहीं किया क्योंकि यह अंगूठी उसके बेटे ने ही तो रजनी को दी थी।

: ४३ :

लाल कोठी में आज भी लाला हुक्मचन्द पागलों की तरह चिल्लाता है परन्तु वहाँ उसके सामने इन्सानों के बदले तीन स्टेच्यू हैं—श्याम तथा राजन अपनी रजनी के साथ। शायद यह स्टेच्यू उससे कुछ फरियाद करते हैं। इसी कारण लाला हुक्मचन्द अपने कान बन्द करके सुखदेव के सहारे अपने कमरे में जा कर रोता है।

: समाप्त :